रामायण पर आधारित आधुनिक हिन्दी काव्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

RAMAYAN PAR ADHARIT ADHUNIK HINDI KAVYOM KA VISLESHANATMAK ADHYAYAN

THESIS SUBMITTED TO
THE COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
FOR THE DEGREE OF
DOCTOR OF PHILOSOPHY

By

PRABHAVATHIAMMA N.

DEPARTMENT OF HINDI
COCHIN UNIVERSITY OF SCIENCE AND TECHNOLOGY
COCHIN - 682 022

1995

DECLARATION

I here by declare that the thesis entitled "RAMAYAN PAR ADHARIT ADHUNIK HINDI KAVYOM KA VISLESHANATMAK ADHYAYAN" has not previously formed the basis of the award of any degree, diploma, associateship, fellowship or other similar title or recognition.

Prabhavathiamma N

PRABHAVATHI AMMA .N.

Department of Hindi
Cochin University of
Science & Technology
Kochi - 682 022

28 04 96

CERTIFICATE

This is to certify that this thesis is a bonafide record of work carried out by PRABHAVATHI AMMA.N under my supervision for Ph.D degree and no part of this thesis has hitherto been submitted for a degree in any University.

Devaki
28-04-95

Dr. N.G. DEVAKI
Supervising Guide

Dr. N. G. DEVAKI,
READER
DEPARTMENT OF HINDI,
chin University of Science & Technology,
KOCHI - 682 022 KERALA

Department of Hindi
Cochin University of
Science & Technology
Kochi - 682 022

ACKNOWLEDGEMENT

This work was carried out in the Department of Hindi, Cochin University of Science & Technology, Kochi, during the tenure of scholarship awarded to me by the Cochin University of Science and Technology. I sincerely express my gratitude to Cochin University of Science & Technology for this help and encouragement.

Prabhavathiamma N
PRABHAVATHI AMMA.N.

Department of Hindi
Cochin University of
Science & Technology
Kochi - 682 022
28 04 '95

राम तुम्हारा वृत्त स्वयं ही काव्य है,

कोई कवि बन जाय, सहज सम्भाव्य है ।

भूमिका

रामायण भारतीय संस्कृति का महान प्रतिनिधि महाकाव्य है । आदिकाल से आदिकाव्य "वाल्मीकिरामायण" ने भारतीय जनता को प्रभावित किया है । रामायण की रचना सबसे पहले संस्कृत भाषा में हुई है । इसके पश्चात् सभी भारतीय भाषाओं में तथा विदेशी भाषाओं में भी रामायण का सृजन होता रहा है । इसलिए भारत ही नहीं विश्व भर के अनेक देश आदि काव्य और कवि के ऋणी है । महाकवि वाल्मीकि ने केवल एक उदात्त चरित्र का ही सृजन नहीं किया, अपितु संपूर्ण देश के लिए आदर्श जीवन बिताने का पथ-प्रदर्शन किया है । इसलिए युग-युगों से रामायण से प्रभावित होकर विविध काव्यरूपों में रामपरक काव्य रचना होती रहती है ।

भारतीय जनता में रामायण का प्रभाव केवल सांस्कृतिक रूप में नहीं, वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और दार्शनिक विचारधारा की महत्ता के कारण है । अतः आधुनिक काल में किसी भी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न होती है तो रामायण को माध्यम या प्रतीक बनाकर कविगण समाधान ढूँढ निकालते हैं । मानव जीवन के सभी पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित करनेवाले अन्य ग्रंथ की खोज असंभव है । इसलिए रामायण से संबंधित रचनाएँ ही नहीं शोधकार्य भी प्रभूत मात्रा में होती रहती है । हाल ही में दिल्ली में सांस्कृतिक शोध के लिए एक अंतरराष्ट्रीय केन्द्र स्थापित किया है जहाँ रामायण में चित्रित भूगोल शास्त्र, ज्योतिष, धातुशोधन नगर-योजना, शिल्पविज्ञान, मनोविज्ञान आदि के संबंध में शोध हो रहे हैं ।

रामायण में केवल एक युगविशेष या व्यक्ति तक सीमित समस्याओं का चित्रण नहीं है । वस्तुतः क्रांतदर्शी महाकवि वाल्मीकि ने जन समाज के लिए सदा उपयोगी कृति की सृष्टि की । रामायण के हरेक प्रसंग

आज के जनजीवन से संबंधित है । इसलिए आधुनिककाल में रामायण की महत्ता पूर्ववर्ती युगों से अधिक है । विज्ञान की बढती धारा, मस्तिष्क या बुद्धि को प्रखर बनाते वक्त मनुष्य हृदय की कमजोरियों को दूर करने के लिए तडपते रहते हैं । इसलिए रामायण जैसे पवित्र ग्रंथ मनुष्य के हृदय को शुद्ध बनाकर शांति स्थापित करने में सफल सिद्ध होते हैं । मनुष्य की सफलता बुद्धि और हृदय को संतुलित बनाये रखने में है । इसलिए आधुनिक मनुष्य विज्ञान की सहायता से मात्र संतुष्ट नहीं है । रामायण मनुष्य की बुद्धि को समृद्ध, स्वच्छ और स्वस्थ करने में सफल है । धर्म, जाति, वर्ण आदि को हथियार मानकर आपस में लडनेवाले भारतीय जनमानस में "विविधता में एकता" की स्थापना अत्यंत आवश्यक है । रावण जैसे जनविध्वंसकारी शक्ति को उखाड फेंकने के लिए राम जैसे शक्तिशाली व्यक्ति जाति, या वर्ण की परवाह किये बिना जन समूह को एकत्र करते हैं । आपसी लडाई बाहरी शक्तियों को भारत में अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए सुविधापूर्ण मार्ग तैयार करते हैं । इसका स्पष्ट प्रमाण भारतीय जनता आसानी से भूल नहीं सकती । इसलिए धर्म या वर्ण, कुल या रंग के भेद को भूलकर भारतीय जनता को एक साथ खडे होने का वक्त आ गया है । इसलिए भारत के पवित्र ग्रंथ रामायण को आधार मानकर आधुनिक हिन्दी काव्य के विश्लेषण को शोधार्थिनी ने सर्वथा उचित समझा । यहीं नहीं रामकाव्य से सम्बद्ध अब तक जो शोधात्मक ग्रंथ उपलब्ध हैं वे सब किसी न किसी पहलू से सम्बद्ध है । जैसे रामकाव्य में नारी भावना, भक्ति, दर्शन आदि । एक विदेशी विद्वान फादर कामिल बुल्के द्वारा रचित "रामकथा उत्पत्ति और विकास" तो सबको सुपरिचित कृति है ही । किन्तु इनमें से किसी भी रचना में मूल वाल्मीकि रामायण से आधुनिक हिन्दी रामकाव्य के विभिन्न पक्षों का तुलनात्मक विश्लेषण नहीं हुआ है । अतः प्रस्तुत शोध का विषय "रामायण पर आधारित आधुनिक हिन्दी काव्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन" रखा गया । आधुनिक युगीन प्रारंभिक कृतियों की चर्चा काफी मात्रा में हो चुकी है । इसलिए प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सन् 1920 ई. से सन् 1980 ई. तक की रचनाओं का विश्लेषण विवेचन किया गया है ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है ।

प्रथम अध्याय "रामकाव्यःउद्भव और विकास" है । प्रस्तुत अध्याय में रामकाव्य के उद्भव और विकास यात्रा का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । हिन्दी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल के साहित्य में राम का चरित्र वर्णन है । इसके बाद अन्य भारतीय भाषाओं के रामकाव्य का संक्षिप्त परिचय दिया गया है ।

"आधुनिक हिन्दी रामकाव्य" नामक द्वितीय अध्याय में अध्ययन की सुविधा के लिए महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य और लंबी कविता जैसे काव्यरूपों की दृष्टि से आधुनिक रामकाव्य का विश्लेषण किया गया है । इसके बाद भाषा की दृष्टि से भी आधुनिक रामकाव्यों का विवेचन किया गया है । इसमें आधुनिककाल में उपलब्ध महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य, लंबी कविता तथा अन्य काव्य रूपों का लक्षणों के आधार पर विश्लेषण किया गया है और आधुनिक काल में उनकी प्रासंगिकता को भी स्पष्ट दिखाया है ।

तृतीय अध्याय "रामायण के आधार पर आधुनिक रामकाव्यों के कथ्य पक्ष का विश्लेषण" है । प्रस्तुत अध्याय में वाल्मीकि रामायण के घटनाक्रम के अनुसार आधुनिक रामकाव्य में चित्रित घटनाओं का क्रमशः विश्लेषण किया गया है । इसमें रामायण से भिन्न प्रसंगों और उसकी उपादेयता को अधिक महत्व दिया गया है । प्रस्तुत अध्याय की विशेषता रामायण से भिन्न आधुनिककाल में स्पष्ट विचारधारा और चिन्तन की विभिन्नता को स्पष्ट दिखाना है ।

"आधुनिक रामकाव्य में चरित्र-चित्रण" नामक चतुर्थ अध्याय में पहले प्रमुख पुरुष पात्रों का चित्रण किया गया है और बाद में नारी पात्रों का चित्रण है । नवनिर्मित पात्रों का भी उल्लेख है । रामायण से भिन्न आधुनिक काल के पात्रों में दृष्टव्य नवीनता को अधिक महत्व दिया गया है । रामायण से भिन्न या वैषम्यपूर्ण स्थलों का उद्घाटन हमारा उद्देश्य है । रामायण में उपेक्षित पात्रों को आधुनिक रामकाव्य में नवचैतन्य मिल गया है । पात्रों की चिन्तनधारा को मनोवैज्ञानिक स्तर पर देखने की क्षमता आधुनिक रामकाव्य के चरित्र-चित्रण की विशेषता है ।

पंचम अध्याय "आधुनिक रामकाव्यों का मूल्यांकन" है । सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रामकाव्यों का मूल्यांकन पारिवारिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक अवधारणा की दृष्टि से यहाँ प्रस्तुत है । इसके बाद आधुनिक रामकाव्यों में चित्रित भक्ति तथा दार्शनिक चिंतन का चित्रण है । माया, जगत्, जीव, ब्रह्म आदि के बारे में संक्षिप्त चर्चा की गई है । इसके अलावा आधुनिक काव्यों की नारी भावना, रामायण से किसप्रकार समान और असमान रूप में चित्रित है इसका भी वर्णन है । बिंब, प्रतीक, मिथक आदि का आधुनिक रामकाव्यों में किसप्रकार सफलतापूर्वक अंकन किया गया है इसका भी विवेचन प्रस्तुत अध्याय में है । पंचम अध्याय में रामकाव्य की महिमा आधुनिककाल में जनमानस में कितनी गहराई तक पहुँच गई है, इसका संकेत हमें मिलते हैं। पारिवारिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से रामायण की महिमा को व्यक्त करके समाज में नारी की स्थिति, भक्ति की महिमा, मोक्ष की अवस्था जैसे अनेक महत्वपूर्ण संकेत रामायण को प्रतीक मानकर किया गया है ।

उपसंहार में आधुनिक रामकाव्यों की विशेषताओं का चित्रण है । रामायण से आधुनिक युग में प्राप्त होनेवाली विशेषताओं और संकेतों का उल्लेख है । रामायण की प्रासंगिकता की चर्चा भी यहाँ की गई हैं ।

परिशिष्ट - । में सन् 1920 ई. से लेकर सन् 1980 ई. तक उपलब्ध रामकाव्य की सूची है ।

परिशिष्ट - 2 में सन् 1920 ई. से लेकर सन् 1980 ई. तक अनुपलब्ध रामकाव्य की सूची है ।

अंत में शोध की वैज्ञानिक पद्धति पंचसूत्रि कार्यक्रम के अनुसार सहायक ग्रंथ सूची भी प्रस्तुत की गई है ।

शोधसामग्री संकलन के लिए बिहार के भगलपुर विश्वविद्यालय, केन्द्र साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, एरणाकुलम में गयी थी यहाँ से प्रस्तुत शोध के लिए उपयोगी व अन्यत्र अप्राप्त अनेक सामग्री उपलब्ध हुई । शोधार्थिनी इन संस्थाओं के प्रति कृतज्ञ है ।

प्रस्तुत शोधकार्य डा. एन. जी. देवकीजी के मार्ग निर्देशन में संपन्न हुआ है । आदरणीया डा. एन. जी. देवकीजी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनकी अनवरत प्रेरणा से यह शोधकार्य संपन्न हुआ है ।

विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य डा. एन. रामन नायरजी, आचार्य डा. पी. वी. विजयन जी के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ । वर्तमान विभागध्यक्षा डा. एम. ईश्वरीजी के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने शोधकार्य केलिए उचित निर्देश दिया है ।

पुस्तकालय के सदस्य श्रीमती कुञ्ञीकावुट्टी तम्पुरान और श्री एण्टणी के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनकी सहायता से मेरा यह शोधकार्य संपन्न हुआ है ।

हिन्दीतर प्रान्त की हिन्दी शोध छात्रा के नाते इस शोध प्रबन्ध में जो कमियाँ एवं त्रुटियाँ है उनकेलिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ । भारतीय संस्कृति के आकर रामकाव्य के प्रति रूचि रखनेवाले अध्येताओं को प्रस्तुत शोध किंचित् प्रयोजनीय होगा तो शोधार्थिनी अपने को कृतार्थ मानेंगी ।

विनम्र

प्रभावती अम्मा. एन.

हिन्दी विभाग
कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी
विश्वविद्यालय
कोचिन - 22.
28 अप्रैल 1995.

विषय - सूची

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय 1 - 35

रामकाव्य उद्भव और विकास

राम - रामायण - रामकाव्य का क्रमिक विकास - हिन्दी साहित्य के आदिकाल में रामकाव्य - पूर्व मध्यकाल में रामकाव्य- उत्तर मध्यकाल में रामकाव्य - आधुनिक युगीन रामकाव्य - भारतेन्दु युगीन रामकाव्य - द्विवेदी युगीन रामकाव्य - छायावादी युगीन रामकाव्य - छायावादोत्तर अधुनातन युगीन रामकाव्य - अन्य भारतीय भाषाओं में रामकाव्य - द्रविड भाषा के रामकाव्य- आर्य भाषा के रामकाव्य - निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय 36 - 106

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य

काव्य रूपों की दृष्टि से - महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य, लंबी कविता - भाषा की दृष्टि से - अवधी रामकाव्य, ब्रजभाषा रामकाव्य - खडी बोली रामकाव्य - निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय 107-175

रामायण के आधार पर आधुनिक रामकाव्यों के कथ्य पक्ष का विश्लेषण

बालकाण्ड के प्रसंगों से आधुनिक रामकाव्य में साम्य-वैषम्य - अयोध्याकाण्ड की घटनाओं से समानताएँ तथा विषमताएँ - अरण्यकाण्ड के संदर्भों से साम्य-वैषम्य - किष्किंधाकाण्ड की

पृष्ठ संख्य

घटनाओं से समानताएँ तथा विषमताएँ - सुन्दरकाण्ड के प्रसंगों से साम्य तथा वैषम्य - युद्धकाण्ड की घटनाओं से समानताएँ तथा विषमताएँ - उत्तरकाण्ड के प्रसंगों से साम्य वैषम्य - निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय 176-222

आधुनिक रामकाव्य में चरित्र-चित्रण

प्रमुख पुरुष पात्र - राम, लक्ष्मण, भरत, दशरथ, हनुमान, रावण

गौण पुरुष पात्र - शत्रुघ्न, जनक, विभीषण, मेघनाद, लव-कुश, वाल्मीकि, शंबूक

प्रमुख नारी पात्र - सीता, कैकेयी, ऊर्मिला

गौण नारी पात्र - कौसल्या, माण्डवी, मंथरा, शूर्पणखा, शबरी मंदोदरी

नवनिर्मित पुरुष पात्र - अराल-कराल, धीर-गंभीर, चरण

नवनिर्मित नारी पात्र - झंझटा, तुगंधिका, आभा, शांता -निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय 223-26

आधुनिक रामकाव्यों का मूल्यांकन

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में - सांस्कृतिक चेतना तथा राजनीतिक अवधारणा की दृष्टि से - भक्ति तथा दार्शनिक चिंतन की अभिव्यक्ति नारी भावना - प्रतीक योजना, बिंब विधान और मिथक योजना - निष्कर्ष ।

	पृष्ठ संख्य
उपसंहार	261 - 2
परिशिष्ट 1 - उपलब्ध रामकाव्यों की सूची	269 - 27
परिशिष्ट 2 - अनुपलब्ध रामकाव्यों की सूची	270 - 27
सहायक ग्रंथ सूची	272 - 2

प्रथम अध्याय

रामकाव्य उद्भव और विकास

राम शब्द की व्युत्पत्ति "रमैति इति रामः" है अर्थात् जो रमण करता है वही राम है । राम सभी देवताओं को रमण करनेवाले परब्रह्म है । और उसी परब्रह्म के अवतार के रूप में राम प्रतिष्ठित होने लगे। पुराणों में तथा रामायण में भी राम का यही अर्थ स्वीकृत है । ऋग्वेद में "राम" शब्द का उल्लेख निम्नलिखित सूत्र में केवल एक बार हुआ है -

प्रतद्दु शीमे पृथवाने वेन प्रराम वोचमसुरे मघवस्तुः
ये युक्तवाय पंच शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम् ।।[1]

राम का नाम अन्य प्रतापी यजमानों के साथ प्रयुक्त होने के कारण प्रतीत होता है कि वह कोई राजा हुआ होगा ।

डा. कामिल बुल्के भी इससे सहमत है । उनकी राय में ऋग्वेद में प्रतिपादित राम रामायण में प्रतिपादित दशरथ नंदन नहीं है ।[2]

राम चरित्र को सबसे महत्त्वपूर्ण शैली में चित्रित करनेवाले कवि वाल्मीकि है । वाल्मीकि रामायण के प्रारंभ में वाल्मीकि के नारदजी से प्रश्न करने पर नारदजी के उत्तर से राम चरित्र का अत्यंत प्रभावशाली परिचय मिलता है । तपस्वी वाल्मीकि ने त्रिलोकज्ञानी नारदजी से इसप्रकार पूछा :-

---

1. ऋग्वेद - 10, 93, 14
2. फा. कामिल बुल्के - रामकथा उत्पति और विकास-पृ.3

को न्वास्मिन् साम्प्रतम् लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान् ।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ।।
चरित्रेण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः ।
विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ।।
आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः ।
कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ।।[1]

अर्थात् हे श्रेष्ठ मुने ! इस जगत् में गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्य ही बोलनेवाला दृढ़व्रती कौन है ? सत् चरित्र से युक्त, सर्वचराचरों केलिए हित ही करनेवाला विद्वान, सामर्थ्य से युक्त एक ही प्रियदर्शन पुरुष कौन है ? आत्मसंयम करनेवाला, क्रोध न करनेवाला सुन्दर और किसी की निंदा न करनेवाला कौन है ? और रण क्षेत्र में किसके क्रोध से देवता भी डरते हैं ?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर नारदजी ने इसप्रकार दिया -

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः ।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी ।।[2]

अर्थात् इक्ष्वाकुवंश में राम नाम से एक विख्यात पुरुष है, वे मन को वश में रखनेवाले, शक्तिशाली, सौंदर्य संपन्न, धैर्यशाली जितेन्द्रिय है ।

इस प्रकार वाल्मीकि के राम भारतीय साहित्य का आदि नायक है । वाल्मीकि ने राम के रूप में एक आदर्श मानव चरित्र का निर्माण किया है । उनमें लौकिक और अलौकिक गुणों का समावेश है । संस्कृत काव्य "रघुवंश" में सबसे पहले राम का चरित्र उपलब्ध है । "रघुवंश" में राम चरित्र

---

1. वाल्मीकिरामायण - बालकाण्डम् प्रथमः सर्गः - श्लोक 1,2,3
2. वही - श्लोक 8

चित्रण मनोहर रूप में हुआ है । कालिदास द्वारा चित्रित राम का रूप इसप्रकार है :-

राम इत्याभिरामेण वपुषा तस्य चोदितः
नामधेयं गुरु श्चक्रे जगत्प्रथम मंङ्गलम्
रघुवंशप्रदीपेन तेनाप्रतिमतेजसा
रक्षागृहता दीपाः प्रत्यदिष्टा इवाभवन् ।[1]

अर्थात् उस बालक का सौंदर्य {रूपाभा} देखकर गुरु वसिष्ठजी ने दुनिया के प्रथम मंगलकारी नाम "राम" से अलंकृत किया । रघुवंश की उन्नति के कारणपात्र उस बालक के शरीर की कांति इसप्रकार थी कि वहाँ के सब दीपकों की ज्योति उसके सामने मंद पड गई है ।

हिन्दी साहित्य में,आरंभ से ही राम के अलौकिक और लौकिक दोनों रूपों का चित्रण उपलब्ध है । राम एक ओर आदर्श मानव है तो दूसरी ओर पूर्ण परात्पर ब्रह्म है ।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में राम का चित्रण इसी रूप में देखा जा सकता है । आदिकाल की रचना "पृथ्वीराज रासो" में मंगलाचरण के रूप में दशावतार वर्णन करते समय 38 छन्दों में रामायण का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । चन्दवरदाई द्वारा चित्रित रामायण कथा की महिमा इस प्रकार है :-

गयौ लंक हनुयेस, भ्रमत सुधि सीता पाइय,
घन उपवन संघरिय, धरे मन राम दुहाइय,
वाय चढ्यौ प्रकार, दसन जुद्ध हनु भारव्छिय,
अष कुमारन हनिय, दौरि इंद्रजित दव्छिय,

---

1. रघुवंश - कालिदास - दशम सर्गः - श्लोक - 67, 68

निखि पास रास दृढ़ बंधयौ कहि सु मरन अंबर धरौ
लग्गाय पुच्छ लंकाजरिय, कनक पंक किन्नौ रखौ ।[1]

इसमें कवि ने राम को पूर्ण परात्पर ब्रह्म के रूप में स्वीकार किया है ।

जनक सुता हरि दुष्ट, हरी लंक तन दावन ।
जीवन जगत जागी छरन हरन रिपु ग्रहन सु रावन ।।
हरन रिद्ध नब निद्ध, सिद्धि हर सागर सिद्धिय
हरन पुत्र इन्द्रजीत, हरन भरवन ग्रह लद्धिय
तिन हरिय सीत कृत इह करिय, भरिय पत्र पलघर भवत
गढ जारि लंक दसकंध हनि राम-किति चंदह तवन ।[2]

लंका को खोने और लंका निवासियों के शरीर को जलाने के लिए ही दुष्ट रावण ने जनक सुता का हरण किया । जगज्जीवन स्वरूप (राम) को छलने के लिए उद्यत होकर कनक-मृग नाशक राम द्वारा वह स्वयम् ग्रसा गया । नाश को प्राप्त हुआ । उसकी संपूर्ण संपत्ति का हरण हुआ । सब सिद्धियाँ हरी जाकर सागर में फेंक दी गई । उसके इन्द्रजीत आदि सब पुत्रों का हरण हुआ । कुबेर से हरण की हुई लंका विभीषण को प्राप्त हुई । सीता को जिसने हरा उसने यह सब अनिष्ट किया । योगिनियों ने रक्त से पात्र और पलघरों ने अपने घोंसलों को आमिष से भर दिया । इसप्रकार लंका-दुर्ग जलाया गया और रावण मारा गया । उसीका मैं ने (चन्द) राम की कीर्ति गान के उपलक्ष्य में वर्णन किया ।

---

1. चन्दवरदाई - पृथ्वीराज रासो - श्लोक 13 - पृ. 43
2. चन्दवरदाइ - पृथ्वीराज रासो - श्लोक 27 - पृ. 53

इसमें केवल राम के अलौकिक रूप का चित्रण ही नहीं वीरता भी प्रधानता देते हैं । राम के अलावा, लक्ष्मण, कुंभकर्ण, हनुमान, मेघनाद, वण आदि की भी वीरता का वर्णन उपलब्ध है । वीर रस की प्रधानता की एक विशेषता दिखाई पडती है । आदिकालीन रचनाओं में आश्रयदाताओं तुष्टि के लिए नव्य सृजन करना पडा । इसमें पृथ्वीराज के यज्ञ की तुलना म के राजसूय यज्ञ से की गई है । शब्दभेदी बाण से गोरी की हत्या की ना बालिवध से की गई है । इसप्रकार राम की युद्धवीरता और महिमा को वीराज से तुलना करके अपने आश्रयदाता की महिमा को दिखाना चाहते हैं । प्रवृत्ति आदिकाल के साहित्य की एक गणनीय विशेषता है ।

मध्यकाल में राम भक्ति का प्रसार स्वामी रामानंद ने या है । इसकाल में सगुण और निर्गुण दोनों पद्धतियों का प्रचलन आरंभ हुआ । र्गुणोपासकों में कबीर जैसे संतों ने राम को पूर्ण परात्पर ब्रह्म माना है और ल दशरथ पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं किया । कबीर की राय में राम शरथ सुत तिहूँ लोक बखाना राम नाम के मरम है आना ।" जिसको लोग रथ सुत के रूप में प्रशंसा करते है उस राम नाम का मर्म अनुपम है । कबीर म को निर्गुण, अगम, अगोचर, मानते हैं । इसी परंपरा में एक आलोचक ने रा और नानक को भी माना है । उस आलोचक की राय में "कृष्ण-दीवानी रा भी राम शब्द का प्रयोग निर्गुण ब्रह्म के पर्याय के रूप में ही करती है । राकार ब्रह्म के नाम के रूप में राम का नाम ही प्रसिद्ध हुआ कृष्ण का हीं ।"[1]

---

[1] ब्रह्मशंकर पुरुषोत्तम व्यास - हिन्दी काव्य में राम का स्वरूप और तत्वदर्शन - पृ. 94

डा. नगेन्द्र की राय में मलूकदास भी निर्गुण राम भक्त है । नगेन्द्र की राय में मलूकदास "राम अवतारलीला", "ब्रज लीला" और "ध्रुवलीला" की रचना उस समय हुई जब मलूकदास सगुण ब्रह्म की आराधना में तत्पर थे । वैसे उनका ब्रह्म निर्गुण और गुणातीत है । वह समस्त सृष्टि का पालक और संहारक है, भेद भाव से परे और ऊपर है तथा संसार के अणु-अणु में रमा हुआ है ।[1] इसके अलावा रैदास, नानकदेव आदि भी निर्गुण भक्त हैं ।

भक्तिकाल के सगुणोपासक राम भक्त कवियों में सर्वश्रेष्ठ गोस्वामी तुलसीदास ही हैं । तुलसी ने राम के अवतार के संबंध में इसप्रकार लिखा है :-

जब - जब होई धरम के हानि, बाढहि असुर अधम अभिमानी ।
करहि अनीति जाई नही बरनी, सीदहिं विप्र धेनु सुर धरनी ।
तब-तब प्रभु ××××× धरी मनुज सरीरा, हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा ।[2]

धर्म की हानि और अधर्म की उन्नति होते वक्त - प्रभु श्रीराम सज्जन की पीडा को खत्म करने के लिए अवतार लेते हैं ।

भगवान विष्णु के दो अवतार है राम और कृष्ण । इसलिए सगुण भक्त ने दोनों अवतारों का वर्णन किया है । जैसे सूरदास और मीरा । सूरदास ने कृष्ण के समान राम की बाललीलाओं का सुन्दर वर्णन किया । लेकिन इस वर्णन में एक प्रकार की समन्वय भावना है । "सूर ने लीला और मर्यादा- से समन्वित लोकसंग्रह की भावना से ओत-प्रोत रामचरित का अत्यंत सजीव अंकन किया है । हिन्दी रामकाव्य में राम के बाल रूप की प्रतिष्ठा

---

1. नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास - पृ. 153
2. तुलसीदास - रामचरितमानस - पृ. 228

सर्वप्रथम सूर ने ही की । राम ऐश्वर्य विभूतियों का स्वामी है । उनका हरेक रूप निराशा और उत्पीडन के आवर्तों में दम तोडते मानव को आशा का सम्बल तथा आत्मविश्वास देता है।[1] इसप्रकार सूर के राम मर्यादापुरुषोत्तम, लोकरक्षक, भक्तवत्सल है ।

राम भक्ति के निर्गुणोपासकों की परंपरा में विद्यापति को भी डा.नगेन्द्र ने माना है । नगेन्द्र अपने इतिहास में "रामकथा विषयक विद्यापति के अभी तक चार पाँच जितने भी पद उपलब्ध हुए हैं, उनसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि उन्होंने शिव और शक्ति, राधा और कृष्ण के साथ-साथ सीता और राम के प्रति भी भक्ति-भावना से द्रवित होकर अनेक पदों की रचना की होगी । रामकथा संबंधी इन उपलब्ध पदों में शिव के आराध्य शरणागत-प्रतिपालक राम की स्तुति तथा सीता के साथ उनके परिणय-प्रसंग का वर्णन है ।"[2]

अन्य रामभक्त कवियों में स्वामीरामानंद, अग्रदास, ईश्वरदास है । सेनापति, प्राणचन्द चौहान, माधवदास चारण, हृदयराम, नरहरि-बारहट, लालादास, कपूरचन्द त्रिरव, आदि को भी रामभक्त कवियों की कोटि में रख सकते हैं ।

आदर्श मानव राम ने सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिव सभी क्षेत्रों में आदर्श को ही प्रस्तुत किया । उनके व्यवहार में मानवोचित और देवोचित प्रवृत्तियाँ देखने को मिलती है । राज्याभिषेक के अवसर पर राम ने संतोष और अभिषेक-विघ्न में संताप प्रकट नहीं किया । आदर्श को

---

1. डा.ब्रह्मशंकर पुरुषोत्तम व्यास - हिन्दी काव्य में राम का स्वरूप और तत्वदर्शन - पृ. 96
2. डा.नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास - पृ.208

छोडकर उनके संपूर्ण जीवन में एक भी पल नहीं देख सकते । अत्यंत कुपित क्षत्रियांतक परशुराम के सामने राम का आदर्श रूप और व्यवहार देखिए :-

श्रुत्वा तु जामदग्न्यस्य वाक्यं दशरथिस्तदा ।
गौरवाद्यन्त्रितकथः पितु राममथाब्रवीत् ।।
कृतवानसि यत् कर्म श्रुतवानस्मि भार्गव ।
अनृ ण्यामहे ब्रह्मान् पितुरानुण्यमास्थितः ।।
वीर्यहीनामिवाशक्तम् क्षत्रधर्मेण भार्गव ।
अवजानासि मे तेजः पश्य मेऽधपराक्रम ।।[1]

अर्थात् श्रीरामचन्द्रजी अपने पिता के गौरव का ध्यान रखकर कुछ नहीं बोल रहे थे, लेकिन परशुराम की बात सुनकर उन्होंने कहा, भृगुनन्दन ब्रह्मान् अपने पिता के ऋण से उऋण होने के लिए पिता के हत्यारे का वध करके वैर का बदला चुकाने की भावना लेकर जो क्षत्रिय-संहार रूपी कर्म किया, उसे मैं ने सुना है और हम लोग आप के उस कर्म का अनुमोदन भी करते हैं । भार्गव, मैं क्षत्रिय धर्म से युक्त हूँ तो भी आप मुझे पराक्रमहीन और असमर्थ सा मानकर मेरा तिरस्कार कर रहे हैं ।

राम द्वारा परशुराम के चाप चढाकर प्रत्यंचा पर बाण चढाकर परशुराम के दंभ का भग्न किया । अपने दंभ-भंग में लज्जित परशुराम राम से क्षमा माँगते हैं ।

इसप्रकार भक्तिकाल में राम चरित्र के आदर्श रूप की प्रधानता है । आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र और आदर्श राजा के रूप में उनकी आदर्शवादिता को स्पष्ट दिखाया है । राम चरित्र के आदि से

---

1. वाल्मीकिरामायण - बालकाण्डम् षट्सप्ततितमः सर्गः - श्लोक 1,2,3

अंत तक यही आदर्शवादिता के अलावा एक पल भी नहीं देख सकते हैं । रामायण से लेकर अब तक राम के समान कोई दूसरा राजा नहीं हैं । राम चरित्र की सबसे महत्वपूर्ण अंक उसके आदर्श राजा रूप ही है । इसलिए राष्ट्रपिता महात्मागांधी ने भी पथ-प्रदर्शक के रूप में श्रीराम को ही चुना है ।

रीतिकाल में परिस्थितियाँ बदल गयी । श्रृंगाररस प्रधान इस युग में राम का वर्णन भी श्रृंगार से युक्त नायक के रूप में होने लगे । रीति-काल में सेनापति ने अपने काव्य में राम का चरित्र-चित्रण एकपत्नीव्रती नायक के रूप में किया है । माधुर्य भक्ति के अंतर्गत राम-जानकी युगल क्रीडाओं की प्रमुखता है । इनमें राम के दैविक रूप की अपेक्षा मानव रूप की प्रधानता है ।

आधुनिककाल में राम, युगीन समस्याओं के अनुरूप चित्रित होने लगे । इनमें राम केवल प्रतीक रूप में चित्रित है । अनेक समसामयिक समस्याओं और सामाजिक असंगतियों को प्रस्तुत करने के लिए आधुनिक कवियों ने राम चरित्र को ही उचित प्रतीक माना है । इसलिए राम को प्रतीक रूप में चुनकर समसामयिक घटनाओं को जनसमक्ष प्रस्तुत करने केलिए "संशय की एक रात", "प्रवाद पर्व" जैसे काव्यों की रचना हुई । विदेशी शासन से कुचलित, दम घुटनेवाले भारतीयों को शत्रु से विजय पाने के लिए राम को प्रतीक रूप में चुनकर राम की विजय को असत्य पर सत्य की विजय स्थापित किया । इससे जनसाधारण जल्दी ही यह जान सकते है कि भारत पर विदेशी शासन अनीति है । भारत पर शासन करने के लिए सिर्फ भारतीय ही होना चाहिए । अन्य विदेशी लोग नहीं है, यह अनाचार है और अनीति है । अनाचार के खिलाफ आँखें बन्द करके रहना कायरता है । इसलिए विदेशी सत्ता के खिलाफ लड़ने के लिए अपनी अपहृत स्वतंत्रता को वापस लाने के लिए एक केन्द्रीय सत्ता की आवश्यकता को आधुनिक कवियों ने राम के माध्यम से सफल सिद्ध किया । इसलिए से राम को

वीरोचित नायक मानकर काव्य लिखने लगे । लेकिन इससे यह भी जानना चाहिए कि राम की बुराईयों को छिपा रहने की कोशिश इन कवियों में है । राम की बुराईयों को भी आधुनिक कवियों ने खुल्लमखुल्ला बता दिया है । जैसे भरत-भूषण अग्रवालजी के "अग्निलीक", डा. जगदीश गुप्त के "शंबूक" आदि कृतियाँ इस संदर्भ में उल्लेखनीय है ।

रामायण :-

राम का अयन है रामायण । उस अयन का चित्रण करके आदिकवि वाल्मीकि ने जनमानस को मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम का ही नहीं संपूर्ण भारत की महिमा को दुनिया में प्रस्तुत किया । इसलिए रामायण का महत्व देशकाल के परे है । रामायण की महिमा केवल शब्दों से वर्णित करना असंभव है क्योंकि एक "राम" शब्द से एक पंडाल विश्वकवि हो गए तो रामायण की महिमा का वर्णन करने से क्या नहीं हो सकता ? आदिकाव्य रामायण की महिमा के संबंध में वाल्मीकिरामायण में वर्णन इसप्रकार देख सकते हैं :-

रामायणमादिकाव्यं स्वर्गमोक्षप्रदायकम् ।
तस्मात् घोरे कलियुगे सर्वधर्मबहिष्कृते ।।
नवभिर्दिनैः श्रोतव्यं रामायणकथामृतम् ।[1]

आदिकाव्य रामायण स्वर्ग और मोक्ष को प्रदान करने में उत्तम है । इसलिए सर्वधर्मों से रहित कलियुग में नौ दिन में इस अमृत रूपी कथा को सुनना चाहिए ।

इसके अलावा रामायण रूपी महाकाव्य समस्त बाधाओं का नाश करनेवाला और दुष्टों के पापों का नाश मिटानेवाला भी है ।

---

1. वाल्मीकिरामायण - प्रथमोऽध्यायः - श्लोक 35

आदिकाव्य रामायण वैदिक भाषा संस्कृत में है । कालांतर में विभिन्न भाषाओं में रामायण की रचना हुई । महाभारत की तुलना में रामायण सबसे लोकप्रिय है । उसमें चित्रित आदर्शों और लोकरक्षक बातों को लोग बडे ध्यान और श्रद्धा से पढते हैं । विविध भाषाओं में निरंतर रचित होने वाले रामायण, रामायण की महिमा का परिचायक है । जीवन के हरेक पहलू के लिए रामायण में आदर्श उपलब्ध होते है । आदर्श राजा, आदर्श पिता, आदर्श माता, आदर्श भाई, आदर्श पत्नी जैसे अनेक उदाहरण रामायण में उपलब्ध है । उदात्त शासन और प्रजातंत्र की सफल परिणति रामायण के अलावा अन्यत्र देखना असंभव है । रामराज्य की महिमा का वर्णन कैसे कर सकूँ ? इसके अतिरिक्त समय बदलते रहते हैं तो रामायण के मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं होता । क्रांतदर्शी वाल्मीकि के रामायण सार्वकालिक और सार्वजनिक सर्वमंगलदायक है । इसलिए आधुनिक युग के बदलते मूल्यों में भी रामायण का महत्व अक्षुण्ण रहेगा ।

इसके अतिरिक्त रामायण एक मानव व्यक्तित्व से संबंधित काव्य भी है । एक परिवार की भलाई, एक राज्य की भलाई के लिए मनुष्य के कर्तव्य निर्वहण में होनेवाली कठिनाईयों के सहज एवं मार्मिक वर्णन प्रधान काव्य है । इसलिए रामायण की महिमा विश्व भर में सराहनीय है । केवल राम की करूण कथा ही नहीं इसे तो संपूर्ण, मानव की कहानी कह सकते हैं क्योंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण परिवार, समाज सभी के प्रति उसको अपना कर्तव्य निभाना है । इसलिए राम अवतार होते हुए भी मनुष्य है । इसके कारण सभी मानुषिक कमज़ोरियों का भी उसमें होना स्वाभाविक है । इसलिए रामायण की कथा का एक प्रत्येक काल सीमा में बंधा रहना असंभव है ।

रामकाव्य का क्रमिक विकास :-

वाल्मीकि कृत रामायण देवभाषा संस्कृत में है । संस्कृत में रामकाव्य बडी मात्रा में उपलब्ध है । आदिकाल में राम को पूर्ण ईश्वर के अवतार के रूप में माना जाता है । पुराणों में हरिवंश पुराण, वायु पुराण, कूर्मपुराण आदि प्रमुख पुराण हैं । इसके अलावा अनेक अन्य पुराण भी उपलब्ध हैं जो राम के चरित्र को अवतार के रूप में स्वीकार करते हैं । अन्य पुराणों में अग्निपुराण, नारद पुराण, स्कंदपुराण, पद्मपुराण आदि हैं । पुराण सबसे प्राचीन ग्रंथ माने जाते हैं और संस्कृत भाषा से अन्य भाषाओं का जन्म भी । इस लिए अतिप्राचीन काल से राम कथा के संबंध में कविगण ज्ञात है इसमें कोई तर्क नहीं है ।

वैष्णव उपनिषदों में राम तापनियोपनिषद, रामोत्तर तापनीयोपनिषद, राम रहस्योपनिषद, सीतोपनिषद, मैथिलीमहोपनिषद आदि में भी राम कथा संबंधी विवरण मिलते हैं । इनका रचनाकाल दसवीं ग्यारहवीं शताब्दी माने जाते हैं ।

वैष्णव संहिताओं में राम-नाम महिमा, हनुमत्संहिता, शिवसंहिता हिरण्य-गर्भ संहिता, ब्रह्म संहिता, महाशंभु संहिता और महा सदाशिव संहिता आदि हैं । सातवीं या आठवीं शताब्दी की रचना योगवसिष्ठ रामायण है । इसके छः प्रकरण है - वैराग्य, प्रकरण, मुमुक्षु व्यवहार प्रकरण, उत्पति प्रकरण, स्थिति प्रकरण, उपश्याम प्रकरण और निर्वाण प्रकरण । इसमें परब्रह्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । इसमें परब्रह्म के रूप में राम की स्थापना के लिए अनेक उदाहरण है ।

"अध्यात्मरामायण" लगभग चौदहवीं-पन्द्रहवीं शती की रचना है । इसमें राम परब्रह्म के अवतार के रूप में सज्जनों की रक्षा और दुष्टजनों की हत्या केलिए अवतार लेते हैं । हरेक पात्र राम के ईश्वरीय चरित्र की पुष्टि केलिए सहायक सिद्ध होते हैं ।

"अध्यात्मरामायण" के बाद "अद्भुत रामायण" की रचना मानी जाती है । रामायण कथा को इसमें रामावतार के कारण, वाल्मीकीय रामचरित और सीता द्वारा देवी रूप में सहस्रमुख रावण का वध आदि तीन रूपों में विभाजित किया गया है । सोलहवीं शती की रचना "आनंद रामायण" नौ काण्डों में विभाजित है । ये हैं - सार काण्ड, यात्रा काण्ड, याग काण्ड, विलास काण्ड, जन्म काण्ड, विवाह काण्ड, राज्य काण्ड, मनोहर काण्ड और पूर्ण काण्ड । रामायण से इसकी विभिन्नता दो काण्डों की अधिकता है । रामायण में केवल सात काण्ड ही हैं । राम के जीवन के उत्तरार्ध को अधिक महत्व दिया जाना इसकी विशेषता है ।

"भुशुण्डी रामायण" में केवल चार खण्ड ही है जैसे पूर्व खंड, दक्षिण खण्ड, पश्चिम खण्ड और उत्तर खंड । इसलिए इसमें वाल्मीकि रामायण से समानता उपलब्ध नहीं है ।

इसके अलावा और कुछ रामायण भी है व हैं श्रीजानकी जीवनदास कृत "महा रामायण" । "वेदान्त रामायण" नामक एक रचना भी उपलब्ध है रचनाकार का नाम अज्ञात है ।

कुछ ऐसे रामायण भी उपलब्ध है जिनकी प्रामाणिकता के बारे में सन्देह है । जैसे "स्वयंभुव रामायण", "रामायण मणि रत्न", "सौयूर्य रामायण", "योन्द्र रामायण", "भैन्द रामायण", "सुवर्यस रामायण", "दुरन्त रामायण", "मंजुल रामायण", "संवृत रामायण", "लोमस रामायण", अगस्त्य रामायण", "सौपद्मरामायण", लोहार्द रामायण", "देव रामायण", "श्रवण रामायण", "रामायण महामाला" ।

अग्निवेश का "अग्निवेश रामायण" "व्यासकृत रामायण" तात्पर्य दीपिका" और "रामायण रामावतार काल निर्णय सूचिका", श्रीनिवास राघव का "रामायण संग्रह", "समयादर्श रामायण", "समय निरूपण रामायण", "शब्द रामायण" आदि भी यहाँ प्रस्ताव योग्य है ।

रामकथा संबंधी महाकाव्यों में कालिदास कृत "रघुवंश" प्रमुख है । इसका रचनाकाल 400 ई. का माना जाता है । इसके कथासूत्र में वाल्मीकि रामायण से कुछ भिन्नता है । महाकाव्य की दृष्टि से भी यह संपूर्ण महाकाव्य माना जाता है । प्रवरसेन के "भट्टीकाव्य" या "रावण वध" 500 ई. से 650 ई. के बीच माना जाता है । इसमें वाल्मीकीय रामायण के छः काण्डों की कथावस्तु के साथ व्याकरणिक नियमों के निरूपण का प्रतिपादन भी है । आठवीं शताब्दी कुमारदासकृत 'जानकी हरणम्' भी एक भट्टीकाव्य है । इसमें वाल्मीकि-रामायण के छः काण्डों की कथावस्तु है । इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता है । अभिनंद कृत रामचरित नवीं शताब्दी का महाकाव्य है ।

क्षेमेन्द्र की "रामायण मंजरी" और "दशावतार चरित" जिनका रचनाकाल सन् 1037 है । "रामायण मंजरी" कथा की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है । लेकिन "दशावतार चरित" में रामकथा 294। छन्दों में आधुनिक युग के अनुकूल चित्रित है । इसमें कथा रावण की दृष्टि से कही गई है ।

"उदारराघव" साकल्य मल्ल की रचना है । इसमें श्रृंगार रस की प्रधानता है और शूर्पणखा प्रसंग प्रमुख है । सत्रहवीं शताब्दी की रचना "जानकी परिणय" जिसके रचनाकार चक्र कवि है । आठ सर्गों की इस कृति में दशरथ की पुत्रकामेष्टि यज्ञ से लेकर परशुराम गर्व भंग तक की कहानी है । "राघवोल्लास" नामक कृति अद्वैत कवि द्वारा सन् 1625 में रचित है । स्तुति और विरक्ति प्रधान इस कृति को तुलसीदास की समसामयिक माना जाता है ।

रामायण पर आधारित खंडकाव्यों में वेंकटनाथ का "हंस संदेश", नैयायिक रूद्र वाचस्पति का "भ्रमर दूत", वासुदेव का "भ्रमर संदेश", बेंकटाचार्य का "कोकिल सन्देश", कृष्णचन्द्र तर्कालिकार का "चन्द्रदूत" हरिशंकर का "गीता राघव" हमृर्थाचार्य का "जानकी गीता" "रामगीत गोविन्द" "प्रभाकर" आदि हैं ।

अन्य काव्य रूपों में संध्याकर नंदि का "रामचरित", धनंजय का "राघव-पांडवीय", माधव भट्ट का "राघव-पांडवीय", हरदत्त सूरि का "राघव-नैषधीय", चिदंबर का "राघव-पांडव-यादवीय", गंगाधर महाडकर का "संकट नाशन स्तोत्र" सूर्यदेव का "राम-कृष्ण विलोम काव्य", बेंकट दवारिन का "यादव राघवीय", कृष्ण मोहन का "राम लीलामृत" बेंकटेश का "चित्रबंध रामायण" आदि ।

रामायण पर आधारित नाटकों के संबंध में भी काफी विवरण मिलते हैं जो हमारे अध्ययन की सीमा में नहीं आते । जैसे भास कृत "प्रतिमा नाटक" और "अभिषेक नाटक" है । भवभूति कृत "महावीर चरित", "उत्तर रामचरित", दिंगनाग कृत "कुन्दमाला", मुरारि कृत "अनर्घराघव" राजशेखर कृत "बाल रामायण" शक्ति भद्र कृत "आश्चर्य चुडामणि", जयदेव कृत "प्रसन्न राघव"

हस्ति मल्ल कृत "मैथिली कल्याण", सुभट्ट कृत "दूतांगद", भास्कर भट्ट कृत "उन्मत्त राघव", व्यास मिश्र देव कृत "रामाभ्युदय", "अद्भुत दर्पण" और "जानकी-परिणय" आदि । अपने व्यापक अर्थ में नाटक भी काव्य है ।

हिन्दी साहित्य के आदिकाल में रामकाव्य

हिन्दी के प्रथम रामकाव्य का श्रेय राहुल सांकृत्यायन ने स्वयंभू कृत "पउमचरिउ" को ही दिया है । यह रचना अपभ्रंश भाषा में रचित महाकाव्य है और आठवीं शती का ग्रंथ माना जाता है ।

मिश्रबन्धुओं के अनुसार "पृथ्वीराज रासो" हिन्दी के प्रथम रामकाव्य है क्योंकि इसमें मंगलाचरण के अंतर्गत राम का उल्लेख उपलब्ध है । इसमें रामजन्म से शुरू होकर रावण-वध के बाद सीता की प्राप्ति तक की कहानी है ।

पूर्व मध्यकाल में रामकाव्य

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल में रामकाव्य सृजन में प्रमुख स्थान स्वामी रामानंद को देना अनुचित नहीं है । उनकी रचनाएँ "रामरक्षा स्तोत्र" और "श्रीरामार्चन" पद्धति है । इसके अलावा अग्रदास के "ध्यान मंजरी", "अष्टयाम", "राम भजन मंजरी", "उपासना बावनी" और "पदावली" है । राम की भक्ति में रसिकता लाने का प्रयत्न इनकी विशेषता है । अष्टयाम चर्या में राम की लीलाओं का वर्णन उपलब्ध होता है । राम की अलौकिकता को स्पष्ट करना कवि का लक्ष्य है । ईश्वरदास की कृतियाँ "भरत मिलाप" और "अंगद-पैज" हैं । "भरत मिलाप" में राम के वनवास के समय अनुपस्थित होने के कारण भरत के विलाप और राम से उसके मिलन तक की कथा है । "अंगद-पैज" में रावण-सभा में अंगद की वीरता का वर्णन है ।

भक्तिकाल के सबसे श्रेष्ठ सगुण कवि तुलसीदास है । "रामचरितमानस" नामक उनकी रामकथा रूपी अमृत से जीवन की सार्थकता पानेवाले लोग अनेक हैं । यह तो "नानापुराणनिगमागम" है ही । इस ग्रंथ की विशेषता है पुष्पवाटिका प्रसंग का अवतरण जो तुलसी के मौलिक उद्भावना है । तुलसी की समन्वयात्मक भावना इस काव्य में आद्योपान्त उपलब्ध है । तुलसीदास ने राम कथा के माध्यम से भारतीय जनता को पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक आदर्श स्पष्ट रूप से दिखाया है ।

इसके अलावा रामचरित पर आधारित अन्य तुलसी काव्य है "रामलला नहछु", "वैराग्य संदीपिनी", "बरवै रामायण", "जानकी-मंगल", "रामाज्ञा प्रश्न", "दोहावली", "कवितावली", "गीतावली", "विनयपत्रिका" आदि ।

"रामलला नहछु" में 20 छन्द में कथा वर्णित है । काव्य सौष्ठव की दृष्टि से इसमें कोई विशेष महत्व नहीं हैं । "बरवै रामायण" की विशेषता बरवै छन्द में रामकथा का वर्णन है । "जानकी-मंगल" विदेह राज्य में सीता स्वयंवर की तैयारियों से प्रारंभ होकर सीता विवाह के बाद अयोध्या लौटने के प्रसंग तक समाप्त हो जाते हैं । जनक की निराशाजनित वाणी के खिलाफ लक्ष्मण का क्रोध और विवाह के बाद परशुराम से मिलन का वर्णन भी इसमें उपलब्ध है । "दोहावली" में दोहा छन्द में रामकथा पायी जाती है । विनयपत्रिका अपने आराध्य देव राम से विनय समर्पण है । इसमें राम भक्ति की प्रधानता है । यह तो तुलसीजी की अंतिम रचना मानी जाती है ।

इसप्रकार संपूर्ण तुलसी काव्य की महिमा देखकर आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है "भारतवर्ष का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो । भारतीय जनता में नाना प्रकार की

रस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएँ, जातियाँ, आचार-विचार और द्धतियाँ प्रचलित हैं । तुलसीदास स्वयं नानाप्रकार के सामाजिक स्तरों में ह चुके थे..... उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है । उसमें वल लोक और शास्त्र का ही समन्वय नहीं है । गार्हस्थ्य और वैराग्य का, क्ति और ज्ञान का, भाषा और संस्कृति का, निर्गुण और सगुण का, पुराण ौर काव्य का, भावावेग और अनासक्त चिन्तन का समन्वय "रामचरितमानस" आदि से अन्त तक उपलब्ध है ।"[1]

रामायण पर आधारित अन्य काव्यों में नाभादास कृत अष्टायाम" और रामभक्ति विषयक पद उल्लेखनीय हैं । प्राणचन्द चौहान "रामायण महानाटक" है । यह एक संवाद प्रधान महाकाव्य है । माधवदास ारण कृत "रामरासो" और "अध्यात्मरामायण" है । हृदयराम के "हनुमन्नाटक" ारहरी बारहट कृत "पौरूषेय रामायण", लालादास के "अवधविलास" कपूरचन्द त्रेरवा के "रामायण" आदि है ।

•

कृष्णभक्त कवियों के द्वारा भी रामकाव्य रचना हुई है जैसे ूर, मीरा और विद्यापति के पद । सूरसागर के पहले और नवें स्कन्धों में ामकथा संबंधी पद पाये जाते हैं । सूर ने राम को सभी की पीडा खत्म रनेवाले अवतार के रूप में चित्रण किया है ।

आजु दशरथ के आंगन भीर ।
ये भू-भार उतारन कारन, प्रगटे स्याम सरीर ।।
परिरंभन हंसि बदे परस्पर आनन्द नैननि नीर ।।
त्रिदस नृपति रिषि व्योम पिमाननि देखत रह्यो न धीर ।
त्रिभुवननाथ दयालु दरस दै हरी सबन की पीर ।[2]

---

1. आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी - हिन्दी साहित्य - पृ. 235
2. सूर रामचरितावली - पद-4

यहाँ सूरदास राम को सब लोगों की पीडा मिटाने केलिए अवतार लेनेवाले परब्रह्म मानते हैं ।

मीरा राम को भी कृष्ण की तरह अपने प्रियतम के रूप में स्वीकार करती है और प्रार्थना करती है -

मेरे प्रियतम प्यारे राम कूं लिख भेजूं दे पाती
लागी मोहि राम खुमारी हो ।

यहाँ जीवात्मा और परमात्मा की रहस्यमयता भी दृष्टव्य है । निर्गुण राम भक्त कवियों में कबीर प्रसिद्ध है । कबीर ने "बीजक" नामक ग्रंथ में राम के संबंध में लिखा है । लेकिन निराकार निर्गुण परब्रह्म के रूप में राम को वे स्वीकार करते हैं । नगेन्द्र मीरा को भी इस कोटि में मानते हैं और मलूकदास को भी । मलूकदास की रचनाएँ हैं - "रामावतारलीला", "ब्रजलीला" और "ध्रुवलीला" ।

भक्तिकाल की कृतियों में भक्ति की प्रधानता है । इसलिए इसमें जनमानस को संतोष प्रदान करने केलिए राम-सीता की अलौकिकता को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । राम-सीता को अवतार मानकर अपनी भक्ति प्रकट करने के लिए जनमानस में एक प्रकार का संतोष पाये जाते हैं । इसलिए भक्तिकाल की रचनाओं में भक्ति के साथ साथ एक प्रकार की शांति भी देख सकते हैं ।

उत्तर मध्यकाल में रामकाव्य

रीतिकालीन रामकाव्य भक्तिकाल की अपेक्षा कम महत्वपूर्ण है । इसमें राम का श्रृंगारी रूप ही कविगण पसन्द करते हैं । इसलिए इस

---

1. मीरा मन्दाकिनी - पद 53,7

युग के रामकाव्यों में श्रृंगार रस की प्रधानता है । इस काल की एक रचना है "रामचन्द्रिका" जो आचार्य केशवदास कृत है । डा. नगेन्द्र की राय में "भक्तिकाल के इतर रीति-निरूपकों की तुलना में व्यापक विवेचन क्षेत्र को ग्रहण करते हुए प्रखर पाण्डित्य, आचार्यत्व के गांभीर्य, स्वतंत्र चिन्तन एवं असाधारण प्रतिभा द्वारा परवर्ती कवियों को प्रभावित करने तथा उनसे उचित सम्मान प्राप्त करने के कारण आचार्य केशव "रीतिकाल का प्रवर्तक" कहलाने के सहज अधिकारी कहे जा सकते हैं ।"[1] केशवदास को और उनकी रचना को रीतिकाल में प्राधान्य मिला है ।

रामचन्द्रिका में श्रृंगार रस प्रधान स्थलों का मार्मिक वर्णन है । रीतिकाल के रामकाव्य में सेनापति के "कवित्त-रत्नाकर" भक्ति और श्रृंगार प्रधान काव्य है । लालादास के "अवध विलास" सीता और राम की लीलाओं को महत्व देनेवाली रचना है । गुरू गोविन्दसिंह के "गोविन्द रामायण" रामायण पर आधारित एक महत्वपूर्ण काव्य है । "अवधसागर" जानकीरसिकशरण का काव्य है । इस काव्य की विशेषता कृष्णभक्ति की शैली का अनुसरण है । "हनुमत्पच्चीसी" भगवन्तराय खीची की रचना है । इस रचना में हनुमान के चरित्र संबंधी पच्चीस कवित्त हैं । जनकराजकिशोरीशरण की रचनाएँ है "सीतारामसिद्धांत", "मुक्तावली", "सीतारामरसतंरगिणी", "जानकीकरूणाभरण" "रघुवरकरूणाभरण" आदि । रसिक संप्रदाय के कवि रूप में इनकी गणना है । नवलसिंह ने अनेक रामकथा संबंधी रचनाएँ की है जैसे "रामचन्द्रविलास", "आल्हारामायण", "अध्यात्मरामायण", "रूपक रामायण", "सीता स्वयंवर", "रामविवाहखंड", "नाम रामायण", "रामायण सुमिरनी", "मिथिला खंड"आदि । विश्वनाथ सिंह की रचनाएँ हैं "रामायण", "गीति रघुनन्दन प्रामाणिक", "रामचन्द्र की सवारी", "आनन्दरघुनन्दन", "आनन्दरामायण", "संगीत रघुनंदन"

---

1. डा. नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास - पृ. 248

सभी रचनाएँ संत काव्य परंपरा का अनुसरण करती है । इनमें ब्रज भाषा की प्रधानता है । रामप्रियशरण ने सीता चरित्र को महानता देकर "सीतायन" नामक काव्य का सृजन किया । इसमें सीता और सखियों के चरित्र वर्णन की प्रधानता है । रसिक अली की रचना है "मिथिलाविहार" । इसमें श्रीराम के मिथिलागमन और मिथिला की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन है । कृपानिवास ने "भावनापच्चीसी", "समयप्रबन्ध", "माधुरी प्रकाश" और "जानकी सहस्रनाम" नामक चार ग्रंथों की रचना की है । इनमें "माधुरी-प्रकाश" में राम और सीता की शारीरिक सुषमा का वर्णन प्रधान है ।

रीतिकाल के कुछ प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ हैं :- जानकीशरण की रचना "सियारामसंजरी" है । बालअली जू कृत "नेहप्रकाश" है । गोकुलनाथ की प्रमुख रचना "सीतारामगुणार्णव" है । मनियारसिंह की तीन रचनाएँ हैं "हनुमतछब्बीसी", "सौंदर्यलहरी" तथा "सुन्दरकाण्ड" । तीनों काव्यों में व्रजभाषा की प्रधानता है । ललकदास के रामचरित्र प्रधान ग्रंथ है "सत्योपाख्यान" । यह काव्य वर्णन प्रधान व्रजभाषा काव्य है । गणेश कवि ने वाल्मीकिरामायण के बालकाण्ड से किंष्किधाकाण्ड तक की कथा को लेकर "वाल्मीकिरामायण श्लोकार्थ प्रकाश" नामक ग्रंथ की रचना की । इनकी और एक रचना हनुमतपच्चीसी नाम से विख्यात है ।

इसके अलावा ड. नगेन्द्र ने अपने इतिहास में भारतेन्दु पूर्व धारा में कुछ और रामकाव्यों का प्रतिपादन भी किया है । जैसे भक्तिकाव्य के अंतर्गत रीवाँ नरेश रघुराज सिंह के "रामस्वयंवर", "भक्तिविलास" और "रामरसिकावली" है । "रघुनाथ रामसनेही" कृत दोहा-चौपाई शैली में रचित "विश्रामसागर" इसके अंतर्गत उपलब्ध हैं । सरदार कवि के "रामलीला" प्रकाश और राम-रत्नाकर भी है । काष्टजिह्वा के रामभक्ति परक स्फुट पद तथा गोपालचन्द्र गिरिधरदास कृत रामकथामृत है ।

काव्य रीति निरूपण ग्रंथ के अन्तर्गत बैजनाथ द्विवेदी के "सीतारामाभरण" नामक अलंकार ग्रंथ और "राम रहस्य" नामक श्रृंगार रस प्रधान ग्रंथ है ।

आधुनिक युगीन रामकाव्य

आधुनिककाल को भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद युग और छायावादोत्तर अधुनातन युग जैसे चार कालों में विभाजित किया गया हैं । सबसे पहले हम भारतेन्दु युग के रामकाव्यों के बारे में चर्चा करेंगे । हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग का प्रारंभ भारतेन्दु युग से माना जाता है । आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी के अनुसार इनका समय सन् 1857 ई. से सन् 1900 तक है । इस काल में रामकथा संबंधी कई ग्रंथों की रचना हुई है ।

इसकाल के भक्ति प्रधान रामकाव्य है हरिनाथ पाठक की रचना "श्रीललित रामायण", अक्षयकुमार की रचना "रसिकविलास रामायण" और बाबु तोताराम की रचना "राम-रामायण" ।

श्रृंगार प्रधान काव्यों में राधाकृष्णदास की "रामजानकी कविता" और हरिनाथ पाठक का "ललित रामायण" है ।

रीति-निरूपण को महत्वपूर्ण स्थान देकर रचित रामकाव्यों में लछिराम के "रामचन्द्र भूषण" जो अलंकारशास्त्र प्रधान और "रावणेश्वर कल्पतरू" काव्यांग निरूपण प्रधान ग्रंथ हैं ।

"दशरथ विलाप" भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की रचना है । इसका रचनाकाल सन् 1876 ई. है । इसकी विशेषता है कि यह खडीबोली की

थम कविता मानी जाती है । भारतेन्दु युग के अन्य रामकाव्यों में श्रीजगन्नाथ साद भानु के "नव पंचामृत रामायण", बालमुकुन्द गुप्त के "रामस्तोत्र" आदि ह ।

इसकाल में उपलब्ध रामकथा संबंधी अन्य रचनाएँ हैं - मदन भट्ट के "रामरत्नाकर", राजा फतह सिंह वर्मा के "रामचन्द्रोदय" शिवप्रसाद के "रामराज्याभिषेक" शीतल प्रसाद सिंह के "सीताराम चरितामृत" आदि ।

भारतेन्दु युग भाषा की दृष्टि से ब्रजभाषा काल था । इसलिए इस काल के ब्रजभाषा काव्य भी उल्लेखनीय है । श्रीबद्रीनारायण चौधरी का "प्रयोग रामागमन" और श्रीविनायक राव का "अयोध्यारत्नभण्डार" है और सुधाकर द्विवेदी के वन-विहार पंचनदी में भी रामचरित संबंधी ब्रजभाषा पद उपलब्ध हैं ।

द्विवेदी युग

भारतेन्दु के समान एक युगसृष्टा साहित्यकार है आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी । डा. नगेन्द्र के शब्दों में "हिन्दी कविता को श्रृंगारिकता से राष्ट्रीयता, जड़ता से प्रगति तथा रूढ़ि से स्वच्छन्दता के द्वार पर ला खडा करनेवाले बीसवीं शताब्दी के प्रथम दो दशकों का सर्वाधिक महत्व है ।[1] द्विवेदी के मार्ग निर्देश से हिन्दी साहित्य में विविध प्रकार की साहित्य सामग्रियाँ उपलब्ध हो गयी । खडीबोली में गद्य और पद्य दोनों सरलता से लिखने के लिए व्याकरणिक नियम परिमार्जित करने लगे । इस युग में अनेक महान कवियों के महत्वपूर्ण योगदान से हिन्दी साहित्य भण्डार अमूल्य बन गया ।

---

1. डा. नगेन्द्र - हिन्दी साहित्य का इतिहास - पृ. 496

द्विवेदीजी कृत "रघुवंश" का गद्यानुवाद उपलब्ध है । लाला भगवान दीन की "रामचरणांक माता", रामायण के दोहों पर कुंडलियाँ, कवित्त, रवैये भी मिलते हैं । लाला भगवान दीन की अन्य रचनाएँ हैं - "श्रृंगार शतक", "रामगियाश्रम" । राय देवी प्रसाद पूर्ण की "राम-रावण विरोध", "चंपू" और "राम का धनुर्विद्या शिक्षण" मिश्रबंधु का "लव-कुश चरित", गयाप्रसाद शुक्ल सनेही का "राम-वन-गमन", "लक्ष्मण मूर्छा" या "बंधु विलाप", "कौशल्या-विलाप", "अशोकवाटिका में सीता", मन्नन द्विवेदी की गजपुरी की धनुष भंग, "लक्ष्मणकुमार", अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध "बार-बार सौमित्र", "सुतवती सीता", "सती सीता", राम नरेश त्रिपाठी का "राम", मैथिलीशरण गुप्त का "रामचन्द्र का गंगावतरण" मुकुटधर शर्मा पाण्डेय की "कैकेयी का पाट्य" और नाथुराम शर्मा शंकर की "रामलीला" पवित्र राम-चरित्र आदि इस काल की स्फुट रचनाएँ हैं । पं. रामचरित उपाध्याय के "रामचरितचन्द्रिका" और "रामचरितचिन्तामणि" भी रामकाव्य है । इन दोनों ग्रंथों की एक पूर्ववर्ती रचना है जो "रामचरितावली" नाम से विख्यात है । श्रीविष्णु द्वारा लिखित "सुलोचना सती", मैथिलीशरण गुप्त का गीति नाट्य "लीला", "पंचवटी", "साकेत" आदि पं. बलदेवप्रसाद मिश्र का "कोशल-किशोर", हरिऔध जी का "वैदेहीवनवास" भी है ।

इस युग की ब्रजभाषा रचनाएँ है "रामचन्द्रोदय", "भरत भक्ति" और "कोशलेन्द्र कौतुक" है । इसके अतिरिक्त कुछ रचनाएँ है - "रामविलाप", राजा रमेशसिंह का काव्य हैं । सप्तकाण्ड रामायण मदन गोपाल सिंह की रचना है । "रामायण" नाथाराम गौड की कृति है । "संक्षिप्त रामचरितम्" धरणीधर शास्त्री कृत रचना है । "चित्रकूट चित्रण" विद्या-विभूषण विभु की रचना है । "श्रीसीताराम चरितायन" सीतलसिंह गहरवार कृत रचना है ।

द्विवेदी युग की रचनाओं में राष्ट्रीय जागरण और देशप्रेम की महत्ता हम देख सकते हैं । भारतेन्दु युग से बढ़कर द्विवेदी युग में इस काल की रामायण पर आधारित रचनाओं का उद्देश्य समाज सुधार, चरित्रों का नव निर्माण, राष्ट्रीय एकीकरण आदि स्पष्ट है ।

छायावादी युग

छायावाद द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया स्वरूप प्रारंभ हुआ । छायावाद नयी धारणाओं और अभिव्यंजना की नयी प्रणाली को लेकर हिन्दी साहित्य में प्रत्यक्ष हुआ । छायावादी काव्य की सबसे बड़ी विशेषता वैयक्तिकता है । इसलिए व्यक्ति को महत्वपूर्ण स्थान देकर काव्यसृजन प्रारंभ हुआ इसलिए छायावादी काल में रचित रामकाव्य भी इससे बच नहीं सका । इस काल में रचित रामकाव्य व्यक्तिप्रधान सिद्ध होते है "राम की शक्तिपूजा" जैसी अतुलनीय व्यक्ति प्रधान काव्य छायावाद की देन ही है ।

रामचरित उपाध्याय की रचना "रामचरित चिन्तामणि" सन् 1920 ई. में रचित है । यह महाकाव्य रामकाव्य परंपरा में नयी धारणाओं से युक्त प्रथम कृति मानी जाती है । इसके बाद "सुलोचना सती" नामक श्रीविष्णु की रचना है । यह काव्य मेघनाद की पत्नी सुलोचना को महत्वपूर्ण स्थान देकर रचित काव्य है । सुलोचना चरित्र पर आधारित प्रथम कृति की महिमा इसको उपलब्ध है । काशीप्रसाद दुबे की "वियोगिनी सीता", सीता चरित्र को विशेषता देनेवाली कृति है । मैथिलीशरण गुप्तजी की "पंचवटी" शूर्पणखा को महत्व देनेवाली रचना है । इसके बाद बालकृष्णशर्मा "नवीन" जी का "ऊर्मिला" महाकाव्य है । काव्य के नाम से स्पष्ट है कि यह रामायण में उपेक्षिता ऊर्मिला की चारित्रिक गरिमा को बढा-चढाकर कहनेवाली अमर कृति है ।

लदेवप्रसाद मिश्र के "कौशल किशोर" राम जन्म से लेकर राम राज्याभिषेक तक ी कहानी का काव्यरूप है । इसमें कवि ने अनेक मौलिकताओं को जोडकर ाव्य को युगानुरूप बना दिया ।

छायावाद की अमर रचना निराला की "राम की शक्तिपूजा" । राम के वैयक्तिक संघर्षों को साधारण मनुष्य के संघर्षों से समता स्थापित करके कवि ने मनुष्य की शक्ति को अनुपम बना दिया ।

सुमित्रानुदन पंतजी के दो गीति काव्य है "लक्ष्मण" और "अशोकवन" । लक्ष्मण "स्वर्णधूली" काव्यसंग्रह से लिया गया है । इसमें लक्ष्मण की चारित्रिक महिमा का वर्णन है । "अशोकवन" को एक लघु रामायण माना जा सकता है । इसमें रामायणकी प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन उपलब्ध है ।

निरालाजी का पंचवटी प्रसंग भी छायावाद की रामकाव्य परंपरा में उपलब्ध है । इसमें पंचवटी की घटना का अनुपम वर्णन उपलब्ध है ।

छायावादोत्तर अधुनातन युग :-

छायावाद के बाद की सभी रचनाओं की चर्चा छायावादोत्तर अधुनातन युग की रचनाओं के अंतर्गत हमने लिया है । इसकाल की प्रमुख रचनाएँ है - गोविन्द विनीत की "प्रिया या प्रजा" (1937) जिसमें पत्नी के प्रति और प्रजा के प्रति कर्तव्य पालन के लिए दम घुटनेवाले राम चरित्र का वर्णन है । "कैकेयी", कैकेयी चरित्र के कलंक को दूर करनेवाली रचना है । श्रीबलदेवप्रसाद मिश्र के द्वारा रचित "साकेत-संत" भरत और माण्डवी चरित्र को महत्व देनेवाली रचना है । कैकेयी चरित्र को महत्वपूर्ण स्थान देनेवाली और एक रचना केदारनाथ मिश्र प्रभात की "कैकेयी" है । गोकुलचन्द्र शर्मा के "अशोकवन"

सीता चरित्र पर प्रधानता देनेवाली रचना है । विदेह राजा जनक को महत्व देनेवाला एक महत्वपूर्ण काव्य है पोद्दार रामावतार अरूण के "विदेह" महाकाव्य । "अंतरमंथन" नामक काव्य कैकेयी, सीता, रावण और राम के अंतर मंथन को व्यक्त करनेवाली एक महत्वपूर्ण रचना श्री उदयशंकर भट्ट की कृति है । बलदेव प्रसाद मिश्र के "रामराज्य" रामराज्य की महिमा को व्यक्त करनेवाली रचना है । सीता चरित्र की महिमा और आधुनिक नारी के रूप में सीता चरित्र के वर्णन से युक्त काव्य है श्रीरघुवीरशरण मिश्र की "भूमिजा", श्रीनरेश मेहता के "संशय की एक रात" राम को आधुनिक मनुष्य के रूप में चित्रण करके उनके मानसिक तनावों और प्रजा के प्रति कर्तव्यभावना को व्यक्त करते है। "नंदीग्राम" काव्य में गयाप्रसाद द्विवेदी ने भरत चरित्र की महिमा को ही व्यक्त किया है । "सौमित्र" खंडकाव्य में माता सुमित्रा, भाभी सीता, पिता दशरथ और भ्राता राम के द्वारा लक्ष्मण चरित्र की महिमा को कवि 'रामेश्वरदयाल दुबे' ने व्यक्त किया है । सुमित्रानंदन पंतजी के पुरुषोत्तम राम में पंतजी ने अपने आराध्यदेव के प्रति अपनी भक्ति को प्रकट करके समसामयिक सामाजिक स्थितियों की ओर संकेत किया है । "शंबूक" काव्य सत्ताधारी शासक के प्रति आवाज़ उठानेवाले विपक्षी की आवाज़ के रूप में जगदीश गुप्त ने चित्रण किया है । चाँदमल अग्रवाल "चाँद", "कैकेयी" नामक महाकाव्य के द्वारा कैकेयी चरित्र की महिमा को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से जनसमक्ष प्रस्तुत करते हैं । "जानकी-जीवन" में कवि राजाराम शुक्ल ने राष्ट्रीय आत्मा रामायण के उत्तरकाण्ड की कहानी को मौलिकता के साथ चित्रित किया है । इसमें अनेक मौलिकताएँ है जैसे सीता भूमि में समा न जाकर राम के **साथ वापस** अयोध्या लौटते हैं । "अरूणरामायण" पोद्दार रामावतार अरूण ने रामायण के समान सात काण्डों में विभाजित करके अपनी मौलिकता को व्यक्त किया है । इसमें हरेक प्रसंग और चरित्र में मौलिकता दृष्टव्य है । "आँजनेय" हनुमान के चरित्र को महत्व देकर जयशंकर त्रिपाठी द्वारा रचित एक खंडकाव्य है नरेश मेहता के "प्रवाद पर्व" । प्रजातंत्र में विश्वास

नेवाले एक शासक के गुणों को व्यक्त करनेवाली रचना है । "अग्निलीक" म की बुराईयों की ओर संकेत करनेवाले सीता चरित्र की विशेषता से युक्त व्य है जो भरत भूषण अग्रवाल की रचना है । राजेश्वरी अग्रवाल की ना "सीता-समाधि" में संपूर्ण रामकथा की झलक है जिसमें अनेक मौलिकताएँ हैं ।

न्य भारतीय भाषाओं में रामकाव्य

अन्य भारतीय भाषाओं में द्रविड और आर्य भाषाओं में चित रामकाव्य हैं । द्रविड भाषा के अंतर्गत तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड, षा के राम-काव्य की गणना है तो आर्य भाषा में कश्मीरी, पंजाबी, मराती, मराठी, उड़िया, बंगला, असमिया जैसी भाषाओं में रचित ामकाव्य है ।

विड भाषा के रामकाव्य

तमिल में राम काव्य की परंपरा संघकाल के साहित्य में ो प्राप्त होते हैं । उत्तर संघकाल में "पीरपाडल" मंगलाचरण में विष्णु ुति के अंतर्गत राम से संबंधित कुछ पद मिलते हैं । इसके अतिरिक्त ईसा र्व के "पुरानानूरू", "अहंनानूरू", आदि में भी राम से संबंधित पद मिलते । ईसा की दूसरी शताब्दी में रचित "चिलपतिकारम्" महाकाव्य में ाममाहात्म्य वर्णन है । कुलशेखर अग्रवाल के "पेरूमालतिरुमोळि" में भी ाम-कथा है । राम कथा पर आधारित तमिल में प्रथम महाकाव्य कम्बन कृत कम्बरामायण" है । यह बारहवीं शताब्दी की रचना मानी जाती है । ाल्मीकि रामायण से भिन्न इसमें मौलिक उद्भावना है जैसे राम-सीता के विवाह के पहले प्रेम, रावण द्वारा पंचवटी भूभाग को तोड़कर अशोकवाटिका

में स्थापित करना और सीता को आदर पूर्ण स्थान देना आदि । उसके प्रत्येक प्रसंग एवं प्रस्तुतीकरण अनुपम है । काव्य सौष्ठव और वर्णन की लाक्षणिकता सर्वत्र दर्शनीय है तथा प्रकृति और कल्पना का सामंजस्य भी सुन्दर हुआ है । औट्टक्कूत्तर का "उत्तरकाण्ड" तमिल भाषा में मिलता है । "तक्कै रामायण" और रामायण "तिरूप्पुहल" भी इसी भाषा में रचित मानी जाती है । रामकथा संबंधी एक नाटक हैं श्री अरूण गिरिनादर का "रामनाड़हम्" पुलवर कुषन्दै को "इरावण कावियम्" पुट्टु भै पित्तन की "नारद रामायण" आदि आधुनिककाल में रचित रचनाएँ हैं । अहल्या को महत्व देकर श्री. वे. पे. सुब्रह्मण्य मुदलियार की "अहलिहै वेण्दा" है । लेकिन हिन्दी भाषा की तरह तमिल भाषा में आधुनिककाल में रामकाव्य परंपरा समृद्ध नहीं है ।

तेलुगु में रामकथा विषयक अनेक काव्य है । इनमें प्रमुख है "रंगनाथ रामायण" जो श्री गोन बुद्धा रड्डि की रचना है और यह ग्रंथ तेलुगु भाषा की प्रथम रामकथा संबंधी कृति मानी जाती है । यह तो रामायण का नकल मात्र नहीं है । कवि ने अपनी मौलिकता से लोक-कथाओं को भी इसमें स्थान दिया है । कुछ चरित्र-चित्रण में भी मौलिकता है जैसे रावण चरित्र को एक अच्छे आदर्श पात्र के रूप में इस काव्य में चित्रित किया गया है ।

भास्कर कृत "भास्कर रामायण" में छः काण्ड है लेकिन वाल्मीकि रामायण में तो सात काण्ड हैं । इसकी विशेषताएँ हैं अर्थ गांभीर्य, पद-लालित्य, नीति बोधक विषय प्रतिपादन और रस प्रधान घटनाओं की योजना । "मोल्ल रामायण" की रचयिता मोल्ल है । कवयित्रि ने इसमें अपने अराध्य देव राम के प्रति अपनी सच्ची भक्ति प्रकट की है ।

"रामायण कल्पवृक्ष" में विश्वनाथ सत्यनारायण ने अपनी रचना में कुछ मौलिक कल्पनाएँ जोड दी है । अन्य रचनाओं में तिक्कना कृत "निर्वचनोत्तर रामायण" "अध्यात्मरामायण", "संपूर्ण रामायण", "शत कण्ठ रामायण", "मोक्षगुण्ड रामायण "उत्तर रामायण", "श्रीभद्रामायण", "भानुकोंड रामायण", "उत्तर रामचरित", "दोड्ड रामायण", "बाल रामायण", "विचित्र रामायण", "दशरथी शतकम्", "रामलिंगेश शतक", "जानकी पति शतक", "राम शतक", "रघुनायक शतक", "प्रसन्नराघव शतक", "कोदण्ड राम शतक", "रामाभ्युदय", "राघव पांडवीयम्" आदि का नामोल्लेख मिलता है ।

मलयालम में रामकथा संबंधी अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं । महाकवि चीरामन् का "रामचरितम्" इस भाषा की सबसे प्राचीनतम् रचना मानी जाती है । चौदहवीं शताब्दी के "कण्णश्श रामायण" रामप्पणिक्कर की एक गीतात्मक रचना है । "रामायण चंपु" पुनम् पम्बुतिरी की चंपु शैली में रचित कृति है । इसकी कथावस्तु रामायण पर आधारित है । "अध्यात्म रामायण" तो तुंजत्तु ऐषुतच्छन्न की अमूल्य रचना है जिसका धार्मिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक महत्त्व है । केरल के लोगों के लिए प्रस्तुत रामायण उत्तर भारत में "रामचरित मानस" के समान है । यह मुक्तक गीतात्मक शैली में सात काण्डों में रचित राम-कथा है । केरलवर्मा कृत "केरलवर्मा रामायण" "वाल्मीकि रामायण" का भाषा रूपांतरण है । इनकी और एक रचना है "रावण विजयम्" । नाम से स्पष्ट है कि इस काव्य में रावण की प्रधानता है । रावण को एक श्रेष्ठ नायक के रूप में इसमें चित्रित किया है । इसके अलावा "इरूपत्तिनालुवृत्तम", कुंचननंपियार कृत "अहल्या मोक्षम्", "सीता स्वयंवरम्", "रावणोद्भवम्" बालिविजयम् आदि "तुल्लल पाट्टकल" नामक लोकनाट्य से संबद्ध है । ये रचनाएँ हास्य रस प्रधान रूप में मलयालम भाषा में सुविख्यात है । पद्मनाथ कुरूप कृत "रामचन्द्रविलासम्" एक महाकाव्य

आधुनिक काल की प्रमुख रचना है कुमारानाशान की "चिंताविष्टयाय सीता" । वल्लत्तोल की "किलिकोंचल", वयलार रामवर्मा की "मा निषाद", वी.उण्णिकृष्ण नायर की "लक्ष्मण विषाद", पल्लत्तुरामन की "रावणायनम्" आदि है । इन कृतियों में आधुनिक भावबोध की प्रधानता है ।

कन्नड में "कवि राजा-मार्ग" नामक एक लक्षण ग्रंथ है जिसमें रामकथा संबंधी विवरण उपलब्ध है । पोन्न जैन कृत "भुवनेक्य रामाभ्युदय" है । नागचन्द्र कृत "पम्प रामायण" में राम को एक अहिंसावादी के रूप में चित्रित किया है । रावण को सीतापहरण से प्रायश्चित करनेवाले एक उत्तम पुरुष के रूप में चित्रित किया है ।

इसके अतिरिक्त कन्नड भाषा की अन्य रामकथा संबंधी रचनाएँ हैं - कुमुदेन्दु मुनि के "कुमुदेन्दु रामायण", कुमार वाल्मीकि के "तोरय रामायण", वैकमात्य के "वैकमात्य रामायण", तिम्मिरस के "मार्कण्डेय रामायण" निजगुणार्य के "अद्वैतरामायण", "मूलक रामायण;" "शंकर रामायण", दिम्मामात्य के "रामाभ्युदय कथा कुसुम मंजरी", चन्द्रशेखर के "रामचन्द्रचरित", हरिदास के "मूल बाल रामायण", देवचन्द्र के "राम - कथावतार", सिद्धान्ति सुब्रह्मण्य शास्त्री के "अच्चगन्नड रामायण", रामकृष्ण राव के "श्रीरामचरित", के.आर.नरसिंहय्या के "संग्रह रामायण", नारायण के "उत्तर रामकथे", शाल्पद कृष्ण के "अध्यात्मरामायण", कवयित्रि हेलेवनकट्टे गिरियम्मा के "सीता कल्याण" सुब्रह्मण्य के "हनुभद्रा रामायण", मुद्दण के "राम पट्टाभिषेक", तिरुमल वैद्य के "उत्तर रामायण", महालक्ष्मी के "श्री राम पट्टाभिषेक", सोसले अय्या शास्त्री के "कर्नाटक शेष रामायण", के.आर.नरसिंहय्या के "रघुपति चरितं", श्री कंठ शास्त्री के "बालि" रामचन्द्र राव के "श्री रामचरित" आदि रचनाएँ हैं ।

कन्नड भाषा में उपलब्ध महाकाव्य के. वी. पुट्टप्प का "रामायण दर्शन" है । रामायण पर आधारित होते हुए भी कवि का निजी दृष्टिकोण इस काव्य की महानता का कारण है । द्रविड भाषा में कन्नड भाषा ही रामकाव्य की दृष्टि से संपन्न प्रतीत होती हैं ।

आर्य भाषा के रामकाव्य

यहाँ छः आर्य भाषाओं में रचित रामकथा पर आधारित काव्यों की संक्षिप्त चर्चा की गई है ।

काश्मीरी भाषा में प्रकाश कृत "प्रकाश रामायण", "शंकर रामायण", "विष्णु प्रताप रामायण" आदि मिलते हैं ।

पंजाबी भाषा में भी अनेक राम कथाएँ प्रचलित है । श्री राम लभाया आनंद "दिलशाद" कृत पंजाबी पद्यमय रामायण है ।

गुजराती भाषा में रामकाव्य संख्या की दृष्टि से अधिक है । भालण ने राम-बालचरित और सीता विवाह की रचना पन्द्रहवीं शताब्दी में की है । गुजराती भाषा की अन्य रचनाएँ हैं विष्णुदास के "उत्तरकाण्ड", तथा "रामायण", कर्मण मंत्री के "सीताहरण", मधुसूदन के "युद्ध काण्ड", श्रीधर के "रावण मंदोदरी संवाद", काशीसुत राय के "हनुमान - चरित्र", प्रेमानंद के "रणयज्ञ" हरिदास के "सीता विरह", "रामस्तवराज", "रामचन्द्र नी गरीबी" "राम-चरित्र", "रामनाम की महिमा", "राम-रक्षा", "अध्यात्म रामायण" "रामायणनी चन्द्रावली" रामायणनां रामावला," "रामनाधारमास," "रामराज्याभिषेक ना घोल," "राम जन्मनी गरवी," "राम विवाह नां सलोको" "रामायण" आदि हैं ।

मराठी में एकनाथ स्वामी ने "भावार्थ रामायण" नामक महाकाव्य की रचना की । आध्यात्मिकता प्रधान महाकाव्य के रूप में इस काव्य की गणना की जाती है । अन्य मराठी रामकाव्य है - श्रीकृष्णदास मुद्गल कृत "रामायण", समर्थ रामदास कृत "द्वीकाँडात्मक रामायण", श्रीमती बीणाबाई देशपाण्डे कृत "रामायण" और "सीता स्वयंवर", नागेश कृत "सीता स्वयंवर", श्रीधर स्वामी कृत "राम विजय" कवि आनंद तनय कृत "श्लोक बद्ध रामायण" कवि निरंजन कृत "रामायण", गिरिधर स्वामी कृत "रामायण" मोरोपंत अँष्टोत्तर शत रामायणं परशुराम की "रामचरित पर लावणियाँ", "रामचरित मानस" के मराठी अनुवाद ।

उडिया भाषा में भी रामविषयक अनेक काव्यों की रचना हुई है । सारलादास के "पिलंका रामायण", अर्जुन दास के "राम विभा" बलराम दास के "दाँडी रामायण", "कोत काइली", शंकरदास के "बारमासी कोइला", लक्ष्मीधरदास के "अंगद पाँडे, उपेन्द्र भैण के "वैदेहीश बिलास", तपेन्द्र के "अवना रस तरंग", विश्वनाथ खुंटिया के "विचित्र रामायण" दो टीका रामायण है वासुदेव और महेश्वर के टीका रामायण । धनंजय भंज के "रघुनाथ विलास", हलधर दास के "अध्यात्म रामायण", महादेव दास के "रामायण अनुवाद", कृष्ण सिंह के "रामायण", कृष्णचरण पट्टनायक के "रामायण", सूर्यमणि च्याउ पट्टनायक के "रामायण", कपिलन्द के "अद्भुत रामायण", कपिलेश्वर विद्याभूषण के "रामायण" । उडिया भाषा के आधुनिक काल की रामकथा संबंध रचनाएँ हैं - नन्दकिशोर बल के "तपस्विनी", "सीतावनवास", "नीलकंठ", रथ के "सीता प्रेम तरंगिणी" ।

बंगला भाषा की प्रथम रचना "कृत्तिवास रामायण" है । रघुनंदन गोस्वामी कृत "राम रसायन" बंगला भाषा की एक कृति है ।

राम गोविन्ददास के रामायण, गुणराज खाँ के "श्री धर्म इतिहास", राम जीवन स्द्र के "कौशल्य चौशिका", "सीतार वनवास", लोकनाथ सेन के लव-कुश युद्ध, द्विज तुलसी दास के "रामवर", भवानी चन्द्र के "रामेर स्वर्गारोहण", भवानीदास के "लक्ष्मण दिग्विजय", द्विज दयाराम के "रामायण", काशी राम के "रामायणी कथा", जगत् वल्लभ के "रामायण", राजा पृथ्वीचन्द्र के "भुशुंडी रामायण", फकीर राम के "लंका काण्ड", बीकन शुकदास के "अरण्य काण्ड, काशी नाथ के "कालनेमीर रायवर", चन्द्रावती के "रामायण", रामानन्द के "रामलीला", कविचन्द्र की "अंगद रवैर" आदि बंगला भाषा की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं ।

रामकाव्य की दृष्टि से असमिया भाषा भी संपन्न है । माधव कंदली कृत "रामायण", दुर्गावर कृत "गीति रामायण", अनंत कंदली माधव कृत "रामायण", शंकर देव कृत "रामायण का उत्तर काण्ड", माधव देव कृत "रामायण का आदि काण्ड", आनंत ठाकुर कृत -कीर्तन रामायण" हरिहर विप्र "लवकुश युद्ध, रघुनाथ महंत कृत "अद्भुत रामायण", गंगाराम दास कृत "सीता वनवास", भवदेव विप्र कृत "श्री रामचन्द्र अश्वमेध", श्रीचन्द्र भारती कृत "महीरावण वध", भोलानाथ दास के "श्री सीताहरण काव्य", रमाकांत चौधरी कृत "वैदेही विच्छेद" आदि असमियाँ भाषा की रामकाव्य संबंधी रचनाएँ हैं ।

निष्कर्ष :-

समस्त रामकाव्यों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि राम और रामकाव्य परंपरा अमर थी, अमर है और अमर रहेगी । संसार में अनेक भाषाओं में रामकाव्य उपलब्ध है । इससे रामकाव्य की महिमा

और व्यापक प्रभाव स्पष्ट हो जाएगा । केवल एक "राम" शब्द के द्वारा चण्डाल, आदिकवि के अमूल्य पद के अधिकारी बन चुका । इससे "राम" शब्द की पवित्रता और शक्ति विश्व में विख्यात है । इसलिए राम को अपनी रचना का उपजीव्य बनाकर कविगण ख्याति प्राप्त करते हैं । भक्तिकाल की केवल एक रचना "रामचरितमानस" के कारण महाकवि तुलसीदास अनश्वर बन गए । राम के चरित्र-चित्रण में युग और परिस्थितियों का प्रभाव स्पष्ट हो जाता है । भक्तिकाल के अवतारी परब्रह्म राम, रीतिकाल के शृंगाररसनायक के रूप में परिवर्तित होकर आधुनिककाल में अपने चारों ओर की दम घुटनेवाली परिस्थितियों में तडप-तडपकर रहनेवाले साधारण से साधारण मनुष्य बन गए ।

भारत में रामकाव्य सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है । आधुनिक मानव भी अपने हृदय की शांति के लिए रामायण जैसे पावन ग्रंथ की सहायता लेते हैं । आज के व्यस्त जीवन में परिवार के विघटन, रिश्तों के उलझन, मूल्य-च्युति, राजनैतिक अशांति सभी के लिए पथ प्रदर्शन रामायण के अलावा अन्य ग्रंथों में पाना कठिन है । विज्ञान की बढ़ती धारा को नगण्य स्थापित करने में रामायण के अमूल्य प्रसंग और पात्र कविगण को सक्षम बना देते हैं । इतका स्पष्ट प्रमाण हमें रामकाव्यों की बढ़ती धारा में अत्यंत सफल रूप में उपलब्ध है । केवल काव्य में नहीं, अपितु अनूदित और विश्लेषणात्मक रामकथा संबंधी रचनाएँ बडी मात्रा में होती रहती हैं ।

ऊर्मिला काव्य में कथानक की मौलिकता के कारण पात्रों के चित्रण में भी मौलिकता है । इसमें कथापात्रों की बहुलता नहीं है । प्रमुख पात्रों का वर्णन है । प्रमुख पात्रों में ऊर्मिला, लक्ष्मण, राम, सीता तथा गौण पात्रों में जनक, सुनयना, दशरथ, कैकेयी, कौसल्या, माण्डवी, श्रुतकीर्ति, सुमित्रा, शूर्पणखा, शांता, विभीषण, सुग्रीव भरत, शत्रुघ्न, हनुमान, सुमंत्र जैसे पात्रों का भी उल्लेख है ।

"ऊर्मिला" काव्य में श्रृंगार रस अंगी रूप में है और अंग रूप में हास्य, वात्सल्य, वीर और करुण आदि रसों का प्रयोग हम देख सकते हैं । श्रृंगार के संयोग पक्ष का वर्णन निम्नलिखित है -

रखा लक्ष्मण ने मस्तक आन
ऊर्मिला की जंघा पर । और
मूँद कर नेत्र, बढा दी भुजा
प्रियतमा की ग्रीवा की ओर ।[1]

यहाँ आश्रय लक्ष्मण, आलंबन ऊर्मिला, उद्दीपन है प्रकृति और ऊर्मिला का रूप सौंदर्य अनुभाव है मस्तक जंघा पर रखना, और भुजा की ग्रीव की ओर ले जाना, संचारी भाव है लज्जा, हर्ष आदि । इसप्रकार विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संयोग से श्रृंगार का स्थायी भाव रति पुष्ट हो जाता है ।

"ऊर्मिला" काव्य में संवादों का प्रयोग भी है । इन संवादों में गत्वरता, पात्रानुकूलता, सजीवता, भावात्मकता, वचन चातुरी, वक्तृत्व और रोचकता है ।

प्रस्तुत काव्य में भावात्मक, गीतात्मक, प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग हुआ है । निम्नलिखित पंक्तियों में ऊर्मिला काव्य की भावात्मक शैली दृष्टव्य है -

---

1. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - ऊर्मिला - पृ. 25

स्नेहाम्बुधि में नव वियोग की
भड़की बड़वानल - ज्वाला
खल-भल, खल-भल, अतल जल हुआ,
उठी वेदना विकराल ।[1]

ऊर्मिला की विरहाकुलता की तीव्रभावना इन पंक्तियों में स्पष्ट हो जाती है । "ऊर्मिला" काव्य की भाषा प्रमुख रूप से खड़ीबोली है । किन्तु इसके पाँचवाँ अध्याय व्रजभाषा में लिखा है । संस्कृत भाषा के शब्दों के अलावा तत्सम, विदेशी शब्दों का प्रयोग भी इसमें है । संस्कृत का शब्द जैसे प्रातःकाल, तद्वत, त्यक्तेन आदि ।

"ऊर्मिला" काव्य में सार, दोहा, सोरठा, मन्दाक्रान्ता, सुमेरू जैसे छन्दों का प्रयोग है । उदाहरण के लिए सोरठा छन्द ले सकते हैं ।

छंद -दोहा जल बरसत, कसकत हृदय भारी, भारो होय
बरसावत् मद रंग केतु, घन-घुनरी निचोय ।[2]

सोरठा क्षत आशा के फूल, जीवन के पथ में बिछे,
हिय की भोरी भूल, मग की कांकरियाँ भाई ।[3]

11-13 मात्राएँ इसमें उपलब्ध हैं ।

अलंकारों में अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, सन्देह, विरोधाभास, अतिशयोक्ति, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकार हैं । सन्देह का उदाहरण निम्नलिखित है -

पास पास विष्टरासीन जब ये दोनों होती है
शक्ति संपुटों में तव भासित होते दो मोती हैं
किंवा जनक-भवन में नभ से मिथुन-राशि आई हो
अथवा दामिनी की दो किरण पास पास छाई हो ।[4]

इसमें ऊर्मिला और सीता को देखकर ऐसा संदेह होता है कि दो मोती है या दामिनी की दो किरणें हो ।

---

1. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - ऊर्मिला - पृ. 177
2. वही - पृ. 405
3. वही - पृ. 435

प्रकृतिवर्णन का सुन्दर रूप भी इस काव्य में विद्यमान है । कवि ने कथानक में ऐसे अंशों की योजना की है, जहाँ वह अपने प्रकृति प्रेम को प्रस्फुटित कर सके । सीता तथा ऊर्मिला की कहानियाँ, लक्ष्मण, ऊर्मिला की विन्ध्या वन-यात्रा आदि कई स्थानों में कवि ने सुन्दर प्रकृति का चित्रण किया है । प्रकृ चित्रण में वर्णनात्मक, संवेदनात्मक, भावोद्दीपक, आलंकारिक, उपदेशात्मक आदि रूप है ।

"ऊर्मिला" काव्य में कवि का उद्देश्य काव्येर उपेक्षिता ऊर्मिला चरित्र को प्रकाश में लाना है । इसके साथ भारतीय संस्कृति की महिमा को स्पष्ट दिखाना भी उनका लक्ष्य है । इस काव्य के सृजन के संबंध में नवीनजी ने भूमिका में लिखा है - "इस ग्रंथ को मैं ने विशेषकर मनस्तर पर होनेवाली क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का दर्पण बनाने का प्रयास किया है । रामायणीय घटनाओं का राम, सीता, सुमित्रा, कौसल्या विशेषकर लक्ष्मण और ऊर्मिला के मनों पर क्या प्रभाव पडा, वे उन घटनाओं के प्रति किसप्रकार प्रतिकृत हुए आदि का वर्णन इस ग्रंथ का विषय बन गया है ।[1]

"साकेत-संत" (बलदेवप्रसाद मिश्र)

"साकेत-संत" की कथावस्तु नवविवाहित भरत-माण्डवी के प्रेमालाप से प्रारंभ होती है । ननिहाल जाने के बाद भरत का मामा युधाजित् के साथ आखेट करना, इसी वक्त मामा का भरत को सच्चे शासक की कूटनीति के बारे में समझने का प्रयास, लेकिन भरत का उससे असहमति होना, मामा के षड्यंत्र से भरत का शंकालु होना, और उनका दूतागमन के कारण अयोध्या लौटना, कैकेयी वरदान से उत्पन्न दारूण स्थिति देखकर भरत का चकित होना, पति-वियोग और पुत्र की निंदा सुनकर पश्चाताप पीडिता कैकेयी, पति को पुनर्जीवित करने में असफल कैकेयी की सती होने की इच्छा, भरत की सुसज्जित य में नगरपालकों का संशय और निवारण, चित्रकूट में राम का वापस न लौट

---

1. बालकृष्ण शर्मा "नवीन" - ऊर्मिला - भूमिका - पृ. 6

का दृढनिश्चय, भरत का उनकी पादुकाएँ लेकर आना, जैसे प्रसंगों का वर्णन है । नंदीग्राम में रहते वक्त संजीवनी बूटी लेकर चलनेवाले हनुमान को नीचे गिराकर राम का वृत्तांत सुनना, राम की सहायता के लिए उद्यत भरत को वसिष्ठजी द्वारा राम की अलौकिकता के बारे में समझाना, रामादि का वनवासोपरांत वापस आना तथा भरत-माण्डवी पुनर्मिलन से कथानक की समाप्ति होती हैं ।

"साकेत-संत" में नायक भरत है । अत्यंत भोले-भाले व्यक्ति के रूप में भरत का चित्रण प्रस्तुत काव्य में हुआ है । भरत नायक तथा माण्डवी नायिका है । कैकेयी भी एक महत्वपूर्ण चरित्र है । गौण पात्रों में युधाजित्, राम, सीता, कौसल्या, हनुमान, वसिष्ठ और मंथरा है ।

"साकेत-संत" काव्य में श्रृंगार, वीर, रौद्र, भयानक और शांत रसों का प्रयोग हैं । करूण रस का उदाहरण निम्नोद्धृत है -

झंझा से काँपे धधक उठे दावा से
क्षण में रूककर अचल हुए ग्रावा से
मस्तक पर सौ-सौ गिरि बिजलियाँ आकर
गिर पडे भूमि पर भरत सुचेत गँवा कर ।[1]

यहाँ भरत आश्रय, कैकेयी आलंबन, कैकेयी की वाणी उद्दीपन विभाव, झंझा के समान काँपना, अनुभाव, धधक उठना संचारी भाव और दुखी होकर भूमि में गिर जाना उसके स्थायी भाव को प्रकट करता है । इसप्रकार यहाँ करूण रस है ।

"साकेत-संत" में संवादों का सफल प्रयोग देख सकते हैं जैसे भरत-माण्डवी संवाद, भरत-युधाजित् संवाद, भरत-कैकेयी संवाद, भरत-राम संवाद आदि ।

इस काव्य में इतिवृत्तात्मक, नाटकीय, चित्रात्मक और गीतात्म शैली का प्रयोग हुआ है । चित्रात्मक शैली का एक उत्तम उदाहरण द्रष्टव्य है -

---

1. बलदेवप्रसाद मिश्र - साकत-संत - पृ. 47

बिजली सा उनका यान तड़पता आया,
कुछ चेतन से हो गये अवध जब पाया ।
देखी उनने सब ओर कठोर उदासी
तक्ते थे उनको मौन अवध के वासी ।[1]

यहाँ भरत के वापस आने का चित्रात्मक वर्णन हुआ है । भाषा में संस्कृत शब्दों और मुहावरों का प्रयोग भी हैं ध्वन्यात्मकता और वचन वक्रता भी "साकेत-संत" की भाषा की विशेषता है ।

दोहा, सुमेरू, पादाकुलक, पीयूष वर्ष आदि छन्दों का प्रयोग साकेत-संत में उपलब्ध है । पादाकुलक का उदाहरण निम्नोद्धृत है -

इधर दिवस भी भूमि तपा कर
बढे क्षितिज की ओर प्रभाकर
बढना था वह घटना था,
शोषक का जग से हटना था ।[2]

इसमें सोलह मात्र में चार चौकल का होना इस छन्द का पहचान है ।

अलंकारों में व्यतिरेक वृत्यानुप्रास, विरोधाभास, विषम प्रती आदि "साकेत-संत" में हैं । व्यतिरेक अलंकार को उदाहरण रूप में यहाँ ले लिय है -

तुम्हारे मुख पर जो गुरू भाव, कहाँ हिमगिरि में जमा-जमाव
तुम्हारे नयनों में जो ओज, व्यर्थ रत्नों में उसकी खोज ।[3]

प्रकृति का वर्णन अत्यंत मनमोहक ढंग से इस काव्य में हुआ है पृष्ठभूमि के रूप में, कथा को नया मोड देने के रूप में, स्वतंत्र रूप में और मानव रूप में प्रकृति का चित्रण "साकेत-संत" में है । मानवीकरण का उत्तम उदाहरण है

---

1. बलदेवप्रसाद मिश्र - साकेत-संत - पृ. 44
2. वही - पृ. 107
3. वही - पृ. 54

हज़ारों दृग-तारे निज खोल, रो रहा था आकाश अडोल
हृदय में ले अवनी की दाह व्यथित थी स्वत: अनिल की आ

यहाँ मनुष्य की भाँति आकाश का रोना और वायु के आहें भरने का चित्रण है

"साकेत-संत" के सृजनका महत् उद्देश्य भरत के चरित्र की म
को स्पष्ट दिखाना है । रामायण में भरत के चरित्र के विशद वर्णन का अभा
है । इस कमी को दूर करने के लिए कवि ने भरत चरित्र को नायक बनाकर
महाकाव्य रच डाला । वर्तमान युग की अशांति को उत्तर-दक्षिण देश के विरो
के रूप में चित्रित करके विद्वेष को भूलकर देश की अखंडता और शांति केलिए संं
भी किया है । सारी सुख-सुविधाओं को तृण के समान छोडने वाले शासक
आधुनिक शासकों के सम्मुख एक प्रश्न चिह्न है ।

"विदेह" [पोद्दार रामावतार अरूण]

जनक की स्तुति से विदेह काव्य का श्रीगणेश होता हैं । विदेह के राजमहल में निर्धन पति की इलाज केलिए आभा का आगमन और ब को परवाह न करके राजवैद्य को लेकर विदेह का उसके घर में जाना, उसके पति देहांत में उनका दुखी हो जाना, जनक के राज्य में अकाल पडने के कारण ज्योतिषियों के सलाह से जनक का हल चलाना और सीता की प्राप्ति जैसी घटनाओं का वर्णन है । सुधन्वा का सीता और शैवचाप की माँग के कारण जनक से लडाई और पराजय सीता-राम का पुष्पवाटिका में मिलन, धनुषभंग और रामादि के विवाह का वर्णन, कैकेयी की वरयाचना, वनवास की यात्र और भरत की चित्रकूट यात्रा, राम-भरत का भ्रातृप्रेम देखकर जनक का आश चकित हो जाना, जनक का भरद्वाज से सीतापहरण की खबर जानना, राव के बाद सीता को स्वीकार करने में हिचकनेवाले राम को देखकर सीता क अग्निपरीक्षा के लिए आदेश देना, सीता-राम के सुख शांतिपूर्ण जीवन

---

1. बलदेवप्रसाद मिश्र - साकेत-संत - पृ. 54

सीता परित्याग आदि का विशद वर्णन नहीं है । सीता का भूमि में समा जाना और इससे उत्पन्न पीडा के कारण सुनयना का देहांत, जनक को काममोहित बनोने के लिए उर्वशी का आगमन और पराजय तथा जनक की मृत्यु से कथा समाप्त होती है । इसके कथानक की विशेषता सीता-राम चरित्र वर्णन से बढकर जनक की कथा का यशोगान करना है । इसलिए इसमें शेष कथा गौण लगती है ।

चरित्र-चित्रण में सबसे प्रमुख जनक है जो इस काव्य का नायक है अन्य पात्रों में राम, लक्ष्मण, भरत, सुधन्वा, भरद्वाज, रावण आदि है । स्त्री पात्रों में सुनयना, सीता, ऊर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्ति, आभा जैसे पात्र हैं ।

"विदेह" में शांत रस की प्रधानता है । वात्सल्य, बीभत्स, हास और करूण रस भी इसमें अंग रूप में हम देख सकते हैं, बीभत्स रस का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है । यथा -

तन के तरू में शत शत फोडे के फूल खिले थे पीवयुक्त
अति सड़े हुए शव के समान ही निकल रही थी जीर्ण गंध ।[1]

यहाँ आलंबन कुष्ट पीडिता षोडशी, उद्दीपन है पीवयुक्त फोडे, जीर्ण गंध, आदि इस प्रकार के वर्णन से इसमें बीभत्स रस का स्थायी भाव घृणा उत्पन्न होता है ।

संवाद का सफल प्रयोग विदेह की एक महत्वपूर्ण विशेषता प्रतीत होती है । अनेक प्रभावशाली संवाद जैसे जनक-सुनयना संवाद, जनक-आभा संवाद, जनक-राजवैद्य संवाद, जनक-गार्गी संवाद, जनक-शुकदेव संवाद, जनक-ऊर्मिला संवाद आदि । जनक-गार्गी संवाद की महिमा निम्नलिखित है -

हे प्रिय विदेह ! नारी क्या है? गार्गी ने प्रश्न किया नूतन
मुस्कान पूर्ण उत्तर निकला -
नर को पवित्र जो करे वही नारी विशुद्ध
जीवन यात्रा के दो पंथी है नर-नारी

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - विदेह - पृ. 52

दोनों समानता के बन्धन में मुक्तोन्मुख है ज्योति लिये ।[1]

इसमें वर्णनात्मक शैली की प्रधानता है । गीतात्मक शैली का प्रयोग भी उपलब्ध है । अकृत्रिमता और सहजता इस काव्य की शैली की विशेषता है । सरलता और स्वाभाविकता से युक्त भाषा का प्रयोग भी हुआ है । भाषा में लाक्षणिकता की अधिकता है तो वर्णन में प्रसादात्मकता भी है । तत्सम और देशज शब्दों का प्रयोग भाषा में देख सकते हैं । प्रकृति का सुन्दर चित्रण भी प्रस्तुत काव्य में देख सकते हैं ।

प्रकृति का सहज और कोमल वर्णन काव्य सौष्ठव को अधिक मनोमोहक बनाता है । "विदेह" में प्रकृति सुषमा का चित्रांकन कवि तूलिका की सफलता का परिचायक है -

श्रावण-संध्या का सूर्य हो रहा उधर अस्त
झंकार उठ रही एक अनेकानेक बिजलियों के स्वर से
पूरब दिशि में
घन के समुद्र पर सोया है संपूर्ण गगन
धरती की अभिलाषा वर्षा से भीग रही
प्रस्तर निर्मित शुभ्रातिशुभ्र प्रसाद-द्वार पर
सजल यूथिका-लता लहलहा रही सुरभि से हो प्रमत्त ।[2]

मुक्त छन्द का प्रयोग "विदेह" काव्य की महिमा प्रतीत होती है छन्द के बन्धनों को तोडकर प्रभावपूर्ण ढंग में वर्णन कवि कुशलता का प्रमाण है । "विदेह" काव्य के संबंध में यह तथ्य बिलकुल ठीक है । अलंकारों में रूपक, विरोधाभास, विशेषण विपर्यय, आदि देख सकते हैं । विरोधाभास अलंकार यहाँ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है -

देह लेकर भी जो कि विदेह
सूक्ष्म है जो लेकर भी स्थूल ।[3]

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - विदेह - पृ. 54
2. वही - पृ. 21

यहाँ विदेह का देह लेकर भी देवरहित और स्थूल होने पर भी सूक्ष्म कहते हैं । इसमें दो विरोधी बातों का वर्णन करने के कारण यहाँ विरोधाभास अलंकार है ।

"विदेह" महाकाव्य में रामायण में उपेक्षित लेकिन महत्त्वपूर्ण पात्रों को प्रथम स्थान देना कवि का उद्देश्य है । "भोग" में योग और योग में भोग का समन्वय करके अत्यंत सफलतापूर्वक शासन करनेवाले जनक के द्वारा आधुनिक शासकों को चेतावनी देना भी चाहते हैं । आधुनिक शासकगण सत्ता एवं भोग-विलास केलिए लडनेवाले है । अपने जेब की स्थिति की ओर व्याकुल है । प्रजा हित केलिए उनके पास धन और वक्त भी नहीं । कवि ने इस तथ्य को स्वीकार करते हुए भूमिका में लिखा है - "देह के युग में "विदेह" की रचना कर मैं ने काल के हाथ में एक कमल रख दिया है, जिसकी पंखुडियों पर अतीत के कुछ ओस है औ आज की किरण बाद में इतिहास के माध्यम से विदेह का मूल्यांकन करना सहित्यिक न्याय की मर्यादा को कम करना होगा । कला की निर्झरी अपनी गति के अनुसार ही धरती पर विचरती है ।"[1]

"रामराज्य" (बलदेव प्रसाद मिश्र)

"रामराज्य" की कथावस्तु पिता के वचन पालन के लिए वन की ओर जानेवाले राम और उनकी पत्नी सीता व भ्राता लक्ष्मण से प्रारंभ होती है । गुँह से उनकी भेंट होती है और स्वागत सत्कार होता है । कैकेयी की वरयाचना, पुत्र की व्यथा से दशरथ का देहांत, अन्य सपत्नियों की दयनीय स्थिति की सूचना मात्र है । भरद्वाज आश्रम की सुव्यवस्था, ग्राम की अतिविकि योजनाएँ, ग्राम जोवन की सुख सुविधाओं का वर्णन, वाल्मीकि से मुलाकात, चित्रकूट मिलन, अगस्त्य से भेंट और उसकी सलाह से पंचवटी में रहने का रामादि का निर्णय, शूर्पणखा प्रसंग, खर दूषण त्रिशिरा का वध, सीतापहरण, राम का हनुमान सुग्रीव से मिलन, बालि-वध, हनुमान द्वारा सीता की खोज और मुलाका

---

1. पोद्दार रामावतार अरूप - विदेह - भूमिका-पृ. ।

राम-रावण युद्ध, तथा रावण-वध, सीता की अग्निपरीक्षा, राम-राज्याभिषेक और रामराज्य की महिमा से कथा को समाप्ति होती है ।

चरित्र-चित्रण में सबसे प्रमुख राम ही है । अन्य पुरुष पात्रं लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुमंत्र, वाल्मीकि, भरद्वाज, हनुमान, सुग्रीव, रावण, विभीषण आदि है । नारी पात्रों में प्रमुखता सीता को दी है । गौण ना पात्रों में कैकेयी, ऊर्मिला, कौसल्या, सुमित्रा, शूर्पणखा जैसे पात्र हैं । कथा तीव्र गति के कारण कथापात्रों के स्थूल वर्णन का अभाव इसमें हम देख सकते हैं

"रामराज्य" काव्य में श्रृंगार, हास्य, करूण, वीर और ब रस का चित्रण हम देख सकते हैं । उदाहरण के लिए यहाँ करूण रस लिया गय

पैरों तले सुमंत्र सचिव की खिसकी धरती
घोडों की हिंकार, उठ पड़ी आहें भरती ।
"मन मारे" रह गया, जुआरी "सर्वस्व-हारा"
सचिव-दृगों से बही, धडाधडा अविरल धारा ।[1]

यहाँ आश्रय सुमंत्र रामादि की वनयात्रा आलंबन, घोडों की आहें युक्त हिंका उद्दीपन, रोना अनुभाव, मन मारे रह जाना संचारी भाव है । इसप्रकार करूण रस का स्थायी भाव शोक पुष्ट होता है ।

संवाद की दृष्टि से यह महाकाव्य सफल प्रतीत होते हैं सुमंत्र, राम-गुह, राम-भरद्वाज, सीता-अनसूया, राम-भरत, हनुमान-रावण विभीषण आदि संवाद उल्लेखनीय है ।

इतिवृत्तात्मक शैली "रामराज्य" में उपलब्ध है । प्र की भूमिका में कवि ने स्पष्ट रूप में व्यक्त किया है कि यह बोलचाल क लिखित महाकाव्य है । साधारण बोलचाल की भाषा में देशज, अधिक

---

1. बलदेव प्रसाद मिश्र - रामराज्य - पृ. 32

होनेवाले ब्रज और उर्दू शब्दों का होना स्वाभाविक है । जनसमुदाय के कल्याण हेतु कवि ने बोलचाल की भाषा में लिखना उचित माना है । सीधी-सादी भाषा का सफल प्रयोग इसमें हम देख सकते हैं -

मेघनाद ने कस कर मारी संग, कि जो थी जग-विख्यात
लक्ष्मण वपु के साथ साथ ही गिरी भूमि पर काली रात ।
थमा युद्ध रावण-दल गरजा, मचा रामदल हाहाकार
विकल हुआ उर रामचन्द्र का, विचल कर उठा शोक अपार ।[1]

भाषा की सरलता के कारण इसमें एक भी शब्द कठिन नहीं देख सकते । वीर, राधिका जैसे छन्दों का सुन्दर प्रयोग रामराज्य में है । वीर छन्द का एक नमूना उद्धृत है -

पुल समुद्र पर बँध जायेगा यह थी अनहोनी सी बात,
रावण चिन्तित हुआ श्रवण कर पर था अभिमानी विख्यात,
सोचा उसने आर्य सैन्य तो है न युगल वीरों के संग,
अस्त्र-हीन किष्किंधा वानर जाने क्या लडने के ढंग ।[2]

वीर छन्द के प्रत्येक चरण में 16-15 की यति से 31 मात्राएँ होती हैं । अंत में गुरु लघु होते हैं ।

प्रकृति वर्णन की कुशलता भी "रामराज्य" में विद्यमान है । प्रकृति की रमणीयता को कवि ने निम्नलिखित रूप में चित्रित किया है -

चैत्र के दिन थे, सरस बसन्त जगत् में रहा मस्तियाँ ढाल
स्वर्ण सौरभ बिखेरता प्रात, साँझ को मणिक मुक्ता थाल ।
भर थे खग कण्ठों भरपूर, नये संगति नये सुर ताल
और सुखी डालों को हरी, किये था देकर पल्लव लाल ।[3]

---

1. बलदेवप्रसाद मिश्र - रामराज्य - पृ. 102
2. वही - पृ. 98
3. वही - पृ. 47

चैत्र मास के दिन प्रकृति में दिखाई पडनेवाली कोमलता को कवि ने चित्रमय रूप में यहाँ प्रस्तुत किया है ।

यमक, सार, असंगति आदि अलंकारों का प्रयोग प्रस्तुत काव्य में है । अलंकार उदाहरण के लिए यमक अलंकार लिया गया है -

पूर्व दिशा ने पूर्व सूचना यह सब ओर प्रसारी थी ।[1]

यहाँ पूर्व शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है । पहले पूर्व शब्द का अर्थ दिशा है तो दूसरे पूर्व का अर्थ है पहले कही गयी सूचना ।

"रामराज्य" महाकाव्य का उद्देश्य राष्ट्रीय एकीकरण और सुराज की स्थापना है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए मिश्रजी ने रामायण के कथानक को आश्रय बनाकर कल्पना की सहायता से एक सुन्दर काव्य की सृष्टि की है । इस काव्य की सृजन-प्रेरणा कवि महावीर प्रसाद द्विवेदीजी है । द्विवेदी जी ने एक पत्र के द्वारा मिश्रजी को इसप्रकार उपदेश दिया "आप सत्कवि है । बोलचाल की भाषा में एक काव्य लिखिए । उनका नाम रखिए रामराज्य "Utopia" के सदृश । काव्य का नायक कल्पित हो । उसमें प्रबन्ध का वर्णन कीजिए । उससे सिर्फ यह सिद्ध हो कि सुराज्य ऐसा होता है । ऐसे काव्य से जनसमुदाय का कल्याण होगा । हिन्दी का सौभाग्य बढेगा...."[2] लेकिन कवि की राय में कल्पित नायक की आवश्यकता नहीं, रामराज्य के लिए रामकथा उपयुक्त ही है ।

"नंदीग्राम" (गयाप्रसाद द्विवेदी)

"नंदीग्राम" भगवान श्रीकृष्ण के साथ नारदजी सागर तीर की नैसर्गिक शोभा देखते वक्त कृष्ण-नारद संवाद द्वारा भरत चरित्र की पूर्व पीठिका, नारद के श्रीराम और सुमंत्र के संवाद रूप में कथा का आरंभ होता है । श्रीराम

---

1. बलदेवप्रसाद मिश्र - रामराज्य - पृ, 18
2. बलदेवप्रसाद मिश्र - रामराज्य - भूमिका - पृ. ७

का संदेह है कि नंदीग्राम में रहकर भरत इसप्रकार महत्वपूर्ण रामराज्य की नींव कैसे बनाये ? नंदीग्राम में भरत का संत के समान रहन-सहन, अन्य सपत्नियों का कैकेयी को निर्दोषी मानना, कैकेयी राम-वनवास रूपी वर माँगने का कारण सरस्वती देवी का उससे ऐसे वर माँगने के लिए अनुरोध करने का कारण बताना, राम-राज्याभिषेक के पहले लवणासुर-वध का चित्रण, असुर स्त्रियों का युद्ध में भाग लेना, माण्डवी-विरह वर्णन, संजीवनी बूटी लेकर चलनेवाले आकाशगामी हनुमान को भरत का शत्रु मानकर नीचे गिराना, हनुमान से रामादि की कहानी सुनकर व्यथित होना, भरत के अपार भ्रातृप्रेम देखकर हनुमान की प्रशंसा, माताओं को इसके संबंध में कुछ न कुछ कहने का अनुरोध देकर हनुमान का वापस जाना, रावण-विजय के बाद लौटते रामादि का भरद्वाज आश्रम में प्रवेश करना, चौदह वर्ष की लंबी वेला में शासन करने से भरत में राज्य भोग की ओर कोई चाव हैं तो उसे जानने के लिए हनुमान को नंदीग्राम में राम द्वारा भेजना, नंदीग्राम में रामराज्याभिषेक आदि कथा प्रसंग प्रस्तुत काव्य में हैं ।

चरित्र-चित्रण में भरत प्रमुख पात्र है । राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न वसिष्ठ आदि पुरुष पात्र है । स्त्री पात्रों में माण्डवी, सीता, कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा का चित्रण है । नायकोचित सभी गुण भरत चरित्र में उपलब्ध है । भरत के बाद राम ही प्रमुख लगता है । भरत चरित्र की महिमा को इसमें अधिक महत्व दिया गया है । स्त्री पात्रों में सबसे प्रमुख माण्डवी है ।

नंदीग्राम में रौद्र, वीर, और अद्भुत रस का प्रयोग है । वीर रस की महिमा को स्पष्ट दिखानेवाली पंक्तियाँ है -

आ, डटीं रणक्षेत्र में सहगामिनी-सी,
नवघनों के बीच दमकीं दामिनी-सी ।
अस्त्र शस्त्र अनेक चमकातीं चलाती,
वायु-झंझा सी भभक सब ओर जाती ।[1]

---

1. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 145

यहाँ आश्रय लवणासुर-सेना की नारियाँ, आलंबन भरत की सेना, उद्दीपन असुर सेना के पराजय होने की आशंका, अनुभाव है अस्त्र-शस्त्र चमकाती चलना, संचारी भाव है वायु झंझा-सी सब ओर जाना । इसप्रकार वीर रस के स्थायी भाव उत्सा पुष्ट हो जाता है ।

"नंदीग्राम" काव्य में संवाद पात्रों की मनोगति को स्पष्ट दिखाने के लिए अत्यंत उपयोगी प्रतीत होता है । इसमें संवाद की और एक विशे कृष्ण-नारद संवाद है । इसके अलावा सुमंत्र-राम, कैकेयी-कौसल्या-सुमित्रा, हनुमान-भरत, राम-भरद्वाज के बीच का संवाद विशेष उल्लेखनीय है । राम-सुमंत्र संवाद का नमूना प्रस्तुत है -

"तुम सचिव तात के सदृश सहज-सुखदानी
दुख-सुख के साथी सत्य धर्म के साखी,
अवसर पर तुमने बात अवध की राखी ।
× × × × ×
हे नाथ ! आप सर्वज्ञ सर्व उरवासी
मायापति मायातीत अजर अविनाशी ।
यह सचराचर मय जगत तुम्हारी सत्ता,
हिलता न बिना आदेश एक भी पत्ता ।[1]

यहाँ राम की अलौकिकता सुमंत्र के कथन से स्पष्ट हो जाता है ।

"नंदीग्राम" काव्य में कवि ने वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है । इसलिए इसमें एक सहज प्रवाह और सरलता दिखाई पडती है । कवि की वर्णन पटुता का महत्त्व हरेक सर्ग में देख सकते हैं । इसकी भाषा प्रवाहमयी, सुन्दर और कोमल लगती है । सुन्दर और प्रभावशाली शब्दों का प्रयोग नंदीग्राम की महिमा को और अधिक प्रभावशाली बनाती है । विषयानुकूल भाषा का सहज प्रयोग भी इसमें है । भाषा की चमत्कार का स्पष्ट नमूना है -

---

1. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 18, 19

उन्नत-तरु, ताल, तमाल, शाल, नारियल की
शोभा नवकुंज-कुटीर फूल फल दल की
लख चकित स्वयं श्री वहाँ स-रति मन हरती,
मिल प्राणी मात्र से सहज सुधारस भरती ।[1]

छन्दों की बहुलता "नंदीग्राम" में हम देख सकते हैं । हरेक सर्ग के अंत में छन्द परिवर्तन उपलब्ध है । सार, हरिगीतिका, सरसी, पुष्पमाला आदि अनेक छन्दों का प्रयोग प्रस्तुत काव्य में उपलब्ध है । पुष्पमाला छन्द को नीचे उद्धृत किया जा रहा है -

प्रीति सहित सुमंत्र यों -
श्रीराम से कहने लगे फिर ;
भरत-माता की करूणारस वीचि-
में कहने लगे फिर ।[2]

पुष्पमाला छन्द के प्रत्येक चरण में 14 + 14 की यति से 28 मात्रा के होते हैं और तीसरी, दसवीं, सत्रहवीं तथा चौबीसवीं मात्रा सदैव लघु रहती है ।

अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा आदि का सफल प्रयोग भी इसमें है

फिर गिरा शरविद्ध सिर वह अवनि कैसे,
पतित अल्काओं सहित ग्रह केतु जैसे ।[3]

प्रस्तुत पंक्तियों में शर से कटा हुआ लवणासुर के सिर का पतन अल्काओं सहित केतु ग्रह का भूमि में गिर जाने से तुलना करने के कारण उपमा अलंकार है ।

प्रकृति वर्णन की महिमा भी हम 'नंदीग्राम' में देख सकते है । प्र की सुषमा को देखकर कवि ने अपनी कविता सुन्दरी को अधिक मनमोहक बनाने

---

1. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 12
2. वही - पृ. 81
3. वही - पृ. 151

लिए उसको भी कविता के बीच में स्थान दिया । गयाप्रसाद द्विवेदीजी ने प्रभात के आगमन का चित्रण इसप्रकार किया हैं । रात समाप्त हो जाने के बाद वन-प्रभात की वेला थी, अमल-अम्बर में केवल अकेला शरदिन्दु अकेला रह गया । वह धनहीन नृपति के समान, कृश-तन काषायी यति के समान है । वह विरही के समान रजनी-रानी से व्यथित विदाई लेता है । उत्सुक-उर, पुलकित तन से प्राची पट् बदल रही थी, उसके नयन से अनुराग-पराग छलका सा पडता है । वा प्रभात प्रभापिंड उसके झीने अंचल में छवि पाता है । जिससे इस जग का कण-कण ज्योतिर्मय बन जाता है ।[1] प्रभात का सुन्दर वर्णन यहाँ स्पष्ट होता है ।

"नंदीग्राम" काव्य के द्वारा कवि का उद्देश्य राज्य में शांति स्थापित करना और रामराज्य के यशोगान से देश में रामराज्य जैसे सुख शांतिपूर्ण एकराज्य की स्थापना है । स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद देश में होनेवाले आंतरिक द्वन्द्वों को पूर्ण रूपेण समाप्त करने के लिए रामराज्य रूपी एक आदर्श शासन प्रणाली की आवश्यकता है । इसके साथ आर्य संस्कृति का यशोगान और भ्रातृप्रेम की विशिष्टता को स्पष्ट दिखाना भी यहाँ कवि का लक्ष्य सिद्ध होता है ।

"कैकेयी" (चाँदमल अग्रवाल "चाँद")

"कैकेयी" काव्य की कथावस्तु कैकेयी के बचपन चित्रण से प्रारंभ होती है । नवविवाहिता कैकेयी के प्रेमपूर्ण दाम्पत्य जीवन का वर्णन, पतिव्रता कैकेयी का दशरथ के साथ देवासुर युद्ध में शामिल होना, कैकेयी की चतुराई से दशरथ का विजयी होना, इससे संतुष्ट होकर दो वर माँगने के लिए दशरथ का कैकेयी को आदेश देना, फिर कभी माँगने के लिए दशरथ से कैकेयी की प्रार्थना, राम-राज्याभिषेक का निर्णय, और इससे दशरथ का कैकेयी से की गई प्रतिज्ञा का भंग हो जाने की व्याकुलता, लेकिन प्रजा मत का पालन, अपने कर्तव्य असंतुष्ट मंथरा की वाणी कैकेयी में कोई प्रभाव न डालना, राष्ट्रप्रेम और पुत्र के बीच कैकेयी का आत्म संघर्ष, अंत में देश प्रेम की बलिवेदी पर अपनी सच्चाई

---

1. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 105

कुरबान करना, राम-वन गमन, भरत के द्वारा राज्य का तिरस्कार, कैकेयी का पश्चाताप, चित्रकूट मिलन की वेला में कैकेयी का राम से माँफी माँगना, राम द्वारा कैकेयी की वास्तविक मनोदशा को पहचानना, और वनवास के बाद राम राज्याभिषेक से कथा की समाप्ति होती है ।

काव्य के नामकरण से स्पष्ट है कि यह कैकेयी-चरित्र प्रधान क है । अतः इसमें कैकेयी के चरित्र-वर्णन की प्रधानता है । रामायण की कुटिला नारी "कैकेयी" काव्य में एक सफल नायिका के रूप में प्रत्यक्ष होती है । प्रस्तुत काव्य में कैकेयी, धीर-वीर क्षत्राणी आदर्श माता और पतिपरायणा है । लेकिन इनमें सबसे प्रमुखता कैकेयी चरित्र में दिखाई पडनेवाला आदर्श देशप्रेम ही है । इस अलावा दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत, सीता, आदि चरित्र का चित्रण है । कैकेय चरित्र की महिमा के सामने बाकी सब सूरज की किरणों के कारण धीमी पडनेवा तारागण के समान प्रतीत होते हैं । कैकेयी चरित्र को इतनी महानता देकर आधुनिक युगानुकूल चित्रित करने में कवि अत्यंत सफल प्रतीत होते हैं ।

श्रृंगार, करुण, वीर और शांत रस का प्रयोग "कैकेयी" काव्य में हम देख सकते हैं । श्रृंगार के संयोग पक्ष का वर्णन है -

छिपा सकेगा कैसे, यह झीना सा-पट ।
कहते कहते नृप ने, उलटाया घूँघट ।।
स्फुट, अस्फुट, कम्पित स्वर, "क्या हुआ तुम्हें हैं ?"
भर ली गई अंक में, - "जो हुआ तुम्हें हैं " ।।
मन गद्‌गद, तन सिहरन, मुख पर अरुणाई ।
लज्जा से बोझिल नत, प्रिय भुजा समाई ।।[1]

इसमें कैकेयी आश्रय, दशरथ आलंबन, उद्‌दीपन दशरथ की चेष्टाएँ, अनुभाव है मन, तन सिहरन और मुख पर अरुणाई, लज्जा से बोझिल हो जाना संचारी है । इसप्रकार यहाँ श्रृंगार के स्थायी भाव रति पुष्ट हो जाता है ।

---

1. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 19

संवाद प्रधान काव्य के रूप में भी हम कैकेयी काव्य को मान सकते हैं । आदि से अंत तक इसमें संवादों का महत्व है । सफल संवादों की दृष्टि से कैकेयी-दशरथ, कैकेयी-मंथरा, राम-सीता, कैकेयी-राम आदि उल्लेखनीय है । प्रभावोत्पादक संवाद का रूप हैं -

"करो हृदय में विचरण-नित दर्शन-प्यासी -
रहूँ सदा मैं स्वामी ! चरणों की दासी "।।
प्राण एक, तन दो हम, संगिनी जीवन की !
स्वामिनी हृदय की तुम, साम्राज्ञी मन की ।"[1]

प्रस्तुत पंक्तियों में दशरथ-कैकेयी संवाद है । इसमें दोनों का पारस्परिक प्रेम स्प होता है ।

"कैकेयी" काव्य में वर्णनात्मक शैली की प्रधानता है । इसके अलावा भावात्मक, और प्रश्नोत्तर शैली का भी प्रयोग है । प्रश्नोत्तर शैली द्वारा पात्रों के मानसिक तनावों का चित्रण सफल रूप में चित्रित कर सकते हैं औ प्रभावात्पादकता भी बढ़ा सकते हैं । साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग "कैकेयी" काव्य के सौष्ठव को बढ़ाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं । बोलचा की भाषा के प्रयोग से इसमें लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग भी है । चा कल्पना विलास और मार्मिक अभिव्यक्तियों का प्रयोग भाषा की सफलता का प्र है । भाषा की सहजता, सरलता और कोमलता का प्रमाण हम निम्नलिखित पंक्तियों में देख सकते हैं -

भगी-भगी सी, ठगी मृगी-सी,
राजकुमारी बिथकी-सी ।
बुद्धि-हरी-सी खड़ी रही चुप,
चकई-सी, चकी-थकी सी ।[2]

यहाँ भाषा का सरल प्रवाह स्पष्ट हो जाता है ।

---

1. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 19
2. वही - पृ. 16

"कैकेयी" काव्य में पीयूषवर्ष, रुचिर, आनंदवर्द्धक, रूपमाला, स्वच्छन्द इन्द्रवज्रा, उल्लाल, सुमेरू, चौपाई, हरिणी, सार आदि अनेक छन्दों का प्रयोग होता है । हरेक सर्गान्त में छन्द परिवर्तन है । उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण जैसे अलंकारों का प्रयोग भी इसमें है । इन्द्रवज्रा छन्द का प्रयोग नीचे उद्धृत है -

आकाश भी लोहित हो चला था ।
जाने लगे पश्चिम अंशुमाली ।।
सुस्पर्श पाके सुकुमार, छाई -
संध्या कपोलों पर "चन्द्र" लाली ।।[1]

प्रस्तुत छन्द में दो तगण, जगण, और दो गुरू है । इसप्रकार प्रत्येक चरण में ।। होने के कारण से इन्द्रवज्रा छन्द है ।

अलंकार - नाग पाश-सी अलकें, खर-शर सी आँखें !
सुधा-सनी अधरों की, अरूणिम ये पाखें ।।[2]

यहाँ कैकेयी की अलकों को नाग पाश से और आँखों को तीक्ष्ण शर से तुलना क के कारण उपमा अलंकार है ।

प्रकृति का सफल चित्रण "कैकेयी" काव्य में उपलब्ध है । कवि प्रकृति के क्रिया-कलापों को मानवोचित रूप में चित्रित किया है । प्रकृति का मानवीकरण कवि ने अत्यंत प्रभावोत्पादक रूप से प्रस्तुत काव्य में किया है । प्र के मानवोचित क्रिया-कलाप का रूप निम्नोद्धृत है -

चुन-चुन तारा मोती, नील-सरोवर से ।
प्रियतम के हित गूँथी, माला निज कर से ।।
पर समीप प्रिया को पा, सहमी शरमाई ।
कम्पित कर से वह फिर शशि को पहनाई ।।[3]

---

1. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 29
2. वही - पृ. 19
3. वही - पृ. 17

प्रिया रूपी रजनी आकाश रूपी नील सरोवर से तारा रूपी मोती चुन-चुनकर निज कर से प्रियतम के हित केलिए माला गूँथती है, लेकिन वह समीप अपने प्रिय को देखकर शरमाती है । फिर भी वह अपने कंपित कर से शशि को माला पहनाती हैं । यहाँ रजनी का मानवीकरण किया गया है ।

"कैकेयी" महाकाव्य में कवि का उद्देश्य उपेक्षित कैकेयी चरित्र की कालिमा को मिटाना है । नारी मनोविज्ञान का सफल चित्रण करके उसकी कर्तव्य भावना को दिखाना भी कवि का लक्ष्य प्रतीत होता है । कैकेयी वरदान रूपी कलंक को एक लक्ष्य पूर्ति के रूप में बदलकर कैकेयी चरित्र को कवि ने अमर बना दिया । "कैकेयी" काव्य के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों को और राज्य में उत्पन्न अशांति को खत्म करने के लिए कवि संकेत भी देते हैं । कैकेयी की इस राजनीति के संबंध में यह शोधात्मक विचार प्रस्तुत किया गया है - "देश की रक्षा व आंतरिक शांति के लिए भी वह सशक्त राष्ट्रबल को वांछित मानती है । शत्रु के लिए वह शठेशाठ्यम की नीति ही अधिक समीचीन लगती है । देश पर जब विपत्ति के बादल छाये हो अथवा सीमा पर जब षड्यंत्र चल रहे हो तब वह चुप कैसे बैठ सकता है ? इस प्रसंग को कवि ने चीन और पाकिस्तान के आक्रमण को ध्यान में रखकर लिखा है ।"[1]

"जानकी-जीवन" {राजाराम शुक्ल राष्ट्रीय आत्मा}

"जानकी-जीवन" काव्य का प्रारंभ वनवास की अवधि समाप्त होने के कारण रामादि के वापस आने की प्रतीक्षा में रहनेवाले राजपरिवार के लोग, हनुमान द्वारा रामादि के आगमन की शुभ सूचना, राम-राज्याभिषेक वर्णन, रामराज्य वर्णन, राम-राज्याभिषेक के बाद राजपरिवार के लोगों का ऋष्यश्रृंग के यज्ञ में भाग लेने के लिए जाना, गर्भवती सीता की वन देखने की इच्छा, राम सीतापवाद के बारे में जानना, राम सीता परित्याग का निर्णय लेना, सीता निर्वासन की वेला में माताओं की अनुपस्थिति, सीता का वाल्मीकि आश्रम में

---

1. डा. नरजहाँ बेगम - परारव्यान का आधुनिक हिन्दी प्रबंध काव्यों पर प्रभाव -

पहुँचना, सीता परित्याग के कारण अरूंधति का विलाप, सीता परित्याग का कारण समझकर धोबी-धोबिन का विलाप, ऊर्मिला द्वारा उन लोगों को सांत्वना देना, बिठुकर की मेले में भाग लेने के लिए जानेवाले राजपरिवार के लोगों का वाल्मीकि से मिलना और उससे सीता के बारे में पूछना, लव-कुश - जन्म, राम द्वारा शंबूक वध न करना, अश्वमेध के घोडे का वाल्मीकि आश्रम में प्रवेश करना, राम की सेना से लव-कुश का युद्ध, इस युद्ध में राम की सेना की पराजय, राम का लव-कुश को देखकर युद्ध न करके जाकर रथ में सो जाना, राम की कुंडलादि लेकर आनेवाले पुत्रों को सीता द्वारा पितृघातक मानना, राम-सीता मिलन, सीता-राम-पुत्र के साथ अयोध्या में लौटकर यज्ञ की समाप्ति होने से कथानक की समाप्ति होती है ।

"जानकी-जीवन" के चरित्र-चित्रण में अनेक विशेषताएँ हैं । प्रस्तुत काव्य का नायक राम है । राम-चरित्र के आदर्श राजा रूप से बढकर आदर्श पति रूप प्रखर लगते हैं क्योंकि सीता वियोग के कारण राम की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई है । इसके अलावा राम वर्ण-व्यवस्था में विश्वास नहीं, रखते । इसलिए वे शंबूक का वध नहीं करते । अन्य पुरुष पात्रों में लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, वाल्मीकि और लव-कुश है । स्त्री पात्रों में सीता की प्रधानता है । लेकिन इसमें सीता भूमि में समा नहीं जाती है । राम और अपने पुत्रों के साथ अयोध्या वापस जाकर यज्ञ सफल बनाती है । सीता के अलावा ऊर्मिला, माण्डवी, कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा, अरुंधति आदि का चरित्र-चित्रण भी इसमें उपलब्ध है ।

श्रृंगार, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, अद्भुत, शांत जैसे रसों का चित्रण "जानकी-जीवन" काव्य में हम देख सकते हैं । भयानक रस का चित्रण निम्नलिखित है -

काली कुरूपिनी डरावनी भयावनी
नाचीं छलाँग मार भूतिनी पिशाचिनी
रक्ताक्त दन्त काढ़ वक्र वक्त्र झाडतीं,

भीमातिभीम घोष रोष से दहाडती ।।[1]

आलंबन कूरूपिनी डरावनी भयावनी काली है, उद्दीपन है छलाँग मार नाचना, रक्ताक्त वक्त्र दन्त, संचारी भाव है जुगुप्सा । यहाँ भयानक रस का स्थायी भाव भय पुष्ट हो जाता है ।

"जानकी-जीवन" में संवादों की बहुलता है । प्रारंभ में ही राम अपने वनवास की कथा अपने भाईयों को सुनाते हैं । इसमें कुछ महत्वपूर्ण संवाद है जैसे राम-सीता, राम-लक्ष्मण, सीता-लक्ष्मण, सीता-वाल्मीकि, सीता-लव-कुश आदि ।

वर्णनात्मक शैली की प्रधानता जानकी-जीवन में हम देख सकते हैं । इस शैली के द्वारा कथा वर्णन और भाव-वर्णन स्पष्ट हो जाता है । काव्यारंभ में ही कवि की वर्णन कुशलता स्पष्ट हो जाती है । विषयानुकूल भाषा भी प्रस्तुत काव्य की विशेषता है । शब्दों के प्रयोग में सफलता और सतर्कता दिखाई पडती है । भाषा का सहज प्रवाह निम्नलिखित पंक्तियों में है -

क्रीडास्थली कृतांत की मरूस्थली मिली,
सद्भूमि शस्य श्यामला बनी कला खिली ।
शोभामयी सुरम्य पुष्पवाटिका बनी,
आभा भरी अनित्यका उपत्यका बनी ।[2]

प्रवाहमयी भाषा का प्रमाण प्रस्तुत पंक्तियों में विद्यमान है ।

राष्ट्रीय आत्माजी की भाषा के संबंध में लेखक का परिचय देते वक्त श्री प्रेमनारायण शुक्ल ने इसप्रकार लिखा है -"राष्ट्रीय आत्माजी" का शब्द विन्यास भावानुमोदन करता हुआ चलता है । उसमें एक अनुपम विच्छिन्न गुण विद्यमान रहता है । प्रसंगानुसार उसमें हम शैशव का सारल्य, कैशोर की मृदुलता, यौवन की दीप्ति एवं ओज तथा वार्धक्य का भावगांभीर्य पाते हैं ।"[3]

---

1. राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीय आत्मा" - जानकी जीवन - पृ. 370
2. वही - पृ. 367

शार्दूलविक्रीडित और वंशस्थ जैसे छन्दों का प्रयोग "जानकी-जीवन" उपलब्ध है । वंशस्थ का रूप निम्नलिखित है -

सजी बजी स्वागत के सु साज से,
विभावरी थी नगरी सु नागरी ।
गुणागरी गर्वित गूढ़ प्रीति से,
सुवास साजे वनिता बनी ठनी ।।[1]

स्तुत पंक्तियों में जगण, तगण, जगण और रगण है । इस प्रकार प्रत्येक चरण में 2 वर्णों का वंशस्थ है ।

अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि का प्रयोग है । त्प्रेक्षा का चमत्कार निम्नोद्धृत है -

राजाधिराज मुनिराज विराजने से
शोभा महा सकल राज-समाज की थी ।
एकत्र प्राप्त इतने नररत्न मानों,
होती प्रयत्न बिन सार्थक रत्नगर्भा ।[2]

हाँ अत्यंत श्रेष्ठ जनों को एकत्रित करने के प्रयत्न के बिना सार्थक रत्नगर्भा {भूमि} समान प्रतीत होते हैं ।

प्रकृति का सुरम्य चित्रण भी हमें जानकी जीवन में उपलब्ध होते । अत्यंत प्रभावपूर्ण प्रकृति चित्रण इस काव्य में कवि ने किया है । प्रकृति की मणीयता का स्पष्ट प्रमाण संध्या वर्णन में चित्रित है जैसे -

नभ पट पर सन्ध्या चित्र जो खींचती थी,
सखि सदृश उन्हीं को थीं दिखाती दिशाएँ ।
प्रिय प्रकृति बनी थी शोभिनी चित्रशाला,
सब चर अचर थे देखते दर्शकों-से ।[3]

---

१. राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीय आत्मा" - जानकी-जीवन - पृ. 3।
२. वही - पृ. 12
३. वही - पृ. 50

छन्दों का सुन्दर प्रयोग हम "जानकी-जीवन" काव्य में देख कते हैं । अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि अनेक अलंकार इसमें विद्यमान ।

"जानकी-जीवन" में कवि का उद्देश्य सीता के चरित्र को पुष्ट रना है । देश प्रेम की महिमा को कवि ने यहाँ एक महत्वपूर्ण कर्तव्य के रूप में चित्रित किया है । कवि सीता की महिमा को बढाने की प्रवृत्ति में असफल प्रतीत ोते हैं क्योंकि सीता-चरित्र की महिमा अपनी पतिव्रता धर्मपालन में सन्देह करने ाले राम के सामने आने के लिए तैयार न होकर भूमि में समा जाना है । लेकिन समें सीता की महिमा धीमी पड गई है ।

सीता-समाधि" {राजेश्वरी अग्रवाल}

"सीता-समाधि" की कथा में रामायण के बालकाण्ड से लेकर त्तरकाण्ड के सीता भूमि में समा जाने तक की घटनाओं का चित्रण है । लेकिन समें रामायण की कथा को आधार मानकर नवीन समस्याओं को चित्रित करने प्रयास में प्रमुख कथा के विशद वर्णन का अभाव है । इसकी कथावस्तु के संबंध में वयित्री का कथन है "यह कथा त्रेता से आरंभ होकर वर्तमान समय में कलियुग में माप्त होती है । आज हमारी संस्कृति की जो उपेक्षा है, उसका जो अंत हो हा है वही समय-समय पर संस्कृति को जो ह्रास-विकास हुआ है उसको उनको था के ताने-बाने पर बुनने का प्रयास किया है ।

"सीता-समाधि" में रामायण के सभी पात्रों का चित्रण है । स्तुत काव्य में सभी पात्रों को प्रतीकात्मक रूप में हम देख सकते हैं । सीता पेक्षिता भारतीय संस्कृति का प्रतीक हैं, राम महात्मागांधी का प्रतीक है । ग्रेज़ों का भारत को अपने अधीन कर लेना सीता-हरण है । रावण अंग्रेज़ी शासक ा प्रतीक है हनुमान भारत माता की आज़ादी के लिए लडनेवाले भारत का एक ागरिक है । शूर्पणखा पाश्चात्य सभ्यता का प्रतीक है । सोने का मृग,

विज्ञान या इंटस्ट्रीज़ का मोह है । वनवास में छिपकर सीता जो नये युग का निर्माण कर रही है वही लव-कुश है । इसप्रकार कवयित्री ने रामायण में चित्रित पात्रों का प्रतीकात्मक ढंग में "सीता-समाधि" में वर्णन किया है ।

"सीता-समाधि" में श्रृगार, करुण, रौद्र, वीर, अद्भुत, आदि रसों का प्रयोग है । अद्भुत रस का उल्लेख निम्नलिखित है -

चित्र लिखे से स्तब्ध सभासद, तरुण रूप में शौर्य देखते ।
देख भाव अनुरूप राम को, अनुमानों के तीर फेंकते ।
नृप ईर्ष्यालु थे अभिलाषित, हँसी राम की होए अतुलित ।।

यहाँ राम आलंबन, सभासद आश्रय उद्दीपन तरूण रूप में शौर्य देखना, चित्र लिखे से स्तब्ध रह जाना संचारी भाव है । इसप्रकार इसमें अद्भुत रस का स्थायी भाव विस्मय स्पष्ट हो जाता है ।

संवाद की दृष्टि से 'सीता-समाधि' सफल महाकाव्य है । इसमें संवादों की महिमा अनेक स्थानों पर हम देख सकते हैं । उदाहरण के लिए "पंचवटी-प्रसंग" में राम - शूर्पणखा संवाद ध्यातव्य है -

कौन यहाँ तुम विपिन अकेली, घूम रही अनमनी विकल सी ।
दुर्गम कानन घन तामस में, चमक रहीं दामिनी चपल सी ।
यहाँ विचरते जन्तु भयंकर, योग्य आपके पथ न कठिन तर ।
हूँ स्वतंत्र अति स्वेच्छाचारी, निर्भय मैं विचरूँ भूतल में ।
हिंसक गर्वीले पशुओं को, दर्प ध्वस्त करती हूँ पल में ।
हों कितने भी संकट भारी, रोक न सकते राह हमारी ।।[2]

इस संवाद के द्वारा शूर्पणखा की स्वेच्छाचारिणी रूप व्यक्त हो गई है ।

"सीता-समाधि" में प्रतीकात्मक शैली की प्रधानता है जो हमें कवयित्री की वाणी से स्पष्ट हो जाती है । भाषा सीधी-सादी बोलचाल की

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 37
2. वही - पृ. 128-129

है । इसकी भाषा को आसानी से समझ सकते है । लेकिन प्रतीकात्मकता
गत कराने के लिए पहले ही कवयित्री इसके संबंध में पूर्ण जानकारी देती है ।
की सफलता का प्रमाण निम्नोद्धृत पंक्तियों से प्राप्त होता है ।

मधुर चांदनी बिखर रही थी, धवल ललित मन्दिर के ऊपर ।
जगमग चमके काम सुनहरी, मणि आलोकित स्वर्ण कलश पर ।
सुरुचिपूर्ण श्रृंगार मधुर कर, नाच रही छवि शुभ्र सुधा पर ।।[1]

रण-सी साधारण भाषा का प्रयोग यहाँ स्पष्ट हो जाता है ।

"सीता-समाधि" में चौपाई छन्द की प्रधानता है ।

रावण भूप अतुल बलशाली, करता था आतंकित जग को ।
तपसी, ऋषि, मुनि सुर सज्जन को, सता रहता था ध्वंसक सबको ।
नाश मधुर संस्कृति का करके, विचर रहा था मद में भरके ।[2]

रों में उत्प्रेक्षा, उपमा आदि का प्रयोग हम देख सकते हैं - उपमा का रूप
नोद्धृत है -

बन बाला सा साज कर, साडी रंग बिरंगी पहिरे ।[3]

सीता की तुलना बन बाला से करने का कारण उपमालंकार है । यहाँ उपमान
ाला, साज करना साधारण धर्म "सा" साधारण धर्म है । लेकिन इसमें उपमेय
ता} का वर्णन या अभाव के कारण उपमेय लुप्तोपमा है ।

प्रकृति का सुकोमल चित्रण भी "सीता-समाधि" में हम देख सकते
कथा की तीव्र गति के दौरान भी कवि ने प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया
प्रभात का सुन्दर चित्रण निम्नलिखित है -

ज्योति पुंज से किरन प्रथम ले, उषा पूरब में मुसकाती ।
तुहिन सलिल से धो आँखों को, तन्द्रा को वह त्वरित भगाती ।
नव प्रकाशमय उगा सबेरा, सब चिडियों ने तजा बसेरा ।[4]

राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 6
वही - पृ. 20
वही - पृ. 12।

भात के शुभागमन का चित्रण यहाँ स्पष्ट हो जाता है ।

"सीता-समाधि" में कवयित्री का उद्देश्य समसामयिक घटनाओं ो और उसके प्रति सतर्क रहने की आवश्यकता को स्पष्ट दिखाना है । प्रस्तुत ाव्य की भूमिका में कवयित्री ने स्पष्ट बताया है कि "अपने पौराणिक ग्रंथों में ो कुछ लिखा है वह कल्पना नहीं सत्य है, हम भले ही उसे न समझ सकें । इसी वश्वास के आधार पर धनुष यज्ञ में शंकर प्रदत्त उस धनुष की कल्पना अणुशक्ति से ये हुए अत्यंत संहारकारी शस्त्र से की है । वर्तमान से भूत को देखने का प्रयास केया है । परशुराम और राम के संवाद में अणुशक्ति का प्रयोग शांति के लिए ोना चाहिए अथवा राज्य-विस्तार, आतंक के लिए, संहार के लिए, इसी प्रश्न र दृष्टिपात किया है । राम ने धनुष तोडा क्यों ? जब कि केवल धनुष उठाने ाथवा चलाने का प्रण था ? मैं ने इस समस्या पर राम-परशुराम संवाद में विशेष वेचार-विमर्श किया है । आज तक किसी ने भी इस प्रश्न पर दृष्टिपात नहीं केया है । यह मेरा प्रथम साहसिक प्रयास है ।..... "सीता-समाधि" में आहत ाए पत्नी के मान को सीता के माध्यम से श्रेष्ठता प्रदान करने का प्रयास किया ाया है ।[1]

ंडकाव्य

"पंचवटी" (मैथिलीशरण गुप्त)

"पंचवटी" के कथानक में रात की एकांतता में चिन्ता में डूबे रहने ााले लक्ष्मण, सुरसुन्दरी के समान उसके सामने शूर्पणखा का आगमन, उसका लक्ष्मण ा प्रेम-याचना, लक्ष्मण द्वारा उसका तिरस्कार, दोनों की लंबी वार्तालाप, प्रभात ा आगमन से सीता का पर्णकुटी के बाहर आना, लक्ष्मण के साथ शूर्पणखा को देखकर ंसी उठाना, सीता द्वारा शूर्पणखा के पक्ष का समर्थन, सीता द्वारा राम को बुलाना,

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - भूमिका 9-10

राम से शूर्पणखा का प्रेम-याचना, पत्नी सहित रहने के कारण राम का उसे स्वीकारने से असहमत होना, बार बार लक्ष्मण और राम के पास प्रेम याचना करना, उसका क्रोध और रूप-परिवर्तन, शूर्पणखा का आक्रमण के लिए तैयार होना और लक्ष्मण द्वारा उसके नाक-कान काटने से वहाँ से भाग जाना आदि प्रसंग है ।

इसमें लक्ष्मण, राम, सीता और शूर्पणखा है । लक्ष्मण को सेवाव्रत कर्तव्यपरायण और आदर्श पति के रूप में "पंचवटी" काव्य में हम देख सकते हैं । राम अतिकोमल, एकपत्नीव्रत में विश्वास रखनेवाले के रूप में चित्रित है । सीता सुन्दरी हास-परिहास करनेवाली आधुनिक नारी है । शूर्पणखा लज्जा रहित, स्वेच्छाचारी अपने मन की इच्छाओं को खुलकर बतानेवाली और निंदा को न सहनेवाली नारी के रूप में चित्रित है ।

"पंचवटी" में श्रृंगार, हास्य, रौद्र, बीभत्स और अद्भुत रस का चित्रण उपलब्ध है । बीभत्स रस का चित्रण निम्नलिखित है -

> गोल कपोल पलटकर सहसा बने भिडों के छत्ते से,
> हिलने लगे उष्ण श्वासों से ओठ लपालप लत्तों से ।
> कन्धों पर के बडे-बडे वे बाल बने अहो आँतो के जाल,
> फूलों की वह वरमाला भी हुई मुण्डमाला सुविशाल ।[1]

यहाँ शूर्पणखा आलंबन, उद्दीपन उसका भयानक रूप, उसकी चेष्टाएँ अनुभाव और संचारी भाव है मोह, आवेग आदि । इसप्रकार यहाँ बीभत्स रस की पुष्टि होती है ।

"पंचवटी" में संवादों का प्रचुर प्रयोग है । लक्ष्मण-शूर्पणखा, सीता-शूर्पणखा, लक्ष्मण-सीता, राम-शूर्पणखा आदि उल्लेखनीय संवाद है । इनमें लक्ष्मण-शूर्पणखा संवाद निम्नलिखित है -

---

1. मैथिलीशरण गुप्त - पंचवटी - पृ. 60-61

"पाप शान्त हो, पाप शान्त हो, कि मैं विवाहित हूँ बाले ।"
पर क्या पुरुष नहीं होते हैं दो-दो दाराओं वाले ?
नर कृत शास्त्रों के सब बन्धन है नारी को ही लेकर,
अपन लिये सभी सुविधाएँ पहले ही कर बैठे नर ।"[1]

इस संवाद के द्वारा लक्ष्मण और शूर्पणखा का चरित्र स्पष्ट हो जाते है ।

इतिवृत्तात्मक शैली, प्रश्न शैली जैसी शैलियों का प्रयोग "पंचवटी" काव्य में हुआ है । संस्कृत के शब्द जैसे मारूत, दारूण, उपरांत आदि का प्रयोग इसमें है । बोलचाल की भाषा का उदाहरण निम्नोद्धृत है -

फिर भी वह मेरे समक्ष है
चौंके लक्ष्मण, बोले कौन ?
केवल "तुम" कह कर रमणी भी ।
हुई तनिक लज्जित हो मौन ।[2]

इसमें केवल बोलचाल की भाषा ही है । साधारण सी साधारण शब्दों का प्रयोग मात्र है । पंचवटी तांटक छन्द में लिखा गया है । तांटक छन्द का प्रयोग नीचे दृष्टव्य है -

चारू चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही है जल-थल में
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बर तल में
पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,
मानो झीम रहे हैं तरू भी मन्द पवन के झोंको से ।[3]

तीस मात्राओं के इस छन्द में 16, 14 मात्राओं पर यति होती है ।

अलंकारों में उपमा, अनुप्रास, रूपक, व्यतिरेक, प्रतीप, आदि का प्रयोग हम देख सकते हैं । इनमें अनुप्रास अलंकार उदाहरण रूप में निम्नलिखित है -

---

1. मैथिलीशरण गुप्त - पंचवटी - पृ. 32
2. वही - पृ. 31
3. वही - पृ. 5

झाँक न झंझा के झोंके में
झुककर खुले झरोखे से ।[1]

इसमें "झ" वर्ण बार-बार आने से अनुप्रास अलंकार दृष्टव्य है ।

"पंचवटी" काव्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता मनोरम प्रकृति चित्रण है । काव्यारंभ ही प्रकृति चित्रण से होता है ।

है बिखेर देती वसुन्धरा मोती सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको सदा सबेरा होने पर ।
और विरामदायिनी अपनी सन्ध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम-तनु जिससे उसका नया रूप झलकता ।[2]

यहाँ प्रकृति के क्रिया-कलापों का सुन्दर वर्णन उपलब्ध है ।

गुप्तजी ने इस काव्य के द्वारा रामायणीय पंचवटी प्रसंग को एक नया रूप दिया है जो अन्य रामकाव्य में देखना असंभव है । इसकाव्य में कवि अपने उद्देश्य को इस प्रकार खुलकर बताना चाहते है कि आज की इस नारी समानता के युग में नारी को अपनी असलियत को जानना और पहचानना चाहिए । कोई भी नारी अपनी अवहेलना को सहने के लिए तैयार नहीं है । यदि अवहेलना हो तो वह भी सुरसुन्दरी शूर्पणखा के समान जल्दी ही राक्षसी रूप में बदल जाएगी ।

प्रदक्षिणा (मैथिलीशरण गुप्त)

"प्रदक्षिणा" में राम-जन्म से लेकर रामराज्य तक की कहानी अत्यंत प्रवाहमयता से चित्रित है । रामायण की प्रमुख घटनाएँ जैसे रामादि के जन्म, विश्वामित्र की याग रक्षा के लिए राम-लक्ष्मण का जाना, धनुष-भंग और रामादि के विवाह, परशुराम से मिलन, वन-गमन, ताटका-वध, पंचवटी प्रसंग, सीतापहरण, बालिवध, सुग्रीवस्थय, अशोकवाटिका में सीता-हनुमान मिलन, रावण-वध, रामादि

---

1. मैथिलीशरण गुप्त - पंचवटी - पृ. 36
2. वही - प. 8

का अयोध्या में वापस आना, राम-राज्याभिषेक, रामराज्य का वर्णन आदि इसमें उपलब्ध है ।

"प्रदक्षिणा" में रामायण के सभी पात्रों का चित्रण है जैसे दशरथ, कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता, ऊर्मिला, माण्डवी श्रुतकीर्ति, हनुमान, सुग्रीव, रावण, मेघनाद, मंथरा, शूर्पणखा आदि । इसके अलावा अराल-कराल और धीर-गंभीर नामक दो नवीन पात्र-सृष्टि भी इसमें हुई हैं ।

प्रस्तुत काव्य में श्रृंगार, वीर, हास्य, शांत रसों का प्रयोग उपलब्ध है । वीर रस का उदाहरण नीचे दृष्टव्य हैं -

प्रलयानल से बढा महाप्रभु जलने लगे शत्रु तृण से ।
एक असह्य प्रकाश पिण्ड था, छिपी तेज़ में आकृति आप,
बना चाप ही रवि-मण्डल-सा उगल उगल शर किरण-कलाप ।[1]

यहाँ आश्रय राम आलंबन राक्षस सेना, उद्दीपन उसकी चष्टाएँ, बार-बार शर छोडना अनुभाव और संचारी भाव है प्रलयानल के समान आगे बढना । इसप्रकार यहाँ वीर रस का स्थायी भाव उत्साह संपुष्ट हो जाता है ।

संवादों का प्रयोग भी "प्रदक्षिणा" काव्य में उपलब्ध है । शैली की दृष्टि से इतिवृत्तात्मक शैली का प्रयोग प्रदक्षिणा में हम देख सकते है । बोलचा की भाषा का सहज प्रयोग भी इसमें उपलब्ध है ।

प्रदक्षिणा में तांटक छन्द का प्रयोग है ।

कोप कटाक्ष छोडता था ज्यों भृकुटि चढाकर काल कराल
क्षण भर में ही छिन्न-भिन्न सा हुआ शत्रु सेना का जाल
क्षुब्ध नक्र जैसे पानी में पर्वत में जैसे विस्फोट

---

1. मैथिली शरण गुप्त - प्रदक्षिणा - पृ. 64

अरि समूह में विभु वैसे ही करते थे चोटों पर चोट ।[1]

लंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा आदि का प्रयोग देख सकते हैं ।

उस भव-वैभव विरक्ति-सी, वैदेही व्याकुल मन में
भिन्न देश की छिन्न लता-सी रहती थी अशोक वन में ।[2]

हाँ "अशोकवन" में रहनेवाली सीता की तुलना भव-वैभव विरक्ति के समान और भिन्न देश की छिन्न लता के समान चित्रित करने का कारण उपमालंकार है । दक्षिणा में प्रकृति चित्रण का अभाव है ।

संपूर्ण "प्रदक्षिणा" काव्य के अध्ययन के उपरांत हमें यह प्रतीत होता है कि प्रस्तुत काव्य में कवि का उद्देश्य राम जन्म से लेकर रामराज्य तक की कहानी का प्रदक्षिणा करना है । इससे बढकर कोई उद्देश्य नहीं प्रतीत होता है ।

अशोकवन (गोकुलचन्द्र शर्मा)

"अशोकवन" का कथानक अशोकवाटिका में बंधिनी सीता के करूण चित्रण से प्रारंभ होता है । सीतापहरण के संबंध में रावण-मंदोदरी संवाद, रावण का मंदोदरी से यह बताना कि बहिन के अपमान के कारण सीतापहरण करना, शूर्पणखा के बुरे कर्म का मंदोदरी द्वारा आलोचना करना, मंदोदरी की सीता की महिमा के बारे में और राम की अलौकिकता को समझाते हुए सीता को वापस देने का आदेश देना, रावण द्वारा उसका खंडन, त्रिजटा की सीता का अशोगान करना, सीता स्वप्न में अपने पिताजी को देखना और पिता का भविष्य की सूचना देना, हनुमान का लंका में एक छोटे वानर के रूप में आगमन और राक्षसियों के द्वारा उसका पकडा जाना और उसका बचाव, सरमा की प्रार्थना से सीता की अपनी करूण कहानी सुनाना, रावण द्वारा विजयी राम के पास सीता को साज-सँवार कर भेजने के लिए इन्द्र-पत्नी और पार्वती देवी का आगमन, सजने से सीता

---

1. मैथिलीशरण गुप्त - प्रदक्षिणा - पृ. 67
2. वही - प. 53

का इनकार और अंत में उनकी हठ से मान जाना, सीता का राम के विरुद्ध कोई अपवाद न होने से अग्नि परीक्षा के लिए आदेश देना, सीता का लक्ष्मण से माँफी माँगना, रामादि का अयोध्या वापस लौटाना आदि प्रस्तुत काव्य का प्रमुख कथा वर्णन है ।

सीता, रावण, मंदोदरी, हनुमान, त्रिजटा, राम, लक्ष्मण आदि "अशोकवन" में चित्रित पात्र हैं । इसमें मंदोदरी चरित्र महिमा का विशद वर्णन उपलब्ध होता है ।

अशोकवन में करुण, अद्भुत, वीर और शांत जैसे रसों का प्रतिपादन है । रौद्र रस का वर्णन निम्नलिखित है -

> क्रुद्ध हुआ रावण, कटि से असि थी चपला-सी चमकी,
> "धड़ से भिन्न शीष कर दूँगा" बोला देकर धमकी ।
> "करती है अपमान सुरासुर-विजयी का ओ अबले ।
> आज्ञा मान अभी दुर्वचने ! कुटिल काल की कवले ।"[1]

यहाँ रावण आश्रय, सीता आलंबन, उद्दीपन सीता की गर्वोक्तियाँ, अनुभाव है, शस्त्रों का उठाना, संचारी भाव उग्रता है । इसप्रकार यहाँ रौद्र रस का स्थायी भाव उत्साह पुष्ट हो जाता है ।

संवाद का सफल प्रयोग हम "अशोकवन" काव्य में देख सकते हैं । इनमें रावण-मंदोदरी, रावण-सीता, रावण-त्रिजटा, सीता-हनुमान, रावण-हनुमान, राम-सीता आदि अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । इसमें वर्णनात्मक शैली की प्रधानता है । भाषा की सरलता और सुगम्यता इस काव्य की महिमा है । प्रचलित शब्दों और प्रयोगों को चुनकर भाषा की जटिलता को रोकने की चेष्टा प्रस्तुत काव्य में कवि ने सफलता से किया है । सुन्दरताई, ठवानी, धजीले, अधमाई, हेरा, अरूणारे जैसे ब्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग भी इसमें उपलब्ध है । इस काव्य की भाषा संबंधी

---

1. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 37

कवि कथन है -"भाषा और भावों के विषय में मुझे अधिक नहीं करना, अवश्य सरलता और सुगम्यता रहा है । प्रचलित शब्दों तथा प्रयोगों व किया और भाषा के प्रवाह को जटिल वन्याओं में जाने से रोकने की चे है, खडीबोली के समान प्रतीत होनेवाली व्रज भाषा के शब्दों का प्रयो बूझकर किया है, केवल इसी हेतु से कि जहाँ अन्य भाषाओं के शब्दों व में खडीबोली हिचकता नहीं, उनका स्वागत ही करती है, वहाँ उसे व्रज आरंभिक विलगाव भी छोड ही देना चाहिए ।[1]

"अशोकवन" में तारंक छन्द की प्रधानता है । तीस इस छन्द में 16, 14 मात्राओं पर यति होती है ।

अबला की दयनीय दशा पर प्राणेश्वर-सा ज्ञानी,
कोपानल में पड़ क्या होगा नहीं अभय का दानी ?
बलवानों की बड़ी दया के पात्र दीन ही होते,
देख नहीं सकता उनका मन किसी दीन को रोते ।[2]

इन पंक्तियों में 16, 14 मात्राओं पर यति है इसप्रकार 30 मात्रा के या

अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि का प्र
में देख सकते है । अनुप्रास का उदाहरण निम्नलिखित है -

नारी हो तुम, क्या विपन्न नारी को हाथ न
उसको अल्प याचना में भी क्या तुम साथ न दो
क्या कृपाण-कर्तन से पहले यह ग्रीवा न मिटेगी
आत्म-प्रतिष्ठा के हित कोई घटना क्या न

इस छन्द के प्रत्येक चरण के अंत में होगी, दोगी, मिटेगी, घटे होने के कारण अंत्यानुप्रास अलंकार है ।

---

1. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 5
2. वही - पृ. 24

कवि कथन है -"भाषा और भावों के विषय में मुझे अधिक नहीं करना, ध्येय मेरा अवश्य सरलता और सुगम्यता रहा है । प्रचलित शब्दों तथा प्रयोगों को मैंने ग्रहण किया और भाषा के प्रवाह को जटिल वन्याओं में जाने से रोकने की चेष्टा की है, खडीबोली के समान प्रतीत होनेवाली व्रज भाषा के शब्दों का प्रयोग जान बूझकर किया है, केवल इसी हेतु से कि जहाँ अन्य भाषाओं के शब्दों को अपनाने में खडीबोली हिचकता नहीं, उनका स्वागत ही करती है, वहाँ उसे व्रजभाषा का आरंभिक विलगाव भी छोड ही देना चाहिए ।[1]

"अशोकवन" में ताटंक छन्द की प्रधानता है । तीस मात्राओं के इस छन्द में 16, 14 मात्राओं पर यति होती है ।

अबला की दयनीय दशा पर प्राणेश्वर-सा ज्ञानी,
कोपानल में पड़ क्या होगा नहीं अभय का दानी ?
बलवानों की बड़ी दया के पात्र दीन ही होते,
देख नहीं सकता उनका मन किसी दीन को रोते ।[2]

इन पंक्तियों में 16, 14 मात्राओं पर यति है इसप्रकार 30 मात्रा के यह ताटंक छन्

अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि का प्रयोग "अशोकव
में देख सकते है । अनुप्रास का उदाहरण निम्नलिखित है -

नारी हो तुम, क्या विपन्न नारी को हाथ न होगी ?
उसको अल्प याचना में भी क्या तुम साथ न दोगी ?
क्या कृपाण-कर्तन से पहले यह ग्रीवा न भिटेगी ?
आत्म-प्रतिष्ठा के हित कोई घटना क्या न घटेगी ?[3]

इस छन्द के प्रत्येक चरण के अंत में होगी, दोगी, भिटेगी, घटेगी आदि वर्ण मैत्री होने के कारण अंत्यानुप्रास अलंकार है ।

---

1. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 5
2. वही - पृ. 24
3. वही - पृ. 49

प्रकृति का सुरम्य चित्रण भी "अशोकवन" काव्य में उपलब्ध है । प्रकृति की रमणीयता का सफल चित्रण निम्नलिखित है -

वृक्षावली विलसती पाकर सिंधु-समीर सलोना,
भरा प्रसूनों से रहता है प्रकृति प्रिया का दोना ।
पावस आकर पहना देता हरित रंग की साड़ी,
लजवंती ललना-सी लगती धानी धरा पहाड़ी ।[1]

सिंधु समीर के सलोने के कारण वृक्षावली विलसती है, प्रकृति प्रिया का दोना प्रसूनों से भरा रहता है । उसे पावस ऋतु आकर हरित रंग की साड़ी पहना देती है । धानी-धरा पहाड़ी लजवंती ललना के समान प्रतीत होती है । यहाँ प्रकृति की मनोहारिता स्पष्ट हो जाती है ।

"अशोकवन" काव्य में कवि का उद्देश्य राष्ट्रीय जागरण, राष्ट्र भाषा का प्रचार, और रामराज्य की महिमा को व्यक्त करना है । इसके संबंध में कवि कथन हैं- "युग की पुकार है कि सत्साहित्य की सृष्टि करो, सदाचार का स्तर ऊँचा उठाओ । चरित्र-निर्माण के रचनात्मक साहित्य द्वारा देश में जागरण की ज्योति जगाओ । हिन्दी ने राष्ट्रभाषा का रूप धारण किया है । उसे सार्वदेशिक, सुगाह्य तथा सरल बनाने का भार हिन्दी के प्रत्येक लेखक के कंधों पर है । इस सेवा में यथाशक्ति योग देने की उत्कट अभिलाषा तथा कर्तव्यपूर्ति की भावना ने भी मुझे इस रचना के लिए प्रेरित किया । अध्यापन से अवकाश ग्रहण करते ही अपने दुर्बल करों में मैं ने फिर लेखनी थामी और मातृभाषा की विमल वेदिका पर अपना नैवेद्य चढाने को अग्रसर हुआ हूँ । इसके लिए रामचरित ही मैं ने चुना । इसी में मुझे भारत की प्रण दिखाई देते हैं ।[2]

---

1. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 15
2. वही - पृ. 3

आँजनेय {जयशंकर त्रिपाठी}

'आँजनेय' की कथावस्तु रावण का सीता को कपट वेष में आकर छीन लेने से प्रारंभ होता है । आगे चलते समय सीता का किष्किंधा पर वानरों का यूथ देखकर आभूषण वहाँ फेंक देना, उन वानरों के बीच हनुमान का भी होना तब हनुमान को मालूम होना कि राम अवश्य सीता की खोज में वहाँ आयेंगे और हनुमान को श्रीराम दर्शन की परम सफलता प्राप्त होगी । उसके हनुमान के समान राम-लक्ष्मण का वहाँ आना, हनुमान का राम-दर्शन से संतुष्ट होना, राम द्वारा बालि-वध, सुग्रीव को किष्किंधाधिपति बनाकर अपनी प्रतिज्ञा का पालन करना, "आँजनेय" काव्य के मुख्य कथा-प्रसंग है ।

"आँजनेय" काव्य में सीता, रावण, हनुमान, सुग्रीव, राम, लक्ष्मण, बालि आदि है । पात्रों को प्रतीकात्मक ढंग से चित्रित किया है । इसकी भूमिका में बलदेवप्रसाद मिश्रजी ने लिखा है -"इसमें कथानक के पात्रों को एक दूसरी दृष्टि से देखा गया है । इसके राम को अनादि कवि माना गया है । सीता को उनकी भाषा, और लक्ष्मण को उनका स्वर । राक्षसराज मानवसमाज की वह स्वार्थान्धता है जो शीलवती, रूपवती और वात्सल्यवती धरती पर अत्याचार करती है । वानर है धरती के सपूत, जिनकी रक्षा के लिए कवि की प्रतिज्ञा होती है कि वह मही को निशाचर-हीन करेगा । उस कवि का काव्य है - यह संपूर्ण विश्व, किन्तु उस काव्य का सम्यक् रूप दर्शन किया जा सकता है वन्य प्रकृति के ग्राम्य क्षेत्रों में जिनका प्रतीक है किष्किंधा का वातावरण । किष्किंधा-निवासी आँजनेय है विश्व-काव्य के प्रबुद्ध पाठक, जो काव्य का, वास्तविक मर्म समझ सकते हैं । समाज का दानव कल्प स्वार्थ कवि की भाषा का अपहरण कर उसे चुनौती देता है । भाषा का अपहरण सांस्कृतिक चेतना की मृत्यु का लक्षण है, जो सच्चे कवि को कभी स्वीकृत हो ही नहीं सकता । अतएव कवि का आविर्भाव वहाँ हो ही जाता है जहाँ प्रबुद्ध पाठक की संग्राहक चेतना विद्यमान रहती हैं । धरती के सपूत ऐसे पाठक की प्रेरणा से कवि को पहचानते, उसके शरणापन्न होते और उसके

सहायता से दानवी-आतंक को विध्वंस करने में सक्षम होते हैं ।[1]

"आँजनेय" में वीर, अद्भुत, करूण और भयानक रस का चित्रण है । भयानक रस का चित्रण निम्नलिखित पंक्तियों में है -

देखकर वह सुकंठ बल-शालि
झुक गया ज्यों झुक जाते शालि
हत-प्रभ हुआ तेज से ज्ञान -
इन्हें भेजा होगा वह बालि ?[2]

यहाँ आश्रय बालि, आलंबन राम-लक्ष्मण, उद्दीपन उनके हृष्ठ-पुष्ठ शरीर, अनुभा है झुक जाना, हतप्रभ होना, और संचारी भाव है शंका । इसप्रकार इसमें भय नामक स्थायी भाव स्पष्ट हो जाता है ।

संवाद का प्रयोग "आँजनेय" काव्य में देख सकते हैं । प्रतीकात्म शैली "आँजनेय" काव्य में उपलब्ध है । प्रतीकात्मक भाषा प्रस्तुत काव्य की विशेषता है । भाषा के संबंध में बलदेवप्रसाद मिश्रजी का कथन है -"श्रीजयशंकर त्रिपाठी जी का "आँजनेय" काव्य जयशंकर प्रसाद की "कामायनी" की परंपरा में लिखा गया है । संक्षिप्त कथा-सूत्र का आधार लेकर ज्ञान विज्ञान के किसी चिन्तथ्य का विश्लेषण {रहस्यमय विश्लेषण} करना ही इस परंपरा की विशेषता है । वह विश्लेषण प्रतीकात्मक भाषा में संकेतात्मक होता है, इसलिए वह शास्त्र कोटि में न जाकर काव्य कोटि में ही रहता है ।[3]

चौपाई छन्द में "आँजनेय" काव्य का सृजन हुआ है । चौपाई छन्द के प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं । चौपाई छन्द के सफल प्रयोग का चित्रण निम्नलिखित है -

---

1. जयशंकर त्रिपाठी - आँजनेय - भूमिका - पृ. 4
2. जयशंकर त्रिपाठी - आँजनेय - पृ. 25
3. वही -भूमिका - पृ. 3

उछल कर तरु-शिखरों पर भीरू
भागने लगी वानरी-सैन्य,
उठाते व्याकुल रव उद्भ्रान्त
प्रकट करते पक्षी-दल दैन्य ।[1]

इसमें प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ हैं । उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास जैसे अलंकार 'आँजनेय' काव्य में प्रयुक्त है । उपमा का उदाहरण निम्नलिखित है -

घाटियों में गिरि-वन की राह
घूमता था सुकंठ असहाय,
साथ में वानर-ऋक्ष अनन्त
कि जैसे साधन-सिद्धि अपाय ।[2]

यहाँ घाटियों में गिरि-वन की राहों में असहाय होकर घूमनेवाले राम-लक्ष्मण को अनंत वानर ऋक्ष के साथ साधन सिद्धि के समान करने के कारण उपमालंकार है ।

सुन्दर रूप में प्रकृति चित्रण "आँजनेय" काव्य में हुआ है । प्रकृ चित्रण की सुन्दरता के लिए एक दृष्टांत प्रस्तुत है -

सजाता है नभ दीपक-पाँति
दुग्ध के या छोटे नक्षत्र,
सूर्य-शशि-घट में भरती बार
बिखर जो गये यत्र ही तत्र ।[3]

रामायण की कथा को माध्यम बनाते हुए कवि का लक्ष्य आधुनिक समस्याओं का पर्दाफाश करना है । कवि इस तथ्य को स्पष्ट दिखाना चाहता हैं कि कवि क भाषा का अपहरण नाश के लिए है । कवि की सहायता के लिए देश के सपूत है भाषा का अपहरण सांस्कृतिक चेतना की मृत्यु का लक्षण है, जो सच्चे कवि के लि स्वीकृत हो ही नहीं सकता । अतएव कवि का आविर्भाव वहाँ हो जाता है जह

---

1. जयशंकर त्रिपाठी - आँजनेय - पृ. 87
2. वही - पृ. 43
3. वही - पृ. 63

बुद्ध पाठक की प्रेरणा से कवि को पहचानते हैं, उसके शरणापन्न होते है और उसकी सहायता से दानवी आतंक का विध्वंस करने में सक्षम होते हैं ।

लीला (मैथिलीशरण गुप्त)

"लीला" काव्य राम-जन्म से संतुष्ट प्रकृति वर्णन से आरंभ होता है । धीर-गंभीर नामक रामादि के दो मित्र और रामादि के साथ इनके आखेट और हास-परिहास, विश्वामित्र के आगमन की सूचना वीर के द्वारा दिलाना, रामादि के द्वारा विश्वामित्र पर हँसी उठाना, विश्वामित्र का दशरथ के साथ यज्ञ-रक्षा के संबंध में बातें करते समय राम की उपस्थिति, विश्वामित्र के साथ जाते वक्त राम का दशरथ को सांत्वना देना, सुमित्रा-कौसल्या संवाद, सुमित्रा का नारी जीवन की विडंबनाओं को बताकर आश्वास देना, अराल-कराल नामक दो राक्षसों द्वारा भरत के चरित्र का वर्णन करना, राम-ताटका संवाद, ताटका की हत्या के कारण अराल-कराल का राम-पक्ष छोडकर असुर पक्ष में मिलना, राम की शक्ति के संबंध में धीर, गंभीर, भरत और शत्रुघ्न के बीच वार्तालाप, पुष्पवाटिका प्रसंग में लक्ष्मण-ऊर्मिला मिलन, इसमें माण्डवी और श्रुतकीर्ति की भी उपस्थिति, सुलक्षणा द्वारा रामागमन की सूचना देना, सीता-सुगंधिका संवाद, ऊर्मिला से सीता रामागमन की खबर सुनना, सीता के विश्वामित्र और रामादि के आतिथ्य सत्कार, राम-सीता के पारस्परिक प्रेम पूर्ण कटाक्ष, दो राजाओं के वार्तालाप के द्वारा शिवचाप और सीता स्वयंवर के संबंध में जानकारी देना, धनुष तोड जाने के कारण राम का विस्मय, शादी के पहले परशुराम का आगमन, रामादि का विवाह आदि अनेक घटनाएँ "लीला" काव्य की कथा में सम्मिलित हैं ।

"लीला" काव्य में पात्रों की बहुलता है । रामायण के बालकाण्ड के सभी पात्रों के अलावा धीर-गंभीर और अराल-कराल नामक दो पात्र इसमें हैं । रामायण के समान ही सभी पात्रों का चित्रण इसमें हुआ है ।

श्रृंगार, हास्य, रौद्र, वीर, अद्भुत और शांत रस का वर्णन इसमें हैं । अद्भुत रस का वर्णन निम्नलिखित है -

तब क्या हरने को भू भार
लिया आप प्रभु ने अवतार
क्या यह सब है लीला मात्र ?
मैं हूँ प्रभो क्षमा का पात्र ! [1]

यहाँ आलंबन राम, उद्दीपन वैष्णव चाप पर बाण चढाना, परशुराम की शंका संचारी भाव है । इसप्रकार इसमें अद्भुत रस विद्यमान है ।

गीतिनाट्य होने के कारण इसमें संवादों की प्रमुखता है । बोलचा की भाषा का प्रयोग इसमें हुआ है । भाषा का सहज प्रयोग निम्नलिखित है -

क्षमा कीजिए देव आपका अनुगत हूँ मैं
दयाशील है आप, सदा सम्मुख नत हूँ मैं
ये गोदी के फूल मुरझेंगे क्षण में । [2]

भाषा का नैसर्गिक रूप इसमें विद्यमान है ।

रोला छन्द का प्रयोग भी हम "लीला" काव्य में देख सकते है । रोला छन्द का रूप नीचे दृष्टव्य है -

अमर जो न कर सके, उसे नर सकते हैं
व्रत-साधन पर अमर, भला कब मर सकते हैं ?
तुम से ही नर-लोक, नाम सार्थकता करता है
सुनकर जिनका नाम, दैत्य दल भी डरता है । [3]

यहाँ प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती है । हर चरण में 11-13 पर यति होती है । इसलिए इसमें रोला छन्द है । अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास आदि है । उत्प्रेक्षा का सुन्दर चित्रण निम्नलिखित है -

मन्द मन्द पग रखकर मानो,
पुण्य-बीज बोती है । [4]

---

1. मैथिलीशरण गुप्त - लीला - पृ. 115
2. वही - पृ. 25
3. वही - पृ. 25

ों पुण्य-बीज बोने के समान सीता का मन्द-मन्द पैर रखकर चलना- कहने के रण उत्प्रेक्षा अलंकार है ।

प्रकृति का चित्रण अत्यंत प्रभावोद्पादक ढंग से "लीला" काव्य हम देख सकते हैं । प्रकृति की सुन्दरता का चित्रण नीचे उद्धृत पंक्तियों में है -

शीतल सुगन्ध-परिपूर्ण, मन्द करती है मानो नेत्र बन्द !
वह चारू चन्द्रिका, रजत-रात चन्दन-चर्चित-सा गगन गात
निज होम शिखा-हुत मांस हव्य है - कभी यहाँ की भाँति भव्य ?
रवि चन्द्र यहाँ निज कुल समेत है बना चुके निज निकेत ।

ति का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली प्रतीत होता है ।

"लीला" काव्य में कवि का उद्देश्य बालकाण्ड पर आधारित मकाव्य को नाट्य के अनुरूप लिखना है । जिसको भक्त जन आसानी से रंगमंच प्रस्तुत कर सकते हैं । इसके अलावा अन्य और कोई उद्देश्य इसमें उपलब्ध हीं है ।

मिजा {रघुवीरशरण मिश्र}

अरण्यवासिनी सीता चित्रण से "भूमिजा" आरंभ होती है । सीता ा अंतरद्वन्द्व और आत्महत्या के लिए तैयार होना, वाल्मीकि का उसे रोकना, ीता का अपनी आसन्न मातृत्व को समझकर जीने के लिए तैयार होना, सीता ो खेती करना, लव-कुश का जन्म, अपने बेटे केलिए रूई और रेशम के कुर्तों का र्माण, सीता का अपने बेटों को राम की कहानी सुनाना, सीता का वर्णन से ने पति के बारे में पूछना, सीता द्वारा कुटीर उद्योग को नेतृत्व देना; अपने च्चों को पढाना और बुनना भी सिखाना, सीता के परिश्रम से हर घर की गुल्क रना, वन के ऐश्वर्य देखकर राम की चिंता, उस खेती को खत्म करने के लिए ाण लेना, राम का लक्ष्मण से अपने मन की बातें खुलकर बताना, सीता के प्रति

मैथिलीशरण गुप्त - लीला - पृ.45

उनके प्यार, राम का अपने कर्मों को बुरा मानना, और राज्य छोडकर वन जाने की इच्छा प्रकट करना, लेकिन लक्ष्मण द्वारा उनको समझाना, अंत में राज्य में एका स्थापित करने के लिए राम का बाण लेने के लिए तैयार हो जाना, ऋषियों के आश्रम पर आक्रमण, सीता के रोने के कारण लव-कुश का धनुष-बाण लेकर उनका मुकाबला करने के लिए आगमन, राम का अपने एकाधिपत्य को स्वीकार करने के लिए उन्हें आदेश देना, लेकिन अपने देश में दूसरों की आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार न होना, वाल्मीकि द्वारा राम को समझाने का प्रयास, राम द्वारा अपने बेटे को पहचानना, इस हरी-भरी धरती का पालन पोषण, करनेवाली सीत के बारे में सुनना, सीता का नाम सुनकर राम धनुष छोडकर उनसे मिलने के लिए आगे बढना, लेकिन सीता की आँखों से आँसू गिर पडने से पृथ्वी का फट जाना और सीता का धरती में समा जाना, करूण क्रन्दन करनेवाले लव-कुश को राम द्वा सांत्वना देना, वाल्मीकि द्वारा सबको समझानेका प्रयास आदि प्रमुख घटनाएँ "भूमिजा" में उपलब्ध है ।

"भूमिजा" में सीता, रावण, वाल्मीकि, लव-कुश, राम और लक्ष्मण जैसे पात्र हैं । इसमें सीता चरित्र की प्रधानता है । सीता का आदर्श आधुनिक नारी रूप इसमें उपलब्ध है । चरित्र-चित्रण की दृष्टि से इसमें रावण सीता के सच्चे प्रेमी के रूप में चित्रित है । शेष पात्रों में मौलिकता का अभाव है

करूण, वीर जैसे रसों का प्रयोग इसमें हम देख सकते हैं । करूण रस का चित्रण निम्नलिखित पंक्तियों में है -

भविष्यत् देह में लेकर -
बनी अभिशाप बैठी हूँ ।
पुण्य की सृष्टि में मानो -
अभागिन पाप बैठी हूँ ।।[1]

---

1. रघुवीरशरण मिश्र - भूमिजा - पृ. 33

इसमें आश्रय सीता, आलंबन राम एवं बन्धुजन उद्दीपन है । उसका गर्भवती होना, {भविष्यत् देह में लेना} अनुभाव है अपने आपको अभागिन मानना और संचारी है उसका दैन्य भाव । इसप्रकार प्रस्तुत पंक्तियों में करूण रस का चित्रण पूर्ण है ।

संवाद का चित्रण "भूमिजा" में उपलब्ध है । जैसे सीता-वाल्मीकि सीता-लव-कुश, राम-लक्ष्मण, राम - लव-कुश, राम-वाल्मीकि आदि । इसमें राम-लक्ष्मण संवाद अत्यंत प्रभावशाली प्रतीत होता है । क्योंकि राम के मन में सीता के प्रति उसके अदम्य प्यार का चित्रण इसमें ही स्पष्ट होता है । वर्णनात्मक शैली का प्रयोग "भूमिजा" में उपलब्ध है । इसमें वर्णनों की प्रधानता है । बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें हम देख सकते हैं । संस्कृत शब्द भी प्रयुक्त हुआ है । जिसकी लाठी उसकी भैंस, मुँह में राम बगल में छुरियाँ आदि मुहावरों का प्रयोग भी इसमें है । भाषा का सरल रूप निम्नलिखित पंक्तियों से प्रकट होता है -

मुझे जीने पडेगा रात -
की चादर हटाने को ।
मुझे गाना पडेगा न्याय -
का सूरज जगाने की ।[1]

यहाँ सीता जीने के लिए तैयार होती है । उसकी मानसिक तरंगों को सीधी-सादी भाषा में यहाँ चित्रित किया है । इसको समझाने में कोई कठिनाई नहीं है ।

इसमें सार {ललितपद} का प्रयोग हम देख सकते है "सार" छन्द की प्रयोग कुशलता नीचे दृष्टव्य है -

किसी की आरती में भी
अनश्वर आग होती है ।
धरा को मौन में भी तो -
कभी आवाज़ होती है ।।[2]

इसमें प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ है और 16-12 पर यति होती है । इसलिए प्रस्तुत छन्द सार छन्द है ।

"भूमिजा" में उपमा, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति आदि अलंकार हैं अतिशयोक्ति का चित्रण निम्नलिखित है -

रोने लगा चाँद हिचकी भर,
सूरज से जल बरसा ।[1]

यहाँ चाँद का हिचकी भर रोना, सूरज से जल बरसना आदि लोक-सीमा के बाहर की बात होने के कारण यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है ।

"भूमिजा" में कवि का उद्देश्य सीता चरित्र के माध्यम से कवि आधुनिक युगीन समस्याओं को प्रकट करना है । सीता केवल द्वापर युग की शक्ति स्रोत न होकर आधुनिक भारतीय नारी के लिए आदरणीय आदर्श नारी है । इस रूप में सीता-चरित्र का चित्रण करके कवि ने युगीन परिवेशों के अनुकूल काव्य सृजन किया । प्रस्तुत काव्य के संबंध में कवि कथन है "भूमिजा सीता के वनवास जीवन की रचनात्मक कहानी है । घटनाएँ बीज रूप में उपयोग में लाया हूँ । वास्तव में मैं सीता के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र से कुछ कहना चाहता हूँ, सीत की गति-विधि को उभारना चाहता हूँ न्याय और निर्माण की आवाज़ बुलन्द करना चाहता हूँ । सीता जनक दुलारी होने के साथ-साथ वर्तमान चेतना का प्रतीक है ।

"भूमिजा" में प्रकृति का चित्रण भी है । सीता द्वारा खेती करना आरंभ करने के बाद प्रकृति की सुन्दरता निम्नलिखित है -

कहीं चने की चमक, कहीं पर
थी मक्का दमकीली
कहीं बसंती साडी पहने
फैली सरसों पीली ।।[2]

खेत की सुन्दरता यहाँ विद्यमान है ।

---

1. रघुवीरशरण मिश्र - "भूमिजा" की भूमिका से ।
2. वही - पृ. 40

चित्रकूट (रामानंद शास्त्री)

"चित्रकूट" काव्य का आरंभ चित्रकूट की प्राकृतिक सुषमा से प्रारंभ होता है । रामादि को मिलने के लिए भरत के साथ कैकेयी का भी होना राम से कैकेयी का माँफी माँगना, कैकेयी को राम का पापी न मानना, पश्चा से पीडित कैकेयी को वसिष्ठ द्वारा सांत्वना देना, दशरथ की मृत्यु ऐसा होना नियति का कारण कहना, वसिष्ठ का दशरथ के शाप के बारे में कहना, दशरथ के द्वारा श्रवण कुमार की हत्या, दशरथ का उसकी लाश को लेकर पर्णकुटी में पहूँचना वृद्ध-दंपतियों के पुत्र शोक, श्रावण कुमार का अपन सत्कर्मों के कारण दिव्य रूप ध धारण करना, अपने माँ-बाप को जल्दी से उसके पास पहूँचने की प्रार्थना, उनके दशरथ को पुत्र शोक से मरने का शाप देकर पुत्र की चिता में आत्माहुति करना, इसप्रकार कैकेयी को निर्दोषी दिखाना, राम का अपने वनवास को देश की सेवा रूप में स्वीकार करना राम का वापस आने के लिए तैयार न होना भरत का अपने को दोषी मानना, राम द्वारा दशरथ का रथ के पीछे आने का वर्णन करना, सु द्वारा राम को उसके अयोध्या वापस लौटने के बाद की कहानी सुनना, दशरथ व पुत्र शोक, कैकेयी को दोषी मानना, पुत्र शोक से दशरथ का देहांत, सबका भोजन और विश्राम भरत-राम वार्तालाप, जनक उनके भ्रातृ प्रेम की प्रशंसा करना, राम का अपने कर्तव्य पालन में अडिग रहने से भरत का राम पादुकाएँ लेकर वापस लौटने के प्रसंग से चित्रकूट की कथा समाप्त होती है ।

"चित्रकूट" में राम-भरत, लक्ष्मण, दशरथ, जनक, वसिष्ट, सी कैकेयी, कौसल्या, अत्रि, अनसूया, आदि का चरित्र-चित्रण उपलब्ध है । राम कैकेयी को पापिनी न माननेवाले आदर्श पुत्र है । लक्ष्मण भी कैकेयी की करनी अच्छी मानती है । वसिष्ट कैकेयी को पतिघातिनी नहीं मानते हैं । इसप्रक इसमें चरित्र-चित्रण की दृष्टि से विशेषताएँ हैं ।

"चित्रकूट" में करूण अद्भुत, रौद्र, करूण, और शांत रस का प्रयोग हुआ है । करूण रस का चित्रण निम्न पंक्तियों में दृष्टव्य हैं -

कभी अचेतावस्था में वे,
सुध-बुध खोकर हँसते थे,
दुख के दलदल में करेणु-सा
परवश होकर फँसते थे ।[1]

यहाँ दशरथ आश्रय, आलंबन राम की वनयात्रा, उद्दीपन राम की याद, अनुभाव है सुध-बुध खोकर हँसना, अचेतनावस्था में आना, संचारी है उन्माद । इसप्रकार इसमें करुण रस का प्रतिपादन है ।

'चित्रकूट' में संवाद का चित्रण है जैसे राम-सीता, लक्ष्मण-राम, राम-भरत, राम-अत्रि, सीता-अनसूया, राम-कैकेयी आदि उल्लेखनीय है । इसमें वर्णनात्मक और चित्रात्मक शैली की प्रधानता है । बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें किया गया है । बोलचाल की भाषा का नमूना निम्नलिखित है -

चित्रकूट पर आकर के वह
पिघल गई थी पाषाणी,
चन्द्रकला-सी बरसाती थी
सुधा-धार वह क्षत्राणी ।[2]

कठिन शब्दों का प्रयोग इसमें एक भी नहीं है ।

'चित्रकूट' में अनेक छन्दों का प्रयोग हम देख सकते हैं । कवि इस छन्द प्रयोग के बारे में कहते हैं - इस काव्य में वीर और ताटंक छन्दों का मिश्र प्रयोग है । इनके अतिरिक्त उपेन्द्रवज्रा, मालिनी, घनाक्षरी, मंदाक्रान्ता, द्रुतविलम्बित, प्रमाणिका, मिताक्षरा, त्रोटक, भुजंग-प्रभात, इन्द्रवज्रा, उपजाति, दोहा, सोरठा, हरिगीतिका, प्रभृति छन्दों का प्रयोग विभिन्न स्थानों पर किया गया है ।[3] षष्ठ सर्ग में गीति शैली में लिखे गए कतिपय छन्द है । वीर छन्द का चित्रण निम्नलिखित है -

---

1. रामानंद शास्त्री - चित्रकूट - पृ. 101
2. वही - पृ. 49
3. वही - "भूमिका" से ।

ये न किसी की निन्दा करते,
या न किसी का गौरव का गान ;
तन में भस्म रमाये रहते
पर इनका मन है अम्लान ।[1]

वीर छन्द में प्रत्येक चरण में 16, 15 मात्रा पर यति होती है । इसलिए इसमें वीर छन्द है ।

अलंकारों में अतिशयोक्ति, अनुप्रास, उपमा और उत्प्रेक्षा का प्रयोग किया गया है । अनुप्रास का उदाहरण निम्नलिखित है -

तैरा करते तरल-तोय में
हरे हरे पुरश्न के पात

यहाँ "त" वर्ण के तीन बार और ह के दो बार औप "प" के दो बार आने के कारण अनुप्रास अलंकार है ।

प्रकृति का सुन्दर चित्रण इस काव्य की विशेषता है । कवि को जहाँ अवसर प्राप्त हुए, वहाँ सुन्दर प्रकृति चित्रण ही किया है । प्रथम दो सर्गों में प्रकृति का चित्रण ही है । इनमें प्रकृति की सुन्दरता को चुन लेना कठि है । फिर भी प्रकृति का चित्रण निम्नलिखित है -

कोकिल - कीर - कपोत - कलित
कारण्डव कल - रव करते हैं,
चक्रवाक- चातक-चकोर अति -
रूचिर चटक मन हरते हैं ।[2]

प्रकृति का सुन्दर सुरम्य रूप यहाँ स्पष्ट हो गया है ।

'चित्रकूट' काव्य में कवि का उद्देश्य कैकेयी चरित्र को दोषर दिखाना है । राम के द्वारा कवि यह भी बताना चाहते हैं कि शासक को

---

1. रामानंद शास्त्री - चित्रकूट - पृ. 30
2. वही - पृ. 4

राज्य में ही न रहना चाहिए । उसे अपने राज्य के कोने-कोने में होनेवाली स्थितियों को और वहाँ के जन की जीवन चर्या से परिचित होना चाहिए । शासक को अपनी जनता की कमियों के बारे में आवश्यक कार्रवाई भी करनी चाहिए । कैकेयी कहती है कि गाँवों की जनता की मेहनत से बडे-बडे शहरों की प्रगति होती है । लेकिन इससे शासक वर्ग भी अनभिज्ञ है । शिक्षा से वंचित गाँववालों का शिक्षा देकर उसे प्रगति की ओर लेना चाहिए । जनता को परिस्थि से परिचित कराके इन्हें शोषण का परिचय देना शासक का कर्तव्य है ।

सौमित्र [रामेश्वर दयाल दुबे]

नाम से स्पष्ट है कि यह लक्ष्मण प्रधान काव्य है । माता सुमि पिता दशरथ, भाभी सीता और भ्राता राम द्वारा लक्ष्मण की बधाई ही इस का का केन्द्र बिन्दु है । प्रस्तुत काव्य की भूमिका में सुमित्रानंदन पंतजी ने इसप्रकार लिखा है - रामायण की कथा से और उसमें भी लक्ष्मण के निर्भीक उन्मुक्त चरित्र से हम सभी परिचित है, जिसे तुलसीदास ने विशेष रूप से तेजस्वी, सेवापरायण तथा त्याग की मूर्ति के रूप में अंकित किया है । उसी लक्ष्मण को लक्ष्य बनाकर श्रीरामेश्वरदयाल दुबेजी ने बडी ही कुशलता से सुमित्रा, दशरथ, सीता तथा राम के मुख से उनकी गंभीर भावात्मक प्रतिक्रिया को सौमित्र नामक प्रस्तुत खंडकाव्य में छंदग्रंथित करने का सफल प्रयत्न किया है ।

यह चरित्र-चित्रण प्रधान काव्य है । इस काव्य का केन्द्र बि लक्ष्मण है । माता, पिता, भाभी और भाई राम उसके चरित्र का यशोगान करने में उत्सुक हैं और भावावेग के कारण गद्गद कंठ हो जाते हैं । ममतामय सुमित्रा लक्ष्मण जैसे पुत्र को जन्म देने के कारण गर्व करती है । दशरथ आत्मग्ला से युक्त और कौसल्या के आगे आत्मनिवेदन करनेवाले एक आत्मपीडित आदमी रूप में चित्रित है । सीता अपनी दुर्बलता के कारण होनेवाली मुसीबतों से पश्

---

1. रामेश्वर दयाल दुबे - सौमित्र की भूमिका से

करनेवाली है और लक्ष्मण से माँफी भी माँगती है । राम लक्ष्मण जैसे भ्राता की प्राप्ति को अत्यंत महत्त्व देनेवाले हैं । राम लक्ष्मण के प्रति अनन्य प्रेम और कृतज्ञता भी प्रकट करते हैं । लक्ष्मण के प्रति राम का भाव है -

भरत भरत है, किन्तु न लक्ष्मण, तुम सा बन्धु अन्य देखा
अग्रज के लिए कि जिसका लिया गया जीवन-लेखा ।[1]

राम लक्ष्मण को भ्रातृ सेवा के लिए जीनेवाला मानते हैं ।

सौमित्र में रौद्र, वीर आदि रसों का प्रयोग किया गया है । रौद्र रस का चित्रण निम्नलिखित है -

हुआ मौन, पर रोम-रोम ही बोल रहा था ।
साँसों में फूत्कार फणी सी डोल रहा था ।।
आनन था उद्दीप्त, नयन झरते चिनगारी ।
प्रलयंकर के रौद्र रूप का था अनुहारी ।।[2]

आश्रय लक्ष्मण, आलंबन कैकेयी, उद्धीपन कैकेयी की वरयाचना, अनुभाव है मौन होना, आनन उद्धीप्त होना, नयन से चिनगारी झरना आदि संचारी है रौद्र रूप । इसप्रकार इसमें क्रोध रूपी स्थायी उत्पन्न होने से रौद्र रस है ।

"सौमित्र" चरित्र-चित्रण प्रधान काव्य होने के कारण संवादों की बहुलता नहीं, लेकिन अभाव नहीं है । कैकेयी की कुटिलता के कारण वन जाने के लिए तैयार होनेवाले राम से लक्ष्मण - कथन को संवाद का उत्तम नमूना मान सकते हैं । इसमें वर्णनात्मक शैली की प्रधानता है । सरल भाषा का प्रयोग इसमें किया गया है । इसकी भाषा के संबंध में भूमिका में सुमित्रानंदन पंतजी ने स्वयं कहा है -"इसकी भाषा प्रांजल, प्रवाहपूर्ण तथा प्रसाद गुण संपन्न है । इसके शिल्प में कुछ नये शब्दों को भी सफलतापूर्वक सँजोया गया है । भावों की स्वच्छता एवं निश्चल अकृत्रिमता काव्य में चार चाँद लगा देती है ।"[3] संस्कृत के शब्दों का प्रयोग जैसे "शक्तिज", "क्रोड", आदि भी भाषा में उपलब्ध है ।

---

1. रामेश्वरदयाल दुबे - सौमित्र - पृ. 68
2. वही - पृ . 18
3. वही - भूमिका-पृ. 6

रोला, समान सवैया, जैसे छन्दों का प्रयोग इसमें उपलब्ध है । रोला छन्द का चित्रण निम्नलिखित रूप में है -

जीवन का साफल्य भला वह क्या है पाता ।
निष्फलता निज देख, धूल में वह मिल जाता ।।
किन्तु कुसुम वह धन्य, क्रोड में जो फल साधे ।
परंपरा अक्षुण्ण रहे, तन्मय आराधे ।।[1]

रोला छन्द के प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ हैं और ।।, ।3 में यति होती है । प्रस्तुत पंक्तियों में भी यह स्पष्ट है । इसलिए इसमें रोला छन्द है ।

"सौमित्र" में उपमा और उत्प्रेक्षा का प्रयोग गणनीय है । उपमा का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है -

खींच साथ ले चले राम लक्ष्मण को ऐसे
कुशल गारूडी ले जाता फणिधर को जैसे ।

जिस प्रकार कुशल गारूडी फणिधर का खींचकर ले जाता है उसी प्रकार राम लक्ष्मण को साथ खींचकर ले जाते हैं । इसलिए इसमें उपमा अलंकार है ।

प्रकृति वर्णन का अभाव "सौमित्र" काव्य में दिखाई देता है।

आधुनिक युग में रिश्तों को कोई महत्व नहीं दिया गया है । धन, सत्ता आदि के लिए पारिवारिक विघटन साधारण सी साधारण बात बन चुकी है । प्राचीन महत्वपूर्ण चरित्र के द्वारा भारतीय संस्कृति की महिमा को स्पष्ट दिखाना कवि का लक्ष्य है । इस काव्य सृजन के लक्ष्य के संबंध में कवि का कथन है "भारतीय नवयुवक सौमित्र से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उच्च बनायें - ऐसी अभिलाषा है ।[2]

---

1. रामेश्वरदयाल दुबे - सौमित्र - पृ. 10
2. वही - "प्रकाशकीय" से ।

संशय की एक रात (नरेश मेहता)

सेतुबन्धनोपरांत रावण से युद्ध करने के लिए उद्यत वानरवाहिनि की वीरता और उत्सुकता देखकर राम के मन में युद्ध अनिवार्य है या नहीं, यह संशय उत्पन्न होना, केवल एक सीता के लिए इतने सारे लोगों की हत्या हो जाने से क्या फायदा है ? राम की यही चिंता, युद्ध के उपरांत होनेवाली विभीषिकाओं को सोचकर राम का दम घुटना, संशयग्रस्त राम के सामने पिता दशरथ और जटायु की आत्मा द्वारा कर्म करने के लिए प्रेरणा देना, राम के इस युद्ध को असत्य पर सत्य का युद्ध बताना, इसलिए सन्देह छोडने का उपदेश देना, राम द्वारा निर्णय लेने के लिए सभा बुला लेना, लक्ष्मण का स्वयं लंका में जाकर सीता की मुक्ति के लिए तैयार हो जाना, हनुमान रावण का सीतापहरण साधा जन की स्वतंत्रता का अपहरण मानना, इसलिए इस युद्ध को स्वतंत्रता की मुक्ति के लिए अनिवार्य बताना, अंत में राम के मन का संशय दूर हो जाने से युद्ध के लिए तैयार हो जाना इसकी कथावस्तु है ।

"संशय की एक रात" में राम, लक्ष्मण, हनुमान, दशरथ, जटायु विभीषण आदि है । इसमें नल, नील आदि भी है । राम इसमें संशयग्रस्त तनाव से भरे युद्ध से घृणा करनेवाले और शांति चाहनेवाले शासक के प्रतीक रूप में चित्रित है । इसमें लक्ष्मण मानव की शक्ति और साहस का प्रतीक है । भाई की प्रति को उसी तरह पालन करनेवाला नहीं, भाई को ठीक रास्ता दिखानेवाले सच्चा भ्राता है । हनुमान दलित-पीडित साधारण जन का प्रतीक है । दशरथ और ज वैचारिकता का प्रतीक है ।

"संशय की एक रात" में अद्भुत रस योजना का भी चित्रण दे सकते हैं । अद्भुत रस का चित्रण निम्नलिखित पंक्तियों में है -

नल: हाथों में इसके तो पक्षी है ।
जामवन्त गरुड है शायद
अवश्य ही रहस्य है ।

छलने !
प्रभु को उत्तर दो
राम जो रात्रि की प्रेतात्मा !
ठहरो
दाशरथि राम को उत्तर दो
मैं तुम्हें मन्त्रों से पाशित कर
इन्हीं आकाशों में घिर कर दूँगा ।[1]

आश्रय वानर, आलंबन दशरथ और जटायु की प्रेतात्मा, उद्दीपन प्रेतात्मा की छाया, भय से बातें करना अनुभाव, मन में शंका उठना संचारी भाव है । इसप्रक यहाँ अद्भुत रस का स्थायी भाव आश्चर्य उत्पन्न होता है ।

"संशय की एक रात" में संवादों की प्रधानता है । संवादों में राम-दशरथ-जटायु, राम-लक्ष्मण, राम-हनुमान, राम-विभीषण आदि प्रमुख है । इसमें नाटकीय शैली, प्रश्न शैली और मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग किया गया है । भाषा में संप्रेषणीयता, चित्रात्मकता, संस्कारशीलता और प्रभावोद्पादकता है । इसकी भाषा अत्यंत सरल एवं सहज है । भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशी शब्दों का प्रयोग भी तत्सम शब्दों में सिंधु, बेल, आम्रकुंज, वैश्वानर ऋतंभरा, परिताप, अवांछित, वैराट्य, निर्माल्य, आदि तद्भव शब्दों में दुहो, दुबली, ऐठी, माथ, हाथ, पांखी, जेता, जैसे शब्द है । विदेशी शब्दों में सला गुलामों, बेहोश, घायल आदि और देशज शब्दों में हरहरा, पोर-पोर झोर-झो जैसे शब्द हैं । नये-नये शब्दों में "अपात्री", "कवचित", "उत्सर्गित" आदि है भाव-प्रवाह में भाषा के तदनुकूल प्रयोग भी नरेश मेहता की विशेषता है जैसे विश "बिलोने", "स्वीकारो" आदि इसका प्रमाण है ।

"संशय की एक रात" में मुक्त छन्द का प्रयोग किया गया है इस काव्य में उपमा का प्रयोग भी देख सकते हैं । उपमा का चित्रण निम्नलिखित

---

1. नरेश मेहता - संशय की एक रात - पृ. 49

टूटे हुए संदर्भ है
मरूथलों की
गर्म जलती हवाओं की भाँति ।[1]

प्रकृति का चित्रण "संशय की एक रात" में उद्दीपन रूप में किया गया है । प्रकृति का उद्दीपन रूप निम्नलिखित है -

इस झुके मेरे माथ को
नीले फूलों को
शुभाशंसा प्रदतौ
मेरी यात्रा
छोटे शंख सी
यहीं बालू में कहीं गिर
खो गई है ।[2]

यहाँ नीले फूल तथा छोटे शंख के द्वारा राम के मनोभावों को कवि ने उद्दीप्त किया है ।

"संशय की एक रात" के द्वारा कवि का उद्देश्य राम चरित्र को एक साधारण मानव के रूप में चित्रित करना है । साधारण मनुष्य के संशयग्रस्त रूप और उसकी समस्याओं का समाधान ढूँढ निकालना कवि का लक्ष्य प्रतीत होता है । इस काव्य के संबंध में कवि का मत है - "यह कृति राम की विशिष्ट मनोदशा तथा युद्ध एवं शांति से संबंधित प्रश्नों के एक विशेष प्रयोजन को ही प्रस्तुत करती है प्रश्न और उनके निराकरण, अपनी सामाजिकता के बाद भी राम उन्हें व्यक्तिगत पाते हैं । यह उन्हें निरा व्यक्ति कर देने की चेष्टा नहीं है, बल्कि उन्हें व्यक्ति को देखने की चेष्टा है ।"[3]

---

1. नरेश मेहता - संशय की एक रात - पृ. 24
2. वही - पृ. 9
3. वही - पृ. भूमिका से ।

शंबूक - डॉ. जगदीश गुप्त

"शंबूक" काव्य का आरंभ असमय में अपने पुत्र की मृत्यु के कारण करूण क्रन्दन करनेवाले ब्राह्मण के चित्रण से प्रारंभ होता है । प्रजा गण द्वारा ब्राह्मण पुत्र की मृत्यु का कारण राम की बुराईयों का फल मानना, शंबूक की तपस्या, राम की सभा में ब्राह्मण पुत्र की मृत्यु के संबंध में बातचीत, वसिष्ठ नारदजी से इसका कारण समझकर राम से शूद्र शंबूक की तपस्या के कारण यह आपत्ति, ब्राह्मण के पुत्र की अकाल मृत्यु का कारण बताना, राम का शंबूक की खोज में पुष्पकयान में वन की ओर जाना, वन देवता द्वारा राम की बुराईयों को खुल्लम खुल्ला बताना, दण्डकारण्य में राम के मन में सीता की स्मृति होना, राम-शंबूक संवाद, शंबूक का राम की सभी अनीतियों का पर्दाफाश करना, राम द्वारा शंबूक का शीश काटना शंबूक का कटे शीश और एकलव्य की अँगुली का वार्तालाप और तिलक लगाना आदि शंबूक की कथावस्तु में निहित है । यहाँ शंबूक का कटे शीश और एकलव्य की अंगुली सामाजिक अनीति का ज्वलंत प्रमाण है ।

"शंबूक" में शंबूक, राम, वसिष्ट, ब्राह्मण, नारद, वनदेवता आदि चरित्र का चित्रण है । इनमें सबसे प्रमुख शंबूक है, जो वर्ग व्यवस्था से पीडित, दलित-शोषित, शासकीय सत्ता के कुचक्र में फंस जानेवाली आम जनता का प्रतीक है राम सत्तामोही, पार्श्ववर्तियों के इशारे पर नाचनेवाले एक कठपुतले है जिनमें अच्छे बुरे को समझने की क्षमता होने पर भी अपनी सत्ता के पोषकों को सबसे अधिक महत्व देनेवाले हैं । वनदेवता शासकों की कागज़ीय योजनाओं की हँसी उठानेवा तिरस्कृत जनमानस का प्रतीक हैं । वसिष्ठ और नारद प्रगतिशील चेतना का विरोध करनेवालों का प्रतीक है ।

शंबूक में रौद्र रस का चित्रण भी हम देख सकते हैं । ब्राह्मण पुत्र की अकाल मृत्यु के कारण ब्राह्मण का रूप निम्नलिखित है -

शिखा खोले
क्षुब्ध ब्राह्मण एक

दे रहा अभिशाप
बाँह फेंक
भूमि पर
उसका तरूण प्रतिरूप
भग्न निश्चल
यज्ञ का ज्यों भूप ।[1]

यहाँ आश्रय ब्राह्मण और आलंबन राम है । उद्दीपन है राम की अनीति के कारण अपने पुत्र का देह वियोग मानना, अनुभाव है भूमि पर बाँह फेंकना, संचारी है अभिशाप । इस प्रकार यहाँ क्रोध नामक स्थायी भाव पुष्ट हो जाता है ।

संवादों का चित्रण "शंबूक" काव्य में अत्यधिक प्रभावशाली लगते है । राम-वसिष्ठ, वसिष्ठ-नारद, राम-वनदेवता, राम-शंबूक आदि संवाद उल्लेखनीय है । नाटकीय शैली और प्रश्न शैली का प्रयोग इसमें किया गया है । भाषा की चित्रात्मकता "शंबूक" काव्य की विशेषता है । तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग इसमें हैं तत्सम शब्द जैसे ऊर्ध्वमुखी, तनय, कीर्ति, चतुष्पथ, सत्कर्म और तत्भव शब्दों में अंध, छाप, दूब, पाँख-पाखी आदि है ।

इसमें मुक्त छन्द की प्रधानता है । उपमा, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का प्रयोग प्रस्तुत काव्य में किया गया है । मानवीकरण की महिमा निम्नलिखित है -

बिछा चौसर सा चतुष्पथ
कौड़ियों से ढोर
हरित वृक्षों से खिलाडी
जुटे चारों ओर[2]

यहाँ प्रकृति की प्रवृत्तियों को मानवीय चेष्टाओं के समान चित्रित करने के कारण मानवीकरण अलंकार है ।

---

1. जगदीश गुप्त - शंबूक - पृ. 4
2. वही - पृ. 17

प्रकृति का सुन्दर चित्रण निम्नलिखित पंक्तियों में है -

क्षीर सागर की तरंगों से
उठे हिम श्रृंग
उच्चता से कर रहे
आकाश का मद भंग ।[1]

क्षीर सागर की तरंगों से उठनेवाले हिमश्रृंग आकाश का मद भंग उच्चता से कर रहा है । इसमें प्रकृति का चित्रण चित्र के समान स्पष्ट हो गया है ।

शासक और शासित जन के बीच में होनेवाले उत्पीडनों का वर्णन करना "शंबूक" काव्य में कवि का उद्देश्य है । समाज में दिखाई पडनेवाली अत्यंत हीन जाति-व्यवस्था और उसकी स्थापना के लिए आज भी शासक वर्ग तैयार हो जाते हैं । यदि उसके विरुद्ध कोई आवाज़ उठेंगे तो उसके शीश काटने में भी ये शासक लोग हिचकते नहीं । कवि की राय में "गीता महाभारत की तरह रामायण की मानव जीवन की गहनतम समस्याओं का निदान प्रस्तुत करने में भी प्रेरक है । प्रकारा से कवि ने सामयिक मूल्यों की ह्रासोन्मुखी स्थिति और युगीन समस्याओं के समाधान हेतु समीक्ष्य काव्य की रचना के दायित्व को स्वीकारा है ।"[2]

प्रवाद पर्व (नरेश मेहता)

'प्रवाद पर्व' का आरंभ सीता के चरित्र पर आरोपित कलंक के बारे में राम की चिंता, केवल साधारण धोबी की वाणी सुनकर इसको तिरस्कृत करने के लिए राम का तैयार न होना, निर्णय लेने के लिए राम द्वारा सभा बुला लेना, सभा सदों द्वारा सीता की वकालत एवं साधारण अनाम धोबी के विरुद्ध राजद्रोह सिद्ध करना, राम द्वारा तर्क के आधार पर व्यक्ति स्वातंत्र्य का विवेचन, लक्ष्मण द्वारा सीता की अग्निपरीक्षा को नारी का अपमान कहना तथा उसके लिए

---

1. डा. जगदीश गुप्त - शंबूक - पृ. 19
2. वही - भूमिका - पृ. 11

स्वयं को अपराधी मानना, सीता के तार्किक व्यक्तित्व की मुख्य अभिव्यक्ति एवं उदात्त त्यागपूर्ण चरित्र का रूपांकन, राम का द्विविधा में पड़ जाना, राम की द्विविधा को मिटाने के लिए सीता का स्वयं वन जाने के लिए तैयार होना, सीता की रथयात्रा देखकर रहनेवाले राम के चित्रण से प्रवाद पर्व का समाप्त होता है ।

"प्रवाद पर्व" में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सीता जैसे पात्रों का चित्रण है । प्रस्तुत काव्य में राम के चरित्र का आदर्श राजा रूप से बढकर आदर्श पति रूप अधिक निखर रही है । क्योंकि प्रवाद से डरकर सोचे बिना सीता को वनवास नहीं दिया । प्रवाद के बारे में सीता से बातें करने के बाद सीता की इच्छा के कारण इसप्रकार का निर्णय लेता है । लक्ष्मण और अन्य भ्राता परंपरानुसार चित्रित है । सीता का आदर्श पत्नी रूप यहाँ अत्यधिक महत्वपूर्ण है । अपने अपवा के कारण पति की विषमावस्था को खत्म करने के लिए आसन्न मातृत्व की वेला में भी वह तैयार हो जाती है ।

"प्रवाद पर्व" में करूण रस की प्रधानता है । करूण रस का चित्रण निम्नोद्धृत पंक्तियों में है -

राम ! यह कैसा दृश्य तुम देख रहे हो ??
यज्ञ के धास्मात्र सी पवित्र तथा
मांगलिक सीता को
लक्ष्मण
तुम्हारी राज्य सीमा पर
तुम्हारे ऐतिहासिक निर्णय के
प्रतीक स्वरूप
काग-गास सा रख आएँगे ।[1]

यहाँ आश्रय राम, आलंबन सीता, उद्धीपन उनकी कथा, अनुभाव है निश्वास,

---

1. नरेश मेहता - प्रवाद पर्व - पृ. 108

ाप और संचारी भाव है विषाद । इसलिए इसमें करूण रस का स्थायी भाव
क पुष्ट हो जाता है ।

"प्रवाद पर्व" में संवादों की प्रमुखता है । राम-लक्ष्मण, राम-
त, राम-सीता आदि है तो राम-सीता-संवाद प्रमुख है । इसमें नाटकीय शैली,
ोवैज्ञानिक शैली, प्रश्न शैली और तर्क शैली का प्रयोग किया गया है । "प्रवाद
ं" की भाषा में लाक्षणिकता है । इसकी भाषा दार्शनिकता, धार्मिकता, उदात्तता,
ीरता और सामाजिकता को स्पष्टतः व्यक्त करती है । इसमें तत्सम, तद्भव,
ज, और विदेशी शब्दों का प्रयोग हुआ है । नवनिर्मित शब्दावली का प्रयोग
ा है । इसमें मुक्त छन्द का प्रयोग किया गया है । अलंकारों में उपमा को
ानता है उपमा अलंकार का सफल प्रयोग निम्नलिखित पंक्तियों में स्पष्ट है ।

केवल हम ही
असंख्य पगडन्डियों भरी
धरती की विस्तीर्णता में
वनस्पतित्व खडे कर दिये जाते हैं
जैसे
हम यात्रा करते वृक्ष हों ।[1]

इॅं उपमालंकार के प्रयोग से काव्य सौष्ठव में वृद्धि हुई है ।
कृति का चित्रण "प्रवाद पर्व" में पृष्ठभूमि को उभारने के लिए किया गया है । जैसे-

फिर हमें तूफानों के उबलने
उफनते पन में फेंक जाता है
और हम
जल की विशाल हिल्लोलता में
विवश नारिकेल से
डूबते उतारने लगते हैं ।[2]

नरेश मेहता - प्रवाद पर्व - पृ. 67

वही - पृ. 59

"प्रवाद पर्व" के द्वारा कवि का उद्देश्य चिरकालीन रामचरित्र पर आरोपित सीतावनवास रूपी कलंक को दूर करना है । इसलिए इसमें सीता वनवास के लिए राम से प्रार्थना करती है । इसके अलावा सच्चा शासक अपनी निजी समस्याओं से बढ़कर प्रजा हित को अधिक महत्व देते हैं । यह तथ्य कवि ने "प्रवाद पर्व" के द्वारा सिद्ध किया है ।

शबरी (नरेश मेहता)

"शबरी" काव्य में शबरी की संपूर्ण जीवन गाथा उपलब्ध है । जैसे शबर जाति होने पर भी उसकी हत्या, मांस भोजन आदि से घृणा, इससे ऊबकर भगवत् भक्ति में विश्वास रखकर अतंग मुनि के आश्रम में पहुँचना, इसका आश्रम के कुछ दूर एक कुटी बनाकर रहना, गोरक्षा का काम करना, प्रतिदिन बढ़नेवाली शबरी की महिमा से असंतुष्ट लोग शबरी को अछूता मानकर वहाँ से निकलने के लिए षड्यंत्र करना, उसके पति को बुलाकर शबरी को वहाँ से ले जाने के लिए आग्रह प्रकट करना, उसे ले जानेवालों को अग्निकुण्डल से सताना, मुनि के आगमन से आग का ओझल होना, मुनि का अपनी ज्ञान दृष्टि से सब कुछ जानना, उसे माँफी देना, वहाँ शबरी को मुक्ति मिलने के लिए सीता की खोज में राम-लक्ष्मण के आगमन की खबर मातंग मुनि को पहचानना, राम-शबरी मिलन और शबरी को मुक्ति प्राप्त होना । "शबरी" काव्य में संपूर्ण शबरी जीवन का सांगोपांग वर्णन है । इसमें केवल शबरी, मातंग मुनि, राम और लक्ष्मण को ही पात्र रूप में देख सकते हैं । शबरी अपनी निस्सीम भक्ति के द्वारा दुनिया को स्पष्ट दिखाती है कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से श्रेष्ठ हो सकता है । इसमें राम पूर्ण परात्परब्रह्म रूप में चित्रित है ।

इसमें अद्भुत रस का चित्रण हम देख सकते हैं । शबरी को ले जाने के लिए आनेवाले लोगों के समीप आग-कुण्डल सताने का चित्रण निम्नलिखित है -

गोल बनाकर बढ़ा, दो कदम
आगे तब शाबर-दल
तभी देखा शबरी के चारों
ओर आग का कुण्डल
समझ न पाये पहले तो वे
समझे कोई भ्रम है,
देखा रक्षा करता बैठा
वह साँपों का क्रम है ।[1]

यहाँ आश्रय शबर लोग, आलंबन शबरी, उद्दीपन शबरी के चारों ओर आग देखना, उसका भ्रम अनुभाव और संचारी भाव है संभ्रम । इसप्रकार इसमें अद्भुत रस का स्थाय भाव विस्मय स्पष्ट हो जाता है ।

"शबरी" में संवादों का प्रयोग भी है । शबरी-मातंग इसका स्पष प्रमाण है । इसमें वर्णनात्मक शैली की प्रधानता है । साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग इसमें किया गया है । भाषा का सरल प्रवाह निम्नलिखित पंक्तियों में दृष्टव्य है -

त्रेता-युग की व्यथामयी
यह कथा दीन-नारी की
राम कथा से जुड़कर
पावन हुई, उसी शबरी की ।[2]

अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, जैसे अलंकारों का प्रयोग इसमें किया गया है । उपमा अलंकार का प्रयोग निम्नलिखित है -

आँखें भर आयीं शबरी की
गिर पडी गुरु पद-पद्मों-पर
विह्वल शबरी यमुना सी थी

---

1. नरेश मेहता - शबरी - पृ. 59
2. वही - पृ. 1

ऋषि के उज्ज्वल पद-पद्मों पर ।[1]

गुरु पद-पद्मों पर गिरना यमुना के समान चित्रित करने के कारण यहाँ उपमा अलंकार है ।

प्रकृति का सुन्दर चित्रण "शबरी" में निम्नलिखित रूप में हुआ है -

हर - सिंगार, चम्पा, कनेर
कदली, केला थे फूले,
कमलों पर टूटे पडते थे
भ्रमर सभी रस भूले ।[2]

यहाँ प्रकृति का सुरम्य दृश्य स्पष्ट हो जाता है ।

शबरी काव्य में कवि का लक्ष्य शबरी के उपेक्षित चरित्र की महिमा का वर्णन करना और यह सिद्ध करना कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बन सकता है । शबरी के माध्यम से कवि जाति-व्यवस्था को नगण्य दिखाना भी चाहता है ।

अग्निलीक (भरत भूषण अग्रवाल)

'अग्निलीक' का कथानक सीता को यज्ञ की पूर्ति के लिए जानेवाले राजापुरुष और रथवान के वार्तालाप से प्रारंभ होता है । रथवान का एक ताला देखकर पर्वस्मृति होना, और राम के बुरे कर्मों के प्रति अपनी विद्रोही भावना प्रकट करना, राम के अत्याचार और सीता की निस्सहायता के संबंध में दोनों के बीच में घोर वाद-विवाद होना, रथवान का राम की प्रजा कहने में हिचकना, अंत में राजपुरुष का रथवान को समझाने का प्रयास, ज्योतिषियों के अनुसार इस यज्ञ की समाप्ति हो जाने से सीता-राम मिलन और राम को पुत्रप्राप्ति की

---

1. नरेश मेहता - शबरी - पृ.2।
2. वही - पृ.15

संभावना, वाल्मीकि आश्रम में रूग्णावस्था में पडनेवाली सीता का चित्रण, सीता के स्थान पर एक-स्वर्ण मूर्ति रखकर यज्ञ करनेवाले राम की निर्दयता पर सीता का रोना, सीता का चन्द्रकेतु द्वारा संचालित विजययात्रा देखने की इच्छा, चरण नामक जंगली आदमी का राम की विजययात्रा से भय, लेकिन राम से लडने की इच्छा, वाल्मीकि की इच्छा के अनुसार सीता द्वारा राम की यज्ञवेदी पर अपनी पवित्रता को स्पष्ट दिखाने से इनकार करना, अपने तिरस्कृत व्यक्तित्व और नारीत्व की दुबारा परीक्षा से उदासीन सीता का संपूर्ण रघुवंशियों की बुराईयों को स्पष्ट बताना, अपने शारीरिक और मानसिक पीडाओं से उदासीन होकर नारीत्व की अवहेलना को सहने के लिए तैयार न होकर आत्महत्या करना, सीता के वियोग से राम का अपनी बुराईयों को पहचानना और सीता की पुण्य स्मृति के रूप में राम-राज्य की स्थापना से "अग्निलीक" की समाप्ति होती है ।

"अग्निलीक" चरित्र-चित्रण प्रधान काव्य है । इसमें सीता, राम वाल्मीकि, रथवान, राजपुरुष, चरण, कौशिकी जैसे पात्र हैं । इसमें सीता चरित्र की प्रमुखता है । "अग्निलीक" में सीता आदर्श पत्नी से बढकर आदर्श आधुनिक भारतीय नारी है । वह अपने पति की बुराईयों को आँखें बन्द करके सहने के लिए तैयार नहीं है । अपने नारीत्व की प्रधानता उसको अपनी जान से बढ़कर है । राम सत्तालोलुप, साधारण शासक का प्रतीक है । चरण शासकों की अनीतियों से दम घुटनेवाली जंगली जाति का प्रतीक है ।

इसमें रौद्र रस का चित्रण उपलब्ध है । सीता द्वारा राम की अनीतियों का वर्णन करते समय यह स्पष्ट हो जाता है -

> इन महान रघुवंशियों के कुल में,
> राज्य को इतना महत्व क्यों दिया जाता है ?
> और भावना का इतना निराधार क्यों होता है ?
> मेरे पिता तो राज्य को तिनका भी नहीं मानते ।[1]

---

1. भरत भूषण अग्रवाल - अग्निलीक - पृ. 45

G5614

इसमें सीता आश्रय, राम आलंबन, राम की विजययात्रा उद्‌धोपन, सीता का कठोर भाषण अनुभाव और संचारी भाव है अमर्ष । इसप्रकार इसमें रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध उत्पन्न होता है ।

"अग्निलीक" में संवादों की प्रधानता है इसमें हरेक संवाद महत्त्वपूर्ण है । इसमें प्रश्न शैली, तर्क शैली और मनोवैज्ञानिक शैली का प्रयोग किया गया है । "अग्निलीक" की भाषा में बोलचाल की भाषा और परिनिष्ठित भाषा का प्रयोग देख सकते हैं । संस्कृत के शब्द राजपुरुष, दयानिधान, अन्यथा आदि है उर्दू भाषा के शब्दों में उम्र भर, बीती-बात, शायद, होश जैसे शब्द हैं । मुहावरों के प्रयोग में, मुँह मोडना आपे में न होना, त्राहि-त्राहि मचाना, मारा मारा फिरना, तिनका भी न मानना, कलेजे पर पत्थर रखना आदि है । इसमें मुक्त छन्द का प्रयोग किया गया है । अलंकारों में उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति अपह्नुति आदि का प्रयोग किया गया है । अपह्नुति अलंकार का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

ये आँसू नहीं है, गुरुदेव ये अंगारे हैं
यह मेरे जीवन की आग है ।
जो मेरे भीतर धधक रही है ।[1]

यहाँ सीता अपने आँसू को अंगार कहती है इसमें सीता अपने दुःख को छिपाकर अपना क्रोध प्रकट करना चाहती है ।

इसमें कवि का उद्‌देश्य राम और सीता को साधारण रूप में याने अलौकिकता से लौकिकता की भावभूमि में प्रतिष्ठित करना है । इसके द्वारा आधुनिक समाज में होनेवाली विसंगतियों को राम-सीता को प्रतीक रूप में मानकर व्यक्त करना है । सत्ताधारी लोगों की निर्दयता, नारी-शोषण आदि आधुनिक समाज के अभिशापों की ओर दृष्टि डालने के लिए कवि पाठकों को विवश बनाता है । "अग्निलीक" काव्य के उद्‌देश्य के संबंध में यह मत प्राप्त होता है । "अग्निलीक"

---

1. भरत भूषण अग्रवाल - अग्निलीक - पृ. 35

शोषण और उत्पीडन की नींव पर खडी राजतंत्री व्यवस्था के विरुद्ध आवाज़ ठायी गयी है । मानव की मुक्ति-विकास में गत्यवरोध पैदा करनेवाले तत्वों र जमकर प्रहार किया गया है । इसमें परतंत्रता और उत्पीडन के विरुद्ध मानव ा सशक्त उद्घोष है । कवि ने राम की पाप-पीडा को आत्मघाती लायन से मोडकर उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा द्वारा रामराज्य के जीर्णोद्धार । जोडकर विघटन और विकृति पर संस्कृति की विजय दर्शायी है ।"[1]

ीति काव्य

संक्षिप्तता, गेयता, भावात्मकता, भावानुकूल भाषा, आत्माभिव्यक्ति ादि गीति काव्य के लक्षण है ही ।

क्ष्मण - सुमित्रानंदन पंत (1947- स्वर्णधूली में प्रकाशित)

"लक्ष्मण" नामक गीति काव्य संक्षिप्तता की दृष्टि से अतुलनीय । इस छोटे काव्य के द्वारा कवि ने संपूर्ण लक्ष्मण चरित्र को अत्यंत मार्मिक ढंग ा चित्रित किया है । इसमें लक्ष्मण चरित्र राम के संतत सहचारी और मानवता क आदर्श रूप में चित्रित है ।

गाने योग्य रूप में ही गीति काव्य कर सृजन होता है । "लक्ष्मण" काव्य में भी गेयात्मकता उपलब्ध है । गीति काव्य में लक्ष्मण चरित्र का चित्रण गीतात्मक ढंग से किया है, जो गीति काव्य का आवश्यक लक्षण है ।

कवि पंत ने अपने मन के भावों को लक्ष्मण के माध्यम से व्यक्त दिखाया है । लक्ष्मण जैसे निस्वार्थ भाई का अभाव आज के युग में है । लक्ष्मण के चरित्र के द्वारा भ्रातृ भाव की महिमा को कवि ने चित्रित किया कि राम-सीता जैसे पुनीत पात्र भी लक्ष्मण के सामने ज्योति रहित दिखाई पडते हैं । यथा -

सीता के चेतना जागरण
राम हिमालय-से चिर पावन,

---

1. डा. हरिश्चन्द्र वर्मा - नयी कविता के नाट्य काव्य - पृ. 366

मेरे मन के मानव लक्ष्मण
ईश्वरत्व भी जिन्हें समर्पण ।[1]

प्रस्तुत काव्य में कवि ने लक्ष्मण के द्वारा केवल भ्रातृ-प्रेम ही नहीं महान भारतीय संस्कृति को भी उजागरित किया है । भारतीय संस्कृति में महान तप-त्याग और आत्म समर्पण की भावना है । भारतीय संस्कृति में स्व: के बदले पर का मान अधिक है । इसलिए भ्रातृ प्रेम में स्वयं कुर्बानी करनेवाले लक्ष्मण चरित्र को कवि ने चुन लिया है ।

कवि पंत भावानुकूल भाषा के प्रयोग की दृष्टि से अत्यंत सफल कवि हैं । कवि ने लक्ष्मण का रूप चित्रण निम्नलिखित रूप में किया है -

युग-युग से चिर असि व्रत धारी,
जग-जीवन विघ्नों के हारी,
जन सेवा उनकी प्रिय नारी,
वह ऊर्मिला, हृदय को प्यारी !![2]

अशोकवन - सुमित्रानंदन पंत {स्वर्ण किरण}

"अशोकवन" नामक गीति काव्य में अशोकवन में बंदिनी सीता से लेकर रावण-वध के बाद रामादि के अयोध्या आगमन तक की कहानी को अत्यंत संक्षिप्त रूप में कवि ने चित्रित किया है । बीस छोटे -लघु शीर्षकों में विभाजित करके कहानी की गति को सुगम बनाया है । हरेक शीर्षक कहानी के सूचक लगते है । गेयता की दृष्टि में भी अशोकवन महत्वपूर्ण है । इसके उदाहरण रूप निम्नलिखित है -

जग जीवन सीता की काया
जन मन से लिपटी थी छाया
गत युग की लंका में उसने

---

1. सुमित्रानन्दन पंत - स्वर्ण धूली - पृ. 61
2. वही - पृ. 61

कर प्रवेश नव ज्वाल लगाई ।
ज्ञात भूमिजा के भू गाथा
वह तामसी ढोगी बाधा
आज हृदय स्पन्दन में उसके
प्रभु ने जय दुन्दुभी बजाई ! [1]

भावों का सुन्दर चित्रण "अशोकवन" में है । बीस उपशीर्षकों में विभाजित करके हरेक कविता का भाव महत्वपूर्ण दिखाते हैं । भावों की अभिव्यापूर्ण रूपेण काव्य में विद्यमान है जो गीति काव्य के लिए अपेक्षणीय है । सीता के सामने उपस्थित होकर रावण अपनी मनोकामना इसप्रकार प्रकट करते हैं कि रावण को नारी तन प्रिय नहीं है वह सुरांगनाओं का मोहन है । वे माया से पल में शत सीता तन निर्मित कर सकते हैं इसलिए

मुझे चाहिए देवि यह हृदय,
जिसमें निखिल सृष्टि का आशय,
प्रथम बार यह हृदय धरा पर
आज हुआ अवतरित कि विकसित । [2]

पंत जी ने अशोकवन काव्य में आत्माभिव्यक्ति का सुन्दर चित्रण किया है । कवि ने मानवता, लोककल्याण, रावण का प्रताप, राम की वीरता, सीता की पवित्रता आदि महान प्रसंगों में आत्माभिव्यक्ति की है ।

भावानुकूल भाषा प्रयोग में भी अशोकवन काव्य अनुपम है । उदाहरण के लिए निम्नलिखित पंक्तियाँ उचित प्रतीत होती है -

पंचवटी की स्मृति हो आई
नील कमल में, नील गगन में
नील बदन हो दिये दिखाई

---

1. सुमित्रानंदन पंत - स्वर्ण किरण - पृ. 165
2. वही - पृ. 161

संध्या की आभा में मोहन
पंचवटी उठ आई गोपन
झूली सन्मुख, प्रिय संग चौदह
बरसों की स्वर्णिम परछाई ।[1]

लंबी कविता -

नाटकीयता, सर्जनात्मकता, तनाव, अन्विति, प्रदीर्घता जैसे तत्त्व लंबी कविता के लक्षण है ।

राम की शक्तिपूजा - {निराला}

"राम की शक्तिपूजा" हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ लंबी कविता मानी जाती है । इसमें कवि छायावाद की प्रमुख विशेषता वैयक्तिकता को भी प्रधानता देते है । लंबी कविता के कुछ प्रमुख लक्षणों के आधार पर इस काव्य का विश्लेषण करेंगे ।

नाटकीयता "राम की शक्तिपूजा" में अनेक स्थानों पर हम देख सकते हैं । राम-रावण युद्ध में रावण को परास्त करने के लिए राम कठिनाई अनुभव करते हैं । इस समय अंजना प्रत्यक्ष होकर हनुमान को डाँटती हैं । इसी प्रकार शक्ति की उपासना करते समय अंतिम कमल का तिरोधान भी अत्यंत नाटकीय ढंग में कवि ने चित्रित किया है ।

सर्जनात्मक तनाव लंबी कविता का एक अनिवार्य लक्षण है । राम की शक्तिपूजा में सर्जनात्मक तनाव है । राम-रावण युद्ध में राम के मन में जो तनाव उत्पन्न होते रहते है वे सब निराला के मन में निरन्तर उत्पन्न रहनेवाले सर्जनात्मक तनाव है, रावण पर विजय पा सके ? इस चिन्ता के समान कविता की पूर्णता में कवि के मन में चिन्ता है । अन्त में जिसप्रकार राम तनावों से मुक्त हो जाते है उसी प्रकार कवि भी कविता की सृष्टि के बाद मुक्त हो जाते है ।

---

1. सुमित्रानंदन पंत - स्वर्ण किरण - पृ. 164

तनाव केवल राम-निराला के मन में नहीं, पाठकों के मन में भी एक प्रकार तनाव उत्पन्न करने में सफल प्रतीत होते हैं ।

अन्विति लंबी कविता में उपलब्ध है । "राम की शक्तिपूजा" अनेक सामाजिक और वैयक्तिक तथ्यों का समन्वय करते है । इसमें राम रूपी ़राट पुरुष के जीवन में उत्पन्न मुसीबतों को प्रकट करते है जो निराला जैसे एक ाधारण कवि की जिन्दगी में हमेशा उत्पन्न रहते है । इस अन्वय के कारण राम नराला में समानता है ।

लंबी होने के कारण इस कोटि की कविताओं का नामकरण लंबी विता बन गयी है । यह एक महाकाव्यात्मक लंबी कविता है । राम-रावण युद्ध विजय पाने में असफल होकर चिन्तित राम की स्थिति का वर्णन करते हुए कवि राम की विजय के निश्चय तक की वेला का चित्रण अत्यंत रोचक ढंग से इस काव्य किया है ।

न्य काव्य रूप

रुणरामायण - पोद्दार रामावतार अरूण

अरूणरामायण को खडीबोली का प्रथम रामायण माना जा कता है । इसके संबंध में कवि का कथन है -"तीस वर्ष तक अनवरत काव्य लेखन पश्चात् जैसे प्रौढ्वय कवि ने यह अनुभव किया कि देश काल के अनुरूप हिन्दी डीबोली में भी संपूर्ण रामायण की रचना की जा सकती है । इस घोर वैज्ञानिक ौर अनास्था के युग में रामकथा के माध्यम से भारत अपना सांस्कृतिक सन्देश सुना ा सकता है । यद्यपि रामायण का कथाक्षेत्र मूलतः भारत वर्ष ही है । फिर भी वश्व की प्रमुख विचारधाराओं को यथासाध्य समाहित किया जा सकता है । ाल्मीकि और तुलसीदास की काव्य वाणी में भी कलाधर्मी ग्रहण शीलता है ।

ाहित्य का शाश्वत प्रवाह युग के अनुकूल नया मोड लेता हो है । युगानुकूल भी है ।"[1]
पसे स्पष्ट हो जाता है कि इसमें रामायणीय घटनाओं का युगानुकूल चित्रण है ।

यवटी प्रसंग - निराला

इसमें पंचवटी की घटनाओं को कवि ने अपनी मौलिकता के
ाथ चित्रित किया है । सीता-राम वार्तालाप में लक्ष्मण का गुणगान है । राम-
ीता-लक्ष्मण वार्तालाप में दार्शनिक चिंता स्पष्ट दिखायी पडती है । लक्ष्मण
ी सेवा भावना में मातृभूमि के प्रति अटल विश्वास और प्रेम का गूढार्थ निहित
। शूर्पणखा के चित्रण में नारी की मनोदशाओं का सुन्दर चित्रण विद्यमान है ।

तर - मंथन - जयशंकर भट्ट

इसमें कैकेयी, सीता, रावण और राम के मन में उत्पन्न मंथनों
ा वर्णन है । इसमें कैकेयी राम वनवास के कारण पश्चाताप से पीडित नारी
रूप में चित्रित है, सीता राम परित्याग के बाद अपनी अग्निपरीक्षा के लिए
ाम के पास जाने के लिए तैयार नहीं होती है तब उसके मन में उत्पन्न पीडाओं
ा वर्णन अत्यंत मार्मिक है, सीता भूमि में समा जाती है । राम, सीता
वियोग, शंबूक वध, बालिवध आदि से उत्पन्न आत्म-पीडाओं के कारण दम
टते रहते हैं । राम के मन में उत्पन्न मंथनों का वर्णन है । राम स्वयं अपने
ो दोषी मानते हैं तो कालपुरुष उसको सांत्वना देता है । रावण-राम-बाण
घायल होकर अपनी बुराईयों की चिंता करके अत्यधिक आंतरिक तनावों को
हसूस करता है । इसप्रकार इसमें चारों पात्रों की मानसिक स्थिति का वर्णन है ।

ाषा की दृष्टि से - व्रजभाषा रामकाव्य

श्रीरामनाथ ज्योतिसी का "रामचन्द्रोदय" महाकाव्य, शिवरत्न
ुक्ल "सिरस" का "भरत-भक्ति". पं. बिहारीलाल विश्वकर्मा का "श्री कौशलेन्द्र
ौतुक", हरदयालु सिंह का "रावण महाकाव्य", बालकृष्णशर्मा "नवीन" का "ऊर्मिला"

---

[1] पोद्दार रामावतार 'अरूण' - अरूणरामायण - निवेदन - ख

काव्य के पंचम सर्ग आदि इस काल सीमा में रचित व्रजभाषा रामकाव्य हैं ।

अवधी भाषा का रामकाव्य

लाला सीताराम द्वारा "रघुवंश" का पद्यानुवाद और हरदयाल सिंह द्वारा "रावण महाकाव्य" के नवें, तेरहवें, सोलहवें सर्ग अवधी भाषा में रचित है ।

खड़ीबोली रामकाव्य - प्रस्तुत अध्याय में विश्लेषित सभी काव्य खड़ीबोली की है ।

निष्कर्ष :-

आधुनिक हिन्दी रामकाव्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि रामायण का प्रभाव काल की गति के अनुसार बढ़ता रहता है । इसमें सभी काव्य रूपों का प्रयोग हुआ है । कवियों ने युगानुकूल पात्रों को और प्रसंगों को परिवर्तित करके आधुनिक मनुष्य को चिन्तन की सामग्री प्रदान की है । इस काल में महाकाव्यों से बढ़कर खंडकाव्य की प्रचुरता है । केवल छोटे छोटे काव्य ही नहीं रामायण भी आधुनिककाल के अनुरूप रचित है । रामायण की बढ़ती महिमा को कवियों ने स्वीकार किया है । इसलिए आधुनिककाल में रामायण की हरेक घटना और चरित्र को माध्यम बनाकर महाकाव्य, खंडकाव्य या अन्य काव्यरूपों की सृष्टि होती रहती है । आदिकाल से उपेक्षित पात्रों को उचित स्थान देना, कुटिल पात्रों के प्रति सहानुभूतिपरक दृष्टिकोण, नारी जागरण, नारी शोषण आदि से संबंधित काव्य का निर्माण भी आधुनिककाल में उपलब्ध है । उसीप्रकार भक्तिकालीन परिवेश के राम आधुनिक मनुष्य के समान तनावों से ग्रस्त साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित है । राम भी नहीं सीता भी युगानुकूल चित्रित करने लगी । आधुनिक काल में हिन्दी रामकाव्य का सृजन प्रभूत मात्रा में होता रहता है ।

तृतीय अध्याय

वाल्मीकि रामायण के आधार पर आधुनिक रामकाव्य के कथ्य पक्ष का विश्लेषण

कथ्य ही किसी भी कृति का मूल आधार है । आधुनिक हिन्दी रामकाव्य का कथ्य-पक्ष युगीन प्रवृत्तियों से अवश्य प्रभावित रहा । किन्तु कथ्य पक्ष के कुछ अंश काल के अन्तराल में भी अपरिवर्तित रहे । प्रस्तुत अध्याय में रामायण की घटनाओं के क्रमानुसार आधुनिक रामकाव्यों में चित्रित विभिन्न प्रसंगों का विश्लेषण किया गया है । समान प्रसंगों की अपेक्षा रामायण से भिन्न प्रसंगों का विश्लेषण अधिक संगत लगा । रामायण में चित्रित कथापात्रों की आनुषंगिक चर्चा यहाँ अवश्य की गई है । किन्तु चरित्र-चित्रण की विशद चर्चा चतुर्थ अध्याय में होने के कारण प्रस्तुत अध्याय में रामायण से भिन्न कथाप्रसंगों पर हमारी दृष्टि अधिक केन्द्रित रही है ।

बालकाण्ड के प्रसंगों से आधुनिक रामकाव्य में साम्य-वैषम्य

वाल्मीकि रामायण में सबसे पहले रामायण की महिमा का वर्णन है । उसी प्रकार आधुनिक रामकाव्य "अरूपरामायण" के प्रारंभ में भी रामायण की महिमा का वर्णन है । रामायण में चित्रित रामायण की महिमा का वर्णन निम्नोद्धृत है -

रामायणं महाकाव्यं सर्ववेदेषु सम्मतम् ।
सर्वपापप्रशमनमं दुष्टग्रहनिवारणम् ।।
दुस्वप्ननाशनं धन्यं भुक्तिमुक्ति फलप्रदम् ।
रामचन्द्रकथोपेतं सर्वकल्याणसिद्धिदम् ।।

---

1. वाल्मीकि रामायण प्रथमोऽध्याय:- श्लोक - 19, 20.

अर्थात् रामायण समस्त पापों का नाश और दुष्ट-ग्रहों की बाधा का निवारण है । वह संपूर्ण वेदार्थों की सम्मति के अनुकूल है । उससे समस्त दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है । वह धन्यवाद के योग्य तथा भोग और मोक्षरूप फल प्रदान करनेवाला है । उसमें भगवान श्रीरामचन्द्रजी की लीला- कथा का वर्णन है । वह काव्य अपने पाठक और श्रोताओं के लिए कल्याणमयी सिद्धियों को देनेवाला है । इसप्रकार अरूण-रामायण में भी रामायण महिमा का वर्णन उपलब्ध[1] है जो निम्नलिखित रूप में है -

राम की कथा से पावन कोई कथा नहीं
इसके पढने से होती मन में व्यथा नहीं
यह पाप, ताप, सन्ताप, दूर कर देती है
राम की कथा उर में प्रकाश भर देती है ।

राम कथा पढने से मन में व्यथा, पाप, ताप और सन्ताप दूर हो जाती है । राम कथा दिल में हमेशा प्रकाश भर देती है । इसलिए रामकथा को सर्वपापप्रशमनम् मानते हैं ।

अयोध्या और दशरथ की महिमा का वर्णन रामायण व अरूण-रामायण में उपलब्ध है । अयोध्या की गरिमा और दशरथ के द्वारा सुव्यवस्थित शासन तंत्र की प्रशंसा रामायण में उपलब्ध है । दशरथ और तीनों पत्नियों के साथ सुखशांति पूर्ण जीवन बिताने का वर्णन भी रामायण में उपलब्ध है । बाद में ही संतान प्राप्ति के लिए यज्ञ करने की चिन्ता का वर्णन है, लेकिन "अरूण रामायण" में दशरथ को पुत्रविहीन राजा के रूप में चित्रित किया है । इसमें दशरथ और अयोध्यापुरी की महिमा का वर्णन पहले उपलब्ध नहीं है ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूण रामायण - पृ. 5

"अरूण रामायण" में पुत्रविहीन दशरथ की चिन्ता का वर्णन है -

सम्राट चक्रवर्ती दशरथ का चौथापन
उस पुत्रविहीन अवधपति का चिन्तित जीवन
हैं तीन-तीन रानियाँ किन्तु, प्रिय तनय नहीं
चिन्ता के तम में किसी सूर्य का उदय नहीं ।[1]

चक्रवर्ती दशरथ तीन रानियों के रहते हुए भी पुत्रविहीन होने के कारण अत्यंत दुखी है । इसलिए वे अत्यंत चिंतित है ।

रामायण में पुत्रविहीन दशरथ पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिए स्वयं चिंतित और वसिष्ठ से सलाह लेते हैं । लेकिन "अरूण-रामायण" में संतानलब्धि के लिए हिमालय जाने की इच्छा स्वयं दशरथ कैकेयी से प्रकट करते है । रामायण में दशरथ मुनियों से कहते हैं कि "मैं हमेशा पुत्र के लिए तडपता रहता हूँ । पुत्र के बिना सुख नहीं प्राप्त है इसलिए मैं ने यह निर्णय लिया है कि पुत्रलब्धि के लिए अश्वमेध यज्ञ करूँगा ।[2] लेकिन "अरूण रामायण" में दशरथ अपनी प्रिय रानी कैकेयी से कहते है -"रानी तुम तीनों उपकारी हो और मेरे हृदय की फुलवारी हो । सभी धर्मों में संलग्न होने पर भी एक पुत्र भी नहीं है । यही मेरे हृदय का एक दुख है और प्रजा का भी । इसलिए कैकेयी मैं तुम से सच कहता हूँ कि मुझे ऋषि-दर्शन के लिए हिमालय में जाना है क्योंकि मेरी अदम्य इच्छा को सफल बनाना है ।[3]

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 5
2. वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड अष्टम सर्ग: श्लोक - 8
3. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 7

रामायण में पुत्रेष्टि यज्ञ की तैयारियाँ, यज्ञ का वर्णन, खीर वितरण जैसे प्रसंगों का विशद वर्णन है तो अरूणरामायण में इसका उल्लेख मात्र है -

नृप ने सब कार्य किए कौशिक-कथानुसार
मिट गया एक दिन उनके दुख का अन्धकार
नवमि तिथि, शुक्लपक्ष, पावन प्रिय चैत्रमास
अभिजित मुहूर्त में हुआ अवतरित नव प्रकाश ।[1]

यहाँ रामादि के जन्म के संबंध में संकेत मात्र ही उपलब्ध है ।

रामादि के जन्म से प्रफुल्लित जन और प्रकृति का वर्णन रामायण के समान "लीला" और "अरूणरामायण" में है ।

रामादि की बाललीलाओं का वर्णन रामायण में अनुपलब्ध है तो "अरूणरामायण" में इसका सुन्दर वर्णन है -

देखो, कैसे वे ठुमुक-ठुमुक कर चलते हैं
उठते है, गिरते है, सानन्द उछलते हैं
बज उठती किंकिणियाँ-पैजनियाँ मधुर-मधुर
संतानों से हो गया स्वर्ग ही अन्तःपुर ।[2]

रामादि की बाललीलाओं का सूक्ष्म और सुन्दर चित्रण यहाँ स्पष्ट हो जाता है ।

रामादि के आखेट संबंधी सूचना "वाल्मीकिरामायण" "लीला" और "अरूणरामायण" में है । 'लीला' में रामायण से भिन्न राम के दो सखाओं के रूप में धीर और गंभीर का चित्रण है वे राम के साथ आखेट भी करते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूण रामायण - पृ. 8
2. वही - पृ. 11

"अरूण रामायण" में भरत, विवाह के पहले ननिहाल जाते हैं और इससे उदासीन होकर राम तीर्थाटन करते हैं । एक वर्ष तक लक्ष्मण भी उसके साथ तीर्थाटन करते हैं । साधुओं के साथ सत्संग करने के कारण राम के मन में वैराग्य उत्पन्न होते हैं । राम ने राजसी सुख भोगों को त्याग दिया ।

निष्काम महात्मा राम वैराग्य वरण करके सन्यासी बन रहे हैं । उनकी आँखों में सदा ज्योति जल का प्यास देखते हैं । कोमल शय्या के स्थान पर कुश बिछाकर लेटते हैं । ये सारी बातें देखकर माताएँ अत्यंत दुखित हो जाती हैं -

कोसल का भावी नृपति बन रहा सन्यासी
उनकी आँखें अब सदा ज्योति जल की प्यासी
चिन्तित माताएँ, चिन्तित स्वयं अवधपति भी
अब रहन-सहन में भी गौरिक गति, गौरिक मति भी
कोमल शय्या के बदले में कुश के आसन
दुःखमय दुःखमय दुःखमय अब कौसल्या का मन ।[1]

कोसल देश के भविष्य के राजा सन्यासी होने से माताएँ और पिता भी चिन्तित हैं, रहन-सहन में भी संतों की रीति बन गई ।

रामायण में इस प्रकार का वर्णन नहीं है । भरत विवाह के बाद ननिहाल जाते हैं ।

"अरूण रामायण" में राम के वैरागी जीवन के बारे में राजपरिवार के लोग बिलकुल शोकाकुल हैं, और उस वैराग्य को मिटाने के लिए सभा के द्वारा विवाह कराने का निर्णय लेते हैं । रामायण में इस प्रकार का

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूण रामायण - पृ. 5

वर्णन नहीं है । और 'लीला' में भी इस प्रकार का वर्णन अनुपलब्ध है । लेकिन रामायण में भी दरबार होते वक्त विश्वामित्र का आगमन होता है । "अरूप रामायण" और 'लीला' में इसकी सूचना है । "लीला" में विश्वामित्र के आगमन की सूचना वीर देता है और रामादि विश्वामित्र पर हँसी उठाते हैं । विश्वामित्र का स्वागत-सत्कार होता है और दशरथ विश्वामित्र के आगमनोद्देश्य की पूर्ति करने का वादा भी देते हैं । इससे संतुष्ट विश्वामित्र अपने याग की रक्षा के लिए असुरों को खत्म करने के लिए राम को ले जाना चाहते हैं । रामायण में यह सुनकर दशरथ मूर्छित हो जाते हैं । अपने छोटे पुत्र राम को अपार शक्तिशाली राक्षसों से लडने के लिए भेजने से वृद्धावस्था की पुत्रलब्धि तथा वात्सल्य भाव ने दशरथ को रोक दिया । स्वयं दशरथ सैन्यों के साथ याग की रक्षा के लिए चलना चाहते थे । इससे कुपित विश्वामित्र दशरथ को प्रतिज्ञाबद्ध बताते हैं । "लीला" में इस अवसर में राम भी सभा में उपस्थित है । क्रुद्ध विश्वामित्र को शांत बनाने के लिए वसिष्ठ दशरथ से उचित बातें बताते हैं । लेकिन "अरूपरामायण" में विश्वामित्र ही वसिष्ठ से सलाह लेने के लिए दशरथ से कहते हैं ।

"कुलगुरू वसिष्ठ से कीजिए परामर्श
राम को सौंपिए मुझे अयोध्यापति सहर्ष ।"[1]

लेकिन रामायण में क्रुद्ध विश्वामित्र को शांत बनाने के लिए वसिष्ठ ही दशरथ से राम को अपने साथ भेजने का उपदेश देते हैं । रामायण में वसिष्ठ ने दशरथ से इस प्रकार कहा -

त्रस्तरूपमं तु विज्ञाय जगत् सर्वं महानृषिः ।
नृपतिं सुव्रतो धीरो वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत् ।।
इक्ष्वाकूणां कुले जातः साक्षाद् धर्म इवापरः
धृतिमान् सुव्रतः श्रीमान् न धर्मं हातुमर्हसि ।।[2]

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूप" - अरूपरामायण - पृ. 20
2. वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड-एकविंशः सर्गः - श्लोक 5, 6

अर्थात् विश्वामित्र के रोष से सारे संसार को त्रस्त हुआ जान उत्तम व्रत का पालन करनेवाले धीरचित्त महर्षि वसिष्ठ ने राजा से इस प्रकार कहा - "महाराज, आप इक्ष्वाकुवंशी राजाओं के कुल में साक्षात् दूसरे धर्म के समान उत्पन्न हुए है । धैर्यवान, उत्तम व्रत के पालक तथा श्रीसंपन्न हैं । आपको अपने धर्म का परित्याग नहीं करना चाहिए ।

विश्वामित्र राम को ले जाने से उनकी भलाई ही हो जाएगी । यह वसिष्ठ से सुनकर दशरथ उसको भेजने के लिए सहमत हो जाते हैं । राम की अलौकिकता के संबंध में वसिष्ठ द्वारा दशरथ को भली-भाँति समझाने का वर्णन रामायण के समान "अरूणरामायण" में भी है । परंतु राम को ले जाने का अधिकार विश्वामित्र को भी है । इसके संबंध में अरूणरामायण में वसिष्ठ इसप्रकार कहते हैं -

पुत्रेष्टि-यज्ञ-प्रेरणा उन्होंने ही दी थी
सत्य की उग्र कल्पना उन्होंने ही की थी
उनका भी है अधिकार राम पर हे राजन् ।
कुछ सोच-समझकर ही आए हैं वे इस क्षण ।[1]

दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ करने का कारण ही विश्वामित्र हैं । इसलिए राम पर उसका भी अधिकार है । लेकिन उनके आगमन में कोई भलाई अवश्य निहित है । इसमें कोई सन्देह नहीं है । इसलिए राम को उसके साथ भेजना चाहिए ।

"लीला" में पुत्रशोक के कारण तडपनेवाले दशरथ को राम ही धैर्य प्रदान करते हैं । "विदेह" काव्य में राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, दशरथ आदि के संबंध में पहले कोई वर्णन नहीं है ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 21

पुत्रों के विरह में तडपनेवाली माताओं का चित्रण "अरूणरामायण" और "लीला" में उपलब्ध है । दोनों काव्यों में सुमित्रा नारी जीवन की विषमताओं को स्पष्ट बताती है ।

ताटका-वध का उल्लेख रामायण के समान "प्रदक्षिणा", "लीला" "अरूणरामायण" और "सीता समाधि" जैसे काव्यों में पाये जाते हैं । लेकिन राम-ताटका संवाद "लीला" काव्य में है । इसके अलावा अराल-कराल नामक दो राक्षस जो पहले राम पक्ष में हैं, ताटका वध के कारण वह पक्ष छोडकर असुर पक्ष में भाग लेते हैं ।

यज्ञ की सफल समाप्ति के बाद राम-लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ जनक के धनुष यज्ञ में भाग लेने के लिए जाते हैं । "रामायण" में अहल्योद्धार मार्ग मध्य में संपन्न होता है । लेकिन "अरूणरामायण" में मिथिला पहुँचने के बाद सीता-जन्म स्थान देखने के लिए जाते वक्त अहल्योद्धार होते हैं । रामायण में चित्रित अहल्या का रूप इसप्रकार है -

प्रयत्नान्निर्मिता धात्रा दिव्या मायामयीमिव ।
धूमेनाभिपरिताङ्गी दीप्तामग्निशिखामिव ।।
सतुषारावृता साभ्रां पूर्णचन्द्र प्रभामिव ।
मध्येऽम्भसो दुराधर्षां दीप्तां सूर्यप्रभामिव ।।[1]

अर्थात् अहल्या का रूप दिव्य था । विधाता ने बडे प्रयत्न से उनके अंगों का निर्माण किया था । वे मायामयी प्रतीत होती थी । धूम से घिरी हुई प्रज्वलित अग्निशिखा सी जान पडती थीं । ओले और बादलों से ढकी हुई पूर्णचन्द्रमा की प्रभा सी दिखायी देती थीं तथा जल के भीतर उद्भासित होनेवाली सूर्य की दुर्धर्ष प्रभा के समान दृष्टिगोचर होती थी ।

---

1. वाल्मीकि रामायण - बालकाण्डमेकोनपंचाशः सर्गः - श्लोक 14, 15

"अरूपरामायण" में वर्णित अहल्या का रूप एक भिन्न प्रकार का है । पोद्दारजी की दृष्टि में अहल्या का रूप निम्नलिखित है -

वे आये वहाँ, उपेक्षित जहाँ नम्र नारी
थी सूख गई उसके यौवन की फुलवारी
पाषाण - समान खडी थी वह जीवित प्रतिमा
थी उससे बहुत सुन्दर क्षमा की शिव महिमा ।[1]

विश्वामित्र के साथ राम और लक्ष्मण अहल्या के समीप पहुँच गए । तब उनका रूप यौवन की फुलवारी सूखी अवस्था में थी । वह जीवित होकर भी पाषाण के समान खडी थी । उससे क्षमा की सुन्दर शिव महिमा बहुत दूर थी । इस प्रकार अहल्या का रूप अत्यंत शोचनीय था ।

रामायण में मिथिलापुरी का विशदवर्णन तथा जनक-सुनयना के पारिवारिक जीवन के संबंध में वर्णन नहीं है । लेकिन 'ऊर्मिला' 'विदेह', 'सीतासमाधि' में इसके संबंध में वर्णन उपलब्ध हैं । जनक के संपूर्ण जीवन-चरित्र का वर्णन 'विदेह' काव्य में उपलब्ध है । रामायण में सीता और अन्य बहिनों के संबंध में विवाह के पूर्व वर्णन नहीं है । लेकिन "ऊर्मिला" और "विदेह" काव्य में सीतादि के विवाह के पहले यह वर्णन उपलब्ध है । "ऊर्मिला" काव्य में सीता-ऊर्मिला को कहानी सुनाने के प्रसंग के द्वारा दोनों की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट हो जाती है । संपूर्ण मिथिलापुरी के निवासियों के घर, जीवन और वातावरण का वर्णन भी ऊर्मिला काव्य में उपलब्ध है । मिथिला में राजभवन में प्रवेश करने के बाद "रामायण" में जनक रामादि के बारे में कुशल पूछते हैं और सीता जन्म, विवाह के लिए धनुषयज्ञ का निर्णय आदि के बारे में बताते हैं । लेकिन "अरूपरामायण" में सारी बातें विश्वामित्र मिथिला-गमन के बीच राम से बताते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूप" - अरूपरामायण - पृ. 32

"रामायण" में राम सीता-जन्म-स्थान देखने की इच्छा प्रकट करके विश्वामित्र से इसप्रकार अनुमति माँगते हैं -

बोले वे गुरुवर ! कहाँ जानकी-जन्मस्थान ।
उस भू की ओर चला जाता अनुमेय ध्यान ।
क्या जनकपुरी के ही समीप वह पावन स्थल ?
हम नहीं देख पाएँगे क्या वह भू निर्मल ?[1]

यहाँ राम विश्वामित्र से सीता की पवित्र-जन्मभूमि देखने की इच्छा प्रकट करते हैं । इस प्रकार "अरूणरामायण" में राम और लक्ष्मण सीता का जन्म-स्थान देखने के लिए जाते हैं और रास्ते में अहल्योद्धार होते हैं ।

अहल्या के आतिथ्य-सत्कार के संबंध में वर्णन "वाल्मीकि रामायण" में है । भगीरथ की कथा का वर्णन भी इन दोनों में है ।

रामायण में जनक शैवचाप को उठानेवाले से सीता के विवाह का निर्णय नहीं लेते । लेकिन "अरूणरामायण" तथा "विदेह" में इसका वर्णन है । रामायण में जनक ने सीता के विवाह के संबंध में विश्वामित्र से इसप्रकार कहा -

वीर्यशुल्केति मे कन्या स्थापितेयमयोनिजा ।
भूतलादुत्थितां तां तु वर्धमानां ममात्मजाम् ।।[2]
वरयामासुरागत्य राजानो मुनिपुङ्गव ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 31
2. वाल्मीकि रामायण - बालकाण्ड - षट्षष्टितम सर्गः - श्लोक 15

अर्थात् अपनी इस अयोनिजा कन्या के विषय में मैं ने यह निश्चय किया कि जो अपने पराक्रम से इस धनुष को चढा देगा, उसी के साथ मैं इसका ब्याह करूँगा । इस तरह इसे वीर्यशुल्का बनाकर अपने घर में रख छोडा है । मुनिश्रेष्ठ ! भूतल से प्रकट होकर दिनों-दिन बढनेवाली मेरी पुत्री सीता को कई राजाओं ने यहाँ आकर माँगा ।

आधुनिक रामकाव्य जैसे "विदेह" और "अरूपरामायण" में सीता द्वारा शिव-धनु उठती है और इससे प्रभावित होकर जनक इस धनुष को उठानेवाले से सीता-विवाह का निर्णय लेते है । "विदेह" में इस प्रसंग का चित्रण निम्नलिखित रूप में है -

सीता ने शिव-धनु उठा लिया
वह किरणमयी कितनी सशक्त कोमल कलिका
यौवनोन्मुखी संयमित स्वप्न मेरे सम्मुख
मैं किस विराट की छाया में मंगल बंधन की सृष्टि करूँ
जो शिव का धनुष चढा ले कम-से-कम कर से ।

अपने मृदुल करों से शिव-धनुष चढानेवाली सीता का ब्याह उस शिव-धनु चढानेवाले से करने का निर्णय जनक के मन में एक प्रतिज्ञा बन गई ।

"ऊर्मिला" में जनक धनुष यज्ञ के नाम से आर्य सिंहों को चुनाना चाहता है । "सीता-समाधि" में जनक रावण के अत्याचारों से चिंतित है । शैवचाप की अलौकिकता समझकर उसको सुरक्षित रखा । इस अपूर्व शक्ति की अधिकारी होने पर भी जनक अनावश्यक शक्ति का प्रयोग नहीं करते । इसलिए धनुष यज्ञ का निर्णय लेते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतोर "अरूण" - विदेह - पृ. 130.

"लीला" में धनुष यज्ञ में भाग लेने के लिए आए हुए दो राजाओं के वार्तालाप से शैववाप और सीता स्वयंवर के संबंध में परिचय मिलते हैं ।

राम और लक्ष्मण द्वारा मिथिलापुरी घूमकर देखने का वर्णन रामायण में अनुपलब्ध है । लेकिन "अरूणरामायण", "सीता- समाधि" जैसे काव्यों में इस प्रकार का वर्णन अनुपलब्ध है । 'सीता समाधि' में राम-लक्ष्मण का सौंदर्य देखकर लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं । उनकी चिंता यह है कि ये कुंवर कौन हैं ? लोगों की जिज्ञासा समझकर राम उन्हें परिचय देते हैं । लोगों ने उन्हें रथ में बिठाकर यह अद्भुत नगरी दिखाया । 'सीता- समाधि' में राम और लक्ष्मण विश्वामित्र से अनुमति माँगकर पुर देखने के लिए चलते हैं -

कर भोजन विश्राम दिवस में, समय सुहाना देख मुदित उर
गए देखने आज्ञा लेकर, उत्सुक, हर्षितमन, सुन्दर पुर ।[1]

"अरूणरामायण" में विश्वामित्र मिथिला की महिमा का वर्णन करते हैं । इसमें नारी भावना, रावण का प्रभाव, एक राष्ट्र की स्थापना की इच्छा आदि का वर्णन भी है । "अरूणरामायण" में राम से विश्वामित्र कहते हैं कि "लंकाधिपति रावण का प्रभाव बढ रहा है । अब असुरों से भारत का बचाव करना है । राक्षसी-सभ्यता से ऋषिगण असहमत है । भारत तामस ज्वार पसन्द नहीं करते है । मैं एक राष्ट्र की सबल कल्पना करता हूँ । मेरे मन में विमल गणमंत्र गूँज रहे हैं । सागर से हिमालय तक भारत विशाल है । स्वदेश के सत्य चित्र पर नित्य भाल झुकता है । मेरे अंतरमन में मानव समता का प्रकाश है । मेरी आँखों के सामने एक ही भूमि एक ही महाकाश है ।[2]

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 23
2. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 38-39

जनकपुरी की मौलिकता का वर्णन "अरूणरामायण" में है । मिथिला के समीप आ पहुँचने के बाद वहाँ के विद्यालयों के बारे में कहते हैं -

करते हैं बालक योगाभ्यास उधर देखो
बालिका उच्च शिक्षा पा रही, इधर देखो
है उधर चित्रशाला, संगीतालय भी है
उसके समीप ही ज्योतिष विद्यालय भी है
हैं पाँच पाँच गाँवों पर गुरुकुल एक-एक
मिथिला का बौद्धिक व्यसन सदा विद्या विवेक ।[1]

इसमें मिथिला के बौद्धिक व्यसन का परिचय बिलकुल पूर्ण होता है । विद्यालयों की व्यवस्था, और विद्यार्थियों के लिए इच्छानुसार उचित शिक्षा प्राप्त करने के लिए सारी सुविधाएँ वहाँ विद्यमान हैं ।

'अरूणरामायण' में जनक अयोध्या में धनुष यज्ञ का आमंत्रण न देने के कारण पश्चात्ताप करते हैं । लेकिन रामायण में इसप्रकार का वर्णन नहीं है । तो अरूण रामायण में इसका वर्णन है ।

जनक और विश्वामित्र के वार्तालाप रामायण के समान नहीं है । "अरूणरामायण" के अनुसार पुर देखने के लिए चलनेवाले दोनों राजकुमारों का सौंदर्य देखकर लोगों के कार्यकलापों में भी गडबडी हो जाती है । साज श्रृंगार करनेवाली नारियों की स्थिति का वर्णन अत्यंत रोचक है । राम-लक्ष्मण का सौंदर्य देखकर भावुक नारी दौड आयी है । वह अपने नयनों के स्थान पर गालों में काजल लगाती है, बिन्दी तो बदलकर कपोलों पर करती है ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूण रामायण - पृ. 39

टिकुलियाँ और चोटियाँ इधर से उधर करती है, एक ही कान में झुमुका, सिर पर रत्नहार पहनती है । एक ही हाथ में बाजु, कर में नुपुर शोभित होती है । छड के कारण भूषण-वसन का स्थानान्तरण हो जाते हैं । लेकिन इनमें तनिक न परवाह करके वे सभी नारियाँ झरोके से ताकने लगीं ।"[1]

इसी प्रकार पुर देखने के लिए चलनेवाले राम-लक्ष्मण को रावण द्वारा देखने का प्रसंग रामायण में नहीं है तो "अरूणरामायण" में है । धनुष यज्ञ में भाग लेने के लिए आनेवाले रावण रास्ते में राम-लक्ष्मण को देखते हैं । रामादि को देखने के लिए एकत्रित जनसंघय को देखकर ईष्यालु रावण की स्थिति दृष्टव्य है -

रथ से ही असुरराज ने दोनों को देखा
खिंच गई लाल लोचन में विस्मय की रेखा
सारी की सारी भीड राम के ही समीप
यह देख, अचम्भित लंका के शंकित महीप ।[2]

रावण के ईष्यालु रूप की प्रधानता ही इन्हीं पंक्तियों में स्पष्ट होती है ।

इसके अलावा "अरूणरामायण" में यज्ञशाला का सुन्दर वर्णन भी देख सकते हैं ।

पुष्पवाटिका में राम-सीता मिलन रामायण में नहीं है और "अरूणरामायण" में भी । लेकिन "लीला", "सीता-समाधि" जैसे काव्यों में इस प्रसंग का वर्णन उपलब्ध है । लेकिन "लीला" में सीता के साथ ऊर्मिला, माण्डवी और श्रुतिकीर्ति भी हैं । "लीला" में सुलक्षणा द्वारा

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 43-44
2. वही - पृ. 43-44

रामादि के आगमन की सूचना देती है । सीता-सुगंधिका संवाद है और ऊर्मिला से सीता रामागमन की वार्ता सुनती है । लेकिन "अरूपरामायण" में शिव और गौरी मंदिर में राम-सीता मिलन का वर्णन है ।

संयोग कि भीतर सीता बाहर खड़े राम
है उधर सखी है सखा इधर लक्ष्मण ललाम
व्रतमयी जानकी गिरिजा पूजन-समाप्त
ध्यानस्थिति नयनों में आभा अभी व्याप्त
सहसा लोचन उस ओर, वहाँ श्रीराम मुदित
आँखें आँखों को देख देखकर हुई चकित ।

सीता-राम का प्रथम मिलन पार्वती मंदिर में होता है । इसका सुन्दर वर्णन उपर्युक्त पंक्तियों में वर्णित है ।

राम सीता के सौंदर्य पर मुग्ध हो जाते हैं । यह जानकर लक्ष्मण उसको कल यहाँ पूजा के लिए पुष्प लाने के लिए आने की इच्छा प्रकट करते हैं, और शिव मंदिर में जाते हैं । सखियों ने राम-लक्ष्मण के आगमन की सूचना दी । उनके रूप गुण आदि का वर्णन भी किया है, शिव मंदिर में राम की छवि देखकर सीता चकित हो जाती है ।

"लीला" में पुष्पवाटिका-मिलन के बाद सीता की इच्छा के कारण सीता रामादि का आतिथ्य सत्कार करती है और राम सीता के प्रेमपूर्ण कटाक्ष का वर्णन भी है ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूप" - अरूपरामायण - पृ. 44

धनुष-यज्ञ का वर्णन है । शतानन्द, विश्वामित्र और राम-लक्ष्मण को यज्ञ में भाग लेने के लिए रथ में लाकर यज्ञशाला में पहुँचाते हैं । राम-लक्ष्मण की शोभा देखकर सभी लोग देखते ही रह जाते हैं । सभी राजकुमारों की शोभा इसप्रकार मन्द पड गई जैसे सूर्य के उदय से तारागण । राम की शोभा देखकर माता सुनयना भी आश्चर्य चकित हो जाती है । राम-सीता आपस में देखते हैं । धनुष यज्ञ में शामिल होने के लिए उपस्थित लोगों की मनोदशा का वर्णन भी यहाँ उपलब्ध है । "अरूपरामायण" के समान धनुष यज्ञ में रावण की उपस्थिति सीता-समाधि में भी है । इसके अलावा लक्ष्मण द्वारा उपस्थित राजाओं और रावण की स्थिति तथा धनुष यज्ञ की महिमा का वर्णन है ।

इसीप्रकार रामायण में परशुराम का आगमन विवाह के उपरांत है । लेकिन "अरूपरामायण" में धनुषयज्ञ को अनुचित मानकर परशुराम मिथिला में रहते हैं, और यज्ञ को स्थगित करने के लिए उपदेश देते हैं । क्योंकि उनके मतानुसार शिव-धनु उठाने में शक्तिशाली मनुष्य इस संसार में नहीं है । यदि कोई है तो परशुराम उसको खत्म करने के लिए प्रतीक्षा करते रहते हैं । इसलिए परशुराम के अनुसार जनक की प्रतिज्ञा असंभव होगी ।

परशुराम-कथन सुनकर विदेह राजा दुखित हो जाते हैं । अपनी प्रतिज्ञा कैसे सफल करेगी । परशुराम से लडना उचित नहीं है । बल्कि विश्वामित्र परशुराम से सहमत नहीं है । इसके बाद याज्ञवल्क्य सबको आश्वास देते हैं और उनका कथन है "परशुराम से मैं बातचीत करता हूँ यज्ञ समाप्त करने तक उपवन में रहना चाहते हैं । उनके क्रोधित मन में तात्त्विक भ्रम अब भी है । उनकी इतनी कृपा ही अधिक है राजन् ।"[1] रामायण में

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूप" - अरूणरामायण - पृ. 54

इस प्रकार का वर्णन नहीं है । विदेह राजा की वाणी सुनकर याज्ञवल्क्य का कथन है कि "मैं ने सीता को स्वस्ती मंत्र से सिक्त किया । गिरिजा मंदिर में मैं ने उसको आशीर्वाद दिया । सीता प्रसन्नवती थी । इसलिए यज्ञ का शुभारंभ करो ।"[1] याज्ञवल्क्य सीता से प्राप्त प्रेम, सेवा जैसे अतुलभ अनुभव का स्मरण करते हैं । और विवाह के बाद सीता से बिछुडन से उत्पन्न पीडा का भी वर्णन करते हैं । "अरूणरामायण" में पहले रावण ने धनुष उठाने की कोशिश की । उसकी असफलता में हँसी उठानेवाले लक्ष्मण को विश्वामित्र ने शांत किया । अन्य लोग भी उसकी पराजय में हँसते हैं । रावण की हार से अन्य राजा लोग निराश हो जाते है और रावण कुछ राजाओं से मिलकर धनुष उठाने की कोशिश करते हैं । इसमें भी वे पराजित हो जाते हैं । यह प्रसंग रामायण में नहीं है । लेकिन "सीता-समाधि" में है । सभी पराजित हो जाते हैं । किसी की भी जीत न होने से त्रस्त जनक का व्यंग्य "अरूणरामायण" में द्रष्टव्य है -

क्या वीर-विहीन धरा वीरत्व विहीन भुवन ?
इतने रण-वीर यहाँ लेकिन वीरता नमित !
असफलता देखकर अब लोचिन लज्जित
लगता कि नहीं होगा वैदेही का विवाह
रह जाएगा अविवाहित ही जानकी आह ![2]

इन पंक्तियों में जनक का क्रोध और उनकी निराशा स्पष्ट रूप में चित्रित है । इसी प्रकार करूणा से ओत-प्रोत जनक की वाणी "लीला" और "सीता-समाधि" में उपलब्ध है । सीता-समाधि में जनक की वाणी है -

---

1. पोद्दार रामावतार अरूण - अरूणरामायण - पृ. 54
2. वही - पृ. 65

हो निराश तब रोष दबा कर, बोले जनक ग्लानि में भर कर
बल पौरुष नहीं रहा धरा पर, व्यर्थ मुकुट सब रखें सिर पर
अब सब अपने भवन सिधारें, वीर कहना सभी बिसारे ।[1]

करुणा से जनित क्रोध यहाँ जनक के कथन में हम देख सकते हैं ।

जनक की करुणा-व्यथित वाणियाँ सुनकर नारियाँ दुखित होने लगी । लेकिन इसमें निहित व्यंग्य का बाण दिल में चुभने से लक्ष्मण अत्यंत क्रुद्ध हो जाते हैं । "अरुणरामायण" के समान "सीता-समाधि" और "लीला" में भी इस प्रकार का वर्णन हैं तो रामायण में नहीं है । विश्वामित्र ने लक्ष्मण को शांत किया और राम को धनुष उठाने की अनुमति भी दी हैं । गुरु से अनुमति पाकर राम धनुष उठाने के लिए जाते हैं । रामायण में यह प्रसंग है तो "सीता-समाधि" में राम जनक की व्यंग्यवाणी के कारण विश्वामित्र से अनुमति माँगते है और विश्वामित्र अनुमति देते हैं । तब लोग इसप्रकार चिंतित है कि यह बालक धनुष उठाने में सफल हो जाएगा या नहीं ? सबको आश्चर्य चकित बनाके राम धनुष उठाकर प्रत्यंचा बाँधकर कानों तक खींच लेते है तब धनुष टूट जाते है । लेकिन "लीला" काव्य में राम द्वारा धनुष उठाते वक्त वह टूट जाता है । राम इसका कारण यह मानते है कि यह चाप तो पुराना है इसलिए उठाते वक्त ही टूट जाते है । "सीता-समाधि" में राम का चिन्तन है -

टूट गया छूते ही सहसा, युग युग का चाप पुरान ।[2]

राम कहते हैं कि छुने से यह चाप टूटने का कारण पुराना होना ही है ।

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 35
2. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 41

धनुष भंग से सभी लोग आनन्द-मग्न हो जाते हैं । लेकिन "अरूणरामायण" में ईर्ष्यालु रावण परशुराम को बुलाने के लिए यज्ञवेदी से बाहर जाते हैं । रामायण में धनुष भंग के समय रावण गैर-हाज़िर है ।

"रामायण" में धनुष तोडने के बाद दशरथ को बुला लेने के लिए दूत को भेजते हैं अयोध्या के लोगों के आगमन के उपरांत विवाह संपन्न होते हैं । अयोध्या से वापस लौटते वक्त मार्ग में परशुराम का आगमन होता है । लेकिन रामायण से भिन्न "अरूणरामायण" और "विदेह" में पहले उपस्थित परशुराम जब सीता वरमाला राम को पहनाने आती है तब विवाह मंडप में प्रत्यक्ष होते हैं । "सीता समाधि" में यह प्रसंग निम्नलिखित रूप में है -

होने को आरंभ कार्य था, भृगुपति आए वहाँ अचानक ।[1]

विवाह से पहले परशुराम वहाँ प्रकट हो गये हैं ।

धनुष तोडने से "रामायण" में राम-परशुराम संवाद है और "सीता-समाधि" में भी । लेकिन "अरूणरामायण" में लक्ष्मण-परशुराम संवाद है । इनमें अनेक युगीन समस्याओं और उसके प्रति कवि के दृष्टिकोण का प्रतिपादन भी है ।

"अरूणरामायण" में राम की विनम्रता और वाणी की प्रभावोत्पादकता समझकर परशुराम के मन में सन्देह उत्पन्न हो जाते हैं । इस शंका के निवारण के लिए वैष्णव धनुष पर बाण चढाने की इच्छा प्रकट करते हैं । राम ने आज्ञा का पालन किया । यह प्रसंग "लीला" में भी इस काव्य के

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ.40

समान चित्रित है । वैष्णव चाप में भी बाण चढाने में सफल राम का रूप देखकर परशुराम की चिन्ता दूर हो जाती है । परशुराम सीता को आशीर्वाद देते हैं और लक्ष्मण को गले से लगा लेते है । "सीता-समाधि" में यह प्रसंग सुन्दर ढंग से चित्रित है -

गूढ राम की सुन मृदुवाणी, दूर दंभ का हुआ सघन भ्रम ।
चक्षु खोल कर बोले मुनिवर, फल तप का अति दिया श्रेष्ठतम ।
जै रघुवर भव भय के हारी, देश-वंश जग गौरवकारी ।[1]

राम की मृदु वाणी को गूढ समझकर परशुराम का दंभ दूर हो गया । उसकी ज्ञान चक्षु खुल गई और श्रेष्ठ तप का उचित फल मिल गया । इसलिए श्रीराम की प्रशंसा करते हैं । लेकिन इसमें राम से परशुराम वैष्णव चाप पर बाण चढाने के लिए नहीं कहते ।

रामायण में राम वैष्णव चाप में बाण चढाकर परशुराम का तपप्राप्त पुण्यलोकों का नाश करते हैं । आखिर परशुराम महेन्द्र पर्वत की ओर चले जाते हैं ।"रामायण" में परशुराम का राम से परास्त होने का चित्रण है -

स हतात् दृश्य रामेण स्वार्जितांल्लोकांस्तपसार्जितान् ।
जामदग्न्यो जगामाशु महेन्द्रं पर्वतोत्तमम् ।[2]

अर्थात् अपनी तपस्या द्वारा उपार्जित किए हुए पुण्यलोकों को श्रीरामचन्द्रजी के चलाए उस बाण से नष्ट हुआ देखकर परशुरामजी शीघ्र ही उत्तम महेन्द्र पर्वत पर चले गए ।

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 49
2. रामायण - बालकाण्डमष्टसप्ततितमः सर्ग - श्लोक 22

श्रीराम से पराजित होने के बाद परशुराम की स्थिति का वर्णन "सीता-समाधि" में निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं -

भृगुपति ने गुणगान किया, शुभ, अति आनंदित विह्वल होकर ।
त्याग अपने ब्राह्मण तन से, क्षत्रिय द्रोही धनुष बाण पर ।
मुनि तेजस्वी दंभ त्याग कर, सम्मानित कर गए हर्ष भर ।[1]

परशुराम ने अत्यंत आनन्दित होकर राम का गुणगान किया । क्षत्रिय कुलांतक परशुराम ने अपना ब्राह्मण तन त्याग दिया । तेजस्वी मुनि दंभ त्याग कर हर्ष भर कर सम्मानित हुए । इस प्रकार "सीता समाधि" में परशुराम ने अपना ब्राह्मण तन त्याग दिया ।

दशरथ को बुला लेने के लिए जनक संदेश भेजते हैं । यह संदेश मिलकर अत्यंत हर्ष से दशरथ मंत्रियों के साथ मिथिला जाने के लिए तैयार हो जाते हैं । सैन्य दशरथ का मिथिला गमन, उनके स्वीकार, सत्कार आदि का वर्णन रामायण के समान ही आधुनिक रामकाव्यों में देख सकते हैं । "अरुणरामायण" में इसका चित्रण निम्नलिखित रूप में है -

उस ओर दूत का, दशरथ से सानन्द मिलन,
पढकर विवाह-पत्रिका, प्रफुल्ल सभी परिजन,
सुन राम पराक्रम अति हर्षित राजा-रानी
परिव्याप्त अयोध्या में प्रसन्नता की वाणी !
प्रिय भरत और शत्रुघ्न भ्रातृ-जय से गर्वित
कुलगुरु वसिष्ठ राम की विजय से आत्म-मुदित

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ.5।

वैवाहिक तैयारी नृप की, गुरु अनुमति से
शुभ कार्य लगा होने प्रारंभ तीव्रगति से ।[1]

श्रीराम की विजय से आनंदित दशरथ और अन्य लोगों की स्थिति और मिथिल गमन के लिए तैयारी का वर्णन यहाँ उपलब्ध है ।

विवाह का वर्णन रामायण के समान आधुनिक रामकाव्यों में भी उपलब्ध है । अपनी बेटियों को जनक द्वारा उपदेश देने का वर्णन "विदेह" "अरूणरामायण" और "सीता-समाधि" में है । रामायण में इसप्रकार का वर्णन नहीं है ।

रामायण में सीता और राम के पारस्परिक प्रेम पूर्ण दांपत्य जीवन का वर्णन है तो "साकेत", "ऊर्मिला" जैसे काव्यों में लक्ष्मण-ऊर्मिला के दांपत्य जीवन का वर्णन है और "साकेत-संत" में भरत-माण्डवी के दांपत्य जीवन का वर्णन है । इसके अलावा "ऊर्मिला" काव्य में ऊर्मिला की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन सरयू नदी के किनारे एकत्रित नारियों के वार्तालाप से उपलब्ध होते हैं । ऊर्मिला को चित्रकला निपुणा के रूप में चित्रित करते हैं और उसके द्वारा चित्रित एक नव आखेटक के चित्र के संबंध में ऊर्मिला-शत्रुघ्न संवाद तथा उस आखेटक को लक्ष्मण बताती है । इसमें लक्ष्मण की भविष्य वनयात्रा की सूचना है, रामादि की शांता नामक एक बहिन का भी चित्रण "ऊर्मिला" काव्य में उपलब्ध है ।

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - अरूणरामायण - पृ. 86 -87

इसीप्रकार 'कैकेयी' काव्य में दशरथ "कैकेयी" के विवाहोपरांत पारस्परिक प्रेमपूर्ण जीवन का वर्णन है । कैकेयी दशरथ के साथ देवासुर संग्राम में भाग लेती है । उसकी युद्ध-कुशलता का विशद वर्णन है । दशरथ की रक्षा में कैकेयी की निपुणता भी व्यक्त दिखाती है । इस समय उसकी कार्यकुशलता से प्रभावित होकर दशरथ उसको दो वर देते हैं । लेकिन उस वक्त पति के प्रेम के अलावा अन्य कोई भी वस्तु उसके लिए गण्य नहीं है । इसलिए फिर कभी वह वर माँगने की अनुमति दशरथ से लेती है । इसप्रकार का वर्णन रामायण में नहीं है ।

रामायण में भरत-शत्रुघ्न के साथ विवाह के उपरांत मामा के घर जाते हैं । युधाजित् की इच्छा की पूर्ति के लिए भरत-शत्रुघ्न उसके साथ जाते हैं । आधुनिक रामकाव्य "साकेत-संत" में इसप्रकार का वर्णन है ।

अयोध्याकाण्ड की घटनाओं से समानताएं तथा विषमताएं

राम के गुणों का वर्णन रामायण और आधुनिक रामकाव्यों में है । इससे प्रभावित होकर दशरथ राम को युवराजा बनाना चाहते हैं । इसका भी वर्णन आधुनिक रामकाव्यों में उपलब्ध है । लेकिन रामायण से भिन्न "अरूणरामायण" में दशरथ इसके संबंध में अपनी पत्नियों से वार्तालाप करते हैं । दशरथ कैकेयी से पूछते है कि चारों पुत्रों में श्रेष्ठ कौन है ? कैकेयी उत्तर देती है कि राम से बढकर श्रेष्ठ पुत्र और कौन है ? कौसल्या कहती है कि भरत अति प्यारा है । वह अतिशय विनम्र, लोक नयन का तारा है । सुमित्रा भी इसके साथ है । और पिंजडे में तोता राम-राम नाम उच्चरित करता है । यह सुनकर कैकेयी तोते को फल देती है ।

राजा दशरथ इसप्रकार राम की महिमा जानकर उनके अभिषेक का प्रस्ताव करते हैं । अन्य राजाओं से मन्त्रणा पाने के लिए सभा बुला लेती है । सभा में सभी राजाओं ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया । इसके बाद राज्याभिषेक की तैयारी करने के लिए वसिष्ठादि से कहते हैं और राम को बुला लेकर बातें करते हैं । दशरथ के कहने के कारण वसिष्ठ सीता के साथ राम को व्रतपालन का उपदेश देते हैं और राम सीता समेत आज्ञा का पालन करते हैं । हर्षोल्लसित जन द्वारा नगर की साज-सज्जा होती हैं । इसीप्रकार का वर्णन आधुनिक रामकाव्य "अरूपरामायण" और "कैकेयी" काव्य में है ।

रामायण में दशरथ भरत-शत्रुघ्न की अनुपस्थिति के संबंध में कहते हैं -

विप्रोषितश्च भरतो यावदेव पुरादितः ।
तावदेवाभिषेकस्ते प्राप्तकालो मतो मम ।।
कामं खलु सतां वृत्ते भ्राता ते भरतः स्थितः ।
ज्येष्ठानुवर्ती धर्मात्मा सानुक्रोशो जितेन्द्रियः ।।
किं नु चित्तं मनुष्याणामनित्यमिति मे मतम् ।
सतां च धर्मनित्यानां कृतशोभि च राघव ।।[1]

अर्थात् जब तक भरत इस नगर से बाहर अपने मामा के यहाँ निवास करते हैं तब तक तुम्हारा अभिषेक हो जाना मुझे उचित प्रतीत होता है । इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारे भाई भरत सत्पुरुषों के आचार-व्यवहार में स्थित है, अपने बडे भाई का अनुसरण करनेवाले धर्मात्मा, दयालु और जितेन्द्रिय है तथापि मनुष्यों का चित्त प्रायः स्थिर नहीं रहता - ऐसा मेरा मत है । रघुनन्दन

---

1. वाल्मीकि रामायण - अयोध्याकाण्डसचतुर्थः सर्गः - श्लोक 25, 26, 27.

धर्मपरायण सत्पुरुषों का मन भी विभिन्न कारणों से राग-द्वेषादि से संयुक्त हो जाता है ।

लेकिन "अरूपरामायण" में राज्याभिषेक वेला में भरत के अभाव दशरथ को बहुत व्यथित रूप में चित्रित है ।

दुख है कि भरत-शत्रुघ्न अयोध्या में न आज
होंगे कुछ चिन्तित इस कारण परिजन, समाज
क्या करूँ किन्तु, वे बहुत दूर मामा के घर
संभव न शीघ्र उनका आना है पुत्र-प्रवर !

यहाँ भरत की अनुपस्थिति में दुखी दशरथ का चित्रण है । व्याकुल दशरथ राम से कहते हैं कि अयोध्या में उनको शीघ्र लाने के लिए कोई पुष्पक विमान नहीं है । मंगल अवसर पर प्रिय जनों का अभाव खलता है । और प्राणों पर प्रिय बिछुडन का प्रभाव पडता है । लेकिन मंगल मुहूर्त इसके अलावा दूसरा नहीं है । इसलिए यह अवसर छोडना उचित नहीं है ।

"कैकेयी" में भी द्विविधा में पडनेवाले दशरथ का चित्रण है । एक ओर लोग सर्वगुण संपन्न राम को युवराजा बनाना चाहते हैं तो अपने वचन का पालन करने के लिए दशरथ प्रतिबद्ध हैं । वसिष्ठ उसे भली-भाँति समझाते हैं कि प्रजा के हित का पालन करना राजधर्म है । दशरथ का वचन उसकी निजी समस्या है जब राम को राजा के रूप में चाहते हैं । इसलिए प्रजाहित का पालन करने के लिए उपदेश देते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूप" - अरूपरामायण - पृ. 113

राज्य फिर थाती प्रजा की सर्वथा
नृपति उसका एक प्रतिनिधि मात्र नहीं ।
प्राण तो होती प्रजा, नृप गात्र ही,
जन-मनोरथ देखना होगा सदा ।[1]

प्रस्तुत पंक्तियों में कैकेयी की चिंता का वर्णन है जो राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत है । इस प्रकार का वर्णन रामायण में नहीं है ।

कैकेयी किष्किंधा में अनीति करनेवाले बाली और त्रिलोकों को बेचैन बना देनेवाले राक्षस राज रावण को खत्म करने की बात सोचती है और इसके लिए उचित शक्ति राम में मानती है । उसकी राय में राम में अपरिमित शक्ति या बल है । दशरथ मोहवश इस शक्ति को न पहचान सकते । राम को आसानी से असुर-खल शक्तियों को मिटा सकने की ताकत भी है क्योंकि विश्वामित्र की यागरक्षा इसका स्पष्ट प्रमाण है । लेकिन कैकेयी यह ठीक तरह जानती है कि राम दशरथ की आँखों का तारा है । इसलिए कैकेयी राम को रिपुओं के नाश करने के लिए वन भेजना अपना कर्तव्य मानती है । कैकेयी की राय में –

सदा नारी रही नर-शक्ति का उद्गम ।
सके कर नर न उसकी प्रेरणा से क्या ?[2]

हमेशा नारी ही पुरुष की शक्ति का स्रोत है । नारी की प्रेरणा से उस शक्ति को जगाकर नर क्या नहीं कर सकते ? यही कैकेयी की चिन्ता है ।

रामायण में श्रीराम के अभिषेक का वृतान्त जानने से क्रुद्ध मन्थरा कैकेयी को समझाने की कोशिश करती है और कैकेयी उसको अच्छा समाचार

---

1. चाँदमल अग्रवाल "चाँद" - कैकेयी - पृ. 33
2. वही - पृ. 44

लेने के कारण पुरस्कार देती है लेकिन मंथरा अपनी स्वामिनी को खतरे की सूचना देकर ठीक करने का सफल प्रयास करती है और अंत में कैकेयी मंथरा के जाल में फँस जाती है ।

"अरूणरामायण" में सभी आधुनिक रामकाव्यों से भिन्न सरयू नदी में नहाने के लिए जानेवाली मंथरा, झंझटा नामक रावण की दासी के कुचक्र में गिरने से कैकेयी को वर माँगने के लिए प्रेरणा देती है और कैकेयी उससे प्रभावित होती है ।

लेकिन "ऊर्मिला", "कैकेयी" जैसे काव्यों में कैकेयी की वरदान माँग राष्ट्रप्रेम से प्रेरित होकर है । "कैकेयी" काव्य में कैकेयी के मन में उत्पन्न अंतरद्वंद्व का वर्णन दो सर्गों में विभाजित है । पहले सर्ग में माता का पुत्र के प्रति ममता है तो दूसरे सर्ग में एक आदर्श नारी की कर्तव्य-भावना का चित्रण है । ममता और आदर्श दोनों मिलकर उसके दम घुटते हैं और अंत में स्वयं कलंकित हो जाने की संभावना समझकर भी राम को वन भेजने का निर्णय लेती है ।

किन्तु क्यों ?
मैं नहीं न क्यों इस कार्य को पूरा करूँ अब
राम को वन भेज कर
वरदान के मिस ।[1]

कैकेयी राम वनगमन, वरदान के रूप में माँगने का निर्णय लेती है ।

उनके मन में उत्पन्न द्वन्द्व का वर्णन कैकेयी के कथन से स्पष्ट हो जाता है ।

---

1. चाँदमल अग्रवाल "चाँद" - कैकेयी - पृ. 80

द्वन्द्व है भगवान ! कैसा मथ रहा मन ।
दो विरोधी-से परस्पर तथ्य सम्मुख !
एक तो उत्पन्न संशय मंथरा द्वारा किया वह ;
दूसरे, बढते हुए अत्पात असुरों के दिनों-दिन,
झूलता मन दो हिंडोलों पर उलझता ।[1]

कैकेयी के मन में उत्पन्न चिन्ता-तरंगों का चित्रण है । दो विरोधी समस्याओं की टकराहट का वर्णन भी है ।

अंत में कैकेयी का निर्णय है जिसमें माँ का कर्तव्य है और देशप्रेम है ।

"नंदीग्राम" काव्य में कैकेयी सरस्वती देवी की इच्छा से राम वनवास रूपी वर माँगती है । कैकेयी वरदान प्रसंग रामायण के सबसे प्रमुख प्रसंग है । इसके समान वर्णन "कैकेयी" "अरूणरामायण" आदि में भी वर्णित है । "साकेत -संत", "विदेह" जैसे काव्यों में इसप्रकार का वर्णन नहीं है ।

"रामायण" में कुब्जा मंथरा की प्रेरणा से कोपभवन में कैकेयी जाती है । अपनी प्रिय पत्नी को राजमहल में न देखने से व्याकुल दशरथ के सामने एक प्रतिहारी कहती है रानी कोपभवन में है । यह सुनकर दशरथ चकित हो जाते हैं और उससे मिलने के लिए जाते हैं । दशरथ वृद्ध है तो कैकेयी तरूणी है । इसलिए कोपभवन में स्थित कैकेयी के सामने दशरथ सब कुछ भूलकर राम के नाम से प्रतिज्ञा करते हैं कि कैकेयी की सभी इच्छाएँ पूर्ण करेंगे । इसप्रकार वचन बद्ध दशरथ के सामने कैकेयी अपने दो वर माँगती है । दशरथ भरत को राज्य देने के लिए तैयार है लेकिन राम को वन भेजने के लिए तैयार

---

1. चाँदमल अग्रवाल "चाँद" - कैकेयी - पृ. 84

नहीं है, क्योंकि राम के बिना दशरथ पानी-विहीन मछली के समान तडप-तडप कर मर जायेंगे । लेकिन कैकेयी पत्थर के समान अपनी प्रतिज्ञा में अटल रहती है । लेकिन "कैकेयी" काव्य में दशरथ की प्रार्थना सुनकर कैकेयी की स्थिति है -

हुई केकई विचलित आखिर
दृश्य निरख हृदयद्रावी
पर सोचा दृढ रहना होगा
मुँह बाए संकट भावी ।[1]

दशरथ की करूण क्रन्दन से कैकेयी का हृदय विचलित होने लगा । लेकिन राज्य रक्षा रूपी लक्ष्य की पूर्ति के लिए हृदय दृढ रखना चाहती है ।

दशरथ की आज्ञा से उपस्थित राम दशरथ की दयनीय स्थिति देखकर कारण पूछते हैं । तब कैकेयी उसको सभी कारण बता देती है । यह सुनकर राम तनिक भी शोक या चिन्ता न प्रकट करते हुए वन जाने के लिए तैयार हो जाते है । राम की राय में पिता के वचन का पालन करना पुत्र धर्म है, कर्तव्य है ।

राम माता कौसल्या से विदा माँगने केलिए जाते है और वनवास वृत्तांत सुनकर अचेत होकर नीचे गिरती हैं । राम माता को भली भाँति समझाती है । इस समय कौसल्या अपने मन की व्यथा को खुलकर बताती है । कौसल्या एक पत्नी का दुख, कैकेयी द्वारा उनका तिरस्कार, और अपनी मानसिक पीडा का वर्णन करती हुई पुत्र राजा बनने से इन सब का अंत मानती है । लेकिन विधि ने सबको खत्म किया । इसप्रकार का कौसल्या चरित्र वर्णन रामायण की निजी विशेषता है और आधुनिक रामकाव्यों में कौसल्या

---

1. चाँदमल अग्रवाल "चाँद" - कैकेयी - पृ.116

यन इस रूप में अनुपलब्ध है । पुत्र के अलावा राजमहल में रहने के लिए हिचकनेवाली कौसल्या राम के साथ वन जाने के लिए तैयार हो जाती है । और राम उसको पतिव्रता धर्म का पालन करने के लिए राजमहल में ही रहना उचित बताते हैं । यह प्रसंग रामायण के समान "कैकेयी" और "अरूणरामायण" जैसे काव्यों में भी हम देख सकते हैं ।

कैकेयी के अत्याचार से क्रोध करनेवाले, पिता की बुराईयों के खिलाफ आवाज़ उठानेवाले लक्ष्मण रामायण का एक महत्वपूर्ण चरित्र हैं । "अरूणरामायण" में लक्ष्मण कैकेयी की करनी पर आलोचना करते हैं । लेकिन दशरथ के विरुद्ध कुछ नहीं कहते । "कैकेयी" काव्य में लक्ष्मण दोनों को दोषी मानते हैं । "कैकेयी" काव्य में राम की प्रतीक्षा में रहनेवाली सीता के मन में उत्पन्न कई प्रकार की चिन्ताओं का वर्णन है । "रामायण" में माता से वनवास की अनुमति स्वीकार करने के बाद राम सीता के पास जाते हैं । सीता वनवास के संबंध में अनभिज्ञ है । सीता को वनवास के बारे में कहने केलिए राजमहल पहुँचते वक्त रामायण में राम का रूप है -

विवर्णवदनं दृष्ट्वा तं प्रस्विन्नममर्षणम् ।
आह दुःखाभिसंतप्ता किमिदानीमिदं प्रभो ।[1]

उनका मुख उदास हो गया था । उनके अंगों से पसीना निकल रहा था । वे अपने शोक को दबाये रखने में असमर्थ हो गए थे । राम को इसी अवस्था में देखकर सीता दुख से संतप्त हो उठी और बोली - "प्रभो इस समय यह आपकी कैसी दशा है ।"

राम अपने वनवास की खबर सुनाते हैं । यह सुनकर सीता भी राम के साथ वन जाने की इच्छा प्रकट करती है । अनेक बार समझाने की कोशिश

---

1. वाल्मीकिरामायण - अयोध्याकाण्डम- षड्विंशः सर्गः - श्लोक 8

करने पर भी राम पराजित हो जाते हैं । पतिव्रता धर्म पालन के लिए सीता को भी राम अपने साथ लेने के लिए मज़बूर हो जाते हैं । बाद में लक्ष्मण राम के साथ वन जाने के लिए हठ करते हैं । लेकिन "कैकेयी" काव्य में राम पहले लक्ष्मण को अपने साथ लेने की अनुमति देने के बाद ही सीता के पास जाते हैं ।

रामायण में लक्ष्मण ऊर्मिला से अपनी वनयात्रा के बारे में कुछ नहीं बताते हैं लेकिन "ऊर्मिला" काव्य में लक्ष्मण वनवास के संबंध में ऊर्मिला से बातचीत करते हैं । "ऊर्मिला" काव्य में कैकेयी वरयाचना को दोष मानकर ऊर्मिला लक्ष्मण से कहती हैं -

यह कैकेयी कौन है ? कि जो रामचन्द्र को भेजे वन ?
यह कैकेयी कौन ? उजडे जो सीता का सुख सक्षम
यह कैकेयी कौन ? ऊर्मिला का, उपवन जो करे वह न ?[1]

प्रस्तुत पंक्तियों में ऊर्मिला कैकेयी की करनी की खरी-खोटी सुनाती है । लेकिन लक्ष्मण कैकेयी की वरयाचना का मूल लक्ष्य समझाने के कारण ऊर्मिला स्वयं वनवास के लिए लक्ष्मण को अनुमति देती है । "सीता-समाधि" काव्य में भी लक्ष्मण द्वारा ऊर्मिला से वनवास के लिए अनुमति माँगने की सूचना है ।

"अरूणरामायण" में लक्ष्मण के वनवास की खबर सुनकर ऊर्मिला सोचती है -

चमकूँगी बिजली बनकर प्रिय है, पावस में
मैं वास करूँगी वन के फूलों के रस में
पर, विघ्न न दूँगी कभी, सहर्ष पुकारूँगी
उत्तम सेवा केलिए सदा ललकारूँगी ।[2]

---

1. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - ऊर्मिला - पृ. 135
2. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - अरूणरामायण - पृ. 182

ऊर्मिला हमेशा लक्ष्मण का सामीप्य चाहती है । उसको विघ्न न देना चाहती है । सदा उत्तम सेवा करने के लिए प्रेरणा देना चाहती है ।

"ऊर्मिला" काव्य के समान "अरूणरामायण" में भी वनयात्रा आर्य संस्कृति के प्रचरणार्थ मानते हैं । "रामराज्य" में राम का वनवास देश के उत्तर भाग के समान दक्षिण को भी समृद्धिशाली बनाने के लिए मानते हैं । देश में एकता स्थापित करना ही वनवास का लक्ष्य है ।

"रामायण" में सुमित्रा अपने पुत्र लक्ष्मण को एक महान् उपदेश देती है जो सुविख्यात और सर्वविदित है । उसी प्रकार "अरूणरामायण" में भी उपदेश देती है । "सीता-समाधि" में भी सुमित्रा लक्ष्मण को राम के साथ जाना उचित मानती है ।

तीनों की वनयात्रा का वर्णन है और राजा दशरथ के विलाप का वर्णन है । कैकेयी अपने पास आने से भी वे असहमत हैं । सेवकों के द्वारा वे कौसल्या के घर पहुँचाते हैं । कौसल्या के हृदयद्रावक विलाप का भी वर्णन है । लेकिन सुमित्रा श्रीराम की महिमा का वर्णन करके उसको आश्वास देती है ।

श्रीराम सुमंत्र को श्रृंगवेरपुर पहुँचकर वापस जाने के लिए कहते हैं । यह प्रसंग रामायण के समान "अरूणरामायण" में भी है । लक्ष्मण को भी वापस जाने के लिए कहते हैं क्योंकि रामायण में राम दशरथ को उपालंभ देते हुए अन्य सपत्नियाँ जिन मुसीबतों का सामना करती हैं उसका वर्णन करते हैं । "अरूणरामायण" में भी इसका संकेत है ।

भरद्वाज मुनि के उपदेश से रामादि चित्रकूट में रहने का निर्णय लेते हैं । लेकिन आधुनिक रामकाव्य में भरद्वाज आश्रम और वहाँ के परिवेश की सुव्यवस्था का चित्रण है । यहाँ वाल्मीकि से रामादि का भेंट होता है । बल्कि "अरूणरामायण" में "रामायण" के समान वर्णन उपलब्ध है ।

"अरूणरामायण" में रामादि चित्रकूट की ओर जाते वक्त गुह राम की परिणयमुद्रिका लेकर आता है और राम के साथ रहने की अनुमति माँगता है । लेकिन राम उसको ठीक तरह समझाकर वापस भेजते हैं ।

चित्रकूट का सौंदर्य वर्णन "चित्रकूट" तथा "अरूणरामायण" काव्य में उपलब्ध है और लक्ष्मण कैकेयी की बधाई करते हैं कि उनकी वरयाचना ही इसप्रकार के मनोरम स्थान में रहने के लिए सुअवसर प्रदान करते हैं ।

लक्ष्मण ने फिर कहा - कि मंझली
माँ ने किया बडा उपकार
भाग्योदय है आज हमारा
पाया वन में सौख्य अपार ।[1]

"सीता-समाधि" में भी चित्रकूट में रहने के लिए अवसर प्रदान करनेवाली कैकेयी की प्रशंसा है । सुमंत्र अयोध्या में वापस लौट आते हैं और उनसे राम का सन्देश सुनकर शोकातुर राजपरिवार के लोगों का वर्णन रामायण में है । इसी अवसर पर दशरथ अपने शाप के संबंध में बताते हैं । वृद्ध तापस दंपतियों के शाप के अनुसार दशरथ पुत्र-पीडा से मर जायेंगे । इसका वर्णन "अरूणरामायण" में नहीं है ।

---

1. रामानन्दशास्त्री - चित्रकूट - पृ. 29

चित्रकूट काव्य में रामायण से भिन्न यह प्रसंग दशरथ की मृत्यु के बाद, चित्रकूट मिलन की वेला में पश्चाताप से पीडित कैकेयी को सांत्वना दिलाने के लिए वसिष्ठ दशरथ के शाप के बारे में बताते हैं ।

रामायण में चित्रित श्रवणकुमार की कहानी के वर्णन में भी रामायण और "चित्रकूट" में अंतर है । दशरथ के बाण से मृत मुनिकुमार के पास सरयूनदी के किनारे वृद्ध तापस दंपतियों को दशरथ लेते हैं और अपने सत्कर्मों के कारण इन्द्रलोक प्राप्त मुनिकुमार जाने से पहले अपने निराश्रित बूढे माता-पिता से भी शीघ्र आने के लिए कहते हैं । बूढे तापस और तापसी जिसप्रकार पुत्रशोक से तडप-तडप कर यमलोक चली गयी उसीप्रकार दशरथ भी मर जाने का शाप देते हैं । अपने पुत्र की चिता में ही वे आत्माहुति करते हैं । "चित्रकूट" में दशरथ मुनिकुमार की लाश को लेकर चलते हैं और उस पर्णकुटी में ही तीनों की चिता बनाते हैं ।

"रामायण" में मुनिकुमार के पास वृद्ध तापस और पत्नी को ले जाने का चित्रण निम्नलिखित रूप में है -

नय नौ नृप तं देशमिति मां चाभ्यभाषत ।
अद्य तं द्रष्टुमिच्छावः पुत्रं पश्चिमदर्शनम् ।।
रूधिरेणावसिक्ताङ्गं प्रकीर्णाजिनवाससम् ।
शयानं भुवि निः संज्ञं धर्मराजवशं गतम् ।।
अथाहमेकस्तं देशं नीत्वा तौ भृशदुःखितौ ।
अस्पर्शयमहं पुत्रं तं मुनि सह भार्यया ।।[1]

अर्थात् उन्होंने दशरथ से कहा कि राजा हम दोनों को उस स्थान पर ले चलो, जहाँ हमारा पुत्र मरा पडा है । इस समय हम उसे देखना चाहते हैं । यह

---

1. वाल्मीकिरामायण - अयोध्याकाण्डश्चतुः षष्टितमः सर्गः - श्लोक 26,27,28

हमारे लिए उसका अंतिम दर्शन होगा । तब मैं अकेला ही अत्यंत दु:ख में पडे हुए उन दंपति को उस स्थान पर ले गया जहाँ उनका पुत्र काल के अधीन होकर पृथ्वी पर अचेत पडा था । उसके सारे अंग खून से लथपथ हो रहे थे, मृग चर्म और वस्त्र बिखरे पडे थे । मैं ने पत्नीसहित मुनि को उनके पुत्र के शरीर का स्पर्श कराया ।

"चित्रकूट" काव्य में मुनिकुमार की लाश को लेकर मुनिदंपति के पास आनेवाले दशरथ को देखिए -

छोड चलूँ किस पर मैं शव को ?
कौन यहाँ पर है प्रहरी
सोच यही, शव, पृष्ठ भाग रख
दक्षिण कर में ले जल-पात्र
मुनि दंपति के निकट गए नृप
काँप रहा था थर थर गात्र ।[1]

यहाँ मुनिकुमार को लेकर चलनेवाले, अपनी करनी से डरनेवाले दशरथ का चित्रण स्पष्ट है ।

दाह संस्कार के संबंध में भी दोनों में असमानता है । रामायण में चित्रित दाहसंस्कार इसप्रकार है -

एवं शापं मयि न्यस्य विलप्य करुणां बहु ।
चितामारोप्य देहं तन्मिथुनं स्वर्गमभ्ययात् ।।[2]

अर्थात् इस प्रकार शाप मुझे देकर वे बहुत देर तक करुणाजनक विलाप करते रहे; फिर वे दोनों पति-पत्नी अपने शरीर को जलती हुई चिता में डालकर स्वर्ग चले गए

---

1. रामानन्द शास्त्री - चित्रकूट - पृ. 70
2. वाल्मीकिरामायण - अयोध्याकाण्डमचतु: षष्टितम: सर्ग: - श्लोक 57

"चित्रकूट" काव्य में दाह संस्कार का वर्णन है -

उस कुटिया में चिता सजाकर
नृप ने दिया शवों को फूँक ।[1]

"अरूणरामायण" और "सीता-समाधि" में इसप्रकार का वर्णन नही है । पुत्रशोक में तड़प तड़प कर दशरथ की मृत्यु हो जाती है । भरत को बुलवाने के लिए दूत भेजते हैं । "रामायण" में भरत दुःस्वप्न देखते हैं और अपने साथियों की प्रेरणा से उसके हृदय के बोझ निकालने के लिए दुःस्वप्न के संबंध में बताते हैं । इसी अवसर पर उसको लाने के लिए दूत वहाँ पहुँचते हैं । "साकेत-संत" में इससे भिन्न मामा युधाचित् के साथ आखेट करते वक्त राजनीति की कुटिलता बताते समय मंथरा के द्वारा आयोजित षड्यंत्र के बारे में भरत शंकित है और रात में दुःस्वप्न भी देखते हैं । दूत उसको लेने के लिए आते हैं । दोनों काव्यों में भारत मार्ग में दिखाई पडनेवाली निःस्तब्धता के बारे में पूछते हैं । भरत के अयोध्या पहुँचते वक्त कैकेयी उससे कुशल पूछती है तो "साकेत-संत" में थोडा विश्राम लेने के लिए कहती है । लेकिन भरत यहाँ के सारे वातावरण की दयनीय स्थिति देखकर माता से कारण पूछते हैं । कैकेयी से पिता का स्वर्गवास, और राम के वनवास का वृत्तांत सुनकर भरत कैकेयी के खिलाफ अपने क्रोध प्रकट करते हैं । रामायण में कैकेयी भरत से वार्तालाप करते वक्त मंथरा के संबंध में कुछ नहीं बताती । लेकिन "कैकेयी", "साकेत-संत" में मंथरा के कारण वरयाचना की प्रेरणा के बारे में कहती है । भरत अपनी निष्कलंकता को स्पष्ट दिखाने के लिए माता कौसल्या के पास जाते हैं । रामायण में अपनी करनी से पश्चाताप करनेवाली कैकेयी का रूप बिलकुल नहीं है लेकिन आधुनिक रामकाव्य "साकेत", "कैकेयी", "साकेत-संत", "चित्रकूट", "विदेह" "अंतर मंथन", "अरूणरामायण" में पश्चाताप करनेवाली कैकेयी का चित्रण है ।

---

1. रामानन्द शास्त्री - चित्रकूट - पृ. 77

शत्रुघ्न द्वारा मंथरा को पीटने का प्रसंग रामायण के समान आधुनिक रामकाव्य में है । लेकिन "साकेत-संत" में मंथरा को पीटते देखकर कैकेयी पत्थर के समान खडी है तो कौसल्या उसे नारी सोचकर छोडने के लिए कहती है ।

भरत राम को वापस लाने के लिए तैयार हो जाते हैं । इसके समान वर्णन आधुनिक रामकाव्यों में भी उपलब्ध है । लेकिन "साकेत संत" में यह निर्णय लेने के बाद पिता की अंत्येष्टि-संस्कार के लिए भी भरत सहमत हो गए हैं ।

"साकेत-संत" में कैकेयी अपने पति को पुनर्जीवित करने के लिए वसिष्ठ के आश्रम में जाती है । इसमें असफल होकर सती होना चाहती है । भरत माँ को सांत्वना देते हैं ।

"साकेत-संत"में राम को वापस लाने के लिए ससैन्य जाने से नगरपालिक संशय ग्रसित हो जाते हैं और जनक भी सैन्य के साथ चित्रकूट जाते हैं । "विदेह" में केवल जनक ही नहीं विश्वामित्र भी उसके साथ बन जाते हैं ।

रामायण में भी निषादराज गुह पहले भरत चरित्र की ओर शंका करते हैं और श्रीराम के प्रति भरत की भावना अच्छी है तो आतिथ्य सत्कार देकर नदी पार कराने का प्रबंध करते हैं और भरत के विरुद्ध लडने के लिए भी संचेत रहते हैं । सुमंत्र की कुशलता के कारण भरत से गुह का भेंट हो जाते हैं और भरत से शिष्टतापूर्वक व्यवहार करते हैं ।

"साकेत-संत" में भरत का सेनासमेत-आगमन देखकर गुह चिंतित है और अपनी सेना को सुसज्जित बनाता है । इसमें भरत-गुह की, आपस में बातचीत है ।

भरद्वाज मुनि-भेंट, स्वागत सत्कार एवं राम के निवास स्थान की खबर भरत को मिलती है । रामायण के समान यह प्रसंग आधुनिक रामकाव्य में भी है ।

आधुनिक रामकाव्य में राम का समाज सेवक रूप और सीता की समाज सेवक रूप "रामराज्य", "चित्रकूट", "अरूणरामायण" और "सीता-समाधि" में है । "सीता-समाधि" में लक्ष्मण युवकों का संघ बनाते हैं और घुडसवारी और अस्त्रों का चालन भी सिखाते हैं ।

रामायण में भरत के चित्रकूट गमन की सूचना वन में पशुओं के भागने के कारण लक्ष्मण टूँढ लेते हैं तो "साकेत-संत" में यह खबर कोलों से मिलती है । लक्ष्मण भरत के आगमन से शंकित है तो सर्वचराचर की गति जाननेवाले राम भरत का गमनोद्देश्य जानते हैं और लक्ष्मण को शांत बनाते हैं । "अरूणरामायण" में यह समान रूप में वर्णित है ।

चित्रकूट-मिलन संपन्न होता है । भरत के कठिन परिश्रम करने पर भी राम अपनी प्रतिज्ञा में अटल रहते हैं । कैकेयी भी राम को वापस आने के लिए कहती है । "साकेत", "चित्रकूट", "अरूणरामायण" "कैकेयी", "साकेत संत", "जानकी जीवन" में इसका प्रमाण है । "साकेत-संत" में कैकेयी राम से इस प्रकार कहती है -

"तुम को वन भेजा अहह ! हुई मैं वन्या,
तुम गहो भरत का हाथ बनूँ मैं धन्या ।
तुम एक बार माँ कहो लाल ! बलि जाऊँ
मैं जो कुछ हूँ खो चुकी पुनः वह पाऊँ ।

पश्चाताप से तड़पने वाली कैकेयी का रूप ही इन्हीं पंक्तियों में हम देख सकते हैं ।

"चित्रकूट" काव्य में पति-घातिनी होने से पश्चाताप करनेवाली कैकेयी को वसिष्ठ दशरथ के शाप की कहानी सुनाते हैं । इसलिए उस शाप को सफल बनाने के लिए कैकेयी को एक माध्यम ही बनाया है ।

भरत के बार बार कहने पर भी राम अयोध्या वापस लौटने के लिए सहमत नहीं हैं । "विदेह" में जनक, भरत-राम के भ्रातृप्रेम देखकर प्रशंसा भी करते हैं । "अरूणरामायण" में भी चित्रकूट मिलन की वेला में जनक की उपस्थिति चित्रित है । इसलिए भरत राम की प्रतिनिधि के रूप में रामपादुकाएँ लेकर वापस लौटते हैं । "नंदीग्राम" में सिंहासन पर उन पादुकाओं को रखकर शासन करने लगे । पति-विरहिणी ऊर्मिला का वर्णन रामायण में नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य "साकेत", "ऊर्मिला", "विदेह" जैसे काव्यों में है । "नंदीग्राम" में एक संत के समान जीवन बितानेवाले भरत चरित्र का विशद वर्णन है तो रामायण में इस प्रसंग का संकेत मात्र है । नंदीग्राम के अलावा "साकेत संत" में भी यह प्रसंग अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित है । भरत के अष्टायाम चर्या "साकेत संत" की निजी विशेषता है । "नंदीग्राम" काव्य में भरत ग्रामोद्धार के लिए ही यह गाँव चुन लेते हैं ।

---

1. बलदेव प्रसाद मिश्र - साकेत-संत - पृ. 133

देश में शांति स्थापित करने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं । "रामायण" में भरत राम के राज्याभिषेक के बाद लवणासुर वध करते हैं तो "नंदीग्राम" में लवणासुर-वध नंदीग्राम में रहते वक्त भरत करते हैं । इस युद्ध में लवणासुर की सेना की असमर्थता देखकर उसकी पत्नी और अन्य असुर नारियाँ युद्ध में भाग लेती हैं । भरत उन सबको नारी मानकर बेहोश बनाते है और लवणासुर-वध के बाद होश में लाते हैं । माण्डवी-विरह वर्णन "नंदीग्राम" काव्य की विशेषता है -

चक्र-वर्द्धित ब्याज-सा पर, दुख हमारा
हा ! सतत अविराम अविकल बढ़ रहा है ।
भार चिन्ता का सहज गति सौ गुना बन-
शीश पर पल-पल हमारे चढ रहा है ।[1]

रामादि चित्रकूट छोडकर चले गये । अत्रि मुनि से भेंट होते हैं । सीता अनसूया संवाद संपन्न होता है और अनसूया सीता को आभूषण प्रदान करती है ।

अरण्यकाण्ड के संदर्भों से साम्य-वैषम्य

तापसों से रामादि का मिलन और सत्कार होते हैं । वन के भीतर जाते वक्त विराध का आक्रमण होता है । "अरूणरामायण" में विराध की कहानी में मौलिकता है । विराध एक साधारण मानव था । लेकिन अनुचित मार्ग में धन संचय करने के कारण कृपण हो गया । सामाजिक अनीतियों और नेताओं की बुराईयों का वर्णन यहाँ उपलब्ध है । रामादि का अगस्त्य मुनि से भेंट होते हैं । उसकी इच्छा के कारण पंचवटी में रहने के लिए जाते है और मार्ग में जटायु से भेंट होती है । "रामायण" और "अरूणरामायण"

---

1. गयप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 177

में यह प्रसंग समान रूप में है । लेकिन "अरूणरामायण" में जटायु भी पंचवटी में रहने के लिए इच्छा प्रकट करता है । राम से जटायु की प्रार्थना निम्नलिखित है -

इतने में गृध्रराज से प्रभु का हुआ मिलन
उस प्रिय जटायु का प्रेम देखकर पुलकित मन
बोला वह भी - हे राम ! यही पर करे वास
मैं भी रहता हूँ इसी भूमि के आस पास ।[1]

जटायु की इच्छा है कि राम का भी पंचवटी में रहना उचित है ।

'रामायण' में जटायु ने अपना परिचय देकर रामचन्द्रजी से इसप्रकार कहा -

सोऽहं वाससहायस्ते भविष्यामि यदीच्छसि ।
इदं दुर्गं हि कान्तारं मृगराक्षससेवितम् ।
सीतां च तात रक्षिष्ये त्वयि याते सलक्ष्मणे ।।[2]

अर्थात् तात ! यदि आप चाहें तो मैं यहाँ आप के निवास में सहायक होऊँगा । यह दुर्गम वन मृगों तथा राक्षसों से सेवित है । लक्ष्मण सहित आप यदि अपनी पर्णशाला से कभी बाहर चले जाएँ तो उस अवसर पर मैं देवी सीता की रक्षा करूँगा ।

इसप्रकार सबकी इच्छा और पंचवटी की सुषमा से प्रभावित होकर राम पंचवटी में रहने का निर्णय लेते हैं । इस समय रावण की बहिन शूर्पणखा वहाँ आती है । "रामायण," "पंचवटी प्रसंग" और "अरूणरामायण" में

---

1. पोद्दार रामावतार अरूण - अरूणरामायण - पृ. 349
2. वाल्मीकिरामायण - आरण्यकाण्डश्चतुर्दशः सर्गः - श्लोक 34

शूर्पणखा पहले राम के पास जाती है । "पंचवटी" (गुप्त), "अरूणरामायण" और "सीता-समाधि" में पहले शूर्पणखा लक्ष्मण के पास आती है । रामायण में राम के मोहक रूप से प्रभावित होकर राम से अपना परिचय देकर पत्नी बनाने के लिए प्रेरणा देती है । लेकिन राम पत्नीसमेत वन आए हैं लेकिन लक्ष्मण अकेला है । और उसके पास भेजते हैं । लक्ष्मण केवल राम सेवक है । शूर्पणखा जैसी नारी को सेविका बनाना नहीं चाहते । इसलिए राम के पास भेजते हैं । इधर से उधर, उधर से इधर बार-बार चलने के कारण क्रुद्ध शूर्पणखा सीता को ही इन सबका बाधक तत्व समझकर उसको पकडने के लिए आती है । राम की आज्ञा से लक्ष्मण उसके नाक-कान काटते हैं ।

रामायण में शूर्पणखा रावण की बहिन के रूप में अपना परिचय देती है तो पंचवटी में स्वतंत्र रूप में विचरण करनेवाली एक साधारण नारी के रूप में ही अपना परिचय देती है ।

"अरूणरामायण" में शूर्पणखा पंचवटी में "झंझटा" नामक रावण की दासी की प्रेरणा से आती है । इसमें भी शूर्पणखा अपना प्रेम प्रस्ताव पहले राम के पास रखती है । इसमें भी शूर्पणखा अपना परिचय रावण की बहिन के रूप में देती है । रावण की वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में कहती है । इसमें राम शूर्पणखा को लक्ष्मण के पास नहीं भेजते अन्यत्र जाने के लिए कहते हैं -

हे देवी ! यहाँ से कहीं अब जाओ
मेरी भार्या को बहुत अधिक मत अकुलाओ ।[1]

इन पंक्तियों में राम अपनी विमुखता को स्पष्ट दिखाते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 363

राम के वचनों के कारण उदास होनेवाली शूर्पणखा ने लक्ष्मण को आते देखा और उसके पास जाकर भी अपना परिचय दिया है । लेकिन लक्ष्मण उसके वैभव का प्रमाण सुनकर कहते है कि "तुम्हारे भाई की महिमा में भली-भाँति जानता हूँ कि धनुष यज्ञ में उनकी शक्ति मैं ने समझ लिया था इसलिए इसप्रकार की बातें मुझसे न करो ।उनको पथ से हटाने के लिए लक्ष्मण कहते हैं कि—

अटपट बातों को सुनकर क्रोध निकल आता
अनुचित व्यवहार किसी का, सहा नहीं जाता
छोडो पथ को अब, मुझे कुटी में जाने दो
प्रिय कमल-फूल को प्रभु कर में रख आने दो ।[1]

शूर्पणखा को टुींग मारते देख उदासीन होकर लक्ष्मण अपनी कर्तव्य-भावना समझाकर वहाँ से जाना चाहता है ।

राम के पास जाने के बाद फिर शूर्पणखा लक्ष्मण के पास जाती है । सीता पर्णकुटी के अंदर जाती हैं । शूर्पणखा लक्ष्मण का आलिंगन करने के लिए निकलती है तो लक्ष्मण उसके नाक-कान काटते हैं । यह "अरूणरामायण" काव्य की मौलिकता है ।

रामायण में इस अवसर पर लक्ष्मण-सीता का हास-परिहास नहीं हैं । लेकिन "अरूणरामायण", "पंचवटी" जैसे काव्यों में देवर-भाभी हास-परिहास उपलब्ध है । "पंचवटी" काव्य में सीता लक्ष्मण को शूर्पणखा को स्वीकार करने के लिए कहती है । अंत में शूर्पणखा राम से सीता को छोडकर उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए प्रार्थना करती है । इससे हँसी उठाते हुए लक्ष्मण कहते हैं कि "पंचायत करने केलिए आई है लेकिन स्वयं उसमें फँस जाती है ।"

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 364

लक्ष्मण के द्वारा नाक-कान काटने से खून की नदी बहाती हुई आनेवाली शूर्पणखा से सारे वृत्तांत सुनकर खर-दूषण प्रतिशोध केलिए आते हैं । "अरूणरामायण" में खर-दूषण के आगमन की सूचना जटायु देते है और खर-दूषण के वध से संतुष्ट जटायु का वर्णन भी "अरूणरामायण" की विशेषता ही है ।

"रामायण" में पहले रावण अंकंपन की सलाह से सीतापहरण केलिए जाते हैं और मारीच के उपदेश से वापस लौटते हैं । राम को युद्ध में परास्त करना असंभव मानते हैं । शूर्पणखा रावण के पास जाकर उसको फटकारती है । लेकिन शूर्पणखा रावण से कहती है कि रावण की पत्नी बनाने के उद्देश्य से अनुपम सुन्दरी सीता को वश में लाने के लिए जाने के कारण लक्ष्मण ने उसे कुरूपा बना दिया । इससे क्रुद्ध रावण फिर मारीच से सीतापहरण के लिए सहायता माँगते हैं । मारीच उसे बार-बार समझाने की कोशिश करते हैं लेकिन रावण के हाथों से मरने से राम बाण से मरना उचित जानकर रावण की आग्रह-निवृत्ति केलिए वह तैयार हो जाता है । एक कनक-मृग के रूप में राम की पर्णकुटी के पास वह विचरने लगा । सीता इस सुन्दर मृग को देखकर लालायित हो गई है । लक्ष्मण उस मृग के बारे में संदेह प्रकट करते हैं । रामायण में उस मृग को पाने के लिए सीता की हठ से राम लक्ष्मण को सीता की रक्षा का आदेश देकर चले जाते हैं। राम उस मृग को जिन्दा पकडना कठिन समझकर उसका वध करते हैं । राम के समान मारीच का करूण क्रन्दन सुनकर सीता राम की रक्षा के लिए लक्ष्मण को आदेश देती है । लेकिन राम की अप्रतिम शक्ति से परिचित लक्ष्मण जाने के लिए तैयार नहीं होते । फिर भी संशयग्रस्त सीता की कटुवाणी सुनकर लक्ष्मण जाने के लिए प्रेरित होते हैं । किन्तु जाने से पहले एक रेखा खींचकर उससे बाहर न जाने की प्रार्थना करते हैं । रामायण में इसी अवसर पर संत के रूप में रावण का आगमन होता है और भीख माँगकर लक्ष्मण रेखा से बाहर आनेवाली सीता को पकड कर लंका की ओर चले जाते हैं । इसप्रकार का वर्णन "सीता-समाधि", "आँजनेय" "रामराज्य" जैसे काव्यों में है ।

"अरूणरामायण" में रामायण से भिन्न संत के रूप में रावण सीता के पास जाकर मिथिला निवासी बताते हैं । और याज्ञवल्क्य का शिष्य भी बताते हैं । स्वराज्य संबंधी बातों से पुलकित सीता भीख देने के लिए लक्ष्मण रेखा तक पहुँचती है तब राम-लक्ष्मण उधर से आ रहे हैं जानकर सीता का ध्यान टूट जाती है और रेखा के बाहर निकली और रावण उसे पकड लेते हैं ।

सीता की करूण-पुकार सुनकर जटायु रावण से लडते हैं । रावण द्वारा पंख काटने पर जटायु नीचे गिर जाता है । रामायण में सीता अपना आभूषण नीचे गिराती है तो "अरूणरामायण" में अपना वस्त्र डाल देती है । "रामायण" के समान आँजनेय में भी इस प्रसंग का वर्णन है । रामायण में रावण सीता को अपने राजमहल में ले जाकर अपनी पत्नी बनाने का आदेश देते हैं । सीता इससे असहमत है और अशोकवाटिका में रहती है । यह प्रसंग "रामायण" के समान आधुनिक रामकाव्यों में उपलब्ध है ।

मारीच-वध के बाद वापस आनेवाले राम ने लक्ष्मण को उस ओर आते देखा और सीता को अकेली छोडकर आने का कारण भी पूछा । लक्ष्मण के उत्तर से पीडित राम तुरंत वापस आते हैं । राम के मन में शंकाएँ उत्पन्न होती हैं । पर्णकुटी में राम ने सीता को नहीं देखा । राम सीता को पुकारते रहते हैं और आमने-सामने पडनेवाली सभी चीज़ों से सीता के बारे में पूछते हैं । इसप्रकार आगे बढते वक्त जटायु को देखा और उससे सारे वृत्तांत सुना । जटायु का देहांत हो गया और राम ने उसका दाहसंस्कार किया । राम द्वारा कबंध-वध संपन्न होते हैं और उसने सुग्रीव से मित्रता करने की प्रार्थना की । आगे शबरी से भेंट होती है । रामायण में शबरी

चरित्र के संबंध में विशद वर्णन नहीं है । उसकी अतुलनीय-भक्ति का वर्णन मात्र है । "शबरी" नामक खण्डकाव्य में शबरी के संपूर्ण चरित्र का सांगोपांग वर्णन है । शबरी किस जाति में उत्पन्न हुई है ? किसप्रकार का जीवन बिताता है, उसकी स्थिति कैसी है ? किसप्रकार मातंगाश्रम में पहुँच गई, मातंगाश्रम में उसकी जीवन चर्या कैसी थी, वहाँ उसकी भक्ति कैसी थी ? आदि सबका वर्णन है । "रामायण" में शबरी अपने शरीर की आहुति करके दिव्य लोक में चली जाती है । यह वर्णन "शबरी" काव्य में भी समान रूप में वर्णित है । लेकिन "अरूणरामायण" में शबरी राम में विलीन हो जाती है ।

"शबरी" काव्य की शबरी की विशेषता यह है कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से ही महान और परमपद का अधिकारी हो सकता है ।

किष्किंधाकाण्ड की घटनाओं से समानताएँ तथा विषमताएँ

"अरूणरामायण" में सत्संग के समय हनुमान की शक्ति के संबंध में राम ज्ञात होते हैं । लेकिन रामायण में इसप्रकार का वर्णन नहीं है । रामायण में ऋष्यमूक की ओर आनेवाले राम-लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव की चिंता वर्णित है । हनुमान वेश बदलकर राम से उसके बारे में सारे वृत्तांत पूछते हैं । अपने और सुग्रीव का भी परिचय देते हैं । दोनों की मैत्री होती है । राम बाली-वध की प्रतिज्ञा भी करते हैं । रामायण में सुग्रीव राम को सीता के आभूषण दिखाते हैं तो "अरूणरामायण" में सीता के "वस्त्र" दिखाते हैं । दोनों काव्यों में राम सुग्रीव से भाई की शत्रुता का कारण पूछते है और सुग्रीव विस्तार से सारे वृत्तांत सुनाते हैं ।

राम द्वारा बालि-वध होते हैं । सुग्रीव किष्किंधाधिपति बन गए और अंगद युवराज । "रामायण" के समान "अरूणरामायण" में राम बाण से

घायल गिरनेवाले बालि पहले राम को फटकारते हैं और राम की वचन-सुधा से उसकी प्रशंसा भी करते हैं ।

वानरों के द्वारा सीता की खोज होती है ।

सुन्दरकाण्ड के प्रसंगों से साम्य तथा वैषम्य

हनुमान समुद्र पार करके लंका में प्रवेश करते हैं । अशोक-वाटिका में रहनेवाली सीता की दयनीय स्थिति का वर्णन रामायण के समान "अशोकवन", "रामराज्य", "सीता-समाधि", "अरूणरामायण" "अशोकवन" (गीतिकाव्य) में उपलब्ध है । लेकिन वहाँ होनेवाली घटनाओं में भिन्नता है ।

रामायण में हनुमान एक छोटे वानर के रूप में लंका में आते हैं और रावण के अंतपुर में सीता की खोज करते हैं । अशोकवन में भी इसका समान वर्णन है । लेकिन असुर स्त्रियों के द्वारा उसको पकड लेती है । परन्तु वह बच जाता है ।

"अरूणरामायण" में पहले हनुमान विभीषण से मिलते है और उसमें विभीषण के मन की चिन्ताओं का भी वर्णन है । विभीषण के लिए अपने विश्वरूप भी हनुमान दिखाते हैं । विभीषण हनुमान से उस तंत्रवाटिका की सारी विशेषताएँ खुल्लम खुल्ला बताते हैं । रामायण के समान सीता को भी रावण द्वारा प्रलोभित करने का सफल प्रयास "अशोकवन", "अरूणरामायण", "सीता-समाधि" आदि काव्य में उपलब्ध है । "अरूणरामायण" में रावण राम के वनवास का कारण अपनी चतुराई मानते हैं ।

रावण ने कहा - जानकी ! हठ अब नहीं करो
मेरी आँखों में अब अपनी श्री-शक्ति भरो
मैं भी था गया तुम्हारे शक्ति स्वयंवर में
मेरी प्रभुता ज्योति जगाती अम्बर में !
उस दिन वह तन्त्र पिनाक-न मुझसे टूट सका
कामना तरंगित मन उस दिन था थका-थका
मेरी चतुराई से रघुपति-वनवास हुआ
तुम आई तो लंका में आत्म-प्रकाश हुआ ।[1]

यहाँ रावण अपनी चतुराई के कारण राम का वनवास स्पष्ट कराते हैं और आगे मंथरा को समझाने के लिए रावण की दासी का आगमन भी रावण की प्रेरणा से बताते हैं ।

रामायण में सीता को अपने निर्णय लेने के लिए रावण दो महीने की अवधि देते हैं । "सीता-समाधि" में भी दो महीने देते हैं तो "अरूणरामायण" और "अशोकवन" में एक महीना ही देते हैं ।

रामायण से भिन्न "अरूणरामायण" में रावण द्वारा शूर्पणखा को राम के पास भेजना, झंझटा-मंथरा से मिलन आदि रावण की इच्छा के कारण बताते हैं । क्योंकि रावण सीता को अपनाना चाहता है । इसलिए सीता की चोरी भी करते हैं ।

रामायण में सीता की खोज में अशोकवृक्ष के ऊपर बैठनेवाले हनुमान सीता की अत्यंत कारूणिक स्थिति, रावण से उसका सामने करनेवाली

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 446

पीड़ा आदि को देखकर चुप बैठ जाते है और रावण के चले जाने से सीता को अपना परिचय दिलाने के लिए रामकथा सुनाते हैं । "अरूणरामायण" में पहले विलाप करनेवाली सीता के पास मुद्रिका गिरा देते और बाद में राम कथा सुनाते हैं -

राम मुद्रिका सीता के सन्निकट गिरी
देख कर उसे, आँखों में आशा-घटा घिरी ।[1]

मुद्रिका देखकर सीता के मन में आशा पैदा होने लगी ।

"सीता-समाधि" में भी हनुमान द्वारा राम-कथा सुनाने का प्रसंग है ।

रामायण के सामन आधुनिक रामकाव्य अशोकवन (गीतिकाव्य) "रामराज्य" और "आँजनेय" में हनुमान अशोकवाटिका नष्ट भ्रष्ट करते हैं तो "अरूणरामायण" में भूख लगने से भूख मिटाने के लिए सीता से अनुमति माँगकर अशोकवाटिका में प्रवेश करते हैं । और फल खानेवाले हनुमान को पकड़ने केलिए आनेवाले राक्षसों से लडने के कारण वाटिका का ध्वंस हो जाता है । "अशोकवन" खण्डकाव्य में इसका चित्रण है -

भूखा तो हूँ बहुत वृक्ष भी लदे रसीले फल से,
निराहार मैं देख रहा हूँ माँ के व्रत को कल से ।
आज्ञा मिले, तोड फल खा लूँ, पी लूँ जल भी निर्मल
राम कृपा से दूर रहेगा रक्ष-रक्षकों का दल ।[2]

सीता की अनुमति लेकर वाटिका में प्रवेश करने के लिए हनुमान तैयार हो जाते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 453
2. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 56

वाटिका के नष्ट-भ्रष्ट होते वक्त 'रामायण' में हनुमान सीता के बारे में चिंतित हैं । "अरूणरामायण" में भी रावण सीता के बारे में चिन्तित है । राक्षसों के द्वारा हनुमान को पकडना कठिन समझकर रावण के पुत्र मेघनाद का आगमन होता है । उसके ब्रह्मास्त्र से हनुमान बंदी हो जाते हैं । रावण-दरबार में हनुमान - रावण संवाद होता है । राम का दूत समझकर उसकी हत्या करने के लिए भी रावण आज्ञा देते हैं तो विभीषण दूतों का वध अनुचित मानते हैं । अतः पूँछ में आग लगाने की सजा देती है । उस आग से हनुमान लंका में आग लगाते हैं । सीता से पुनः भेंट होते हैं और दुर्गा की उपासना के लिए सलाह देती है ।

"सीता-समाधि" में हनुमान एक लघु युवक के रूप में अशोकवाटिका में प्रवेश करते हैं और सीता को अपना परिचय देने के लिए वक्षस्थल खोलकर दिखाते हैं ।

कैसे धीर बजाऊँ माता, कैसे दृढ़ विश्वास जमाऊँ ।
चीर हृदय को देखो जननी, मूर्ति राम की तुम्हें दिखाऊँ ।
अपना कृत्रिम रूप मिटाकर, वक्ष खोलते वस्त्र हटाकर ।
गुदी हुई थी वक्षस्थल पर, मूर्ति राम की परम मनोहर ।
चंदन चर्चित वक्ष वीर का, था शोभित राम नाम से सुन्दर ।
पडा जनेऊ उत्तम शुभकर, उनके पावन कंचन तन पर ।।[1]

"सीता-समाधि" में रामायण के समान वाटिका नष्ट-भ्रष्ट करनेवाले हनुमान को राक्षस गण पकडने की कोशिश करते हैं और बंदी बना लेते हैं । रावण-हनुमान संवाद है और बंदीगृह में डालने की आज्ञा रावण देते हैं । सैनिकों के आगमन के पहले हनुमान उच्चस्वर से राम नाम बोला

---

1. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 192

तब उसके कटिपट खोलकर आग निकली और लंका में आग फैलने लगी । हनुमान द्वारा वाटिका नष्ट-भ्रष्ट करने से पहले सीता हनुमान से अपनी ओर से हुई सभी भूलों की क्षमा राम और लक्ष्मण से माँगने का आग्रह प्रकट करती है ।

"अशोकवन" खण्डकाव्य में बंदिनी सीता की चिंता, रावण-मंदोदरी संवाद, त्रिजटा द्वारा सीता का यशोगान आदि भी उपलब्ध है । रावण मंदोदरी संवाद में रावण अपनी करनी का समर्थन करते हैं क्योंकि राम ने ही पहले अपनी बहिन के नाक-कान काटकर उसे ललकारा । एक सच्चे भाई बहिन का अपमान कैसे सह सकते है ? मंदोदरी रावण को भली-भाँति समझाती है कि अबला का हरण असुर सम्राट को शोभा नहीं देता । इसके उत्तर के रूप में रावण ने कहा कि "शूर्पणखा की ओर रामादि की करनी के प्रतिकार के रूप में अपनी करनी का समर्थन है । पहले नारी का अपमान रामादि ने किया है । बहन का अपमान भाई के अपमान के समान है । इसलिए सीता का अपहरण करने से अपनी प्रतिशोध-भावना प्रकट की ।" इसी वक्त त्रिजटा को बुला लेते हैं, और रावण उससे सीता को अपने वश में लाने के संबंध में उसकी राय पूछते हैं तो त्रिजटा ने कहा कि सीता तो विदेहमयी है । वह भुवन सुन्दरी अद्भुत आत्मजयी है । सेवा, स्नेह, सहानुभूति, त्रास, ताप सभी उसके सामने समान प्रतीत होती है । वह तो भौतिक सुख भुला रही है । उस सुख-दुख विरक्ता को कायिक क्लेश न हिला पा रहे हैं । हमारी सी माया मोहिनी कला, विद्या सभी निष्फल है, इस मृगनयनी की निष्ठा ध्रुव के समान अविचल है । उसे प्राण नहीं त्राण चाहिए । वह अपने प्रिय के दर्शन के लिए आकांक्षित रहती है । हमारी कला नारी को वश में लाने के लिए असफल नहीं है लेकिन दैत्यशिरोमणि वह साधारण नारी नहीं है । सोने की पिंजडे में बैठनेवाली चक्वि के समान है । उडने के लिए ऊपर आसमान है और टिकने के लिए पृथ्वी ।

खुलने की प्रतीक्षा में वह भाग्य की प्रतीक्षा करती है । इसप्रकार त्रिजटा सीता का यशोगान करती है । मंदोदरी रावण को समझाने का प्रयास करती है । उसने यों कहा कि शूर्पणखा की करनी अच्छी नहीं है । इसलिए रामादि शूर्पणखा को कुरूपा बनाती है । स्त्री समान लज्जा शूर्पणखा में नहीं है और रात में निर्भय होकर नर भोजन करने के लिए घूमघूम कर चलती है । अत्याचार को सहने की एक सीमा होती है । दुर्बल मिलकर दमनचक्र धीमा करते हैं । खर -दूषण आदि का अंत करनेवाले साधारण मनुष्य नहीं है, अवतार है । सीता स्वयंवर में आप इसको सीधे देख लेते हैं । वह कुछ करने व आर्तजनों की करुण पुकार मिटाने के लिए आया है । इसलिए सीता को वापस भेज दो । वे कहीं पर्णकुटी बनाकर रहेंगे । फिर परमेश्वर के अनन्य भक्त के सामने कौन टिक सकता ?" लेकिन रावण अपनी करनी का समर्थन करते हैं । उसकी राय में अपमानी का मानहरण नीति-विधान निराला है । मेरी भगिनी को खदेडकर जो मुझे चुनौती देता है क्या मैं कभी उसकी मनौती करने को बैठूँगा ? अपने अपकारी से प्रतिशोध लेना ही धर्म है । सीता ही राम की संपत्ति है । उसे हरण कर लेना ही राजधर्म है । वही है रिपु की लक्ष्मी छीन कर लेना । माया मृग की रचना प्रतिहिंसा की प्रयोग प्रथा है । जहाँ तक हो सके रक्तपात से बचना । लघु तापस का साहस है महासुभट रावण से भिड़ना जिससे सभी सुरासुर डरते क्या वह उसके बस क्या ? लेकिन जब मैं साधु रूप में पंचवटी पहुँचकर गोदावरी तट में पर्णकुटी की शोभा देख रहा था तब सीता की शोभा ने मुझे उसको हरण करने के लिए प्रेरित किया ।" फिर भी मंदोदरी उसको इस प्रकार समझाने की कोशिश करती है कि "विश्व नारी का तेज ही धरा का सत्य है । तापस की प्यारी का अद्भुत आदर्श भी साथ है । इस संस्कृति के त्राता की शक्ति स्वयं नारी ही है । पर नारी का ललाट-विधु कभी मंगलदाता नहीं होता है । ज्ञाता उसको चतुर्थी का चन्द्र समझकर त्याग देते हैं । सीता को राम की संपत्ति नहीं शक्ति जानो । अर्धांगिनी, संगिनी, भामा आदि

मानो सीता अपने घर को शीत-निशा की शीलता के समान है । वह चली जाय तो हमारे कुल-कमल-सर को खिलाता रहे । सोने की लंका नगरी तीनों लोक से सुन्दर है । इसे देखकर वसुधा के नर-नारी विस्मित होते हैं । जब से सीता यहाँ आई तब से अपशकुन होती रहती है । दुस्वप्न देखकर मैं भयभीत हो जाती हूँ । रावण उसको आश्वास देते है कि तुम रावण की पत्नी हो । इसलिए अपशकुन से डरने की आवश्यकता नहीं । जो शंकर का कृपापात्र है जिसको सिर काटना शुभ हो, उसको छोडकर तुम विश्व में किसको बली मान रही हो । रावण सीता को अपने वश में लाने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं । लेकिन राम रूप सूरज को छोडकर अन्य किसी के लिए सीता रूपी कमल कैसे खिल सकेगी । रावण उसकी हत्या के लिए तैयार हो जाते हैं । मंदोदरी ने अबला-हत्या से उसे रोका ।

"अशोकवन" खण्डकाव्य में सीता ने स्वप्न में पिता को देखा और इसप्रकार पीडा सहने का कारण पूछा । जनक का कथन है - "सबों के दुख हरने के लिए तुम जैसी पुत्री मुझे मिली है । इसलिए तुम्हारा दुख तुरंत ही खत्म हो जायेगा ।"

"अशोकवन" खण्डकाव्य में हनुमान एक छोटे वानर के रूप में लंका में प्रवेश करते हैं और राक्षसियाँ उसको पकड लाती हैं । लेकिन हनुमान उससे बचकर एक पेड में चढ गया । सीता-हनुमान-मिलन होते हैं । चूडामणि देती है, सीता से भूख मिटाने के लिए अनुमति माँगकर अशोकवाटिका में प्रवेश करते हैं और पुष्पवाटिका नष्ट-भ्रष्ट करते हैं । "रामायण" के समान हनुमान ने अक्षयकुमार को खत्म किया, मेघनाद द्वारा हनुमान बंदी बनाए गए और पूँछ से लंका में आग लगाकर वापस लौटा । सुमित्रानंदन पंत जी का गीतिकाव्य "अशोकवन" में भी यह प्रसंग रामायण के समान है । इसके अलावा

"रामराज्य" और "आँजनेय" में भी इस प्रसेग का संकेत है ।

हनुमान राम से मिलकर सारे वृत्तांत सुनाते हैं ।

युद्धकाण्ड की घटनाओं से समानताएं तथा विषमताएं

हनुमान से सारी खबर पाकर सभी लोग संतुष्ट हो जाते हैं । रावण से युद्ध करने के लिए सभी समुद्र तट पर एकत्र होते हैं । रावण भी सभा बुलाते हैं । राक्षस गण विजय का विश्वास रखता है । लेकिन विभीषण रावण को समझाने का सफल प्रयास करते हैं । मालयवान भी रावण को समझाने का प्रयास करते हैं । इन्द्रजित भी विभीषण का अपहास करते हैं । रावण द्वारा विभीषण का तिरस्कार होते हैं । उसे फटकारकर विभीषण राम के पास आते हैं । विभीषण शरण पाने के लिए राम के पास आया । रामायण में विभीषण को शरण देने से पहले राम अपने साथियों जैसे सुग्रीव, अंगद, शरभ, जाम्बवान, मैन्द, हनुमान आदि से अपना मत प्रकट करता है । लेकिन "अरूणरामायण" में सुग्रीव ही अपना मत प्रकट करता है ।

रामायण के समान "अरूणरामायण" में भी राम विभीषण को शरण देते हैं । रामायण में विभीषण को शरण देने के बाद रावण की शक्ति का परिचय देते हैं और राम रावण वध करके विभीषण को लंका राज्य पर अभिषिक्त करते हैं । लेकिन "अरूणरामायण" में रावण-वध के पहले राम विभीषण को लंकेश कहते हैं । यह प्रसंग "अरूणरामायण" में निम्नलिखित रूप में चित्रित है -

राम ने उसे उठाकर, सुवक्ष से लगा लिया -
कहकर लंकेश उसे अग्रिम सम्मान किया -

एक ही शब्द में मानो लंका-राज्य दिया
कर दिया राम ने राजतिलक भी उस दिन ।[1]

अपने शरणार्थी विभीषण को राम ने लंकाधिपति बनाकर राजतिलक भी किया । शरण लेनेवाले को पहचानकर उसकी रक्षा करनेवाले राम का शरणागत वत्सल रूप यहाँ स्पष्ट हो गया है ।

रामायण में राम विभीषण से रावण की शक्ति के बारे में पूछते हैं तो "अरूणरामायण" में समुद्र पार करने के लिए उपाय माँगते हैं । रामायण में हनुमान और सुग्रीव विभीषण से समुद्र पार करने के लिए उपाय माँगते हैं -

अब्रवीच्च हनुमांश्च सुग्रीवश्च विभीषणम् ।
कथं सागरमक्षोभ्यं तराम वरूणालयम् ।
सैन्यैः परिवृताः सर्वे वानराणां महौजसाम् ।[2]

अर्थात् हनुमान और सुग्रीव ने विभीषण से पूछा - राक्षसराज ! हम सब लोग इस अक्षोभ्य समुद्र को महाबली वानरों की सेनाओं के साथ किसप्रकार पार कर सकेंगे ?

"अरूणरामायण" में राम विभीषण से यह प्रश्न पूछते हैं -

अम्बुधि की ओर अचानक प्रभु का गया ध्यान
बोले वे - कैसे होगा सागर-समाधान
कैसे हम सेना-सहित करेंगे इस पार
उठ रहा सभी के मन में यह चिन्तान्धकार ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 488
2. वाल्मीकिरामायण - युद्धकाण्डमेकोनविंश सर्गः - श्लोक 28

राम सेना सहित समुद्र पार करने के लिए विभीषण से उपाय माँगते हैं । इसके उत्तर के रूप में रामायण में विभीषण ने राम को समुद्र से शरण लेने केलिए कहा । लेकिन "अरूणरामायण" में विभीषण पहले शिव को प्रसन्न करके रावण की वैज्ञानिक शक्ति को मिटाने का आग्रह प्रकट करते हैं ।

रामायण में समुद्र के तट पर कुश बिछाकर तीन दिनों तक धरना देने पर भी समुद्र के दर्शन नहीं होने के कारण राम कुपित होकर बाण मारकर विक्षुब्ध कर देते हैं । लेकिन "अरूणरामायण" में रावण सूक्ष्म रूप से समुद्र तटपर प्रकट होते हैं । इस समय राम शिव की आराधना समाप्त करते हैं और इच्छित वर की माँग करने के लिए तैयार होते हैं । रावण वानर सेना को देखकर क्रुद्ध हो गए और सूक्ष्म रूप में समुद्र में घुस गए । राम की शक्ति से ज्ञात होकर रावण समुद्र से बाहर निकले । वे विभीषण को देशद्रोही मानते हैं क्योंकि राम को विभीषण ने सागर-रहस्य बता दिया । सागर में पुल न बाँधने के लिए रावण समुद्र पर तांत्रिक प्रहार करने लगा । समुद्र की गर्जना सुनकर सब भयभीत हो गए । यह देखकर विभीषण ने समझ लिया है कि यह भी रावण की लीला है । वह तुरंत राम से सागर को नियंत्रण में रखने के लिए कहने लगा । रावण युद्ध के लिए सतर्क है । विभीषण के आगमन से वे क्रुद्ध हैं ।

रामायण में राम के प्रथम बाण से सागर की स्थिति परिवर्तित होने लगी । द्वितीय बाण चलाने के लिए निकलनेवाले राम को लक्ष्मण ने रोक दिया और कहा -

एतावदिनापि व्युदधेस्तवाद्य
सम्पत्स्यते वीरतमस्य कार्यम् ।

भवद्विधा क्रोधवशं न यान्ति
दीर्घं भवान् पश्यतु साधुवृत्तम् ।[1]

अर्थात् भैया ! आप वीर शिरोमणि हैं । इस समुद्र को नष्ट किये बिना भी आप का कार्य संपन्न हो जाएगा । आप जैसे महापुरुष क्रोध के अधीन नहीं होते हैं । अब आप सुदीर्घकाल तक उपयोग में लाए जानेवाले किसी अच्छे उपाय पर दृष्टि डालें - कोई दूसरी उत्तम युक्ति सोचें ।

लेकिन "अरूपरामायण" में इसका वर्णन इसप्रकार है । शिव से अनुग्रह पाने के बाद राम सागर को शांत करने के लिए तैयार हो जाते हैं । पहले शांति-बाण भेजते हैं तो सागर शांत नहीं हुआ । इसलिए लक्ष्मण कहते हैं कि सागर के मन को रावण ने बाँध लिया । इसलिए सिन्धु शोक को निकालने के लिए उचित बाण छोडो । इसलिए राम ने आग्नेय बाण चलाया । इससे सागर ने प्रत्यक्ष होकर पुल बाँधने की अनुमति दी ।

विधास्ये येन गन्तासि विषहिष्येऽप्यहं तथा
न ग्राहा विधमिष्यन्ति यावत्सेना तरिष्यति ।
हरीणां तरणे राम करिष्यामि यथा स्थलम् ।।[2]

अर्थात् श्रीराम ! मैं ऐसा उपाय बताऊँगा, जिससे आप मेरे पास चले जायेंगे, ग्राह वानरों को कष्ट नहीं देंगे, सारी सेना पर उतर जाएगी और मुझे भी खेद नहीं होगा । मैं आसानी से सब कुछ सह लूँगा । वानरों के पार जाने के लिए जिस प्रकार पुल बन जाय, वैसा प्रयत्न मैं करूँगा ।

---

1. वाल्मीकिरामायण - युद्धकाण्ड-एकविंश सर्ग:- श्लोक 34
2. वही- द्वाविंश: सर्ग: - श्लोक - 29

"अरूणरामायण" में इस प्रसंग का चित्रण निम्नलिखित रूप में है-

बोली - हे पुरूषोत्तम ! शिव - इच्छा पूर्ण करें
कहिए वानर से, सागर पर पाषाण धरे
इस तट से उस तट तक अब जल जम जाएगा
नल-नील-सहित सागर पर सेतु बनाएगा
यद्यपि रावण ने मुझ पर आज प्रहार किया
पर स्वयं शक्ति शंकर ने मुझको बचा लिया
लगता है कि आप में-उनमें कोई भेद नहीं
आप ही बताएँ, कितनी मेरी बात सही ।[1]

वरूण ने राम से पुल बाँधने के लिए कहा । जब रावण की शक्ति नष्ट हो जाय तब पुल बाँधने के लिए सागर ने अनुमति भी दी ।

पुल बाँधने का प्रयास है और पुल बाँध जाते हैं । "संशय की एक रात" में रामायण से भिन्न पुल निर्माण के बाद राम के मन में एक संशय उत्पन्न होते हैं कि यह युद्ध अनिवार्य है या नहीं । केवल एक सीता के लिए इतने लोगों की हत्या करने से क्या फायदा है ? राम संशयग्रस्त होकर उचित निर्णय लेने में तड़पते हैं । इसी समय दो रूप पुल के सामने दिखाई पड़ते हैं । वे दशरथ और जटायु की प्रेतात्मा थे । दशरथ राम को कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं और यह युद्ध व्यक्ति के स्वार्थ की पूर्ति केलिए लेकिन असत्य और अनाचार के खिलाफ सत्य और सदाचार का युद्ध करते हैं । राम निर्णय लेने के लिए युद्ध परिषद की बैठक बुलाते हैं । राम अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए युद्ध करना अनावश्यक बताते हैं । लेकिन हनुमान उसका खंडन करते

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 49।

हुए कहता है कि सीता के रूप में रावण द्वारा अपहृत साधारण जन की स्वतंत्रता की मुक्ति के लिए है । अंत में इससे सहमत होकर राम युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं । इसप्रकार कवि ने इस काव्य के द्वारा सीता रूपी साधारण जन की अपहृत स्वतंत्रता की मुक्ति के लिए रावण वध अवश्य माना है । "अरूणरामायण" में रामायण से भिन्न पुल बाँधने के बाद विभीषण की चिन्ता का वर्णन, राम से सन्देह और समाधान का वर्णन इसप्रकार चित्रित है । विभीषण के मन में पुल बाँधने के बाद उस रात में चिन्ताएँ उत्पन्न होती हैं । मन में परिवर्तन होने लगे । विभीषण इसप्रकार सोचते हैं कि यह भी रावण की जादू है क्योंकि इतनी जल्दी से मन:परिवर्तन होने का कारण क्या है ? इस युद्ध के बाद कोई नहीं बच सकता । यदि कोई है तो सिर्फ स्त्रियाँ और बच्चे ही हैं । प्रजा नहीं तो शासन किसके लिए । उनपर कैसे शासन करना पडता है । देशद्रोही होकर, भाई के घातक होकर मिलनेवाले राज्य में शासन करने से क्या मिलेगा ? संतुष्टि और शांति ? राम की सेना अतुलनीय है और रावण भयरहित है । लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं है कि राम-बाण से रावण का बचना असंभव है । विभीषण भाई के विरोध में लडना नहीं चाहते हैं । इसलिए विभीषण वापस जाना चाहते हैं । राम से अनुमति के लिए प्रार्थना करते हैं । यह देखकर लक्ष्मण सुग्रीव, अंगद आदि क्रुद्ध हो जाते हैं । लेकिन राम विभीषण से सहमत है कि तुम वापस जाओ और रावण से सीता को वापस देने के लिए कहें । मैं तीन दिन इसकेलिए तुम्हें दूँगा । उस समय तक पुल का निर्माण न होगा । लेकिन सीता को वापस न दें तो पुल का निर्माण पुन: होगा । वनवास की अवधि समाप्त हो रही है । मुझे अपने भाईयों से और माताओं से मिलना है । सीता के बिना मैं कैसे अयोध्या लौटूँ ? मैं विश्वास करता हूँ कि तुम भी मेरे साथ इस युद्ध में भागी होंगे । लंका आलोकित होगी । रावण ने अहंकार के कारण सीतापहरण किया । इसलिए उसके अहंकार को मिटा दो । लेकिन तुम युद्ध से हिचकते हो और ज्ञानी होकर भी तुम मोह में पड गए हो । एक दिन रावण अवश्य मरेंगे । हमारा युद्ध

रावण से नहीं उसके रावणत्व से है । व्यक्ति से नहीं उसकी भ्रमता से है । तुम रावण के अत्याचारों से परिचित हो । मैं रावण के उन कुकर्मों को मिटाने के लिए काल की प्रेरणा से यहाँ आया हूँ सीता केवल निमित्त मात्र है । युद्ध में कौन जियेंगे, कौन मरेंगे इसके बारे में सोचो मत । सत्-धर्म के लिए धर्म रण करना ही पडेगा । इसलिए युद्ध करो । राम की दार्शनिक सलाह से विभीषण के मन में सारे सन्देह मिट जाते है और राम की सेना के साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो जाते हैं ।

"रामायण" में युद्ध के पहले से ही राम का मायारचित कटा शीश दिखाकर सीता को मोह में डालने का प्रयत्न करते हैं लेकिन "अरूणरामायण" में इसका वर्णन युद्धारंभ के बाद में है और शीश स्वयं रावण को अपना शीश प्रतीत होते हैं । इसमें वानर सेना समुद्रपार करने का समाचार सुनकर रावण चिंतित होते है और मंदोदरी उसे समझाने का कठिन परिश्रम करती है । रावण पुत्र प्रहस्त भी माता से सहमत होकर पिता को समझाने का प्रयास करते हैं । अचानक रावण का मुकुट सिर से गिरा और रावण पत्नी का कर्णफूल भू पर बिखरा । रामायण के समान इसमें भी अंगद-रावण संवाद है लेकिन रामायण में विशद वर्णन नहीं है । "अरूण रामायण" में रावण ने अंगद से सीता के संबंध में कहा -

उकसाया सीता-हरण हेतु मेरे मन ने
सीता जैसी थी, वैसी ही अब भी पावन
कर सका नहीं है स्पर्श उसे अब तक रावण
मैं उसकी इच्छा के विरुद्ध जा सका नहीं
लंका में लाकर भी उसको पा सका नहीं ।[1]

यहाँ सीता के संबंध में रावण स्पष्ट बताते है कि उसकी इच्छा के विरुद्ध लंका में ले जाने पर भी कुछ नहीं कर सका ।

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 515-516

"रामायण" में अंगद के पराक्रम का वर्णन है । "अरूपरामायण" में भी है । फिर भी "अरूपरामायण" में मंदोदरी रावण को समझाने का प्रयास करती है । रामायण में इन्द्रजित् के बाण के द्वारा राम और लक्ष्मण का मूर्छित होना, वानरों का शोक, इन्द्रजित् का संतोष और रावण का अभिनंदन, वानरों के द्वारा राम-लक्ष्मण की रक्षा, रावण की आज्ञा से सीता को राक्षसियों ने पुष्पकविमान में लाकर राम-लक्ष्मण को दिखाना, सीता का दुख, त्रिजटा की सांत्वना, श्रीराम का सचेत होना, लक्ष्मण के लिए प्राण त्याग करने की चिन्ता, वानरों को वापस जाने के लिए आदेश देना, गरूड का आगमन, और लक्ष्मण का सचेत होने का वर्णन है । मेघनाथ द्वारा भेजी गयी शक्ति से लक्ष्मण के मूर्छित होने का वर्णन "अरूपरामायण" में भी चित्रित है ।

रामायण में पहले राम-लक्ष्मण नागपाश से अचेत होते हैं । बाद में शक्ति रावण भेजते हैं और लक्ष्मण नीचे गिर जाते हैं । राम स्वयं सचेत होते हैं । इन्द्रजित् ब्रह्मास्त्र से सेनासहित राम को मूर्छित बनाते है । हनुमान ने संजीवनी बूटी लेकर सबको जिन्दा बना दिया । इस प्रसंग का वर्णन "अशोकवन" काव्य में भी चित्रित है । संजीवनी बूटी लेकर चलनेवाले हनुमान को शत्रु मानकर भरत नीचे गिरते है और उससे राम की करूण कहानी समझ लेते हैं । इसका समान वर्णन साकेत, साकेत-संत, नंदीग्राम काव्य में भी है । यह सुनकर भरत सैन्य राम की रक्षा के लिए जाना चाहते हैं और कैकेयी तथा ऊर्मिला भी उसके साथ चलना चाहती हैं । लेकिन वसिष्ठ द्वारा राम की अलौकिकता के बारे में ज्ञात होकर वे पीछे हट जाती हैं । वसिष्ठ अपनी योग शक्ति द्वारा राम-रावण युद्ध दिखाते हैं । इसका समान वर्णन "साकेत" और "साकेत-संत" में है । "नंदीग्राम" काव्य में हनुमान भरत की भ्रातृ भावना से चकित हो जाते है और माताओं से राम के संबंध में कुछ न कहने का आदेश भी देते हैं ।

"अरूणरामायण" में बाद में मेघनाद ने नागपाश से सबको बाँध लिया । संजीवनी बूटी से सब सचेत हो गए ।

रामायण में मेघनाद के द्वारा मायामयी सीता का वध, राम का दुःख और लक्ष्मण द्वारा आश्वास देने का वर्णन है । विभीषण भी इन्द्रजित् की माया के संबंध में राम से कहते हैं । मेघनाद का निकुंभिला में जाना, सेनासहित लक्ष्मण निकुंभिला में जाकर उसकी तपस्या को भंग करने का वर्णन है । लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का वध होता है । लेकिन रावण का वध आसान नहीं है । रामायण में रावण-विजय के लिए अगस्त्य मुनि आदित्य हृदय नामक सूर्य देव की स्तुति करने को कहते हैं जिससे शत्रु संहार संपन्न हो जाता है और राम द्वारा उसके पालन का वर्णन है । लेकिन "अरूणरामायण" में निराला की "शक्तिपूजा" के समान वर्णन है । लेकिन इसमें रावण की शक्ति की पूजा करते हैं । पूजा की अंतिम वेला में एक कमल का तिरोधान और राम की चिंता सभी राम की शक्तिपूजा के समान अरूणरामायण में भी है । अपने राजीवलोचन से पूजा की समाप्ति केलिए तैयार होनेवाले राम के पास दुर्गा प्रत्यक्ष हो जाती है लेकिन दुर्गा के चेहरे में राम सीता का मुख देखते हैं । एक बाण देकर दुर्गा ने राम से इसप्रकार कहा "आज नहीं कल नहीं परसों लडना है । उस दिन लंकेश्वर का मरना निश्चित है । उसी समय रावण भी दुर्गा के मुख में सीता का मुख देखते हैं ।

श्रीराम द्वारा रावण का वध होता है । रामायण में रावण वध से विभीषण दुखी है तो "अरूणरामायण" में युद्ध की सफलता में हर्ष का अनुभव करते हैं । इसमें रामायण से भिन्न रावण लक्ष्मण से अपनी करनी को बुरा मानते हैं । राम और रामराज्य का बखान करते हैं ।

"अशोकवन" काव्य में रावण विजय के बाद सीता को राम के पास भेजने के लिए साज-सज्जा करने के लिए इन्द्रपत्नी आती है, लेकिन सीता उसी रूप में राम के पास जाना चाहती है । सभी लोगों की हठ से सीता साज-श्रृंगार करने के लिए तैयार हो जाती है । सीता के पास आने के लिए हिचकनेवाली असुर नारियों को भी सीता दया-भाव दिखाती है और सबको पास बुलाती है ।

सीता के चरित्र पर रामायण में राम सन्देह करके अन्यत्र जाने के लिए कहते है और अग्निपरीक्षा करते हैं । लेकिन "अशोकवन", "विदेह", "सीता-समाधि" आदि में सीता अग्निपरीक्षा करने के लिए राम से कहती है । "अरूणरामायण" में राम सीता चरित्र पर बिलकुल विश्वास प्रकट करते हैं । लेकिन लोगों के सामने सीता चरित्र की पवित्रता दिखाने के लिए इसप्रकार कहते हैं । रामायण में सीता राम का उपालंभ भी देती हैं ।

विभीषण के राज्याभिषेक के समय रामायण में राम राजसभा में उपस्थित नहीं है । लेकिन "ऊर्मिला" काव्य में राम उपस्थित है और जीवन दर्शन का प्रतिपादन भी चित्रित है । उसीप्रकार वापस जाते वक्त पुष्पकयान में लक्ष्मण-सीता वार्तालाप और हास-परिहास भी चित्रित है ।

रामायण के समान नंदीग्राम में वापस आते वक्त भरद्वाज आश्रम में रामादि जाते हैं लेकिन भरद्वाज की इच्छा से रावण वध का वृत्तात सुनाते हैं । रामायण में राम अपने आगमन की सूचना निषादराजगुह और भरत को देने के लिए हनुमान को भेजते हैं । "रामराज्य", "साकेत-संत", "नंदीग्राम", "अरूणरामायण" आदि में भी भरत के पास हनुमान को ही राम भेजते हैं । लेकिन "नंदीग्राम" में यह जानने के लिए चौदहवर्ष की लंबी वेला में

शासन करने से भरत के मन में कोई राज्यलोलुपता उत्पन्न हो गई हो, यह जानने के लिए हनुमान को नंदीग्राम में भेजते हैं ।

रामायण से भिन्न "ऊर्मिला", "साकेत" आदि काव्यों में ऊर्मिला, लक्ष्मण पुनर्मिलन प्रसंग और "साकेत-संत" में भरत-माण्डवी पुनर्मिलन प्रसंग चित्रित है ।

<u>उत्तरकाण्ड के प्रसंगों से साम्य-वैषम्य</u>

रामायण के युद्धकाण्ड में रामादि का वन से वापस आना और राज्याभिषेक वर्णन आदि है लेकिन "अरूणरामायण" के उत्तरकाण्ड में इस प्रसंग का वर्णन है । भरत द्वारा सुरक्षित राज्यव्यवस्था का वर्णन रामायण में नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों, जैसे "रामराज्य", "जानकी जीवन", "अरूणरामायण", "सीता-समाधि" आदि [illegible] में इसका वर्णन उपलब्ध हैं । उपवन में सीता-राम विहार रामायण में है और आधुनिक रामकाव्य जैसे "वैदेहीवनवास" में भी इसप्रकार का वर्णन उपलब्ध है । रामायण में जब राम सीता से कोई इच्छा पूर्ति का आग्रह जानना चाहते हैं तब सीता तपोवन देखने की इच्छा प्रकट करती हैं और राम स्वीकार भी करते हैं । "सीता-समाधि" में सीता ऊर्मिला द्वारा खींचे गये चित्र में अपने वनवास का चित्र देखकर वन जाने की इच्छा प्रकट करती है और राम उसकी इच्छा पूर्ति के लिए तैयार होते हैं । "जानकी-जीवन" में भी सीता वनवास की इच्छा प्रकट करती है ।

रामायण में राम के पूछने से भद्र सीतापवाद के कारण बताते है । "वैदेहीवनवास" में गुप्तचर दुर्मुख राम से लोकापवाद के बारे में कहते हैं । रामायण में राम भाईयों से इसके बारे में कहते है लेकिन स्वयं यह निर्णय लेते हैं कि सीता को वन में छोड दीजिए ।

आधुनिक रामकाव्य जैसे "वैदेहीवनवास" में यह प्रसंग कुछ भिन्न है । लोकापवाद के संबंध में निर्णय लेने के लिए भाईयों से सलाह लेते हैं और वसिष्ठ से भी चर्चा करते हैं । वसिष्ठ की राय से वनवास के लिए भेजते हैं और सीता को इसके संबंध में जानकारी भी देते हैं । "प्रवादपर्व" में राम भाईयों से चर्चा करते हैं और सीता से इसके संबंध में बातें करते हैं और सीता स्वयं वन जाने के लिए तैयार हो जाती है ।

"जानकी-जीवन" में सीता की विदाई की वेला में राजपरिवार के लोग ऋषि श्रृंग के यज्ञ में भाग लेने के लिए गए हैं ।

सभी काव्यों में लक्ष्मण ही सीता को वनवास केलिए ले जाते हैं और सीता को राम की आज्ञा भी सुनाते हैं ।

"जानकी-जीवन" में सीता निस्तब्ध रहनेवाले लक्ष्मण और सुमंत्र से इसका कारण पूछती हैं और जवाब सुनकर मूर्छित हो जाती है ।

रामायण से भिन्न आधुनिक रामकाव्यों में वनवास रूपी रामाज्ञा सुनकर सीता आत्महत्या के लिए तैयार हो जाती है । "जानकी-जीवन" "सीता-समाधि" "भूमिजा" जैसे काव्यों में इसप्रकार का वर्णन उपलब्ध है । उसी समय वाल्मीकि आकर उसे जीने के लिए प्रेरणा देती है । "सीता समाधि" में सीता लक्ष्मण को राम से सीता की ओर से होनेवाली गलतियों के लिए क्षमा भी माँगती है । लेकिन "वैदेहीवनवास" में वसिष्ठ की चिट्टी के कारण वाल्मीकि लक्ष्मण सहित सीता का स्वागत करते हैं । लेकिन रामायण में लक्ष्मण के जाने के बाद करुण क्रंदन करनेवाली जानकी को मुनिकुमारों से समाचार पाकर वाल्मीकि आश्रम में पहुँचाते हैं । सीमा परित्याग के कारण पश्चाताप करने वाले धोबी-धोबिन प्रसंग और सीता परित्याग से विलाप करनेवाले लोगों को ऊर्मिला सांत्वना भी देती है । अरुंधति भी विलाप करती है ।

"भूमिजा" में सीता राम के वंशज की रक्षा के लिए जीने तैयार होती है । सीता ने वाल्मीकि आश्रम में दो बच्चों को जन्म दिया । रामायण के समान "वैदेहीवनवास" में भी शत्रुघ्न इसके संबंध में जानकारी देते हैं । रामायण में विश्राम करने के लिए रुकनेवाले शत्रुघ्न वृद्ध-स्त्रियों के वार्तालाप से सीता के नाम और गोत्र के उच्चारण से ज्ञात होते हैं । "वैदेहीवनवास" में लवणासुर वध के लिए जानेवाले शत्रुघ्न सीता से जिस दिन मिलते है उस दिन लव-कुश का जन्म होता है ।

'रामायण' में इसके बाद सीता या लव-कुश के संबंध में जानकारी उपलब्ध नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में खेती करना, बच्चों को पढाना, बुनना, कहानी सुनाना जैसी समाज सुधारात्मक प्रवृत्तियों में लगी नारी के रूप में सीता चित्रित हैं । पाठशाला से पिता के बारे में सन्देह लेकर आनेवाले बच्चों के रूप में लव-कुश का चित्रण भी है । "भूमिजा" और "सीता समाधि" में भी इसका चित्रण है । शंबूकवध प्रसंग सीता भूमि में समा जाने के बाद होता है

शंबूक वध के संबंध में भी रामायण और आधुनिक रामकाव्य में भिन्नता है । रामायण में ब्राह्मण पुत्र की अकाल मृत्यु का कारण नारद राम से बताते हैं तो "शंबूक" काव्य में वसिष्ठ नारद से मिलने के बाद वसिष्ठ ही राम से बताते हैं । रामायण में शूद्र शंबूक तपस्या करने के कारण राम उसकी हत्या करते है और शंबूक में भी । लेकिन जानकी जीवन में राम उसको ठीक तरह से समझाकर तपस्या से निवृत्त करते है और उसकी हत्या भी नहीं करते हैं ।

राम महर्षियों की सलाह से अश्वमेध यज्ञ करने के लिए तैयार हो जाते हैं और वाल्मीकि लव-कुश को लेकर यज्ञ में भाग लेने के लिए आते हैं ।

राम की सभा में रामायण गायन के लिए आदेश भी देते हैं । रामायणगायन से राम को ज्ञात होता है कि ये दोनों बच्चे सीता के पुत्र है । इसलिए वाल्मीकि ने राम का निर्णय जो जनसमुदाय के बीच अपनी शुद्धता प्रमाण करना है, उसको स्वीकार किया । सीता द्वारा शपथ करते समय ही भूतल से सिंहासनारूढ पृथ्वीदेवी प्रकट हुई और उसने सीता को अपनी गोद में बिठवाकर रसातल में प्रवेश किया ।

आधुनिक रामकाव्य में लव-कुश का श्रीराम जी से मिलन प्रसंग विभिन्न रूपों में चित्रित है । "भूमिजा" में एकशासन स्थापित करने के लिए आनेवाले राम वाल्मीकि आश्रम की समृद्धि देखकर चकित हो गए हैं और वहाँ बाण चलाने के लिए तैयार हो जाते हैं । इससे क्रुद्ध होकर लव-कुश राम से बातें करते है और वाल्मीकि द्वारा सीता और लव-कुश के संबंध में जानकारी प्राप्त होने से सीता से मिलने के लिए ललायित हो जाते हैं । लेकिन पृथ्वी की पुत्री सीता करुण पुकार करती है । सीता की आँखों से आँसू पृथ्वी पर गिरता है तो पृथ्वी फूट गयी और सीता भूमि में समा गयी । राम सीता सीता रटते रटते कण कण में रम गए ।

लेकिन "सीता समाधि" में यज्ञ के घोडे वाल्मीकि आश्रम में आते हैं और उसको पकडने के कारण राम की सेना और लव-कुश के बीच संवाद होता है । लेकिन उसके सामने पराजित होकर राम की सेना वापस जाती है । सीता परित्याग से उत्पन्न अशांति को मिटाने के लिए राम यज्ञ करते है और उसमें भाग लेने के लिए वाल्मीकि और लव-कुश पहुँचते हैं । लव-कुश वहाँ रामायणगायन करते हैं । इससे सब लोग सीता की पवित्रता के संबंध में संतुष्ट हो गए और सब लोग सीता को ले जाने के लिए आते हैं । लेकिन सीता अपनी पवित्रता सभी को स्पष्ट दिखाकर पृथ्वी में समा गई हैं ।

"अग्निलीक" काव्य में सीता अपने नारीत्व की अवहेलना से उदासीन होकर द्वितीय अग्निपरीक्षा के लिए तैयार न होकर एक खड्ड में कूदकर आत्महत्या करती है ।

"जानकी-जीवन" काव्य में भी लव-कुश के साथ लक्ष्मण, शत्रुघ्न आदि पराजित होने पर राम स्वयं युद्ध के लिए आते हैं । लेकिन बच्चों से युद्ध करने के लिए तैयार न होकर रथ में सो जाते हैं । बच्चे राम के कुंडलादि लेकर आते हैं । तब सीता बच्चों को पितृघातक कहते हैं । सीता वाल्मीकि के साथ युद्ध-भूमि में पहुँचते समय ही सब होश में आते हैं । राम को वाल्मीकि सारी बातें समझाते है और राम, सीता और अपने बच्चों को लेकर अयोध्या वापस आते हैं और यज्ञ पूर्ण करते हैं ।

राम, लक्ष्मण आदि का सुख शांति पूर्ण शेष जीवन और अंतिम प्रसंग आधुनिक रामकाव्य में नहीं है । लेकिन रामायण में इसका विशद वर्णन है ।

"विदेह" काव्य में विदेह सुनयना के जीवन का वर्णन, राम-रावण युद्ध के कारण जनक की चिंता, सीता द्वारा भूमि में समा जाने के कारण उत्पन्न पीडा से सुनयना का देहांत, दक्षिण की ओर जनक की सद्भावना यात्रा,

उर्वशी का जनक को कामपीडित करने के लिए आगमन और पराजय का वर्णन है। अंत में जनक की मृत्यु का प्रसंग भी है ।

"जानकी-जीवन" में बिठूर की मेले में भाग लेने के लिए जानेवाले राजपरिवार के लोगों का वाल्मीकि आश्रम में पहुँचना और सीता के बारे में पूछना भी इस काव्य की मौलिकता है ।

निष्कर्ष

इसप्रकार देखें तो रामायण के समान प्रसंगों से बढकर रामायण से भिन्न प्रसंगों की प्रधानता आधुनिक रामकाव्य में हम देख सकते हैं । कवि की निजी मौलिकता के कारण ये प्रसंग अत्यंत प्रभावशाली लगते हैं । लेकिन रामायण के समान प्रसंगों का महत्व निश्चय ही है । इसको भी युगानुरूप महत्व दिया गया है । केवल प्रसंगों का ही नहीं पात्रों का भी युगानुरूप चित्रण आधुनिक रामकाव्यों में किया गया है । उपेक्षित पात्रों का नायक-नायिका के रूप में चित्रण करना और कुछ प्रमुख कथा प्रसंगों को आधार बनाकर स्वतंत्र काव्य लिखने की प्रवृत्ति भी आधुनिक युग में है । रामायण के अत्यंत महत्वपूर्ण पात्रों को गौण स्थान प्रदान करना और गौण पात्रों को प्रमुख रूप में चित्रित करना भी आधुनिक रामकाव्यों की विशेषता है । इसके अलावा नवीन पात्रों और नवीन कथा प्रसंगों की सृष्टि भी द्रष्टव्य है ।

चतुर्थ अध्याय

आधुनिक रामकाव्य में चरित्र - चित्रण

रामायण आदिकाल से ही साहित्य का मूल स्रोत माना जाता है । राम अपने चरित्र के द्वारा भारत के ही नहीं विश्व भर की जनता को आकृष्ट करते हैं । इसलिए साहित्यकारों ने रामायण और रामचरित्र को आधार बनाकर काव्य सृजन किया है । आधुनिक काल में आकर रामायण के अनेक प्रसंगों और पात्रों को नये ढंग से चित्रित करने की प्रवृत्ति अधिक होने लगी । प्राचीन भारतीय संस्कृति की महिमा को प्रकट करती हुई आधुनिक भारत की विभिन्न परिस्थितियों को स्पष्ट करने के लिए कवियों ने रामायण को आधार बनाया । रामायण में उपेक्षित लेकिन महत्वपूर्ण पात्रों की ओर संकेत करके उन्हें युगानुरूप बनाने के लिए कवियों ने सफल चेष्टा की । इसके कारण रामायण में उपेक्षित पात्र जैसे कैकेयी, ऊर्मिला, माण्डवी, लक्ष्मण, भरत, जनक, रावण, शंबूक आदि पात्रों को नये ढंग से चित्रित करने लगे । इसमें प्राचीन और नवीन युगीन परिस्थितियों का मणिकांचन संयोग हम देख सकते हैं । हम जानते हैं कि रामायण का हरेक पात्र महत्वपूर्ण है । इसलिए हरेक पात्र को युगानुरूप परिवर्तित करके उनकी समस्याओं को आधुनिक समस्याओं के साथ जोड़कर चित्रित करने लगे । इससे आधुनिक रामकाव्यों में चरित्र-चित्रण का महत्व विदित होता है । पहले हम पुरुष पात्रों के चरित्र-चित्रण का विश्लेषण करेंगे ।

प्रमुख पुरुष पात्र - राम

रामायण का सबसे महत्वपूर्ण पात्र राम ही है । इसलिए सबसे पहले राम के चरित्र-चित्रण का विवेचन करना सर्वथा उचित है ।

राम के चरित्र का सबसे महत्वपूर्ण रूप उनका आदर्श पुत्र रूप है । रामायण में राम के आदर्श पुत्र रूप की प्रधानता है । इस आदर्श पुत्र धर्म पालन के कारण संपूर्ण वाल्मीकि रामायण की कथा में गति मिल गई । यदि राम आदर्श पुत्र धर्म पालन करने में तैयार न हो तो रामायण की कथा की गति कैसी हो जायेगी ? इसलिए रामायण की प्रमुख घटना के रूप में राम के आदर्श

पुत्र धर्म पालन को हम देख सकते हैं । रामायण में कैकेयी की हठ से राम को वनवास की खबर सुनाने में अशक्त दशरथ की दयनीय स्थिति देखकर राम कैकेयी से बताता है -

अहो धिङ् नार्हसे देविवक्तुं मामीदृशं वचः ।
अहं हि वचनाद् राज्ञाः पतेयमपि पावके ।।
भक्षेयं विषं तीक्ष्णं पतेयमपि चार्णवे ।
नियुक्तो गुरूणा पित्रा नृपेण च हितेन च ।।
तद् ब्रूहि वचनं देवि राज्ञो यदभिकांक्षितम् ।
करिष्ये प्रतिजाने च रामो द्विर्नाभिभाषते ।।[1]

अर्थात् अहो ! धिक्कार हैं, देवि ! तुम्हें मेरे प्रति ऐसी बात मुँह से नहीं निकालनी चाहिए । मैं महाराज के कहने से आग में कूद सकता हूँ और समुद्र में भी गिर सकता हूँ । महाराज मेरे गुरू-पिता और हितैषी है । मैं उनकी आज्ञा पाकर क्या नहीं कर सकता ? इसलिए देवी ! राजा को जो अभीष्ट है वह बात मुझे बताओ ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, उसे पूर्ण करूँगा । राम दो तरह की बात नहीं करता है ।

राम-वनगमन की खबर सुनकर व्यथित कौसल्या को समझाने केलिए राम, कण्डुमुनि, सागर के पुत्र और परशुराम के पुत्र धर्म पालन की महिमा बताते हैं । राम के आदर्श पुत्र का रूप आधुनिक रामकाव्यों में भी हम देख सकते हैं । "साकेत", "ऊर्मिला", "साकेत-संत", "रामराज्य", "चित्रकूट", "नंदीग्राम" "कैकेयी", "अरूणरामायण" और "सीता-समाधि" आदि। "कैकेयी" में कैकेयी की वरयाचना सुनकर राम कहता है -

दुखी न होवे पिता ज़रा भी,
तत्पर मैं, तुम हो प्राज्ञा ।
सिर आँखों पर तव आकांक्षा,
अतकही पिता की आज्ञा ।[2]

पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए राम सदा तैयार है । इसप्रकार राम चरित्र का वर्णन "अरूणरामायण" में भी है ।

---

1. वाल्मीकिरामायण - अयोध्याकाण्ड अष्टादश सर्ग - श्लोक 28 29 30

राम के आदर्श भाई रूप वाल्मीकि रामायण और आधुनिक रामकाव्यों में है । ज्येष्ठ पुत्र होने पर भी भरत के लिए राजा पद छोडने के लिए राम तनिक भी नहीं हिचकता । राम का आदर्श रूप, वन-गमन, चित्रकूट-मिलन, बालिवध, आदि संदर्भों में स्पष्ट हो जाता है । बालिवध के औचित्य को स्पष्ट करते वक्त राम का आदर्श भाई रूप अधिक प्रभावशाली लगता है । अपने छोटे भाई की पत्नी को बेटी के समान न मानकर, अपनी पत्नी बनाकर, स्वयं मृत्यु दण्ड को स्वीकार लिया है । इसलिए बालि की हत्या कभी भी अनुचित नहीं है । अपितु उचित ही है । इसप्रकार चित्रकूट में रहते वक्त भरत के आगमन पर संदिहग्रस्त लक्ष्मण को राम ठीक तरह समझाते है क्योंकि राम लक्ष्मण से बढकर भरत की मनोगति को अच्छी तरह जानता है । शक्ति पडनेसे अचेत रहनेवाले लक्ष्मण की दारूण स्थिति देखकर राम जीवन त्याग करने के लिए भी तैयार हो जाता है । राम के आदर्श भाई रूप "साकेत", "ऊर्मिला", "साकेत-संत" "रामराज्य", "नंदीग्राम", "कैकेयी", "अरूणरामायण", "सीता-समाधि" जैसे काव्यों में भी हम देख सकते हैं । रामायण और आधुनिक रामकाव्यों में राम का यह रूप एकदम समान चित्रित है ।

राम के आदर्श पति का रूप रामायण के समान आधुनिक रामकाव्यों में पाया जाता है । सीता राम के साथ वन जाने के लिए हठ करती है और आदर्श पत्नी अपने पति के साथ रहना उचित मानती है । इसप्रकार आदर्श पत्नी के कर्तव्यपालन से प्रेरित होकर राम सीता को साथ ले जाने केलिए तैयार हो जाते हैं । वन में होनेवाली विपत्तियों से राम अपने प्राण को खतरे में डालकर सीता की रक्षा करता है । सुरसुन्दरी के समान प्रभा बिखरनेवाली शूर्पणखा से एकपत्नीव्रत का पालक कहकर मुँह मोड लेते हैं । स्वर्ण मृग की शोभा से आकर्षित राम उस माया मृग की असलियत को जानकर भी पकडने के लिए तैयार हो जाते हैं । सीता को अकेली छोडकर राम की खोज में आनेवाले लक्ष्मण को देखकर कुटिया में सीता की खतरनाक स्थिति सोचकर राम किंकर्तव्यमूढ़ हो जाते हैं । सीता रहित कुटी देखकर राम अत्यंत शोकातुर हो जाते हैं । सीता की विरह पीडा में राम पागल जैसे लगते है निर्जीव पेड-पौधों से भी

राम सीता के बारे में पूछते हैं । अशोकवाटिका में बंधिनी सीता की मुक्ति के लिए राम जिन मुसीबतों का सामना करते हैं उसके बारे में सब खूब जानते हैं । राम का यह आदर्श पति रूप आधुनिक रामकाव्य "पंचवटी", "पंचवटी-प्रसंग", "अरूपरामायण", "सीता-समाधि" जैसे काव्यों में हम देख सकते हैं । रावण के द्वारा सीता हरण के बाद राम की स्थिति का चित्रण वाल्मीकि द्वारा निम्नलिखित रूप में रामायण में चित्रित हैं :-

चूतनीपमहासालान् पनसान् कुरवान् धवान ।
दाडिमानपितान् गत्वा दृष्ट्वा रामो महायशाः
बकुलनाथ पुन्नागांश्चन्दनान् केतकांस्तथाः
पृच्छन् रामो वने भ्रान्त उन्मत्त इवं लक्ष्यते ।।[1]

अर्थात् आम, कदम्ब, विशाल शाल, कटहल, कुरव, धव, और अनार आदि वृक्षों को भी देखकर महायशस्वी श्रीरामचन्द्रजी उनके पास गये और बकुल, पुन्नाग, चन्दन तथा केवडे आदि के वृक्षों से भी पूछते फिरे । उस समय वे वन में पागल की तरह इधर-उधर भटकते दिखायी देते थे ।अरूणरामायण में भी राम के व्याकुल रूप का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली लगता हैं -

वैदेही ! वैदेही ! वैदेही ! छिपी कहाँ ?
लक्ष्मण ! लक्ष्मण ! वह नहीं वहाँ, वह नहीं वहाँ ?
गुणमयी जानकी कहाँ गई - तू कहाँ गई ?
हे ज्योति प्राण की ! कहाँ गई - तू कहाँ गई ?[2]

इसप्रकार हरेक वस्तुओं से राम सीता के बारे में पूछते हैं । "रामायण" में अग्नितुल्य पवित्र सीता का परित्याग राम चरित्र के आदर्श पति की कालिमा मानते हैं । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में इस कालिमा को धोने का सफल प्रयास हम देख सकते हैं । "वैदेहीवनवास" "प्रवाद पर्व" आदि काव्य इसका प्रमाण है । इन काव्यों में राम सीता को लोकापवाद और उसके निर्णय के बारे में बताने के बाद वन छोडते हैं । "प्रवाद पर्व" में यह प्रसंग अत्यंत मनोहर ढंग से चित्रित है । राम और सीता लोकापवाद के संबंध में लंबी बात-चीत

---

1. वाल्मीकि रामायण - आरण्यकाण्डम् षष्टितमः सर्गः - श्लोक 21, 22
2. पोटदार रामावतार अरूण - अरूणरामायण - प. 394

करते हैं और सीता स्वयं वन की ओर जाने के लिए अनुमति माँगती हैं -

आसन्न मातृत्व के
इस संकट की स्थिति में भी
मैं आपकी राज्य-गरिमा
और अपनी चरित्र-मर्यादा केलिए
कोई सी भी परीक्षा दे सकती हूँ
पर प्रजा के विश्वास की
निर्भय अभिव्यक्ति की परीक्षा अनिवार्य है ।[1]

सीता स्वयं राम पक्ष का समर्थन करती है । इससे राम के आदर्श पति रूप में कोई आँच नहीं पडा । इसीप्रकार "भूमिजा" में सीता परित्याग से तडप-तडपकर रहनेवाले राम का रूप चित्रित है ।

राम चरित्र के आदर्श मित्र का रूप अत्यंत महत्वपूर्ण है । उनके मित्रगण में छोटे या बडे, वर्ण भिन्नता आदि नहीं है । इसका स्पष्ट प्रमाण है केवट गुह, वानर सुग्रीव और राक्षस विभीषण । अपने मित्रों की कठिनाइयों को अपनी कठिनाई समझकर उन्हें मिटाने के लिए राम सदा जागरूक है । बालि अपने ही भाई सुग्रीव की पत्नी का अपहरण करते हैं और उसको राज्य से निकाल देते हैं । राम बालि-वध करके अपने मित्र सुग्रीव को उसकी पत्नी व राज्य वापस करते हैं । इसीप्रकार विभीषण राम पक्ष का समर्थन करते हैं तो रावण ने उसको लंका से भगाया । शरणार्थी के रूप में राम के पैरों पर पडनेवाले विभीषण को मित्र रूप में स्वीकार करके लंकाधिपति बनाया । राम के आदर्श मित्र का रूप रामायण में और आधुनिक रामकाव्यों में समान रूप में चित्रित है । वाल्मीकि रामायण में विभीषण को शरण देने का औचित्य राम इसप्रकार स्पष्ट करते हैं -

मित्र भावेन सम्प्राप्तम् न त्यजेयं कथंचन
दोषो यद्यपि तस्य स्यात् सतामेतदगर्हितम् ।[2]

---

1. नरेश मेहता - प्रवाद पर्व - पृ. 81
2. वाल्मीकिरामायण - युद्धकाण्डम् अष्टादशः सर्गः - श्लोक 3

अर्थात् जो मित्र भाव से मेरे पास आ गया हो, उसे मैं किसी तरह त्याग नहीं सकता । संभव है उसमें कुछ दोष भी हो, परंतु दोषी को आश्रय देना भी सत्पुरुषों केलिए निन्दनीय नहीं है । अतः विभीषण को मैं अवश्य अपनाऊँगा ।

"अरूणरामायण" में विभीषण के आगमन के संबंध में शंकालु अपने मित्रों से राम ने इसप्रकार कहा - हे मित्र, तुम्हारी नीति सबल है लेकिन शरणागत से छल करना उचित नहीं है । शरणागत की रक्षा करना परम धर्म है । हमें सर्वदा सत्यचरित कर्म करना है । लगता है कि विभीषण शुद्ध हृदय से आया है । मेरा मन उससे मिलने के लिए व्याकुल है । मैं उसकी निर्मलता का दर्शन कर पाऊँगा और तम-त्यागी प्राणी को गले से लगाऊँगा ।[1]

विभीषण अपनी पत्नी का हरण करनेवाले रावण के भाई होने पर भी शरण देने में राम तैयार हो जाते हैं । रावण वध के उपरांत राम ने विभीषण को लंकाधिपति बनाया और अपने मित्र सुग्रीव के समान सुख शांतिपूर्ण राज्य देकर अपने वचन का पालन किया । आधुनिक वर्ण विपिन्नता को मिटाने केलिए राम का एक चरित्र ही आधुनिक सत्ताधारी लोगों के लिए मार्ग दर्शन दे सकते हैं । लेकिन वर्ण-भेद, कुल-भेद आदि से उत्पन्न खोखले कारणों को उभारकर देश में होनेवाली सांप्रदायिक दंगों को मिटाने के लिए राम की मित्रता सहायक सिद्ध होती है ।

वाल्मीकिरामायण में नहीं आधुनिक रामकाव्यों में राम का आदर्श राजा रूप अत्यंत प्रभावोद्पादक है । प्राचीन काल से एक आदर्श राजा केलिए जिन-जिन गुणों की आवश्यकता होती है उन सभी गुणों से युक्त राजा राम के अलावा आज तक कोई दूसरा नहीं है । राम इसलिए आदर्श राजा बन गये हैं जिसमें स्वः या अपर का भेद नहीं है। राम इसलिए अपनी प्राण प्रिया जो अग्निदेव द्वारा पतिव्रता रत्न स्पष्ट दिखाया है उसको भी एक साधारण, अनाम धोबी के प्रवाद के कारण छोडने के लिए तैयार हो जाते हैं । राम यह भली-

---

1. पोद्दार रामावतार अरूण - अरूणरामायण - पृ. 320

भाँति जानते हैं कि व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र बनते हैं । इसलिए आज की व्यक्ति-निंदा कल राष्ट्र की निंदा बन जायेगी । समाज में व्यक्ति की अभिव्यक्ति की प्रधानता है । चाहे वह अनाम, कुलहीन, दीन-हीन, जो भी हो, वह समाज की एक इकाई है । एक आदर्श राजा के खिलाफ किसी को भी तर्जनी उठाने का अवसर नहीं देना चाहिए । यह महान आदर्श जीवन के अंतिम क्षण तक राम के जीवन का पथ प्रदर्शक है । अपनी प्रतिव्रता पत्नी सीता परित्याग को राम के चरित्र का कलंक नहीं, आदर्श है, त्याग है । आधुनिक रामकाव्यों में रामचरित्र के इस आदर्श राजा रूप को अत्यंत प्रभावशाली बनाने की प्रवृत्ति भी है । "प्रवाद पर्व", "वैदेहीवनवास" जैसे काव्यों में सीता से बातें करने के बाद ही राम उन्हें वन छोडते हैं ।

लेकिन "शंबूक", "अग्निलीक" जैसे आधुनिक रामकाव्यों में राम के आदर्श राजा रूप में कुछ परिवर्तन अवश्य देख सकते हैं । इसमें राम केवल सत्ता के लिए, सत्ता की रक्षा के लिए सीता परित्याग करते हैं और शंबूक का वध भी । "शंबूक" में राम - शंबूक बातचीत में इसका प्रमाण है और "अग्निलीक" में रथवान और सीता के कथनों में इसके प्रमाण उपलब्ध हैं ।

लोक सेवक रूप में राम का चरित्र-चित्रण रामायण में और आधुनिक रामकाव्यों में है । रामायण में आदि से लेकर अंत तक राम के इसी रूप का महत्वपूर्ण स्थान है । विश्वामित्र की याग रक्षा, ताटकावध, बालिवध, रावण वध, सीता परित्याग जैसे अनेक प्रसंग रामायण में राम के लोकसेवक रूप का स्पष्ट प्रमाण है । आधुनिक रामकाव्यों में कुछ मौलिकता के साथ युगीन परिस्थितियों के अनुकूल राम का चरित्र-चित्रण उपलब्ध है । उदाहरण के रूप में "वैदेहीवनवास", "ऊर्मिला", "साकेत-संत", "रामराज्य", "संशय की एक रात", "चित्रकूट", "कैकेयी", "जानकी-जीवन", "सीता-समाधि" आदि हैं । "ऊर्मिला" में राम वनगमन आर्य संस्कृति के प्रचरणार्थ है और लोकसेवा को मनुष्य का प्रथम कर्तव्य माना है । "वैदेहीवनवास" में राम सीतापवाद के प्रचारक लवणासुर का वध नहीं करते बल्कि सीता परित्याग को इस समस्या का समाधान मानते हैं । "साकेत-संत"

में भी आरण्यवासी राम का लोक सेवक रूप विद्यमान है । रामराज्य में राम कृषि करते हैं और जनता को आधुनिक कृषिरीति सिखाते हैं । रामराज्य में राम साम्राज्यवाद का अंतक भी है । "संशय की एक रात" में सीता को वापस मिलने केलिए युद्ध नहीं चाहते क्योंकि इससे उत्पन्न अत्यंत भीषणकारी परिणाम बहुत दुखदायी है । "कैकेयी" में भी राम का जन सेवक रूप है । 'जानकी-जीवन और सीता-समाधि में भी राम जनहित केलिए सीता-परित्याग करते हैं ।

राम की अलौकिकता का अत्यंत सुन्दर वर्णन वाल्मीकिरामायण में उपलब्ध है । रामायण में आरंभ से लेकर अंत तक राम के अलौकिक रूप का चित्रण है । यह रूप धनुष भंग के उपरांत परशुराम के पराभव से स्पष्ट हो जाता है । वैष्णव चाप में बाण चढ़ाकर खडे रहनेवाले राम को देखकर परशुराम कहते हैं -

अक्षय्यं मधुहन्तारं जानांमि त्वां सुरेश्वरम् ।
धनुषो स्य पराम्शात् स्वस्ति ते स्तु परंतप ।।[1]

अर्थात् शत्रुओं को संताप देनेवाले वीर ! आपने जो इस धनुष को चढ़ा दिया, इससे मुझे निश्चित रूप से ज्ञात हो गया कि आप मधु दैत्य को मारनेवाले अविनाशी देवेश्वर विष्णु हैं । आपका कल्याण हो ।

आधुनिक रामकाव्य जैसे "साकेत", "ऊर्मिला", "साकेत-संत", "रामराज्य", "नंदीग्राम", "अरूणरामायण", "शबरी", और "सीता-समाधि" में राम का यही रूप उपलब्ध है । "साकेत" में गुप्तजी की राय में राम भगवान विष्णु का अवतार हैं । लक्ष्मण और वसिष्ठ राम के इस तत्व को स्पष्ट बताते हैं । "ऊर्मिला" काव्य के राम में भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का संघर्ष है । "ऊर्मिला" में राम के संबंध में लक्ष्मण की राय है कि रामनेजग की बुराईयों को खत्म करके जग परिपालन के लिए अवतार लिया है । "साकेत-संत" में भी राम की अलौकिकता स्पष्ट है । "रामराज्य"में राम-चरित्र में अलौकिकता है लेकिन लौकिकता की प्रधानता है । "अरूणरामायण" में कवि दशावतार वर्णन करके रामावतार के उद्देश्य की महिमा प्रकट करते हैं । "शबरी" में शबरी को मुक्ति

---

1. वाल्मीकिरामायण - बालकाण्डम -षटसप्ततितमः सर्गः - श्लोक 17

दिलाते वक्त राम के अलौकिक रूप का चित्रण हैं -

वह सहज भाव से चखती, मीठे प्रभु को दे देती,
प्रभु सहज भाव से खाते, आँखों से कृपा बरसती ।
लक्ष्मण अवाक् थे, शबरी, का भाव देख यह निश्चल
निश्चय पी लेंगे प्रभु यदि, दे भक्त उन्हें हालाहल ।[1]

राम-चरित्र में लौकिकता का संस्पर्श रामायण में है । साधारण मानव के समान व्यवहार करनेवाले राम का चरित्र वाल्मीकि रामायण में राज्याभिषेक वेला, दशरथ के देहांत की खबर सुनते वक्त, सीतापहरण से, और शक्ति पडने से लक्ष्मण की स्थिति देखते वक्त स्पष्ट हैं । आधुनिक रामकाव्यों में राम के लौकिक रूप की प्रधानता है । "साकेत" में गुप्तजी राम से पूछते हैं कि "राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या ?" "वैदेहीवनवास" में भी राम के लौकिक रूप की प्रधानता है।राम अपनी पत्नी को सब कुछ समझाकर वन छोड देते हैं । "राम की शक्तिपूजा" में राम का मानव रूप पूर्ण रूप में विद्यमान है । पूजा की अंतिम वेला में एक कमल का तिरोधान और उसके मन में उत्पन्न संघर्षों का चित्रण एक साधारण मनुष्य के आंतरिक संघर्षों के समान हैं । "प्रवाद पर्व" में राम सीता की इच्छा से उसे वन छोडते हैं और सीता को लेकर चलनेवाले रथ का रास्ता देखकर खडे रहनेवाले राम का चित्रण एक साधारण मनुष्य या पति के समान है । "संशय की एक रात" में राम के मन में उत्पन्न संघर्ष और समस्याएँ भी मानव रूप की प्रधानता देकर चित्रित है । सेतुबन्धनोपरांत युद्धारंभ की वेला में राज्य में उत्पन्न कठिनाईयों को सोचकर निर्णय लेने में राम अशक्त दिखाई पडते हैं । तनावों के बीच दम घुटनेवाले राम आधुनिक मानव का सफल प्रतीक है ।"अग्निलीक" में राम बिलकुल आधुनिक सत्तालोलुप मानव है । स्वयं सीता ने स्पष्ट बताया है कि राम में सत्ता का मोह मात्र है । इसलिए राम सीता की कठिनाईयों के बारे में नहीं सोचते । सत्ता के पीछे भागनेवाले आधुनिक मानव पति-पत्नी संबंध या पारिवारिक संबंधों के पालन में समय नहीं निकालते या परवाह नहीं करते । "अग्निलीक" में राम केवल स्वांत सुखाय मात्र ही चाहते हैं

---

1. नरेश मेहता - शबरी - पृ. 78

"भूमिजा" में रावण कथन के रूप में भी राम का यही रूप वर्णित है । रामायण में रावण-वध के बाद सीता राम से मिलने के लिए आगे बढ़ती है तो राम मुँह मोडते हैं और अग्नि परीक्षा के लिए भी कहते हैं । राम-चरित्र में भावुकता का चित्रण वाल्मीकि के समान आधुनिक कवियों ने भी किया है । रामायण में वनयात्रा की वेला में, दशरथ के देहांत की खबर सुनते वक्त और शक्ति पडने के कारण लक्ष्मण की अचेतनावस्था देखते वक्त इसके स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं ।

आधुनिक रामकाव्यों जैसे "पंचवटी", "पंचवटी प्रसंग", "साकेत", "वैदेहीवनवास", "ऊर्मिला", "जानकीजीवन", "प्रवाद पर्व", "अग्निलीक", "सीता-समाधि", "राम की शक्तिपूजा" में भी भावुक रूप उपलब्ध है । "पंचवटी" और "पंचवटी प्रसंग" में राम के भावुक रूप की प्रधानता है । "साकेत" में भी उसका भावुक रूप उपलब्ध है । 'वैदेहीवनवास', 'प्रवाद पर्व', 'जानकी-जीवन' आदि में सीता-चरित्र पर कलंकारोपण सुनकर राम अत्यंत शोकातुर हो जाते हैं ।

शौर्य का राम-चरित्र में गणनीय महिमा है । बाल्यकाल से लेकर राम-चरित्र में शौर्य ही शौर्य दिखाई देता है । इसका एक अत्यंत सुन्दर प्रसंग हमें रामायण में और आधुनिक रामकाव्य में धनुषयज्ञ प्रसंग और परशुराम के वैष्णव चाप पर बाण चढ़ाते वक्त स्पष्ट हो जाता है ।

आधुनिक रामकाव्यों में ही राम हास-परिहास से युक्त चित्रित है । "पंचवटी" में इसका स्पष्ट प्रमाण गुप्तजी के चित्रण में उपलब्ध है ।

लक्ष्मण :-

राम की छाया के समान चलनेवाले लक्ष्मण रामायण में एक महत्वपूर्ण चरित्र है । जहाँ राम हो, वहाँ लक्ष्मण है, चाहे वन हो या राजभवन । इसलिए राम भी लक्ष्मण के प्रति अप्रतिम प्रेम रखते हैं । रामायण में लक्ष्मण का धर्म केवल राम की इच्छाओं को आँखें बन्द करके पालन करना है । इसके अलावा दूसरा कोई कर्तव्य-कर्म नहीं है । इसलिए रामायण में लक्ष्मण-चरित्र का स्वतंत्र विकास नहीं हुआ है । लेकिन आधुनिक काल में परिस्थितियाँ बदल गयीं ।

आधुनिक कवियों ने विशेषकर मैथिलीशरण गुप्त और बालकृष्ण शर्मा नवीन अपने काव्यों - 'साकेत' एवं 'ऊर्मिला' - में लक्ष्मण के चरित्र को महत्वपूर्ण स्थान दिया । उन्होंने अपने काव्यों में लक्ष्मण को नायक बनाकर लक्ष्मण-चरित्र को स्वतंत्र विकास दिया । इसके अलावा श्रीरामेश्वरदयाल दुबे ने अपने काव्य का नामकरण "सौमित्र" रखकर अपनी अपार श्रद्धा लक्ष्मण को अर्पित किया । इसमें माता, पिता, भाभी, भाई के माध्यम से लक्ष्मण-चरित्र को गरिमा प्रदान किया । चारों लक्ष्मण-चरित्र का बखान करते हैं । "पंचवटी", "पंचवटी प्रसंग", "चित्रकूट" "भूमिजा", "अरूणरामायण" आदि में लक्ष्मण-चरित्र को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुए हैं । सुमित्रानंदन पंत जी ने भी 'लक्ष्मण' नामक लघुगीति लिखकर लक्ष्मण के महान चरित्र के सामने अपना सिर नवाया ।

अपने क्रोधी रूप के कारण लक्ष्मण रामायण में प्रसिद्ध हैं । परिस्थितियों को ठीक तरह से समझने से पहले वह अत्यंत क्रुद्ध हो जाते हैं । कैकेयी की वरयाचना सुनकर लक्ष्मण का क्रुद्ध रूप अत्यंत प्रभावोत्पादक बन गया है । धनुष-भंग न होने के कारण शोकजनित कोपांध जनक से संवाद करते समय, धनुष भंग के कारण क्रुद्ध परशुराम से संवाद करते वक्त, चित्रकूट मिलन के लिए आनेवाले भरत के विरुद्ध, कामपीडिता शूर्पणखा के सामने, सत्ता से मदोन्मत्त सुग्रीव के पास, मेघनाद की मायालीलाओं के सामने जैसे अनेक प्रसंग रामायण में लक्ष्मण में क्रोधी रूप का परिचय देते हैं । वाल्मीकि रामायण में कैकेयी वरयाचना के कारण क्रोधी लक्ष्मण राम से इसप्रकार कहते हैं :-

हनिष्ये पितरं वृद्धं कैकेय्यासक्तमानसम् ।
कृपणं च स्थितं बाल्ये वृद्धभावेन गर्हितम् ।।[1]

अर्थात् जो कैकेयी में आसक्तचित्त होकर दीन बन गये हैं, बालभाव {अविवेक} में स्थित है और अधिक बुढापे के कारण निन्दित हो रहे हैं, उन वृद्ध पिता को मैं अवश्य मार डालूँगा । आधुनिक रामकाव्यों में कैकेयी वरयाचना से क्रुद्ध लक्ष्मण का रूप हम देख सकते हैं ।

---

1. वाल्मीकिरामायण - अयोध्याकाण्डम् - एकविंशः सर्गः - श्लोक 19

रामायण में धनुष-भंग न होने के कारण संतप्त जनक के विरुद्ध लक्ष्मण आवाज़ नहीं उठाते । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में इसके उदाहरण मिलते हैं । इसीप्रकार परशुराम से क्रुद्ध होनेवाले लक्ष्मण का रूप रामायण में नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य "प्रदक्षिणा", "लीला", "अरूणरामायण", "सौमित्र" जैसे काव्यों में है । अरूणरामायण में परशुराम से लक्ष्मण कहते हैं -

बोले रामानुज, जीर्ण धनुष था, टूट गया
कम से कम शक्ति मोह तो सबका छूट गया ।[1]

कैकेयी-वरयाचना में अनीति और स्वार्थता का अंश माननेवाले लक्ष्मण का रूप वाल्मीकिरामायण में चित्रित है ।

आधुनिक रामकाव्य जैसे "अरूणरामायण", "सौमित्र", "कैकेयी" "साकेत" आदि में भी लक्ष्मण का यह रूप है । उदाहरण के लिए 'सौमित्र' में लक्ष्मण का रूप -

इतने में लक्ष्मण आ पहुँचा, रुद्र वेश था ।
अधर फडकते, नेत्र लाल थे, रोष त्वेष था ।।
उछल रही थी मांस;पेशियाँ, तनी शिराएँ ।
साँसों का व्यापार कि जैसे हो झंझायें ।।[2]

लेकिन 'ऊर्मिला', 'चित्रकूट' जैसे काव्यों में लक्ष्मण कैकेयी की प्रशंसा करती है जो कैकेयी की वरयाचना में निहित मूल उद्देश्य जानने के कारण इसप्रकार कहते हैं । 'ऊर्मिला' में कैकेयी वरयाचना में अनीति समझकर कोप प्रकट करनेवाली ऊर्मिला से लक्ष्मण इसप्रकार कहते है :-

कैकेयी माँ दूर देश की हैं
वे हैं अनुभवशीला
युद्ध सन्धि में प्रकट कर चुकीं
हैं वे निज निपुण लीला ।[3]

---

1. पोद्दार रामावतार अरूण - अरूणरामायण - पृ. 74
2. रामेश्वरदयाल दुबे - सौमित्र - पृ. 17
3. बालकृष्णशर्मा 'नवीन' - ऊर्मिला - प. 26।

चित्रकूट में लक्ष्मण ऐसे पवित्र स्थान में कारण बनानेवाली कैकेयी माँ की प्रशंसा करते हैं । इसप्रकार चित्रकूट में अपने भाई राम को वापस लेने के लिए सेनासहित आनेवाले भरत के सामने उनके क्रुद्ध रूप का वर्णन वाल्मीकि रामायण में है और आधुनिक रामकाव्य में भी उपलब्ध है । पंचवटी में कामपीडिता शूर्पणखा के प्रति क्रोध करनेवाले लक्ष्मण का रूप वाल्मीकि रामायण के समान आधुनिक रामकाव्य जैसे "पंचवटी", "पंचवटी प्रसंग", "ऊर्मिला", "अरूणरामायण", "सीता-समाधि", में है । समय बीत जाने के बाद भी सीता की खोज न करनेवाले सुग्रीव को चेतावनी देने के लिए राम लक्ष्मण को भेजते हैं । लेकिन उनके क्रोध को जाननेवाले राम भली-भाँति समझा-बुझाकर भेजते हैं । रामायण में इस प्रसंग का विशद वर्णन हैं । आधुनिक रामकाव्य अरूणरामायण में भी इसका वर्णन है । सीता परित्याग का निर्णय लेते वक्त लक्ष्मण का क्रुद्ध रूप रामायण में नहीं है लेकिन आधुनिक रामकाव्य 'वैदेहीवनवास', 'अरूणरामायण', 'प्रवाद पर्व' आदि में उपलब्ध है ।

क्रोधी रूप के बाद लक्ष्मण चरित्र की विशेषता उनके सेवाव्रती रूप का है । रामायण के समान ही आधुनिक रामकाव्यों में लक्ष्मण का यह रूप उपलब्ध है । कैकेयी की इच्छा की पूर्ति केलिए दशरथ ने अकेले राम को ही वनवास दिया । लेकिन राम के बिना लक्ष्मण को एक पल भी जीना मुश्किल है मानो वह पानी विहीन मछली के समान दम घुटकर तडप-तडपकर मर जायेंगे । इसलिए नवविवाहिता ऊर्मिला को छोडकर चौदह वर्ष के वनवास के लिए राम के सा वे चलते हैं । उसकी इस प्रवृत्ति के कारण माता सुमित्रा लक्ष्मण जैसे पुत्र की प्राप्ति में जन्म को सफल मानती है । "सौमित्र" में सुमित्रा की चिन्ता में लक्ष्मण इस रूप में प्रकट है -

जन्म हुआ कृतकृत्य पुत्र सौमित्र मिला जब ।
शत जीवन का पुण्य पद्म-सा अहा! खिला तब ।।[1]

उसी प्रकार राम के विचार में लक्ष्मण का त्यागी रूप श्रेष्ठ है ।

---

1. रामेश्वरदयाल दुबे - सौमित्र - पृ. 10

मैं ने तो आदेश पिता का
इच्छा पूरी की माँ की ।
किन्तु त्याग की तू ने तो है
मूर्ति अनोखी है आँकी ।।[1]

निष्कलंकता लक्ष्मण-चरित्र की एक विशेषता है । इसलिए माता के समान आचरण करनेवाली सीता के मुँह से कटुवाणी निकलने से कानों को बंद करके वे राम की खोज में चले जाते हैं तब भी अपनी भाभी की रक्षा की चिन्ता उनके मन में है, इसलिए एक रेखा खींचकर बाहर न जाने का आदेश देकर लक्ष्मण राम की खोज में चले जाते हैं । संकट की वेला में भी अपनी सेवा को भूल जाना लक्ष्मण के लिए असहनीय है। पर्णकुटी बनाने में, प्रहरी रूप में रात भर नींद छोडकर खडे रहने में, सीता की खोज में, सीता की आज्ञा से राम की खोज में जाने के लिए तैयार होते वक्त, राम के आदेश से सुग्रीव को अपनी प्रतिज्ञा की याद दिलाने के लिए जाते वक्त भी लक्ष्मण का सेवाव्रती रूप हम देख सकते हैं । भरत भी लक्ष्मण की प्रशंसा करते हैं क्योंकि लक्ष्मण को राम के साथ वन जाकर चौदह साल तक उनकी सेवा करने का सुअवसर मिला । हम पहले देख चुके हैं कि रामायण में लक्ष्मण-चरित्र का स्वतंत्र विकास नहीं हुआ है ।

आधुनिक रामकाव्यों में लक्ष्मण-चरित्र की कुछ विशेषताएँ उपलब्ध हैं । इसमें सबसे पहले ऊर्मिला के प्रति उनका निस्सीम प्यार है । "साकेत" "ऊर्मिला", "अरूणरामायण" जैसे काव्यों में लक्ष्मण का आदर्श पति रूप विद्यमान हैं । रामायण में कभी भी अपनी प्राण प्रिया ऊर्मिला की याद लक्ष्मण नहीं करते । लेकिन उपर्युक्त काव्यों में लक्ष्मण बीच-बीच में ऊर्मिला की चिन्ता करते हैं । "साकेत" में लक्ष्मण ऊर्मिला की याद करते हैं यथा -

उठी न लक्ष्मण की आँखें जकडी रही पलक पाँखें
किन्तु कल्पना नहीं, उदित ऊर्मिला रही नहीं ।[2]

---

1. रामेश्वरदयाल दुबे - सौमित्र - पृ. 56
2. मैथिलीशरण गुप्त - साकेत - पृ. 104

इसके अलावा ऊर्मिला से भली-भाँति बात-चीत करके उसकी अनुमति से लक्ष्मण वन जाते हैं ।

लक्ष्मण चरित्र में वीरता की प्रधानता है । रामायण में ही नहीं आधुनिक रामकाव्यों में भी हमें इसका स्पष्ट प्रमाण मिलता हैं, जैसे याग रक्षा के लिए जाने में तैयार होते वक्त, धनुष भंग के समय, परशुराम से बातें करते वक्त, कैकेयी की वर प्राप्ति के समय, लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध के समय इनकी वीरता प्रकट हैं ।

हास-परिहास से युक्त लक्ष्मण-चरित्र आधुनिक रामकाव्य की देन है । "पंचवटी" में इनका यह रूप विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इसके अलावा "ऊर्मिला" में लक्ष्मण-सीता का हास परिहास उपलब्ध है ।

आधुनिक रामकाव्यों में रामायण से भिन्न लक्ष्मण-चरित्र विशेष महत्वपूर्ण है । जल्दी ही क्रोध करनेवाले वाल्मीकि रामायण के लक्ष्मण आधुनिक रामकाव्यों में ज्ञानी परिस्थितियों को जाननेवाले एक उत्तम पुरुष है जैसे "ऊर्मिला", "वैदेही-वनवास", "अरूणरामायण", "चित्रकूट", "भूमिजा" आदि में हैं । "सौमित्र" में स्वयं दुःख भोगकर दूसरों को शांति देने के लिए कठिन परिश्रम करनेवाले लक्ष्मण का रूप है ।

भरत :-

वाल्मीकि रामायण में भरत एक त्यागी भ्राता के रूप में चित्रित है । राम की छाया के समान दिखाई पडनेवाले लक्ष्मण से भरत अधिक प्रेम भाव प्रकट करते हैं । आधुनिककाल में कवियों ने भरत की निःस्वार्थ सेवा भाव को आधार मानकर काव्य सृजन किया हैं जैसे बलदेवप्रसाद मिश्रजी ने "साकेत-संत" तथा श्री गयाप्रसाद द्विवेदी ने "नंदीग्राम" लिखा है । इन काव्यों में भरत एक उज्ज्वल और उदात्त पात्र है । आजकल सत्ता के लिए आपस में लडनेवाले भाईयों के लिए भरत जैसे त्यागी भ्रातृप्रेमी भाईयों का चरित्र-ज्ञान ज़रूरी है । इसलिए इन कवियों ने आदर्श भरत-चरित्र का आधार लेकर

महाकाव्य रचते हुए उसकी प्रासंगिकता को प्रकट किया है जो युगयुगांतरों से भारतीय जनता को प्रभावित करते रहे हैं ।

भरत के चरित्र की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसका भ्रातृप्रेम ही है । उनके एक प्रकार की समर्पण भावना है । अपनी माता द्वारा अनेक कठिनाईयों को झेलकर प्राप्त राज्य को स्वीकार करने में भरत हिचकते हैं । उनकी राय में राम ही राज्य के अधिकारी हो सकते हैं । अधर्म से प्राप्त राज्य को स्वीकार करने में भरत तैयार नहीं है । रामायण में ही नहीं, आधुनिक रामकाव्यो में भी भरत इस कारण से कैकेयी को कोसते हैं । वाल्मीकि रामायण में वे कैकेयी पुत्र कहते हुए लज्जित हो जाते हैं । इसप्रकार माँ को डाँटनेवाले भरत का चित्रण आधुनिक रामकाव्यों जैसे "कैकेयी", "साकेत-संत" और "अरूपरामायण" में है । वाल्मीकि रामायण में भरत दुःस्वप्न देखते है और घर वापस आना चाहते हैं उसी दिन ही दूत उसको लेने के लिए आता हैं । "साकेत-संत" में भी युधाजित् की कूटनीति से वे शंकित हो जाते है और उसमें भी दुःस्वप्न देखते हैं । घर आते वक्त ही वे अपने प्रिय पिता और प्यारे भ्राता के बारे में पूछते है तो कैकेयी के कथन सुनकर दुःखी होनेवाले भरत का चित्र वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार वर्णित है -

किं नु कार्यं हतस्यैह मम राज्येन शोचतः ।
विहीनस्याथ पित्रा च भ्रात्रा पितृसमेन च ।।
दुःखे मे दुःखमकरोर्वृणे क्षारमिवाददाः ।
राजानं प्रेतभावस्थं कृत्वा रामं च तापसम् ।।
कुलस्य त्वमभावाय कालरात्रिरिवागता ।
अङ्गारमुपगूह्य स्म पिता मे नावबुद्धवान ।।[1]

अर्थात् हाय ! तू ने मुझे मार डाला । मैं पिता से सदा के लिए बिछुड गया और पितृतुल्य बडे भाई से भी बिलग हो गया । अब तो मैं शोक में डूब रहा हूँ, मुझे यहाँ राज्य लेकर क्या करना है ? तू ने राजा को परलोकवासी और

---

1. वाल्मीकिरामायण - अयोध्याकाण्डम् त्रिसप्ततितमः सर्गः - श्लोक 2,3,4

श्रीराम को तपस्वी बनाकर मुझे दु:ख-पर-दु:ख दिया है, घाव पर नमक-सा छिडक दिया है । तू इस कुल का विनाश करने के लिए कालरात्रि बनकर आयी थी । मेरे पिता ने मुझे अपनी पत्नी क्या बनाया, दहकते हुए अङ्गार को हृदय से लगा लिया था ; किन्तु उस समय यह बात उनकी समझ में नहीं आयी थी ।

इसके समान ही वर्णन आधुनिक रामकाव्यों में भी उपलब्ध है । "कैकेयी", "साकेत-संत", "अरूणरामायण" जैसे काव्यों को हम उदाहरण रूप में ले सकते हैं ।वे कौसल्या से अपनी निष्कलंकता को स्पष्ट दिखाते हैं । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में आत्मग्लानि से पीडित कैकेयी आत्महत्या करना चाहती है तो भरत उसको भी सांत्वना देने के लिए तैयार हो जाते हैं । राम को वापस लाने का निर्णय लेकर ही भरत पिता की अन्त्येष्टि संस्कार के लिए तैयार हो जाते हैं । इससे सारे राजपरिवार नहीं संपूर्ण विश्व भरत का बखान करते हैं । राम का पूर्ण सम्मान करने के लिए सेना सहित भरत वन की ओर जाते हैं । रामायण में गुह से रामादि के बारे में सुनकर भरत बेहोश हो जाते हैं ।वे श्रीराम की प्रतिनिधि के रूप में उनकी पादुकायें लेकर नंदीग्राम में निवास करते हैं । राम के वनवास के समान कुटिया बनाकर, फल, मूल, खाकर चौदह वर्ष तक जीवन बितानेवाले भरत का आदर्श भाई का उत्तम नमूना प्रस्तुत करता है । राम का प्रत्यागमन में यदि विलंब हो तो अग्नि में कूदकर मरने का वादा भी भरत करते हैं । भरत के भ्रातृप्रेम के सामने लक्ष्मण नतमस्तक हो जाते हैं । राम का कथन "कैकेयी" काव्य में ध्यातव्य है -

बन्धु ! गया मैं तुम से हार
धन्य, भरत-सा जग में कौन ।[1]

वाल्मीकि रामायण में नंदीग्राम में जीवन बितानेवाले भरत के चरित्र का विशद वर्णन नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य "साकेत-संत", "नंदीग्राम" जैसे काव्यों में इसका विशद वर्णन है । "साकेत-संत" में भरत की अष्टायाम चर्या

---

1. चॉदमल अग्रवाल 'चॉद' - कैकेयी - पृ. 165

पालन का वर्णन है जो भरत चरित्र की महिमा का द्योतक हैं । "नंदीग्राम" में राम से सुमंत भरत की जीवन चर्या के संबंध में स्पष्ट बताते हैं । "नंदीग्राम" में राम के माता कौसल्या ने भरत के संबंध में इसप्रकार कहा है :-

भरत-सा सत्पुत्र मैं ने तो नहीं -
आज तक देखा - सुना संसार में ।
राज वैभव त्याग तृण सा जो बसे -
पर्ण - तृण -निर्मित-कुटीरागार में ।[1]

इसी प्रकार रामायण में भी कौसल्या भरत की प्रशंसा करती है -

दिष्ट्या न चलितो धर्मादात्मा ते सहलक्ष्मणः
वत्स सत्यप्रतिज्ञो हि सतां लोकानवाप्स्यसि ।[2]

अर्थात् वत्स ! सौभाग्य की बात है कि शुभ लक्षणों से संपन्न तुम्हारा चित्त धर्म से विचलित नहीं हुआ है । तुम सत्यप्रतिज्ञ हो, इसलिए तुम्हें सत्पुरुषों के लोक प्राप्त होंगे । उसी प्रकार भ्रातृप्रेम ही एक सुव्यवस्थित रामराज्य की स्थापना में सहायक होत है । आधुनिक रामकाव्यों जैसे "साकेत", "ऊर्मिला", "नंदीग्राम" जैसे काव्यों में हनुमान से राम की करुण कहानी सुनकर उनकी रक्षा के लिए लंका में सैन्य ले जाना चाहते हैं । गुरु वसिष्ठ की कठिन प्रवृत्ति ही उसको इससे विचलित कर सकती है । राम के प्रति अनन्य भ्रातृप्रेम भरत के चरित्र की विशेषता है ।

आधुनिक रामकाव्यों में रामायण से भिन्न भरत के जनसेवक रूप का भी चित्रण उपलब्ध है । "नंदीग्राम" जैसे काव्यों में भरत के जनसेवक रूप का परिचय मिलता हैं । नंदीग्राम को भरत ने इसलिए चुन लिया है कि ग्रामोद्धार से ही राज्य की उन्नति सफल हो जाएगी । "नंदीग्राम" काव्य में भरत का कथन हैं -

गाँवों में बसते कृषक अन्न के दाता,
ब्रज में हैं रहती सुखी सदा गो-माता ।
x x x x x

---

1. श्रीगयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 64
2. [illegible]

गाँवों की उन्नति अखिल - राष्ट्र - उन्नति है,
गाँवों की प्रगति - विशेष देश की गति है ।
शत्रुघ्न ! गाँव में वास न जब तक होगा
जीवन का नव - मधुमास न तब तक होगा ।[1]

इसीप्रकार अष्ट याम चर्या में हरेक भाग में की जानेवाली चर्या का वर्णन "साकेत-संत" काव्य में उपलब्ध है ।

वीर भरत का प्रमाण भी हमें "नंदीग्राम" जैसे काव्यों में उपलब्ध है । देश में आतंक उत्पन्न करनेवाले लवणासुर का वध करने के लिए भरत जाते हैं । वाल्मीकिरामायण में राम राज्याभिषेक और सीता परित्याग के बाद शत्रुघ्न लवणासुर वध करते हैं ।

भरत बडे दयालु भी है । लवणासुर से संग्राम करते वक्त असुर नारियाँ भी असुर सेना की रक्षा के लिए दौड आती है । इन्हें भरत नारी मानकर अचेत बनाकर लवणासुर वध करते हैं और बाद में उन्हें होश में लाते हैं । लवणासुर के पुत्र को युवराजा भी बनाते हैं । अपने देश में ही नहीं अन्य देश में भी अराजकता भरत की दृष्टि में असहनीय हैं ।

कर्मण्यता भरत चरित्र की और एक विशेषता है । लेकिन वाल्मीकि रामायण में इसका विशद वर्णन नहीं है । राम को वापस लाना असंभव समझकर, उसकी प्रतिनिधि के रूप में भरत चौदह वर्ष तक राज्य शासन करते हैं । सुव्यवस्थित रामराज्य की नींव भरत ने डाला है उनकी अष्टायाम चर्या के वर्णन से उसकी कर्मण्यता स्पष्ट हो जाते हैं । भरत देश में रहकर देश की उन्नति केलिए कठिन परिश्रम करते हैं । देश में अशांति पैदा करनेवाले लवणासुर का वध करके देश में शांति स्थापित करते हैं । संजीवनी बूटी लेकर चलनेवाले हनुमान को शत्रु मानकर बाण से गिरा देते हैं और उनसे रामादि के वृत्तांत सुनकर उनकी रक्षा के लिए तैयार हो जाते हैं इसका प्रमाण हमें 'साकेत,'

---

1. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 23

'ऊर्मिला', 'साकेत-संत' जैसे काव्यों में उपलब्ध होते हैं । इसप्रकार देखें तो आधुनिक रामकाव्यों में भरत की कर्मण्यता की प्रधानता है ।

भरत-चरित्र में निष्कलंकता की भी प्रधानता है । 'साकेत-संत' में मामा युधाजित् की कूटनीति की चर्चा में यह स्पष्ट हो जाता हैं । कस्तूरीमृग की हत्या से उसके मन में एक प्रकार की हलचल पैदा हो जात है और आखेट समाप्त करते हैं । और आगे मामा की कूटनीति से घबराकर घर वापस जाना चाहते हैं । उसके मन की इच्छा के अनुसार घर वापस आना ही पड़ता हैं ।

वाल्मीकि रामायण में भरत-चरित्र को महत्व देते हैं । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों की भाँति इतनी प्रबल रीति से वर्णन नहीं है । भरत-चरित्र को आधुनिक ढंग से चित्रित करने की यह प्रवृत्ति प्रशंसनीय है । महात्मा-गाँधी की ग्रामोद्धार भावना भी यहाँ भरत चरित्र में उपलब्ध है । त्यागी भरत के द्वारा ग्रामोद्धारण और दलित पीडित लोगों की उन्नति आदि आधुनिक भारत की प्रगति के लिए अत्यंत ज़रूरी है । भरत एक ग्राम में अपनी कुटी बनाकर जन साधारण से सीधे संपर्क स्थापित करके उनकी विषमस्थितियों को सही रूप में समझकर उनकी उन्नति के लिए सदा कर्मरत है । यह आधुनिक रामकाव्य की एक महनीय प्रवृत्ति है । भाई के लिए सभी राज-भोगों को तृण के समान त्यागकर योगी के समान जीवन बितानेवाले भरत कालजयी व्यक्तित्व के अधिकारी हैं ।

दशरथ :-

वाल्मीकि रामायण में चित्रित दशरथ के चरित्र में प्रमुखता उनके पुत्रप्रेमी रूप का ही है । बाद में आदर्श राजा, युद्ध कुशल, सत्यव्रती, कामलोलुप आदि रूप है । आधुनिक रामकाव्यों में भी दशरथ रामायण के समान चित्रित है, लेकिन कुछ मौलिकतायें भी हैं ।

दशरथ-चरित्र की सबसे बडी विशेषता या गुण है उनका पुत्र प्रेम । इसका कारण शायद वृद्धावस्था में प्राप्त पुत्र रत्न हो सकता हैं । रामायण में पुत्र-प्रेमी दशरथ का स्पष्ट रूप यागरक्षा के लिए विश्वामित्र राम को माँगते

वक्त, रामादि के विवाह की खबर सुनते वक्त, परशुराम से बातें करते वक्त और कैकेयी की वरयाचना के समय स्पष्ट हो जाता है । विश्वामित्र अपने याग की रक्षा के लिए राम को ले जाने के लिए अनुमति पूछते समय दशरथ अत्यंत दुःखी हो जाते हैं और मूर्छित हो जाते हैं । असमय में प्राप्त पुत्र-रत्न को अत्यंत बलशाली राक्षसों से लडने के लिए भेजना आग से खेलने के समान है । दशरथ के कथन में यह स्पष्ट है -

न चासौ रक्षसां योग्यः कूटयुद्धा हि राक्षसाः ।
विप्रयुक्तो हि रामेण मुहूर्तमपि नोत्सहे ।।
जीवितुं मुनिशार्दूलं न रामं नेतुमर्हसि ।
यदि वा राघवं ब्रह्मन् नेतुमिच्छसि सुव्रत ।।
चतुरङ्गसमायुक्तं मया सह च तं नय ।।

अर्थात् यह राक्षसों से युद्ध करने योग्य नहीं हैं, क्योंकि राक्षस माया से-छल-कपट से युद्ध करते हैं । इसके सिवा राम से वियोग हो जाने पर मैं दो घडी भी जीवित नहीं रह सकता ; मुनिश्रेष्ठ ! इसलिए आप मेरे राम को न ले जाइये । अथवा ब्रह्मन् यदि आपकी इच्छा राम को ही ले जाने की हो तो चतुरंगिणी सेना के साथ मैं भी चलता हूँ । मेरे साथ इसे ले चलिये । इसप्रकार का चित्रण आधुनिक रामकाव्य जैसे "लीला", "अरूणरामायण" और "प्रदक्षिणा" में उपलब्ध है । इसी प्रकार वाल्मीकिरामायण में रामादि के विवाहोपरांत परशुराम से दशरथ करूणा करने की प्रार्थना करते हैं तो आधुनिक रामकाव्यों में इसप्रकार का वर्णन नहीं है । परशुराम से लक्ष्मण या राम बातें करते हैं । वाल्मीकिरामायण में राम को युवराजा बनाने के लिए दशरथ की इच्छा व्यक्त है और आधुनिक रामकाव्यों में भी उसका प्रमाण हम देख सकते हैं ।

इसी इच्छा को कैकेयी द्वारा नष्ट करने के कारण दशरथ अत्यंत दुःखी हो जाते हैं । कैकेयी की वरयाचना सुनते वक्त दशरथ की स्थिति

---

1. वाल्मीकिरामायण - बालकाण्डम् - विंशः सर्गः - श्लोक 8, 9

अरूणरामायण में निम्नलिखित रूप में हैं -

सुन अग्नि-नाद, दशरथ के दोनों कान सन्न
केवल शरीर हो नहीं, प्रकंपित प्राण सन्न !
उच्चरित मात्र हे राम ! काँपते होठों पर,
तन थर-थर-थर, मन थर-थर-थर, आत्मा थर-थर ।[1]

इसी पुत्र-प्रेम से दशरथ की मृत्यु होती है । पुत्र-प्रेम के कारण ही अपनी प्रिय पत्नी को कोसने के लिए प्रेरित करते हैं । रामायण में इसका प्रमाण मिलता हैं । आदर्श राजा के रूप में दशरथ का चित्रण रामायण में नहीं है । किन्तु आधुनिक रामकाव्यों में यह उपलब्ध है । दशरथ की वीरता का चित्रण वाल्मीकिरामायण में चित्रित नहीं है लेकिन आधुनिक रामकाव्य "कैकेयी" में देवासुर-संग्राम प्रसंग में दशरथ की वीरता का चित्रण है । यथा -

कुशल वीर विख्यात शंबर उधर
प्रतापी, महाशूर दशरथ इधर
अमित बाण-वर्षा हुई इस तरह,
विशिख ही विशिख जिधर देखो तिधर[2]

इसलिए आदर्श राजा होने के कारण राम की लोकप्रियता समझकर उसको दशरथ बनाना चाहते हैं । वाल्मीकि रामायण में दशरथ,भरत की अनुपस्थिति उचित मानकर राज्याभिषेक कराना चाहते हैं तो आधुनिक रामकाव्य जैसे "अरूणरामायण" में जनहित के कारण राम राज्याभिषेक की तैयारियाँ करते हैं, और भरत - शत्रुघ्न के अभाव में दुखित भी है । इसके अलावा आखेट वर्णन के बीच वे अपनी एक त्रुटि को अपने आदर्श के कारण शाप रूप में स्वीकार करते हैं । श्रवण कुमार की मृत्यु अपने हाथ की एक गलती से होती है लेकिन आदर्श राजा का कर्तव्य मानकर उनके माता-पिता के पास लाश को लेकर दशरथ चलते हैं और सार वृत्तांत सुनाते हैं । वृद्ध दंपति अपने पुत्र घातक को पुत्रशोक से मृत्यु होने का शाप भी देते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - अरूणरामायण - पृ. 147
2. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 26

दशरथ का दृढ़ प्रतिज्ञा-पालक रूप वाल्मीकिरामायण में है और आधुनिक रामकाव्यों में भी है । प्राण देकर भी दशरथ अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं । पुत्र प्रेम और प्रतिज्ञा पालन के लिए दम घुटनेवाले दशरथ का रूप रामायण के समान आधुनिक रामकाव्यों में भी देख सकते हैं । पहले विश्वामित्र की सारी इच्छाओं को पूर्ण करने की प्रतिज्ञा करने के कारण राम को विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए दशरथ प्रेरित हो जाते हैं । इसी प्रकार देवासुर संग्राम में वे कैकेयी की करनी से संतुष्ट होकर उसको दो वर आवश्यकता पर माँगने की प्रतिज्ञा करते हैं । आगे राम राज्याभिषेक की खबर से असंतुष्ट कैकेयी को भी उसकी पीड़ा का हरण करने की प्रतिज्ञा करते हैं । इसलिए अपने प्राण को देकर दशरथ अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं । उनकी प्रतिज्ञा का एक रूप हम "कैकेयी" काव्य में देख सकते हैं जो कैकेयी की इच्छा की पूर्ति के लिए है -

"भू, नभ, दिशिपति, शशि, निशा,
दीप नखत साक्षी सभी ।
शपथ राम की, पूर्ण सब
करूँ मनोरथ तव अभी ।"[1]

इसप्रकार का वर्णन वाल्मीकि रामायण में भी उपलब्ध है ।

कामासक्त रूप में भी दशरथ का चरित्र चित्रण हुआ है । कामासक्त होने के कारण ही सोचे बिना अत्यंत सुन्दरी कैकेयी की प्राप्ति केलिए उनके पुत्र को राज्य देने का वचन देते हैं । यह आसक्ति उनकी मृत्यु का कारण बन गई । दशरथ के कामासक्त रूप वाल्मीकि रामायण में कैकेयी वरयाचना के समय उपलब्ध है तो "कैकेयी" काव्य में कैकेयी परिणय के उपरांत चित्रित है । कामलोलुपता ही कैकेयी भवन के चित्रण में हम देख सकते हैं । वाल्मीकिरामायण में अन्य रानियों के अंतपुर से बढ़कर अत्यंत सुन्दर भवन कैकेयी का है । कैकेयी को तनिक भी मलिन देखना दशरथ नहीं चाहते थे । इसप्रकार सभी गुणों के खान होने पर भी हम दशरथ चरित्र में मानव सहज दुर्बलतायें देख सकते हैं ।

---

1. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 64

हनुमान :-

वाल्मीकि रामायण में हनुमान महत्वपूर्ण स्थान का अधिकारी । वाल्मीकि ने हनुमान को श्रीराम के अनन्य भक्त, सेवक, वीर, बुद्धिमान, और राजनीतिज्ञ रूप में चित्रित किया हैं । आधुनिक रामकाव्यों में हनुमान का यही रूप उपलब्ध है । केवल राम के ही नहीं बालि द्वारा तिरस्कृत सुग्रीव के सेवक के रूप में भी हनुमान को हम देख सकते हैं । इसके कारण राम-सुग्रीव संधि हो जाते हैं । हनुमान के सेवक रूप का वर्णन वाल्मीकि रामायण में निम्नलिखित रूप में उपलब्ध है -

भृतकार्यो हनुमता सुग्रीवस्य कृतं महत् ।
एवं विधाय स्वबलं सदृशं विक्रमस्य च ।।
यो हि भृत्यो नियुक्तः सन् भर्त्रा कर्माणि दुष्करे ।
कुर्यात् तदनुरागेण तमाहुः पुरुषोत्तम् ।।[1]

अर्थात् हनुमान ने समुद्र-लंघन आदि कार्यों के द्वारा अपने पराक्रम के अनुरूप बल प्रकट करके एक सच्चे सेवक के योग्य सुग्रीव का बहुत बडा कार्य संपन्न किया है । जो सेवक स्वामी द्वारा किसी दुष्कर कार्य के लिए नियुक्त होने पर उसे पूरा करके तदनुरूप दूसरे कार्य भी (यदि वह मुख्य कार्य का विरोधी न हो) संपन्न करता है । वह सेवकों में उत्तम कहा गया हैं । हनुमान के सच्चे सेवक का रूप आधुनिक रामकाव्य जैसे "अशोकवन", "आँजनेय", "साकेत", "ऊर्मिला", "साकेत-संत", "नंदीग्राम", "रामराज्य", "रामदूत" जैसे काव्यों में उपलब्ध है ।

हनुमान की वीरता अनुपम है । बचपन में ही इसका लक्षण दिखाई देते हैं । खाने का कोई फल समझकर सूर्य को खाने के लिए चलनेवाले बच्चा हनुमान वीरता का प्रतीक ही है । इसके अलावा समुद्र पार करते वक्त, अशोकवाटिका नष्ट-भ्रष्ट करते वक्त, असुरों से लड़ते वक्त, लंका में आग लगाते वक्त, संजीवनी बूटी लेते वक्त वीरता ही वीरता विद्यमान है । आधुनिक रामकाव्य जैसे अशोकवन में देखिए :-

---

1. वाल्मीकि रामायण - युद्धकाण्डम् - प्रथमः सर्गः - श्लोक 6, 7

जाते जाते ही कपि ने था सारा कटक पछाडा
एक वृक्ष ले अक्षवीर के शिर पर पटक दहाडा ।
दैत्यचरों ने अक्ष-निधन की जाकर कथा सुनाई,
जिसने थी असुरेन्द्र कोप की आग अमित भड़काई ।[1]

बुद्धिमान हनुमान के रूप हम वाल्मीकि रामायण और आधुनिक रामकाव्यों में देख सकते हैं । उसकी बुद्धिमता से सुग्रीव और राम से मित्रता स्थापित करके बालि वध और सत्ता की प्राप्ति होती है और राम द्वारा रावण-वध करके सीता की प्राप्ति भी । अशोकवाटिका में प्रवेश और संजीवनी बूटी प्राप्त करना उसकी बुद्धिमता का प्रमाण है ।

इसके अलावा हनुमान एक उत्तम राजनीतिज्ञ होने के कारण रावण से उचित बातें करते हैं । इससे बढ़कर हनुमान एक अनन्य ब्रह्मचारी भी है । ब्रह्मचारी रूप का विशद वर्णन वाल्मीकिरामायण में ही है ।

रावण:-

वाल्मीकि रामायण में रावण खलनायक के रूप में चित्रित है । लेकिन आधुनिक काव्यों में रावण एक सच्चे पात्र के रूप में भी चित्रित है । रावण के चरित्र में अनेक सद्गुण है और दुर्गुण भी । रावण-चरित्र में काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य आदि भी हैं ।

रावण चरित्र में दिखाई पडनेवाले प्रथम रूप उनकी कामलोलुपता हैं । इस रूप में रावण-चरित्र आधुनिक रामकाव्य में रामायण के समान चित्रित हैं । रावण अनन्य सुन्दरी सीता की प्राप्ति के लिए साम, दान, भेद, दण्ड का प्रयोग करते हैं । उसकी प्राप्ति केलिए अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार हो जाते हैं । "भूमिजा" में रावण स्पष्ट बताते हैं कि

एक तीर में प्राण शत्रु के
रावण ले सकता था ।

---

1. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 57

× × × ×

देख राम के उर में सीता,
रावण रण में हारा ।
सीता से था प्यार, मारता -
कैसे उसका प्यारा ।[1]

इसी प्रकार हनुमान जब लंका में अशोकवाटिका नष्ट भ्रष्ट करते हैं तब रावण अपनी पत्नी मंदोदरी के बारे में नहीं सोचते । लेकिन अशोकवाटिका में वास करनेवाली सीता के बारे में सोचते हैं । अरूपरामायण में रावण की यह चिन्ता उसके मन में सीता के प्रति मोह को व्यक्त करता हैं । रावण "भूमिजा" में खुलकर बताते हैं कि राम राज्य से ही या सत्ता से ही प्रेम करते है इसलिए सीता को राम ने त्याग दिया राज्य नहीं ।

उसका आज प्रमाण त्याग दी
सीता, राज्य न छोडा
सीता से मुँह मोडा ।[2]

दंभी रूप में रावण-चरित्र का प्रतिपादन उपलब्ध हैं वे अपना परिचय त्रिलोकजयी के रूप में देते हैं । 'मेघनाद; 'त्रिशिरा; 'खर-दूषण; 'कुंभकर्ण; 'मारीच जैसे साथियों के कारण उनके दंभी रूप अधिक प्रभावशाली लगता हैं ।रावण-हनुमान, रावण-अंगद संवादों में उसके दंभी रूप की ही प्रधानता है । इस रूप का चित्रण आधुनिक रामकाव्यों में रामायण के समान ही प्रतीत होता है ।

रामायण से भिन्न आधुनिक रामकाव्यों में रावण चरित्र में कुछ महत्त्वपूर्ण विशेष गुण भी उपलब्ध हैं जैसे आदर्श भ्राता रूप । "भूमिजा", "अशोकवन" जैसे खंडकाव्यों में रावण के भ्राता के रूप की विशेषता देख सकते हैं । शूर्पणखा के नाक-कान काटकर राम ने रावण को ललकारा । एक आदर्श भ्राता अपनी बहिन के अपमान को कैसे सह सकता है ? इसलिए राम ने रावण का अपमान किया । रावण "अशोकवन" काव्य में स्पष्ट बताते है कि राम शूर्पणखा को दंड

---

1. रघुवीरशरण मिश्र - भूमिजा - पृ. 21
2. वही - पृ. 23

देना चाहते हैं तो रावण के सामने आये । तब रावण स्वयं उसको उचित दंड देने को तैयार हो जायेंगे । लेकिन बहिन के अपमान के कारण रावण ने राम की शक्ति रूपी सीता को छीन लिया । प्रतिशोध करना एक आदर्श भाई का उचित धर्म है । इसलिए सीता का हरण रावण ने किया ।

युद्धप्रेमी रावण का रूप वाल्मीकिरामायण में उपलब्ध है । आधुनिक रामकाव्यों में भी रावण का यह रूप है लेकिन युद्ध से घृणा करनेवाले रावण का रूप अशोकवन काव्य में उपलब्ध है ।

प्रति हिंसा का ही प्रयोग था माया मृग की रचना
बने जहाँ तक अच्छी ही है रक्तपात से बचना ।
महा सुभट रावण से भिडना, साहस लघु तापस का
डरते सभी सुरासुर, जिससे क्या वह उसके बस का ।[1]

इसके अलावा वैज्ञानिक शक्ति की अधिकारी के रूप में रावण चरित्र का चित्रण "अरूपरामायण", "सीता-समाधि" जैसे काव्यों में उपलब्ध है ।

रावण-चरित्र के एक रूप की विशेषता किसी को परवाह न करना है । सीता हरण के लिए मारीच से स्वर्ण हिरण बनाने के लिए हठ करते वक्त भी मारीच उन्हें समझाने का कठिन परिश्रम करते है कि यह तो असुर वंश के सर्वनाश में बदल जायेंगा । लेकिन अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए तलवार उठाने में न हिचकनेवाले रावण के हाथों से बचने के लिए मारीच माया वेश धारण करने में तैयार हो जाते हैं । उसी प्रकार उसकी पत्नी, माल्यवान और कुंभकर्ण जैसे हितैषियों को तृण के समान रावण छोड़ देते हैं और उन्होंने विभीषण को राज्य से निकाल दिया । इसप्रकार स्वयं अपने पैर पर कुल्हाडी मारनेवाले रावण असुर वंश की क्षति के कारण बन जाते हैं ।

गौणपात्र :-

शत्रुघ्न:- वाल्मीकि रामायण में शत्रुघ्न के चरित्र का चित्रण अधिक नहीं है । जैसे राम की छाया लक्ष्मण है वैसे ही भरत की छाया शत्रुघ्न है । लवणासुर निग्रह और मधुरापुरी बसाने के प्रयत्न में शत्रुघ्न का उल्लेख है ।

---

1. गोकलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - प. 30

आधुनिक रामकाव्यों में रामायण के उपेक्षित अन्य पात्रों को स्थान देने की प्रवृत्ति के अंतर्गत शत्रुघ्न भी है और उनका चरित्र-चित्रण "साकेत", "साकेत-संत", "ऊर्मिला", "वैदेहीवनवास", आदि काव्यों में उपलब्ध है । शत्रुघ्न-चरित्र में भ्रातृ भक्ति, विनोदप्रियता व्यवहार कुशलता, दायित्व बोध आदि सद्गुण उपलब्ध है ।

जनक :-

रामायण में जनक का उल्लेख बालकाण्ड में ही उपलब्ध है । आगे उसके चरित्र के संबंध में विशद वर्णन नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य "विदेह" जो पोद्दार रामावतार अरूप की रचना है उसमें विदेह-चरित्र संपूर्ण रूप में उपलब्ध है । उसमें आदर्श राजा, आदर्श पिता, ज्ञानी आदि अनेक रूप विद्यमान है । इस काव्य में जनक योग में भोग, और भोग में योग का पालन करते हैं ।

विभीषण :-

विभीषण का चरित्र रामायण में विशेष रूप से चित्रित है । इसका कारण है कि अपने वंश को क्षति से बचाने के लिए अपने भ्राता से अलग होकर वे उसके रिपु के पक्ष में भाग लेते हैं और अपने भाई के हरेक गुढ़ तंत्र को बता देते हैं जो राम-विजय का कारण बन जाते हैं । आलोचक विभीषण को चाहे देशद्रोही कह सकता है लेकिन विभीषण की चिंता अपने वंश की रक्षा है । विभीषण ज्ञानी है और भक्त भी है । इसलिए अवतार रूपी राम से शरण प्राप्त करें तो असुर कुल की क्षति नहीं हो जाएगी । यही उसकी नीति का प्रमाण है । आधुनिक रामकाव्य अरूपरामायण में विभीषण राम में शरण लेने के बाद भी अपने भाई के सामने जाना चाहते हैं । लेकिन राम के धर्मोपदेश से, वंश की रक्षा केलिए रामदल में अटल रहना चाहते हैं । "शंबूक" काव्य में शंबूक विभीषण को देशद्रोही मानते हैं । क्योंकि रावण के नाश का कारण और अपनी रक्षा में वे सफल हो जाते हैं । विभीषण-चरित्र में गलतियों को ही देखना अनुचित लगता है क्योंकि रावण को बार-बार समझाने की कोशिश में उसे राज्य से निकाल देने के कारण वे राम पक्ष में भाग लेते हैं । ज्ञानी होने के कारण विभीष भगवान के अवतार राम से बचना मुश्किल जानकर राम के पास शरण लेते हैं ।

मेघनाद :-

मेघनाद का वर्णन सुन्दरकाण्ड और युद्धकाण्ड में विशद रूप में उपलब्ध है । इन्द्र को जीतनेवाला इन्द्रजीत ही रावण की शक्ति है संपत्ति भी । इसलिए रावण की हरेक इच्छा की पूर्ति को मेघनाद अपना कर्तव्य मानते हैं । मेघनाद के चरित्र रामायण के समान ही आधुनिक रामकाव्यों में उपलब्ध है । इसमें कोई मौलिकता नहीं है ।

लव-कुश :-

रामायण में लव-कुश के चरित्र का विशद वर्णन नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में लव-कुश के चरित्र का वर्णन काफी मात्रा में उपलब्ध है । इनके चरित्र में बालसुलभ जिज्ञासा, महत्वाकांक्षा, देश प्रेम आदि गुण विद्यमान है । वे बडे शक्तिशाली योद्धा भी है. इसप्रकार का वर्णन "भूमिजा", "जानकी-जीवन", "सीता-समाधि" जैसे काव्यों में उपलब्ध है ।

वाल्मीकि :-

वाल्मीकि का चरित्र भी रामायण के समान आधुनिक रामकाव्यों में चित्रित है । राम से परित्यक्ता सीता को बेटी के समान देखभाल करनेवाले एक पिता के रूप में हम वाल्मीकि को रामायण में देख सकते हैं । लेकिन आधुनिक रामकाव्य "जानकी जीवन" और "भूमिजा" में सीता आत्महत्या करने के लिए तैयार होते वक्त वे राम के वंशधर की रक्षा के लिए उसको जीने का उपदेश देते हैं. और अपनी कुटी में ले जाते हैं । लव-कुश को उचित शिक्षा देकर शस्त्र में भी निपुण बनाकर जीने योग्य बनाते हैं । वाल्मीकि के द्वारा ही सीता -राम पुनर्मिलन संभव होता है ।

वसिष्ठ, विश्वामित्र, सुग्रीव, बाली आदि अनेक गौण पात्र भी है जिनका चरित्र चित्रण रामायण के समान ही आधुनिक रामकाव्यों में हुआ है ।

शंबूक :-

वाल्मीकि रामायण में शंबूक-चरित्र का उल्लेख ब्राह्मण पुत्र की अकाल मृत्यु के कारण रूप में उल्लिखित है और राम द्वारा उसकी हत्या हो जाती है । शंबूक निम्नजाति के आदमी होने के कारण तपस्या करना अनुचित है ।

इसलिए अवर्ण के द्वारा तपस्या या अनुचित कार्य करने के कारण ब्राह्मण पुत्र की अकाल मृत्यु हो चुकी है इसका एकमात्र उपाय शंबूक की हत्या करना ही है । जनसेवक राम इसके लिए प्रेरित भी हो जाते हैं । आधुनिक रामकाव्यों में शंबूक-वध प्रसंग युगीन परिस्थितियों के अनुकूल चित्रित है । "जानकी जीवन" जैसे काव्यों में राम शंबूक को भली-भाँति समझाकर तपस्या से निवृत्त कराते हैं और राम उसकी हत्या नहीं करते । लेकिन "शंबूक" नामक खंडकाव्य में राम शंबूक की हत्या करते हैं । इसमें शंबूक एक दलित-पीडित-शोषित निम्नवर्ग का प्रतिनिधि है और राम सत्ताधारी आधुनिक शासक का ।

प्रमुख नारी पात्र :-

सीता :-

वाल्मीकि रामायण में ही नहीं आधुनिक रामकाव्यों में प्रमुख पात्र सीता ही है । आदर्श पुत्री, आदर्श पत्नी, आदर्श माता और आदर्श नारी के रूप में सीता-चरित्र वाल्मीकि रामायण में उपलब्ध है । आधुनिक रामकाव्यों में सीता-चरित्र की कुछ मौलिकतायें अवश्य उपलब्ध होती हैं ।

आदर्श पुत्री के रूप में सीता-चरित्र का वर्णन रामायण के समान ही आधुनिक रामकाव्यों में उपलब्ध है । रामायण की नायिका सीता के चरित्र-वर्णन में पहले आदर्श पुत्री की ही प्रधानता है । सीता-चरित्र के रूपायन में पिता जनक और माता सुनयना का योगदान महत्वपूर्ण है । "साकेत" में सीता का आदर्श पुत्री रूप उपलब्ध है ।

आदर्श पत्नी रूप में सीता-चरित्र का चित्रण रामायण में है । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में कुछ परिवर्तन के साथ उसका चरित्र उपलब्ध है । राम के वनवास की खबर सुनकर आदर्श पत्नी की कर्तव्यपरायणता के लिए सीता भी राम के साथ चलने के लिए तैयार हो जाती हैं । वनवास की कठिनाईयों को राम के सामीप्य में सीता नगण्य मानती हैं । वनवास से सीता को रोकने के लिए राम कठिन परिश्रम करते हैं तब सीता राम से इसप्रकार कहती हैं -

प्रासादाग्रे विमानैर्वा वैहायसगतेन वा ।
सर्वावस्थागता भर्तुः पादच्छाया विशिष्यते ।

अर्थात् महलों में रहना, विमानों पर चढकर घूमना अथवा अणिमा आदि सिद्धियों के द्वारा आकाश में विचरना - इन सबकी अपेक्षा स्त्री केलिए सभी अवस्थाओं में पति के चरणों की छाया में रहना विशेष महत्व रखता है ।

राम के बहुत अनुनय विनय से सीता अपनी हठ से नहीं हटती । सीता के उचित वचनों से प्रभावित होकर राम अंत में सीता से इसप्रकार कहते हैं -

सर्वथा सदृशं सीते मम स्वस्य कुलस्य च
व्यवसायमनुक्रान्ता कान्ते त्वमतिशोभनम् ।।[1]

अर्थात् सीते ! तुम ने मेरे साथ चलने का जो यह परम सुन्दर निश्चय किया है, यह तुम्हारे और मेरे कुल के सर्वथा योग्य ही है ।

'कैकेयी' में सीता राम से कहती है -

"मेरा भी तो प्राणनाथ ! हैं
व्यक्तित्व कि कुछ तत्व ।
पति-संग रहूँ, मरूँ, या मुझको
इतना तो हो स्वत्व ।"[2]

इसी प्रकार सीता के आदर्श चरित्र का प्रखर रूप हमें "प्रवाद पर्व" नामक आधुनिक रामकाव्य में उपलब्ध होता है । सीता के कलंकारोपण पर निर्णय लेने में दम घुटनेवाले राम से सीता खुलकर बता देती हैं कि

मैं आपकी राज्य-गरिमा
और अपनी चरित्र-मर्यादा के लिए
कोई सी भी परीक्षा दे सकती हूँ
पर प्रजा के विश्वास की
निर्भय अभिव्यक्ति की रक्षा अनिवार्य है ।[3]

लेकिन इससे भिन्न राम को बिलकुल दोषी माननेवाली सीता-चरित्र भी आधुनिक रामकाव्यों में उपलब्ध है । "अग्निलीक" में भरत भूषण अग्रवाल जी ने सीता को

---

1. वाल्मीकि रामायण - अयोध्याकाण्डम् - एकत्रिंश सर्गः श्लोक 41
2. चाँदमल अग्रवाल चाँद - कैकेयी - पृ. 137
3. नरेश मेहता - प्रवाद पर्व - प. 81

राम की बुराईयों को खुलकर बतानेवाली एक साधारण पत्नी के रूप में चित्रित किया है । इसमें सीता केवल राम को ही नहीं संपूर्ण रघुवंश को दोषयुक्त मानती हैं । राम-चरित्र के संबंध में सीता "अग्निलीक" में इसप्रकार खुलकर बताती हैं -

जिसने चौदह वर्ष छाया की भाँति इनके साथ बिताया हो
उसका मन क्या ये इतना भी न जान सके ?
× × × × ×
ये तो राज्य के मतवाले थे
विजयश्री के भूखे थे,
प्यार से इन्हें लगाव ही क्या था ?[1]

इसमें सीता राम को केवल सत्ता का मोही मानती है । अगर राम सीता से प्यार करते तो चौदह वर्ष उसके साथ वन में सारी कठिनाईयों को झेलनेवाली को कैसे छोड सकते हैं ? लेकिन सत्ता के पीछे भागनेवाले के मन में प्यार का क्या स्थान है । इसप्रकार अग्निलीक में सीता राम की ओर अपनी तर्जनी उठाती हैं ।

आदर्श माता रूप सीता-चरित्र की एक विशेषता ही है । रामायण में सीता के आदर्श माता रूप का विशद वर्णन नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में "भूमिजा", "जानकी-जीवन", "सीता-समाधि" जैसे काव्यों में वह रूप उपलब्ध है । निष्कलंक होकर भी राम परित्याग से उदासीन होकर सीता आत्महत्या करने के लिए तैयार हो जाती है । लेकिन वाल्मीकि उसे समझाते हैं कि राम के घरोहर उसके कोख में पैदा हो रही है । उसकी रक्षा करनी चाहिए कलंकित माता के बच्चे भी कलंकित रूप में माने जाते हैं । लेकिन वाल्मीकि के सदुपदेश से सीता जीने के लिए तैयार हो जाती हैं । "भूमिजा" में सीता के मन:परिवर्तन का चित्रण देखिए :-

जग के तरू पर डाली जैसी,
सीता बनी प्रतीक्षा ।
भर देती है शक्ति भक्ति में,
गुरू की दीपित दीक्षा ।[2]

---

1. भरतभूषण अग्रवाल - अग्निलीक - पृ. 49-50

सीता अपने बच्चों का उचित ढंग से पालन पोषण करती हैं । और उनके मन में कभी कभी यह चिन्ता उत्पन्न होती है कि

लगी सोचने सीता, मेरे,
लव-कुश दुःख हारेंगे ।
जीव भर के अन्धकार में
दीपक नया धरेंगे ।।[1]

इसके अलावा सीता का चरित्र आधुनिक रामकाव्यों में जन सेविका रूप में भी चित्रित है । "वैदेहीवनवास", "भूमिजा", "जानकी-जीवन", जैसे काव्यों में जंगल के लोगों का खेती करना, स्वावलंबी बनाने की उचित शिक्षा देनेवाली आधुनिक नारी के रूप में चित्रित है । सीता के द्वारा घर के गुल्लकें भर गयी । इसके अलावा "भूमिजा" में सीता के गृह उद्योग करने का चित्रण है ।

सीता चरित्र की सबसे बडी आधुनिकता राम के खिलाफ आवाज़ उठानेवाली का रूप ही है । रामायण में राम की छाया के समान चलनेवाली सीता आधुनिक रामकाव्य में बिलकुल बदल गयी । आसन्न भाता रूपी सीता को वन में छोडकर राम ने केवल उसकी पत्नी सीता की ही नहीं संपूर्ण नारी की अवहेलना की थी ।

सीता राम की इच्छा से दुबारा अग्निपरीक्षा है उसके लिए तैयार नहीं है ।

राम ने तो बहुत पहले ही छोड दिया था
आज मैं भी राम को छोडती हूँ
अब मैं स्वतंत्र हूँ, मुक्त हूँ
अपने आप में पूर्ण हूँ ।[2]

सीता अपने अपमान को स्वीकारने के लिए तैयार नहीं है । इसलिए एक खड्ड में कूद कर आत्महत्या करती है । इसके बाद राम सीता की स्मृति में रामराज्य की स्थापना करते हैं । इसप्रकार सीता में आदर्श आधुनिक नारी भावना उपलब्ध है

---

1. रघुवीर शरण मिश्र - भूमिजा - पृ. 52

सीता के स्थान पर एक स्वर्ण मूर्ति को रखकर यज्ञ पूरा करनेवाले राम को सीता नहीं चाहती ।

अब मेरा यहाँ क्या काम है ?
हाय, जिसका स्थान सोने की एक प्रतिमा ले सकती
उसके जीने का प्रयोजन ही क्या है ।[1]

इसप्रकार आधुनिक रामकाव्यों में सीता-चरित्र रामायण से भिन्न रूप में चित्रित है । आधुनिक रामकाव्य में सीता चरित्र आधुनिक युग की नारियों के समान चित्रित है जो अपने नारीत्व की अवहेलना आँखें बन्द करके सहने के लिए तैयार नहीं है ।

कैकेयी :-

वाल्मीकि रामायण में चित्रित कैकेयी एक झूटा नारी है । वह मंथरा की मधुर वाणी में डूबकर कुलध्वंस का कारण बन गयी । इसी रूप में कैकेयी-चरित्र वाल्मीकि रामायण में उपलब्ध है । कैकेयी अत्यंत सुन्दरी है । इसलिए बिना सोचे दशरथ कैकेयी की इच्छा की पूर्ति केलिए उसके बेटे को ही राज्यभार सौंप देने की प्रतिज्ञा करते हैं । सुन्दरी कैकेयी को ही दशरथ उस समय चाहते हैं ।

कैकेयी मात्र सुन्दर ही नहीं है, युद्धकुशल भी है । रामायण में इसका विशद वर्णन नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य "कैकेयी" में कैकेयी की युद्धकुशलता स्पष्ट है । कैकेयी की युद्धकुशलता चाँदमल अग्रवालजी ने इसप्रकार व्यक्त किया :-

सभी दंग थे केकई की निरख,
अतुल धीरता, अश्व-चालन-कला ।
कभी रंगता-सा, उरग-सा कभी
कभी रथ हवा में अधर उड़ चला ।[2]

यहाँ कैकेयी एक वीर योद्धा की वीर पत्नी प्रतीत होती है । कैकेयी की कुशलता से ही इसमें दशरथ विजय प्राप्त कर सकते हैं । इस घोर संग्राम में कैकेयी की

---

1. भरतभूषण अग्रवाल - अग्निलीक - पृ. 54
2. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 27

चतुराई भी स्पष्ट है । चाँदजी ने यह प्रसंग इसप्रकार स्पष्ट दिखाया है -

अचानक गई टूट रथ की धुरी,
हुआ भान जब चक्र कुछ डगमगा ।
फँसाया पलक झाँपते शर तहाँ
रहा शत्रु भी लख चपलता ठगा ।[1]

कैकेयी की उचित प्रवृत्ति ने दशरथ के जान को बचाया ।

कैकेयी-चरित्र की प्रधानता रामायण में वरदान प्रसंग में उपलब्ध है तो आधुनिक युगीन रामकाव्यों में कैकेयी चरित्र उससे पहले ही देख सकते हैं जैसे "अरूणरामायण" और "कैकेयी" । "कैकेयी" काव्य में कैकेयी के बाल्यकाल, और दशरथ के साथ विवाहोपरांत जीवन का वर्णन भी है । "अरूणरामायण" में कैकेयी चारों बच्चों में राम को ही अधिक पसन्द करती है । जब दशरथ पुत्रों के बारे में पूछते हैं तब कैकेयी स्पष्ट बताती है कि राम ही सर्वश्रेष्ठ है ।

कैकेयी-चरित्र की कुटिलता के रूप रामायण में और कैकेयी चरित्र की विशालता के रूप में आधुनिक रामकाव्यों में चित्रित प्रसंग कैकेयी की वरयाचना है । वाल्मीकि रामायण के अनुसार मंथरा के तत्वोपदेश से प्रेरित होकर कैकेयी इसप्रकार की वरयाचना के लिए तैयार हो जाती है। वह दशरथ की अनुनय-विनय से तनिक भी परवाह न करके अपनी इच्छा की पूर्ति केलिए अटल रहती है । पहले दशरथ को प्रतिज्ञाबद्ध बनाकर पूर्वदत्त वर की याद दिलाकर अपने पुत्र भरत की उन्नति की ओर लक्ष्य करती है । इससे क्रुद्ध होकर दशरथ उसकी निंदा भी करते हैं । राम से अपने मन की लालसा को खुलकर बताने में भी उसमें कोई हिचक नहीं है । कैकेयी के इस आचरण से सुमंत्र भी चकित हो जाते हैं । राम को ही नहीं सीता को भी वल्कल लाने में वह हिचकती नहीं ।

रामायण में कैकेयी क्रूर और निर्दयी दिखाई देती है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य जैसे "कैकेयी" नामक महाकाव्य में यह प्रसंग अत्यंत

---

1. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 27

मौलिक है । देश की रक्षा के लिए स्वयं कलंकित होने के लिए तैयार होनेवाली आदर्श क्षत्राणी या भारतीय नारी है कैकेयी । इस काव्य में कर्तव्य की बलिवेदी पर दम घुटनेवाली कैकेयी चरित्र अत्यंत महत्वपूर्ण है । कैकेयी के संघर्ष में क्या करूँ ? व क्या न करूँ ? इसको चुनने में वह दम घुटती है और अंत में स्वयं कलंकित हो जाने के लिए तैयार हो जाती है "कैकेयी" काव्य में कैकेयी के चरित्र के संघर्ष देखिए -

किन्तु यों वरदान का ले कर सहारा
राम को यदि विपिन भेजूँ ;
गलत समझी क्या न जाऊँगी भला मैं ?
दुनियाँ कहेगी क्या न जाने ?
कौन समझेगा हृदय की भावना को ?[1]

इन पंक्तियों में कैकेयी का अंतरद्वन्द्व स्पष्ट है । "नंदीग्राम" काव्य में कैकेयी को इसप्रकार वर माँगने केलिए सरस्वती देवी ही प्रेरणा देती है। वह "स्वप्न में टूटी वीणावाली दुर्दशा से दीन सरस्वती का दर्शन ; रावणकृत अत्याचारों को सरस्वती के आदेशानुसार रावण-नाश के उपाय का मन ही मन समर्थन करती है । कैकेयी के मन में एक प्रकार की हलचल होती रहती है । कैकेयी के मानसिक संघर्ष का चित्रण गयाप्रसाद द्विवेदीजी ने स्पष्ट रूप में चित्रित किया है -

मानसिक दौर्बल्य इससे -
आज मुझको घेरता है ।
कर्मपथ से बुद्धि को जो -
धर्म पथ में फेरता है ।[2]

कर्म करने के लिए कैकेयी के मन में इच्छा उत्पन्न होती है और राम के वनवास रूपी वर दशरथ से माँगती है ।

ननिहाल से वापस बुला लानेवाले भरत को कैकेयी अत्यंत ममता से बातें करती है और भरत के सवालों का संदर्भोचित जवाब भी देती है ।

---

1. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 83
2. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 100

रामायण में इस प्रसंग में कैकेयी के मन में दु:ख या पश्चाताप तनिक भी नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य में भरत पिता के बारे में पूछते हैं तो कैकेयी इसप्रकार उत्तर देती है :-

बनी जड़ स्वार्थिनी, पति-घातिनी मैं
हुई हा हन्त ! आप अभागिनी मैं ।[1]

कैकेयी अपनी करनी से पश्चाताप करती हैं । कैकेयी का यह रूप आधुनिक रामकाव्य "साकेत", "कैकेयी", "चित्रकूट", "साकेत-संत", "नंदीग्राम", "अरूणरामायण" "विदेह" जैसे काव्यों में उपलब्ध है । "साकेत-संत" में कैकेयी गुरु वसिष्ठ से अपने पति को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना भी करती है । इसमें असफल जानकर सती होना चाहती हैं । कैकेयी चरित्र की प्रधानता यहाँ विद्यमान है । "नंदीग्राम" जैसे काव्यों में कैकेयी को अन्य रानियों ने कुलटा नहीं कहा बल्कि इसप्रकार होना विधि-विधान भी मानती है । कैकेयी के पश्चाताप सुनकर "कैकेयी" काव्य में राम ने कैकेयी को समझाया कि कैकेयी ने जो कुछ किया वह सब राम की भलाई के लिए ही है -

"मूल शक्ति माँ ! सुख की तुम ही,
दुख तो विधि की लेखा ।
स्वयम् अयश सिर लेकर, मेरे
शीश सुयश अवलेखा ।[2]

इन पंक्तियों में राम कैकेयी की करनी को सफल और सार्थक मानते हैं । "चित्रकूट" काव्य में कैकेयी को वसिष्ठजी ने पश्चाताप से मुक्ति दिलाने के लिए इन सब को विधि की विडंबना और दशरथ के शाप के संबंध में कहकर दोषरहित घोषित की है । इसप्रकार कैकेयी चरित्र आधुनिक रामकाव्य में रामायण से बिलकुल भिन्न है ।

"साकेत-संत" काव्य में इससे भिन्न मामा युधाजित् के षड्यंत्र से ये सब होता है । भरत को ही राज्य मिलने के लिए आवश्यक चतुराई देकर

---

1. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 145
2. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 192

मंथरा को कैकेयी के साथ भेजती है । इससे कैकेयी का दोषारोपण दूर हो जाता है ।

कैकेयी-चरित्र निर्माण में आधुनिक कवियों ने बहुत उदारता प्रकट की है । आधुनिक काव्यों में कैकेयी को दोषी माननेवाले कवि नहीं के बराबर है ।

ऊर्मिला :-

वाल्मीकि रामायण में ऊर्मिला के चरित्र के संबंध में विशद वर्णन नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में ऊर्मिला नायिका के रूप में चित्रित है जैसे "साकेत", "ऊर्मिला" आदि । ऊर्मिला चरित्र में वाल्मीकि-रामायण में आदर्श पुत्री और आदर्श पत्नी की प्रधानता है लेकिन आधुनिक रामकाव्यों में इन गुणों के अतिरिक्त देशप्रेम, कर्तव्यपरायणता, त्याग आदि का भी समावेश हैं । इसप्रकार रामायण की ऊर्मिला में जो कमियाँ है आधुनिक रामकाव्यों में उसको मिटाकर अत्यंत पूर्णता के साथ चित्रित है । "ऊर्मिला" काव्य में ऊर्मिला चरित्र का संपूर्ण विकास हम देख सकते हैं ।

ऊर्मिला के बचपन के संबंध में कोई वर्णन वाल्मीकि रामायण में नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य "ऊर्मिला", "विदेह" जैसे काव्यों में इसका वर्णन उपलब्ध है ।

ऊर्मिला चरित्र की सबसे बडी विशेषता उसकी त्याग भावना और कर्तव्यपरायणता है । नवविवाहिता होने पर भी चौदह वर्ष की लंबी वेला को भी भूलकर लक्ष्मण को महत्व मिलने के लिए वनवास के लिए वह अनुमति देती है । जब सीता आदर्श पत्नी के कर्तव्यपालन के लिए राम के साथ वन जाती है तो उससे बढकर पति के कर्तव्य में कोई बाधा न होने के लिए वह घर में रहना ही उचित मानती है । ऊर्मिला की इस चरित्र महिमा के सामने हम आश्चर्य चकित हो जाते हैं । लक्ष्मण ऊर्मिला को अपनी माताओं की देखभाल को भी सौंप देती हैं । इसलिए ऊर्मिला अपने मन से स्वयं कहती है -

हे मन,
तू प्रिय पथ का विघ्न न बन
आज स्वार्थ है, त्याग भरा
हो अनुराग विराग भरा ।[1]

अपने पति के पथ का विघ्न न बनने की लालसा को ऊर्मिला मन से रोकती है । "साकेत", "विदेह", और "ऊर्मिला" में विरहाग्नि में तडपनेवाली ऊर्मिला का सांगोपांग वर्णन है । कर्तव्य भावना ऊर्मिला चरित्र की विशेषता भी है । आधुनिक रामकाव्य "जानकी-जीवन" में इसका स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध है । लोकापवाद के कारण जब राम सीता को त्याग देते हैं तब प्रजाजन राजमहल के समीप एकत्र होते हैं । धोबी और धोबिन पश्चाताप करते हैं तब ऊर्मिला जन को सांत्वना देने के लिए कठिन परिश्रम करती है -

"सम्मान्या सखियो ! सहेलियो ! शांन्त हो,
विद्रोही भर भाव व्यर्थ विभ्रान्त हो ।
स्वामी के प्रभु के विचार जाने बिना,
कैसी व्याकुल व्यग्र विक्रान्त हो ?"[2]

यहाँ ऊर्मिला भावावेग में आनेवाले लोगों को समझाने की कोशिश करती है ।

वीर क्षत्राणी के रूप में ऊर्मिला-चरित्र वर्णन अत्यंत सुन्दर लगता है । "साकेत" और "ऊर्मिला" में ऊर्मिला चरित्र का यह रूप अत्यंत प्रभावशाली लगता है । "ऊर्मिला" में जब कैकेयी की इच्छा की पूर्ति के लिए लक्ष्मण भी राम के साथ वन जाने के लिए तैयार हो जाते हैं और ऊर्मिला से अनुमति माँगने केलिए जाते हैं तो उन्होंने स्पष्ट बताया हैं कि यह कैकेयी कौन है ? इसप्रकार वर माँगने के लिए उनमें कोई मर्यादा नहीं ? कैकेयी की खरी-खोटी करने के लिए यहाँ ऊर्मिला तैयार हो जाती है । कैकेयी की करनी को आदर्श बहू के समान आँखें बन्द करके सहने के लिए वह तैयार नहीं है ।

---

1. मैथिलीशरण गुप्त - साकेत - पृ. 18
2. राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीय आत्मा" - जानकी-जीवन - पृ. 26।

लक्ष्मण ऊर्मिला को कैकेयी की वरयाचना में निहित सद्उद्देश्य को स्पष्ट करने के बाद ही वनवास केलिए अनुमति देती है । इसी प्रकार संजीवनी बूटी लेकर चलनेवाले हनुमान से रामादि के संबंध में सारे वृत्तांत सुनकर अयोध्या की सेना के साथ चलने के लिए भी वह तैयार हो जाती है । इसप्रकार आधुनिक रामकाव्य की ऊर्मिला आदर्श क्षत्राणी भी है ।

ऊर्मिला कलानिपुण नारी भी है । "साकेत", "ऊर्मिला", "विदेह" जैसे काव्यों में ऊर्मिला की चित्रकला निपुणता देख सकते हैं । "ऊर्मिला" काव्य में ऊर्मिला द्वारा खींची गई लक्ष्मण-चित्र अत्यंत सुन्दर लगता है और लक्ष्मण भी उसकी प्रशंसा करते हैं । "विदेह" में भी ऊर्मिला द्वारा चित्र बनाने का प्रसंग उपलब्ध है ।

विनोदप्रिय रूप ऊर्मिला-चरित्र में है । लक्ष्मण को नव आखेटक का रूप देकर ऊर्मिला-शत्रुघ्न हास-परिहास करते हैं । इससे लक्ष्मण भी संतुष्ट हो जाते हैं । इसप्रकार ऊर्मिला चरित्र में आधुनिक नारी के समान रूप उपलब्ध है जो आधुनिक काव्य की निजी मौलिकता है ।

ऊर्मिला चरित्र में प्रेम की प्रधानता भी है । लक्ष्मण के प्रति अपार प्रेम रखती है ऊर्मिला । इसलिए उसकी भलाई के लिए चौदह वर्ष तक उसकी स्मृति में लीन रहने के लिए वह तैयार हो जाती है । सीता भी उसकी प्रशंसा करती है । सच्चे प्रेम से तडपनेवाली ऊर्मिला का चरित्र आधुनिक युगीन रामकाव्य की विशेषता ही है । "साकेत" में गुप्तजी ने नवम सर्ग पूर्ण रूपेण ऊर्मिला विरह पीडा से भरपूर किया है तो नवीन जी ने संपूर्ण "ऊर्मिला काव्य ही ऊर्मिला के लिए बनाया । नवीनजी की ऊर्मिला कहती है -

मानवता की याद पीठ पर तुम को न्योछावर करके
रोने लगी ऊर्मिला तुम्हारी चुपके चुपके जी भर के ।[1]

यहाँ ऊर्मिला के संपूर्ण समर्पण की भावना उपलब्ध है । ऊर्मिला के इस समर्पण की भावना के संबंध में डा. नगेन्द्र का कथन है "वस्तुत: वे घर में जलाए गए उस

---

1. बालकृष्णशर्मा "नवीन" - ऊर्मिला - पृ. 15

आशापूत दीव्य दीप की शिखा प्रज्वलित है जो दूरदेशगामी पुरखों को प्रकाश प्रदान करने की कामना का प्रतीक है । वे अत्यंत दीन हीना अधीना होते हुए भी सबको शांति एवं सुख प्रदान करने का परिश्रम करती है ।"

इसप्रकार हम देख सकते हैं कि काव्येतर उपेक्षिता ऊर्मिला को प्रथम स्थान दिलाने की कोशिश में उसके चरित्र के मार्मिक पक्ष को जगाकर पाठकों के मन में प्रभाव डालने में आधुनिक कवि कितने सफल हुए हैं । ऊर्मिला चरित्र को युगानुकूल और परिस्थितियों के अनुसार चित्रित करके चिर नवीन रूप देकर उसकी गरिमा ऊपर उठायी ।

गौणपात्र

कौसल्या :-

आदर्श माता, आदर्श पत्नी के रूप में कौसल्या रामायण में उपलब्ध है । वाल्मीकि रामायण में कौसल्या चरित्र की विशेषता पूर्ण रूप से हम देख सकते हैं । यह प्रसंग वाल्मीकिरामायण के अयोध्याकाण्ड में विस्तार से वर्णित है । इसमें सपत्नीत्व के कारण तडपनेवाली एक साधारण नारी है कौसल्या । उसकी एकमात्र आश्रय राम ही है । उसकी अभिलाषा है यदि राम राजा हो तो अपनी सारी पीडायें खत्म हो जायेंगी । दशरथ कैकेयी को प्रथम स्थान देने के कारण दासियाँ भी कैकेयी की उपस्थिति में कौसल्या से बातें करने में हिचकती है । ऐसी स्थिति में दशरथ भी उसकी परवाह नहीं करते । इसलिए कौसल्या कैकेयी की वरयाचना अपनी इच्छा के विरुद्ध मानती है । पुत्र के कर्तव्यपालन में कौसल्या अपनी इच्छा को नगण्य मानती है । पहले वह राम के साथ वन जाने के लिए तैयार हो जाती है । लेकिन पति का पालन पतिव्रता केलिए अनिवार्य मानकर राजमहल में सबकुछ सहने के लिए तैयार होकर राम को वनवास केलिए वह अनुमति देती है ।

लेकिन रामायण से भिन्न आधुनिक रामकाव्यों में कौसल्या कैकेयी को भली-भाँति जाननेवाली परिस्थितियाँ समझनेवाली लगती है । "नंदीग्राम "जानकी-जीवन", "सीता-समाधि" जैसे काव्यों में कौसल्या का यही रूप उपलब्ध है । "नंदीग्राम" में कौसल्या कैकेयी का इसप्रकार करना नियति ही मानती है क्योंकि राम को कौसल्या से बढकर कैकेयी देखभाल करती है और भरत से बढ़कर पसंद करती है । इसप्रकार रामायण से भिन्न कौसल्या चरित्र आधुनिक रामकाव्य में चित्रित है ।

सुमित्रा :-

कौसल्या के समान सुमित्रा चरित्र भी रामायण में बहुचर्चित नहीं है । इसका कारण है कि कैकेयी को ही रामायण में महत्वपूर्ण स्थान दिया है जो कथागति में परिवर्तन के लिए आवश्यक है । लेकिन सुमित्रा चरित्र की एक झलक ही रामायण में है तो उसमें भी प्रधानता अवश्य दिखाई देती हैं क्योंकि अपने पुत्र के भ्रातृप्रेम से संतुष्ट होकर सुमित्रा लक्ष्मण से कहती है -

रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम् ।
अयोध्यामटवीं विद्धि गच्छ तात यथासुखम् ।।[1]

अर्थात् बेटा ! तुम श्रीराम को भी अपने पिता दशरथ समझो, जनकनंदिनी सीता को ही अपनी माता सुमित्रा मानो और वन को अयोध्या जानो । अब सुखपूर्वक यहाँ से प्रस्थान करो ।"

सुमित्रा भरत रूपी पुत्र की प्राप्ति में संतुष्ट है । इसके दोनों पुत्र सेवारत ही है । लक्ष्मण राम के सेवक है तो शत्रुघ्न भरत के सेवक है । दोनों एक से भिन्न होना नहीं चाहते । "सौमित्र" नामक खंडकाव्य में सुमित्रा का यह भाव स्पष्ट है -

मेरा इतना लाभ, लोभ पर अधिक नहीं था ।
तोष यही था - जहाँ राम, सौमित्र वहीं था ।।
और रहा शत्रुघ्न भरत का निशि-दिन अनुचर ।

---

1. वाल्मीकि रामायण - अयोध्याकाण्डम् चत्वारिंशः सर्गः श्लोक 9

चित्रकूट या नन्दिग्राम अग्रज का सहचर ।।
मेरे दोनों तनय बने सेवा अनुरागी ।
स्नेह-पात्र जो बने, वही तो है बडभागी ।।[1]

अपने पुत्रों के भ्रातृप्रेम से सुमित्रा कितनी संतुष्ट है यहाँ स्पष्ट है ।

इसीप्रकार अरूणरामायण जैसे आधुनिक रामकाव्यों में भी सुमित्रा लक्ष्मण को सतर्क रहने के लिए उपदेश देती है ।

नारी की कर्तव्य भावनाओं के प्रति सुमित्रा हमेशा श्रद्धालु है । इसका प्रमाण है "लीला", "अरूणरामायण" जैसे काव्यों में विश्वामित्र राम को ले जाने के लिए अयोध्या पहुँचते है तो कौसल्या आदि रानियों के विलाप देखकर सुमित्रा उन्हें समझाती है । इसीप्रकार कैकेयी राम को वनवास रूपी वर माँगने से भी उसे दोषी नहीं मानती है लेकिन सब नियति का खेल मानती है । इसप्रकार सुमित्रा चरित्र में आधुनिकता की प्रधानता है ।

माण्डवी :-

रामायण में माण्डवी का प्रतिपादन रामादि के विवाह प्रसंग में उपलब्ध है । आगे उनकी स्थिति का वर्णन नहीं है । आधुनिक रामकाव्य जैसे "साकेत-संत" और "नंदीग्राम" में माण्डवी की प्रधानता है । आदर्श पत्नी के रूप में माण्डवी का चित्रण अत्यंत प्रभावशाली है । पति के साथ रहकर भी एक प्रकार की विरह पीडा सहनेवाली माण्डवी एक असाधारण पात्र लगती है । भ्रातृप्रेम केलिए सब प्रकार की सुखसुविधाओं को त्यागनेवाले पति की सेवा केलिए वह सदा तैयार है । "साकेत-संत" में अष्टयाम चर्या करनेवाले भरत की सेवा केलिए माण्डवी हमेशा उपस्थित है । पति के साथ रहने के कारण माण्डवी को ऊर्मिला के समान रोने का अवसर भी नहीं है ।

माण्डवी पति सेवा के अलावा और कुछ नहीं चाहती । भारतीय संस्कृति के पुनीत आदर्श के रूप में यहाँ माण्डवी उपस्थित है । पति की महिमा

---

1. रामेश्वरदयाल दुबे - सौमित्रा - पृ.।।

ही भारतीय नारी के लिए सर्वस्व है । माण्डवी भी एक ऐसी भारतीय नारी है जो अपने अस्तित्व को खत्म करके पति की भलाई चाहती है ।

मंथरा :-

वाल्मीकि रामायण में चित्रित मंथरा अत्यंत कुटिल नारी है । वाल्मीकि रामायण में राज्याभिषेक विघ्न के लिए कैकेयी को प्रेरणा देने से पहले मंथरा के संबंध में कोई विवरण नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य अरूणरामायण में रामादि की बाललीला के वर्णन के बीच मंथरा की ओर भी संकेत है -

सबसे पहले राम को खिलाती कैकेयी
वात्सल्य-भाव उसके प्रति है इतना स्नेही
यह देखा मंथरा दासी मुँह बिचका देती
वह मात्र भरत को निज गोदी में ले लेती ।[1]

इससे स्पष्ट होता है कि मंथरा अपनी मालकिन की भलाई केलिए कार्य करती रहती है । बचपन से ही मंथरा भरत का ही देखभाल करती है ।

"साकेत-संत" में मंथरा को भली-भाँति समझाकर कैकेयी की भलाई में सदा जागरूक रहने के लिए युधाजित् आज्ञा देते हैं । इसलिए कैकेयी को इसप्रकार के उपदेश देने में मंथरा से बढकर युधाजित् ही प्रेरणास्रोत लगते हैं । इसीप्रकार अरूणरामायण में मंथरा को ऐसी प्रेरणा देने के लिए रावण की दासी झंझटा नामक असुर स्त्री ने उपदेश दिया है इसप्रकार झंझटा की कुटिलता के कारण मंथरा कैकेयी को रामवनवास रूपी वर माँगने केलिए उपदेश देती है -

तू ऐसी शनि-मणि जिसको मैं ने ही जाना
है नहीं निरर्थक तेरा सरि-तट पर आना
तो विदा मन्थरे ! रखना मेरी बात याद
चलने की वेला मत कर - मत कर तू विषाद ।[2]

इसके अलावा अरूणरामायण में मंथरा को कूबडी बनाने में राम का हाथ है इसलिए

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - अरूणरामायण - पृ. 12
2. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - अरूणरामायण - पृ. 121

उसके मन में जो क्षोभ है उसको प्रकट करने के लिए मंथरा प्रतीक्षा करती रहती है । मंथरा झंझटा से इसप्रकार कहती है -

झटका मारा कौसल्या - सुत ने बचपन में
मैं गिरी उसी क्षण, क्षोभ अभी तक है मन में ।[1]

इसलिए मन में मंथरा राम के प्रति क्रुद्ध है । "नंदीग्राम" काव्य में सरस्वती देवी ने कैकेयी को राम को वनवास रूपी वर माँग कर असुर की क्षति केलिए सहायता करने का आदेश दिया । इसप्रकार नंदीग्राम में भी मंथरा के द्वारा राम का वनवास नहीं हुआ । आधुनिक रामकाव्यों में मंथरा को दोषी मानने केलिए उचित अवसर नहीं है ।

शूर्पणखा :-

रामायण में शूर्पणखा एक राक्षसी रूप में रामादि के पास उपस्थित होती है। वहपहले राम से बातें करती है और बाद में लक्ष्मण से । रामायण में अपना परिचय रावण की बहिन के रूप में देती है।वह अपने कुल के बलशालियों का भी परिचय देती है और श्रीराम से विवाह करने की इच्छा प्रकट करती है लेकिन आधुनिक रामकाव्य 'पंचवटी प्रसंग', 'पंचवटी', 'सीता-समाधि', जैसे काव्यों में एक स्वच्छंद नारी के रूप में शूर्पणखा का चित्रण है और पहले लक्ष्मण से बातें करती है बाद में राम से । राम-लक्ष्मण के हँसी के पात्र बन जाने के कारण सीता को पकडने के लिए तैयार होते वक्त रामाज्ञा से लक्ष्मण उसे कुरूपा बनाते हैं । अरूपरामायण के अनुसार झंझटा की प्रेरणा से शूर्पणखा पंचवटी में उपस्थित होती है । नारी की अवहेलना के खिलाफ आवाज़ उठानेवाली, अपने मन की इच्छाओं को खुलकर बतानेवाली आधुनिक नारी के रूप में आधुनिक रामकाव्यों में शूर्पणखा का चरित्र-चित्रण उपलब्ध है ।

त्रिजटा :-

त्रिजटा रावण की दासी है जो रावण की आज्ञा का पालन करना ही अपना कर्तव्य मानती है । "अशोकवन" काव्य में त्रिजटा चरित्र की

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूप' - अरूपरामायण - पृ. 118

महिमा का वर्णन है । रावण के सामने भी सीता चरित्र की महिमा का वर्णन करने केलिए उनके मन में डर नहीं है ।

शबरी :-

रामायण में शबरी प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण है । राम की प्रतीक्षा में रहनेवाली शबरी ही एक महत्वपूर्ण चरित्र है । लेकिन शबरी चरित्र के विशद वर्णन का अभाव रामायण में है । आधुनिक रामकाव्य में शबरी खंडकाव्य में शबरी चरित्र का सांगोपांग वर्णन है । इसमें निम्नजाति की नारी उच्चजाति के लोगों को भी अप्राप्य परमपद की प्राप्ति करती है । इसमें निहित महत्ता यह है कि मनुष्य कर्म के द्वारा निम्न या उच्च हो सकता है न कि जन्म से । यहाँ आधुनिक काल में वर्णव्यवस्था को नगण्य मानने की प्रवृत्ति स्पष्ट हो जाती है ।

मंदोदरी :-

रामायण में मंदोदरी के संबंध में विशद वर्णन नहीं है । लेकिन आधुनिक रामकाव्य जैसे "अशोकवन" में मंदोदरी चरित्र की महिमा स्पष्ट हो जाती है । इसमें मंदोदरी एक आदर्श पत्नी, आदर्श रानी और आदर्श नारी के रूप में चित्रित है । रावण को समझाकर उसकी सुख सुविधा के लिए वह हमेशा तैयार है । गानालाप से मंदोदरी अपने प्रियतम की पीडाओं को मिटाने का परिश्रम करती है । सीता को राम के पास भेजकर, वापस देकर वंश की रक्षा केलिए प्रेरणा देती है । अपनी ननद होने पर भी शूर्पणखा की करनी को वह अच्छी नहीं मानती है । इससे बढकर मंदोदरी चरित्र की विशेषता उसकी आदर्श नारी भावना ही है । रावण से वह स्पष्ट बताती है कि सीता राम की संपत्ति नहीं है, शक्ति है । इसलिए सीता को वापस दे दो । रावण को समझाने के लिए मंदोदरी बताती है -

कभी न पर-नारी-ललाट-बिन्दु होता मंगलदाता,
चंद्र चतुर्थी का गिन उसको तज देते हैं ज्ञाता ।
सीता को संपत्ति न मानें, शक्ति राम की जानें
अर्धांगिनी, संगिनी, भामा, एकरूप अनुमानें ।[1]

---

1. गोकुलचन्द्रशर्मा - अशोकवन - पृ. 32

नारी की महिमा को स्पष्ट बताना यहाँ मंदोदरी का लक्ष्य है । उसीप्रकार सीता को अपने वश में लाने में असमर्थ जानकर मारने के लिए तैयार होनेवाले रावण को अबला नारी हत्या से बचाने का प्रयास भी मंदोदरी ही करती है । इसप्रकार मंदोदरी का चरित्र अत्यंत मनमोहक लगता है ।

नवनिर्मित पुरुष पात्र :-

पुरुष पात्रों की नयी सृष्टि में अराल-कराल नामक दो राक्षस और धीर-गंभीर मैथिलीशरण गुप्त के "लीला" में उपलब्ध हैं । अराल-कराल राक्षस होने पर भी पहले राम पक्ष में है लेकिन राम द्वारा ताटका वध के कारण बाद में असुर दल में भाग लेते हैं ।

धीर-गंभीर रामादि के मित्रों के रूप में चित्रित है इनके चरित्र चित्रण में कोई मौलिक उपलब्धि नहीं है । "चरण" नामक एक जंगली जाति के मनुष्य का वर्णन भरत भूषण अग्रवालजी के "अग्निलीक" में उपलब्ध है । यह एक नवीन पात्र सृष्टि, दलित-शोषित निम्नजाति का प्रतीक भी।

स्त्री पात्रों की नयी सृष्टि में झंझटा नामक रावण की दासी है जो रावण की प्रेरणा से मंथरा को प्रेरणा देकर कैकेयी के द्वारा राम को वनवास देती है । शूर्पणखा को पंचवटी में भिजवाती है जिसके द्वारा रावण को सीता की प्राप्ति सरल हो जाती हैं । यह पोद्दार जी ने अरूपरामायण में नवीन पात्र सृष्टि के रूप में किया है । इसके अलावा "लीला" में सीतादि की सखि के रूप में सुगंधिका की सृष्टि भी नवीन है । इसके अलावा "विदेह" काव्य में आभा नामक एक नारी पात्र है । "ऊर्मिला" और "जानकी-जीवन" में शांता नामक दशरथ की बेटी का उल्लेख है ।

निष्कर्ष :- इसप्रकार संपूर्ण रामकाव्य के चरित्र-चित्रण पढकर यह प्रतीत होत है कि रामायण के पात्रों को युगानुरूप चित्रित किया है । आधुनिक युग में उपेक्षित पात्रों को महत्व देने के उद्देश्य से पात्रों के दोष-प्रक्षालन की प्रवृत्ति भी दृष्टव्य है इसी प्रकार प्रमुख प्रसंगों और पात्रों को आधार मानकर कवि की मौलिकता भी व्य की गई है । आधुनिक युग में रामायण के पुनीत पात्रों का चित्रण करके मानवीय मूल्यों का चित्रण करना भी कवियों का लक्ष्य रहा है । अतिप्राचीन भारतीय संस्कृति और भारतीय चरित्र कितनी महानता से युक्त है, इसका अनुमान हम कर सकते हैं ।

पंचम अध्याय

आधुनिक रामकाव्य का मूल्यांकन

किसी भी साहित्य या काव्य विधा का वास्तविक महत्व उसके मूल्यांकन से ही स्पष्ट होता है । आधुनिक युगीन रामकाव्यों का मूल्यांकन विभिन्न दृष्टिकोण से यहाँ किया गया है । इनमें सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत सांस्कृतिक, पारिवारिक और राजनैतिक अवधारणा की दृष्टि से विश्लेषण किया गया है ।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य में-सांस्कृतिक चेतना तथा राजनीतिक अवधारणा की दृष्टि से -

सामाजिक परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से सांस्कृतिक चेतना सबसे महत्वपूर्ण है । भारतीय संस्कृति की महिमा का गुणगान केवल भारतीयों ने ही नहीं दुनिया भर के लोगों ने अत्यंत आश्चर्य के साथ किया है । इसका कारण यह है कि भारतीय संस्कृति का अनुकरण करने में कठिनाई हैं । अन्य पाश्चात्य संस्कृति की नकल करने में कोई असुविधा नहीं है । लेकिन अत्यंत पुनीत, आदर्श भारतीय संस्कृति दूसरों के लिए पथ-प्रदर्शक है ।

बडों का आदर भारतीय संस्कृति की विशेषता है, इसलिए राजमहल में राजा लोगों को उचित शिक्षा और ठीक रास्ता दिखाने में कुल-गुरूओं का स्थान अद्वितीय है । इसलिए वसिष्ठ पुत्रविहीन दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ कराने का उपदेश देते हैं । दशरथ उसकी आज्ञा का पालन करने के कारण संतानलब्धि से पुलकित हो गए । उसी प्रकार यज्ञ की रक्षा केलिए राम को माँगने के लिए आनेवाले विश्वामित्र की इच्छा की पूर्ति केलिए राम-लक्ष्मण बालक होने पर भी असुरों से लडने के लिए भेज दिया गया । विश्वामित्र की आज्ञा का पालन करने के लिए राम ने धनुष यज्ञ में भाग लेकर सीता को वरणमाला पहना दिया । कोपिष्ट परशुराम से राम का वार्तालाप भी बडों के आदर का प्रमाण है । राम से अन्य तीनों भाईयों का व्यवहार इसका सबसे श्रेष्ठ प्रमाण

माना जा सकता है । राम-अभिषेक की स्वर्णिम वेला में भरत को राज्य देने की कैकेयी की आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं । उसी प्रकार प्रिय पुत्र होने के कारण वनवास की आज्ञा देने में असमर्थ दशरथ की दयनीय स्थिति को भी राम भली-भाँति जानते हैं । इसलिए वनवास की आज्ञा राम के लिए शिरोधार्य ही है । राम कैकेयी से स्पष्ट बताते हैं कि पिता की आज्ञा जो भी हो, उसका पालन करना पुत्र धर्म है । इसलिए दुःखी होने की आवश्यकता ही नहीं है । राम की वनयात्रा की खबर सुनकर उनके भ्राता लक्ष्मण भी अपनी पत्नी को विरह की अग्नि में जीने के लिए विवश करते हैं । राम पत्नी की इच्छा की पूर्ति करने के लिए विवश हो जाते हैं । उसी प्रकार राम को सबसे श्रेष्ठ माननेवाला भरत भी कपटता से प्राप्त राज्य-लक्ष्मी को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होते । बडों से खूब चर्चा करने के बाद राम को वापस देने के लिए तैयार हो जाते हैं । लेकिन चौदह वर्ष तक वन में रहना और पिता की आज्ञा का पालन करना पुत्र धर्म बताने पर भरत वापस लौटते हैं । उसी प्रकार राक्षस राज रावण की हरेक प्रवृत्ति ठीक न होने पर भी कुंभकर्ण जैसे भ्राता चुप रहते हैं । अंत में राक्षस वंश का सर्वनाश न होने के लिए विभीषण रावण द्वारा राज्य से निकाल देने के बाद राम पक्ष में भाग लेते हैं । राम वनवास समाप्त करके वापस आते वक्त ही राज्य वापस देने के लिए भरत तडपता रहता है । राम की आज्ञा से राज्य रक्षा आदि करना भी बडों की आज्ञा का पालन करना ही है ।

वचन का पालन करना भारतीय संस्कृति की एक विशेषता ही है । रामायण में आदि से अंत तक वचन के पालन के लिए हरेक पात्र कठिन परिश्रम करते हैं । पहले विश्वामित्र से उसकी सारी कामनाओं की पूर्ति करने का वचन दशरथ देते हैं । लेकिन खतरनाक असुरों से लडने के लिए राम को अपने साथ भेजना ही विश्वामित्र की कामना सुननेवाले दशरथ किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं । लेकिन अपनी वचनबद्धता के कारण बालक राम को विश्वामित्र के साथ भेजना पडा ।

तत्पर हूँ सेवा-हेतु सदा तन-मन-धन से
है कुछ भी नहीं अदेय आपके हित मुनिवर !
आपकी किसी भी सेवा के हित मैं तत्पर
सार्थक होने दें मेरे अग्रिम इस प्रण को ।[1]

विश्वामित्र की किसी भी सेवा के लिए दशरथ प्रण देता है और विश्वामित्र की सेवा के लिए वे तत्पर रहते है ।

वसिष्ठ की सलाह से दशरथ अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करते हैं । उसीप्रकार देवासुर संग्राम में कैकेयी की वीरोचित करनी से अपनी जान दो बार बचाने से संतुष्ट दशरथ कैकेयी से दो वर माँगने केलिए कहते हैं । लेकिन कैकेयी उचित समय पर वर माँगना चाहती है । और दशरथ इससे सहमत हो जाते हैं । लेकिन यही वचन-बद्धता दशरथ को अपने जीवन की कुरबानी देने के लिए प्रेरित करती हैं । पिता होने के कारण पुत्र को वनवास की आज्ञा देना मुश्किल है । कल राज्याभिषेक रूपी सुन्दर फूल देकर आज वनवास रूपी कंटक कैसे दे सकते हैं । लेकिन प्रण के बीच तड़प-तड़पकर दशरथ ने अपने प्राण छोड दिये । भारतीय संस्कृति की महिमा ही है कि प्राण देने पर भी प्रण को छोडना मुश्किल है । उसी प्रकार रामायण के अंत में यमदेव से वचन देने के कारण जिन्दगी भर परछाई के समान अपने पीछे चलनेवाले लक्ष्मण को त्याग देने में राम तैयार हो जाते हैं । जनक भी सीता के द्वारा शिवधनु उठाने के कारण उस चाप उठानेवाले से सीता के ब्याह का वचन लिया और उसका पालन करने के लिए जनक की विवशता अत्यंत महत्वपूर्ण हैं । सुग्रीव से मित्रता स्थापित कर बाली का वध करने का वचन श्रीराम ने किया है । राम ने अपने वचन के पालन के लिए छिपकर बाली का वध किया ।

तदेतत् कारणं पश्य यदर्थं त्वं मया हतः ।
भ्रातुर्वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्मं सनातनम् ।।
अस्य त्वं धरमाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः ।
स्नुषायां वर्तसे कामात् स्नुषायां पापकर्मकृत ।।[2]

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूप' - अरूणरामायण - पृ. 17
2. वाल्मीकि रामायण - किष्किंधाकाण्डम् अष्टादश सर्गः - श्लोक 28, 29

मैं ने तुम्हें क्यों मारा है ? उसका कारण सुनो और समझो । तुम सनातन धर्म का त्याग करके अपने छोटे भाई की स्त्री से सहवास करते हो । इस महामना सुग्रीव के जीते-जी इसकी पत्नी रूमाका, जो तुम्हारी पुत्रवधु के समान है, कामवश उपयोग करते हो । अतः पापचारी हो । ठीक उसी प्रकार बालि वध के बाद राज्य लक्ष्मी से मदोन्मत्त सुग्रीव को वचन के पालन के लिए राम लक्ष्मण को सुग्रीव के पास भेजते हैं और सुग्रीव माफी माँगकर प्रतिज्ञा का पालन करते हैं । राम की परछाई के समान हमेशा राम के साथ रहनेवाले लक्ष्मण को भी राम ने वचन-बद्धता के कारण छोड दिया ।

विसर्जये त्वां सौमित्रे मा भूद् धर्मविपर्ययः ।
त्यागो वधो वा विहित हाभयं समम् ।।[1]

सुमित्रानंदन, मैं तुम्हारा परित्याग करता हूँ, जिससे धर्म का लोप न हो । साधु पुरुषों का त्याग किया जाय अथवा वध दोनों समान ही है ।

वचन बद्धता के कारण ही राम लक्ष्मण को त्यागने के लिए प्रेरित हो गये । हमेशा साथ रहनेवाले भाई को त्याग देने के लिए विवश राम का करूण चित्रण रामायण की एक विशेषता है । भ्रातृप्रेम और प्रतिज्ञा के बीच में दम घुटनेवाले राम का चित्रण अत्यंत हृदयस्पर्शी है । रामायण में लक्ष्मण का राम से वियोग एक महत्वपूर्ण प्रसंग है और अनुपम ही है । यह रामायण का अत्यंत मार्मिक प्रसंग भी है ।

भ्रातृप्रेम भारतीय संस्कृति की महनीय विशेषता है । रामायण में उपलब्ध भ्रातृप्रेम अनुपम और अनन्य है । बचपन से लक्ष्मण राम की और शत्रुघ्न भरत की छाया के समान चलते हैं । इसलिए कैकेयी के वरदान से अकेले राम को ही वनवास मिला । लेकिन राम के अलावा एक पल के लिए भी जीना लक्ष्मण केलिए असंभव है । इसलिए लक्ष्मण अपनी प्रिय पत्नी को अकेले छोडकर चौदह वर्ष की लंबी वेला को विरहाग्नि में डुबो कर चले जाते हैं । कैकेयी की कुटिलता से प्राप्त राज्य को तृण के समान मानकर भरत, राम को वनवास देनेवाली माता

---

1. वाल्मीकिरामायण - उत्तरकाण्डम् -षडधिकशततमः सर्गः - श्लोक 13

को कोसते है । अधर्म से प्राप्त राज्य के बारे में सोचकर भरत बेहोश हो जाते हैं । स्वयं कुल का कलंक मानते हैं । दण्डकारण्य में राम के साथ जानेवाले लक्ष्मण को धन्य मानते हैं । रामादि के विपिनवास के बारे में सोचकर भरत पानी के बिना दम घुटनेवाली मछली के समान तडपते हैं । सभासदों से बातचीत करके राम को वापस लेने के निर्णय के बाद ही भरत को चैन मिला । उसी वक्त तक एक पिंजडे में बंदी शेर के समान भरत बेचैन रहते हैं । भरत की इस प्रवृत्ति से सारे लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं और गर्व भी करते हैं । चित्रकूट में आकर भरत राम से उसी समय युवराजा बनाने का आग्रह प्रकट करता है । लेकिन पिता की इच्छा को पूर्ण करने के लिए राम अटल रहते हैं । राम के मन परिवर्तन को असंभव मानकर भरत अयोध्या लौटते हैं । लेकिन राम के प्रतिनिधि के रूप में उसकी पादुकाएँ लेते हैं । जिसप्रकार राम वन में कंद, फल, मूल खाकर जटामुकुट धारण कर, वल्कल पहनकर जीते हैं उसी प्रकार भरत नंदीग्राम में जीवन व्यतीत करते हैं । राम कुशशय्या पर सोने के कारण भरत भी फर्श पर कुश बिछाकर सोते हैं । संत के समान जीने पर भी राम के धरोहर को सुरक्षित रखने केलिए भरत हमेशा जागरूक है ।

लक्ष्मण वन में भी राम के पास सदा भ्राता की आज्ञा के पालन के लिए उपस्थित है । शूर्पणखा की कुटिलता से उदासीन होकर राम उसकी नाक-कान काटने के लिए आज्ञा देते वक्त, सीता राम की खोज में न जाने केलिए हिचकनेवाले लक्ष्मण को कटुवचन देते वक्त, सीता के वस्त्राभूषण आदि पहचानते वक्त, सुग्रीव को अपनी प्रतिज्ञा के बारे में याद दिलाने के लिए आते वक्त, सीता की अग्निपरीक्षा के वक्त, सीता को वन छोडने के लिए ले जाते वक्त, राम द्वारा लक्ष्मण का त्याग करते वक्त, लक्ष्मण का भ्रातृप्रेम स्पष्ट हो जाता है । लक्ष्मण के समान शत्रुघ्न भी भरत के साथ ही रहते हैं ।

भारतीय संस्कृति के अनुसार अंगों से युक्त संयुक्त परिवार होता है । इसमें हरेक सदस्य दूसरों के लिए जीते हैं । रामायण में पुत्रेष्टि यज्ञ के उपरांत उत्पन्न खीर को दशरथ ने दो भागों में बाँटकर कौसल्या और कैकेयी को ही दिया है । लेकिन दोनों पत्नियों ने उससे दो भाग सुमित्रा को [illegible]

व्यवहार और ममता है । 'जानकी जीवन'में इसका स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध है । परिवार के सदस्यों के पारस्परिक मिलन और वार्तालापों से उत्पन्न शांति और मनोरंजन का महत्वपूर्ण वर्णन यहाँ उपलब्ध होते हैं ।

इसके अलावा "साकेत", "साकेत-संत", "ऊर्मिला", "नंदीग्राम" आदि काव्यों में भी सास-बहु और अन्य लोगों से स्वच्छ व्यवहार देख सकते हैं । सपत्नियाँ होने पर भी परस्पर विश्वास, आदर, ममता, दया आदि भी है । "सीता-समाधि", "नंदीग्राम" जैसे काव्य में इसके उदाहरण प्राप्त होते हैं । कैकेयी जैसी माँ, इसप्रकार करना विधि-विधान ही मानती है । नियति के विधान को समझना कठिन है । इसलिए अत्यंत प्यार भरी माँ क्षणभर में परिवर्तित होकर भयानक वर माँगने की चेष्टा करती है ।

इसके अलावा भारतीय संस्कृति के अनुसार प्राकृतिक शक्तियों की पूजा, यज्ञ, आदि का महत्व-पूर्ण स्थान है । रामायण में पहले ही पुत्रविहीन दशरथ पुत्रलब्धि केलिए पुत्रेष्टि यज्ञ करते हैं और उससे उसकी इच्छा की पूर्ति हो जाती है ।वसिष्ठादि द्वारा यज्ञ करने का वर्णन है । मुनिगण अपने यज्ञ से दुनिया की रक्षा का दायित्व लेते हैं । रामादि,वन जाते वक्त गंगा पार करने केलिए गंगा से प्रार्थना करते है । लंका की ओर जाने केलिए पुल बाँधने केलिए वरूण से प्रार्थना करते है । त्रिलोक कंटक रावण को खत्म करने के लिए असफल होते समय अगस्त्य द्वारा राम को सूर्यदेव की "स्तुति", आदित्य स्तुति" करने और आदित्य हृदय मंत्र जपने का उपदेश देते हैं और उससे राम की कामना पूर्ण हो जाती है । इसमें सबसे बढ़कर सीता अपनी पातिव्रत्य की परीक्षा के वक्त दिल फाडकर पृथ्वी से प्रार्थना करने के कारण पृथ्वी देवी स्वयं आकर उसको लेती है । इससे स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति में मनुष्य और उसके पर्यावरण से कितना अटूट संबंध है ।

भारतीय संस्कृति में एकपत्नीव्रत की महत्ता भी है । राम की अमूल्य जिन्दगी इसका प्रमाण है । लेकिन बहुपत्नियों की प्रथा गृह कलह का कारण भी हो सकता है । इसप्रकार अच्छे और बुरे कर्मों की ओर भी रामायण में इशारा है ।

सामाजिक परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत पारिवारिक आदर्श है । मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण उनको महान बनाने के लिए प्रथम रास्ता दिखानेव विद्यालय उसका अपना परिवार ही है । परिवार के लोगों से सद् आचरण करनेवाला ही समाज में और देश में उत्तम मनुष्य बन सकता है । उसको इसप्रकार बनाने के लिए घर के हरेक व्यक्ति को अपना महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए । इसका उत्तम उदाहरण हम रामायण में देख सकेंगे । परिवार की सुसंगठित व्यवस्था एक व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । उदाहरण के लिए रामायण में दशरथ की आज्ञा का पालन करने के लिए कल के युवराजा राम चौदह वर्ष के लिए वन जाने के लिए तैयार हो जाता है । अपने आदर्श भ्रात के पादसेवन केलिए भाई और पतिव्रता धर्म पालन के लिए पत्नी भी उसके साथ घोर वन जाने के लिए तैयार हो जाते हैं । दूसरों के आँसुओं से भोगनेवाले महत्वपूर्ण सिंहासन को जो पिता को मृत्युलोक में अचानक भेजने के लिए कारण बन जाते हैं उसको तृण के समान त्याग कर भाई से माफी माँगने के लिए जानेवाले भरत जैसे भ्राताओं का चित्र आदर्श पारिवारिक व्यवस्था का सफल प्रमाण है ।

पारिवारिक गठन के लिए अनेक महत्वपूर्ण पहलू है । इनमें एक है पति-पत्नी का संबंध । पति-पत्नी का संबंध अच्छा नहीं है तो परिवार की स्थिति अत्यंत शोचनीय हो जाएगी । इसका स्पष्ट प्रमाण हमें रामायण और आधुनिक रामकाव्य में उपलब्ध है । आदर्श भारतीय परिवार में पति की स्थिति सर्वोत्तम है । पत्नी का सुख पति पर निर्भर है । पति के सुख केलिए सपत्नियों को साथ रखने के लिए आदर्श भारतीय नारी तैयार थी । इसलिए दशरथने कौसल्या के अलावा कैकेयी और सुमित्रा को भी रानियाँ बनायी थीं ।

पति और पत्नी के बीच आपसी विश्वास और धारणा होनी चाहिए । जीवन संगिनी पत्नी से पति को कुछ भी छिपाकर रहने की आवश्यकता नहीं है । दशरथ अपनी पत्नी कैकेयी से छिपाकर, उसके बेटे को माँ के घर भेजकर राम को युवराजा बनाना चाहते हैं । अपने पति के विश्वास में रहनेवाली कैकेयी इस कपटता के पर्दाफाश के बाद सच्चाई पहचानते समय गृहलक्ष्मी पत्नी, कुलकलंकिनी बन जाती है ।

नारी नागिन बन गई उपेक्षा के कारण
अनुचित प्रलोभ से हुआ अचानक दूषित मन
कटुता का गरल पिलाना कितना सरल काम
करती कैकेयी कुटिल मन्थरा को प्रणाम ।[1]

उपेक्षित नारी नागिन के समान दूषित हो जाती है । जलनेवाली अग्नि में घी को ही डालने के समान मंथरा का काम उसे अत्यधिक कटु बनाती है ।

घर के दीपक से घर में आग लगा न कभी
अनुचित अन्याय-अनल-कण को सुलगा न कभी ।[2]

इसप्रकार का आचरण करने से स्वयं और अन्य सपत्नियों को ही वैधव्य के सागर में गिरा दिया । अपने पुत्रों और बहुओं को विरहाग्नि में तडप-तडपकर जीने के लिए विवश किया । अपने पति की अकाल मृत्यु का कारण बन गया । लेकिन दशरथ उससे पहले अपने निर्णय के बारे में बताते है तो इसप्रकार का विनाश नहीं हो सकता । उसीप्रकार दशरथ को करनी कुल की रीति-रिवाज़ के अनुसार कैकेयी मानें तो वैधव्य नहीं सहन करनी पडती । आदर्श परिवार को कोई बिगाड नहीं सकता । कैकेयी मंथरा की कूटनीति से सहमत न हो जाएगी तो स्वच्छता से बहनेवाली गृह-सरिता में लहरें नहीं हो सकती है । इसप्रकार पति और पत्नी के रिश्ते में दरार पडने के कारण अहल्या को शाप मिला । पति और पत्नी

आपस में विश्वास और समझ के साथ रहना चाहिए ।

यौवना अहल्या से भी टूट गया संयम
उन्मुक्त वासना पर घिर ही जाता है तम
आपकी उपस्थिति में भार्या विकल न हुई
भीतर की काम-किरण चंचल चपला न हुई
तप इधर आपका और उधर उसका तपना
हैं दोनों का अंतर-महत्व अपना-अपना

---

1. पोद्दार रामावतार अरुण - अरुणरामायण - पृ. 137
2. वही - पृ. 151

तप अनल आप में इधर, उधर कामाग्नि ज्वाला
दोनों की सत्य-चेतना पर था खडा काल ![1]

यहाँ गौतम और अहल्या में आपस में समझ का अभाव है । इसलिए दोनों को असहनीय पीडा सहन करना पडा ।

मंदोदरी रावण की भलाई के अलावा और कुछ नहीं चाहती । इसलिए रावण की सपत्नियों के रहने पर भी वह तैयार हो जाती है । रावण की सुख शांति के लिए हमेशा मंदोदरी सहायता करती रहती थी । उसकी भलाई और बुराई को समझाने का प्रयास भी करती थी ।

पति-पत्नी के महत्व को स्पष्ट दिखानेवाले आधुनिक रामकाव्य के अनेक उदाहरण है । "सीता समाधि" में कवयित्रि ने यह स्पष्ट बताती है -

सखी पुरुष की अंतरंग है, सुख दुःख की साथी भार्या है,
मूल काम की अर्थ धर्म की, रोग शोक की परिचर्या है ।
नारी नर की परम शक्ति है, वही हृदय की परम भक्ति है ।[2]

इसीप्रकार पति-पत्नी के परस्पर विश्वास और प्रेम का सफल रूप चित्रण हमें राम-सीता, लक्ष्मण-ऊर्मिला, भरत-माण्डवी, अत्रि-अनसूया, आदि पात्रों में उपलब्ध है । राम केवल अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए अकेले वन जाना चाहते हैं । लेकिन पतिव्रता-धर्म पालन करनेवाली पत्नी होने के कारण सीता पति के साथ चाहे वन या और किसी दुर्गम स्थान में जाने के लिए तैयार है । पतिव्रता नारी के लिए पति के सामीप्य के अलावा और कुछ भी इस दुनिया में महनीय आदरणीय नहीं है । इसीप्रकार सीता से बढकर ऊर्मिला अपने पति की हितैषी ही है । भ्रातृसेवा केलिए वन जानेवाले लक्ष्मण ऊर्मिला से माँ की रक्षा करने की आज्ञा देते हैं और ऊर्मिला स्वयं मन से कहती है -

---

1. पोद्दार रामावतार अरुण - अरुणरामायण - पृ. 33
2. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 177

आई है कठिन अवधि ऊर्मिला - परीक्षा की
मैं प्रबल वीर की पत्नी हूँ, सह लूँगी सब
× × × × × ×
पर विघ्न न दूँगी कभी, सहर्ष पुकारूँगी
उत्तम सेवा केलिए सदा ललकारूँगी ।

पति के साथ रहकर भी एक प्रकार की विरह पीडा में रहनेवाली माण्डवी पतिव्रता धर्मपालन के लिए हमेशा तत्पर है । आधुनिक रामकाव्य में सीता पति की महिमा में कोई आँच न पडने के लिए स्वयं वन जाना चाहती है । उचित शासन के लिए पति को संकेत भी देती है । "प्रवाद पर्व" काव्य में पतिव्रता पत्नी सीता का ज्वलंत रूप उपलब्ध है ।

माता-पिता तथा बच्चों का संबंध परिवार का एक महत्वपूर्ण अंग है । पिता अपने बच्चों की भलाई के लिए जीवन त्याग करने के लिए भी तैयार हो जाते हैं । इसका स्पष्ट प्रमाण हमें रामायण और आधुनिक रामकाव्य में उपलब्ध है । अपने प्रिय पुत्र को असुर निग्रह के लिए वन में भेजने के लिए विश्वामित्र की इच्छा सुनकर दशरथ बेहोश हो जाते हैं । पुत्र के स्थान में स्वयं ससैन्य विश्वामित्र के साथ वन जाने के लिए तैयार हो जाते हैं । उसी प्रकार अपने पिता की वचनबद्धता को पूर्ण करने के लिए राम एक बार ही नहीं दो बार वन जाने के लिए तैयार हो जाते हैं । सच्चे बेटे पिता को हरेक मुसीबत से बचाने के लिए तत्पर है । इसलिए याग रक्षा के लिए राम को वन भेजने में हिचकनेवाले दशरथ के सामने कोपांध विश्वामित्र को शांत बनाने के लिए अपने पुत्र को युवराज बनाने के लिए, हठ में अटल रहनेवाली कैकेयी की इच्छा को पूर्ण करने के लिए राम वन जाते हैं । राम की पितृ भक्ति के सामने कैकेयी तृण सी लगती है । यदि पिता राम को अग्नि में कूदने या गरल पान करने के लिए आज्ञा देते तो सहर्ष आज्ञा को शिरोधार्य करने में राम तैयार है । इसका प्रमाण हमें वाल्मीकिरामायण में वनयात्रा केलिए दशरथ से आज्ञा माँगनेवाले राम के वचनों से स्पष्ट होते हैं ।

---

1. पोद्दार रामावतार अरूप - अरूणरामायण - पृ. 182

माता-पिता-पुत्री के संबंध का वर्णन "विदेह" काव्य में उपलब्ध है । माता-पिता अपनी बच्चियों को उचित शिक्षा, आचार, व्यवहार आदि के लिए समय-समय पर चेतावनी देते है ।

परिवार की सफलता बच्चों के पारस्परिक प्रेम में निहित है । इसका प्रमाण भी हमें सभी रामकाव्यों में उपलब्ध है । राम पिता के आदेश से वन जाने के लिए तैयार होते वक्त लक्ष्मण राम के साथ वन जाने के लिए तैयार हो जाते हैं । उनकी राय में

वह नर अनाथ जिसको न मिला कोई भाई
बन्धुत्व विमलता पर मातृत्व-प्रभा छाई
वह अनुज धन्य जिस पर अग्रज का सहज स्नेह
भाई अनेक पर उनका आत्मिक एक देहा ।[1]

राम बार बार समझाने का प्रयास करते है फिर भी उनका मत यही है । उसी प्रकार अपने प्रिय भाई को वन भेजकर, पिता को अचानक मृत्यु के कराल हस्त में देकर पापपंकिल राज्य लक्ष्मी को स्वीकारने में भरत तैयार नहीं है । भरत विशाल साम्राज्य से बढ़कर अपने प्रिय भ्राता का सामीप्य चाहते हैं । इसलिए इसके कारण बननेवाली माता को फटकारते है । राम को वापस ले जाने के लिए निर्णय न होने तक भरत बेचैन रहते हैं । पिता को दाहसंस्कार की चिंता भी उसमें बाद में होता है । माता की बुरी प्रवृत्ति का फल बच्चों पर पडता है । इसलिए भरत सेना सहित राम को वापस बुलवाकर युवराजा बनाना चाहते है । राम जिस प्रकार अपनी प्रतिज्ञा में अटल है भरत भी अपने निर्णय में उससे भी बढ़कर अडिंग रहते हैं । राम वापस न आने के कारण उनकी पादुकायें राम की प्रतिनिधि के रूप में लाकर भरत ने राम से अपना चौगुना महत्व स्थापित किया है ।

भरत विवश तब आज्ञा मान, प्रतिनिधि ही तब रहे प्रजार्थ ।
लेगा वह न आपका स्थान, स्व-पादुका दे नृपासनार्थ ।
राम अवाक्-नेत्र - जल-धार, चकित व्यक्ति से सब ही मौन
बन्धु ! गया मैं तुमसे हार ; धन्य भरत सा जग में कौन ।[2]

---

1. पोद्दार रामावतार अरूण - अरूणरामायण - पृ. 176
2. चाँदमल अग्रवाल 'चाँद' - कैकेयी - पृ. 165

भ्रातृत्व के उत्तम रूप भरत राम से यह भी बताते है कि चौदह वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद वापस न आऐं तो अग्नि में कूदकर प्राणत्याग करने का वादा भी भरत करते हैं । भरत का भाव देखकर जनक भी आश्चर्य चकित हो जाते हैं ।

भाई की परछाई के समान, भाई के अलावा दूसरी दुनिया भी न देखनेवाला लक्ष्मण भ्रातृत्व भाव का उत्तम उदाहरण है । राम केवल अपने पिता के यशोगान में कलंक न आने के लिए वन जाने के लिए तत्पर होते है तो लक्ष्मण स्वयं भाई की सेवा केलिए वनवास स्वीकार करते हैं । पंचवटी प्रसंग, सीता की कटुवाणी सुनकर राम की खोज में जाते वक्त लक्ष्मण की यह भ्रातृभावना ही स्पष्ट होती है । उसीप्रकार सीता की खोज में जब वे सुग्रीवादि के पास पहुँचते है तब उन्हें सीता के आभूषणादि दिखाते वक्त लक्ष्मण सीता के नूपुरों को पहचानते हैं क्योंकि सीता के पीछे चलते वक्त उनकी दृष्टि केवल सीता के चरणों पर ही पडती है ।

एवमुक्तस्तु रामेण लक्ष्मणों वाक्यमब्रवीत् ।
नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले ।।
नूपुरे त्वभिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ।[1]

श्रीराम के ऐसा कहने पर लक्ष्मण बोले - "भैया ! मैं इन बाजूबंदों को तो नहीं जानता और न इन कुण्डलों को ही समझ पाता हूँ कि किसके हैं परन्तु प्रतिदिन भाभी के चरणों में प्रणाम करने के कारण मैं इन दोनों नूपुरों को अवश्य पहचानता हूँ । भ्रातृत्व की चुडामणि लक्ष्मण भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं । लेकिन इससे एकदम विपरीत भाई के प्यार से दूर रहने के कारण रावण का नाश होता है । प्रिय भाई विभीषण द्वारा बार-बार चेतावनी देने के कारण उसको राजमहल से निकाल दिया । वंश की रक्षा के लिए विभीषण ने राम के श्रीचरण में शरण लिया । विभीषण राम के पास चले गये और शरण देने की प्रार्थना भी की है । उसीप्रकार प्रिय भाई सुग्रीव की पत्नी को अपनी पत्नी बनाने के कारण

---

1. वाल्मीकिरामायण - किष्किंधाकाण्डम् षष्ठः सर्गः - श्लोक 22

बालि अधर्मी बन गया और राम बाण से परम गति प्राप्त की । इसप्रकार भलाई और बुराई का प्रमाण भी है ।

परिवार की सुस्थिति में नर-नारियों द्वारा अपनी सीमित मर्यादा को छोडना बुरा काम है । शूर्पणखा जैसी नारी अपनी इच्छा के अनुरूप परपुरुषों की प्राप्ति केलिए पत्नी समेत और एकपत्नीव्रत की महिमा समझाने पर भी हठ करने के कारण विरूपा बन जाती है । इसके फलस्वरूप संपूर्ण वंश का नाश होता है । इसीप्रकार एक नारी के मोह में फंस जाने के कारण संपूर्ण वंश को यम के कराल हस्त में देनेवाले रावण ने नर की सारी मर्यादाओं को तोड दिया

पतिव्रता नारी की महिमा को स्पष्ट दिखानेवाला चरित्र है सीता का । त्रैलोक्य शक्तिशाली रावण सीता के सामने राम की तुलना में तृण से भी तुच्छ है । साम, दान, भेद, दण्ड भी उसके मन में कोई परिवर्तन न ला सका । अग्नि-परीक्षा की वेला में सीता का पातिव्रत्य अनुपम दिखती है और अंतिम अग्निपरीक्षा में भूमि फटकर उसकी महिमा को स्पष्ट दिखाकर वापस चली जाती है ।

राजनैतिक आदर्श :-

आधुनिक रामकाव्य में राजनैतिक आदर्शों को भी महत्वपूर्ण स्थान मिला है । क्योंकि आधुनिक युग में राजनीति के क्षेत्र में, कोई सुरक्षा या संतुलित स्थिति नहीं है । इसलिए राजनैतिक विघटन की ओर इशारा करने के लिए आधुनिक कवियों ने रामायण को ही आश्रय माना है ।

आधुनिक काल में राजा से बढकर प्रजा की प्रधानता है । इसलिए आधुनिक कवियों ने प्रजा को महत्वपूर्ण स्थान देकर काव्य सृजन किया है । "साकेत" में श्री मैथिलीशरण गुप्तजी ने इस तत्व को महत्वपूर्ण माना है । "ऊर्मिला" काव्य में कवि ने खुलकर बता दिया है कि शासन प्रजा की भलाई के लिए होना चाहिए ।

विदेह" में राजा की महिमा का वर्णन पोद्दारजी ने किया है :-

धरती राजा की नहीं, मनुज की ही केवल
राजा तो केवल रक्षक है, न्यायी है, सेवक, पहरी है
वह नृपति जो कि सम-न्याय लिये
करता सुकर्म इस धरती पर वह कर्म योग मानव: ।[1]

राजा और प्रजा को समानता देकर शासन की महिमा को अतुलनीय स्पष्ट दिखाते ।

"संशय की एक रात" में प्रजा की सलाह से युद्ध के लिए सहमत होनेवाले राजा का रूप हम देख सकते हैं । राजा अपनी इच्छा से शासन नहीं र सकते । प्रजा की सहायता एक अनिवार्यता सिद्ध होती है । आदर्श राजा ा रूप यहाँ उपलब्ध है । "शंबूक" काव्य में आदर्श राजा और राज्य का वर्णन । शंबूक राम से खुलकर यह बताते हैं कि

लोकनायक वही जो
संवेदना का मर्म समझे
धर्म और अधर्म समझे
कर्म और अकर्म समझे ।[2]

प्रजा की प्राण रक्षा ही राजा का महान कर्तव्य है । इससे लग हो तो राजा का अधिकार या शासन नहीं है । और आदर्श राजा की इस ुनिया में दो पत्नियाँ हैं एक उसके शासन से सुरक्षित पृथ्वी दूसरा ही अपनी ात्नी । राजा को प्रजा के हित के लिए अपने राज्य को ही छोडना चाहिए ।

सम्राट की भुवन में युग पत्नियाँ है,
है एक राजमहिषी, महि दूसरी है ।
यों तो सप्रेम प्रतिपालन-योग्य दोनों
है त्याज्य राजमहिषी महि के हितों में ।[3]

---

1. पोद्दार रामावतार "अरूण" - अरूणरामायण - पृ. 65
2. जगदीश गुप्त - शंबूक - पृ. 48
3. राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीय आत्मा" - जानकी-जीवन - पृ. 102

हरेक व्यक्ति अपनी भलाई के लिए काम करता रहता है लेकिन राजा को सब की भलाई को अपना कर्तव्य मानना चाहिए । एक ही परिवार के समान अपने राज्य को मानकर प्रजा का उस परिवार के सदस्य के समान पालन-पोषण करनेवाला आदर्श राजा है । अपनी सारी सुख सुविधाओं को भी प्रजा के हित के लिए उपयोग करनेवाला आदर्श राजा है ।

राष्ट्र एक कमनीय कुटुम्ब-सा ही,
राष्ट्राधिनाथ जिसका मुखिया महात्मा ।
चिन्ता जिसे सतत है सबके सुखों की
शिक्षा, सुधार, गृह, भोजन, वस्त्र की भी ।।[1]

अरूणरामायण में आदर्श राजा और शासन के अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं । सीता-समाधि और प्रवाद पर्व में कवि आदर्श राजा का रूप और प्रजातंत्र के महत्व को स्पष्ट दिखाते हैं । इसके अलावा "प्रवाद पर्व" में कवि न्याय को ही महत्व देते हैं । न्याय व्यक्तियों के अनुसार संबंधों के अनुसार नहीं, उत्पन्न परिस्थितियों के अनुसार है । राज्य को राजा या प्रजा का ही नहीं, संपूर्ण व्यक्तियों का ही मानते हैं ।

किसी की वैयक्तिकता नहीं
वरन्
संपूर्ण की समग्रता ही राष्ट्र है ।[2]

सच्चे शासन के यशोगान के साथ बुरे शासन की निरूपता को भी कवियों ने स्पष्ट बताया है । अरूणरामायण में कवि ने दुर्बलशासन की परिणति को स्पष्ट दिखाया है -

दुर्बल शासन में राज्य-व्यवस्था छिन्न-भिन्न
विश्वासहीनता ही शासन का पतन चिह्न !
दुर्बल शासन में उचित सुरक्षा-शक्ति नहीं -
जन-मन में पदाधिकारी के प्रति भक्ति नहीं

---

1. राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीय आत्मा" - जानकी-जीवन - पृ. 107
2. नरेश मेहता - प्रवाद पर्व - पृ. 96

उच्छृंखलता, खलता की चारों ओर वृद्धि
संभाव्य कुशासन में न कभी शुभ कार्य सिद्धि ![1]

इससे ऊबकर एक चक्रवर्ती के विरुद्ध साधारण जनता ने, युद्ध का आह्वान किया । इससे रावण की पराजय हो जाती है ।

इसप्रकार आधुनिक रामकाव्यकारों ने सच्चे शासक, शासन और प्रजा को ही महत्व देने के साथ साथ बुरे शासन का भी वर्णन किया है । आदर्श शासन और शासक केलिए महत्वपूर्ण चेतावनी भी देते हैं ।

भक्ति तथा दार्शनिक चिंतन की अभिव्यक्ति

भक्ति उपास्य के प्रति प्रकट करनेवाला प्रेम अनुराग, श्रद्धा, सेवा, पूजन आदि है । भक्ति के माध्यम से उपासक उपास्य से तादात्म्य प्राप्त कर सकता है । इसलिए आदिकाल से ही दुनिया में भक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है । भक्ति के द्वारा भक्त को मोक्ष प्राप्ति भी होती है । हिन्दी साहित्य में भी भक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है । "भक्तिकाल" नामक एक युग का नामकरण तो इसका प्रमाण है ही । यही नहीं अन्य काल की तुलना में हिन्दी साहित्य में भक्तिकाल सुवर्णकाल के नाम से विख्यात है । तुलसी जैसे कविकुलचूडामणि भक्तिकाल की देन माने जाते हैं ।

भक्ति के दो रूप माने जाते हैं । एक सगुण और दूसरा निर्गुण । सगुण भक्ति में उपासक उपास्य को रूप से युक्त सज्जन की रक्षा के लिए दुष्टजनों का सर्वनाश करने के लिए अवतार लेनेवाले माने जाते हैं । इसप्रकार सगुण भक्ति में अवतार का महत्वपूर्ण स्थान है । हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर आधुनिक काल में भी अवतार का महत्व प्रकट हुआ है ।

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरुण' - अरुणरामायण - पृ. 230

निर्गुण भक्ति की अपेक्षा सगुण भक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है । निर्गुण भक्ति में ज्ञान की प्रधानता है तो सगुण भक्ति में प्रेम की प्रधानता है ।

आधुनिक रामकाव्य जैसे "ऊर्मिला", "अशोकवन", "आँजनेय" "चित्रकूट", "नंदीग्राम" "सीता समाधि", "अरूणरामायण" आदि में अवतार के रूप में राम का चित्रण प्रतिपादित है । "ऊर्मिला" में राम को कवि ने अवतार के रूप में स्वीकार किया है -

धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक
तत्व विचार सिखाने को,
आर्य राम अवतीर्ण हुए हैं
जग को पन्थ दिखाने को ।[1]

जग को सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक तत्वों का पन्थ सिखाने के लिए भगवान राम का अवतार हुआ है । आधुनिक रामकाव्यों में अवतार के रूप में राम चरित्र का वर्णन करते समय गांधीजी को राम का रूप मानते है । इसप्रकार का चित्रण "सीता-समाधि" में उपलब्ध है ।

लिया राम ने तन गांधी का, बंधन मुक्त देश को करने ।
बन्द युगों से भारत मां के, जकडे अंगों का दुख हरने
भारत का जग में मान बढाया, सुयश अमर भू मण्डल छाया ।"[2]

भारत माँ के दुखों का अंत करने के लिए राम ने आधुनिक काल में गांधीजी का रूप धारण किया है और भारत का गौरव और सुयश भूमण्डल में अमर बनाया है । इसीप्रकार राम के अवतार का महत्व आँजनेय काव्य में उपलब्ध है -

कभी वह राम, अंज्जनी-लाल
कभी वह कृष्ण, पार्थ प्रणपाल
अकेले योगी राज वह राम
अकेले बुद्ध - ज्ञान - रण - शालि ।[3]

---

1. बालकृष्ण शर्मा नवीन - ऊर्मिला - पृ. 263
2. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 27।
3. [illegible]

समय-समय पर अवतार लेनेवाले परब्रह्म का वर्णन यहाँ है । कभी कभी वे राम, कृष्ण, बुद्ध, मुहम्मद, ईसा, आदि रूप धारण करते रहते है । इसके अलावा राष्ट्र के वीरों को रण की उपयोगिता को भी बताते है ।

आधुनिक राम काव्यों में केवल राम का ही नहीं सीता का भी महत्वपूर्ण स्थान है । राम के समान सीता भी जगवंदिता, जगजननी के रूप में मानी जाती है । "नंदीग्राम" काव्य में सीता की अलौकिकता स्पष्ट है । "अशोकवन" काव्य में इसका स्पष्ट प्रमाण है -

माँ मैथिली, हृदय-कानन में वही रूप लेकर राजो,
अवगुण के इस गहन गेह में भर प्रकाश मंगल साजो ।
आवें रघुकुलरत्न स्वयं जो ध्वंस कर तम की लंका ।
काँपे असुरवृत्तियाँ सारी चाप-ध्वनि से सातंका ।[1]

यहाँ सीता की अलौकिकता स्पष्ट हो जाती है ।

इसप्रकार आधुनिककाल के रामकाव्यों में भी राम और सीता की अलौकिकता कवियों ने स्वीकार किया है । राम को दुनिया की भलाई के लिए अवतार लेनेवाले परब्रह्म के रूप में मानते है और लोकरक्षक के रूप में स्वीकार करते है । राम के समान सीता भी दुनिया के दुख को मिटाने के लिए जन्म लेनेवाली मानी जाती है ।

भारतीय साहित्य में ही नहीं, संपूर्ण विश्वसाहित्य में दर्शन की महत्ता को हम देख सकते हैं । भक्ति की तरह दर्शन का भी लक्ष्य मुक्ति या मोक्ष ही है । भारतीय दर्शन का विश्वसाहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है । इसमें वर्णित, माया, जगत्, जीव, ब्रह्म, जैसे उच्चादर्शों को अपनाना बहुत कठिन है । इसलिए दर्शन के विभिन्न पक्षों को कवियों ने भी अपनाया । भारतीय संस्कृति के एक पहलू के रूप में दर्शन को भी हम देख सकते है ।

---

1. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 5

सुख दुख जीवन में अनिवार्य होते है । दुख और सुख में समभावना रखनी चाहिए । क्योंकि सुख और दुख मन की भावना है । यह मनुष्य की स्थिति के अनुसार है । इसको स्पष्ट बताती हुई चित्रकूट काव्य में सीता अहल्या से स्पष्ट बताती है कि

बोली जनक सुता - है मात्
सुख दुख तो रहता मन में
मन विष्ण्ण तो दुख भवनों में
मन प्रसन्न तो सुख वन में ।[1]

इससे स्पष्ट है कि मन में सुख है तो चाहे वह वन में रहता है या घर में सुख ही सुख है । लेकिन मन में दुख है तो उसे राजभवन में भी सुख नहीं मिलता ।

तन की नश्वरता भी दर्शन का प्रतिपाद्य है । पंच भूतों से मिला हुआ यह तन क्षण भंगुर है । इसलिए निमिषमात्र के लिए मिलनेवाले इस शरीर से जीव का दंभ करना उचित नहीं है । आत्मा ही मनुष्य को संतुष्ट रखते हैं । उस आत्मा से रहित शरीर की स्थिति देखिए -

सडने लगती है देह बिगडने लगती आकृति
कृमि कीटों की भक्ष्य भयावह उसकी संसृति
क्यों हो वह परिणाम मनुज ने यही विचारा
किया धूल को भस्म चिता का लिया सहारा ।[2]

आत्मा अलग हो जाने से आकृति नष्ट हो जाती है । कृमि-कीटों का भक्ष्य बन जाता है । चिता का सहारा लेकर भस्म बन जाता है ।

तन की नश्वरता का वर्णन चित्रकूट काव्य में भी उपलब्ध है ।
भस्म कीट-मल होनेवाले
तन को पाकर भूला है ।

---

1. रामानंद शास्त्री - चित्रकूट - पृ. 25
2. बलदेवप्रसाद मिश्र - साकेत-संत - पृ. 66

कहीं मोह की मदिरा पीकर
तू हो जाता है विक्षिप्त,
कहीं क्रोध के कज्जल में ही
नख से शिख तक होता लिप्त ।[1]

तन की नश्वरता और उसको पानेवाले मनुष्य की स्थिति को स्पष्ट करते है । पंचवटी में सुख दुख को जीवन में अनिवार्य मान लिया है ।

प्रेम के महत्त्व को भी आधुनिक कवियों ने स्वीकार किया है । इस प्रकृति की सृष्टि करनेवाले ब्रह्म की स्थिति का वर्णन अनेक कवियों ने अत्यंत सुन्दर रूप में चित्रित किया है । सृष्टि की विचित्रता देखकर बार बार यह प्रश्न उठते हैं कि अम्बर के पार कौन होगा ? लेकिन सब का उत्तर एक ही है जो प्राणी नयन में देख रहा है कोटि उडुदीप जलाकर रोज आचरण का अभिलेख किया करता है । इससे स्पष्ट है कि एक असीम शक्ति इस दुनिया को अपनी लीला का साधन बनाता रहता है ।

सीता-समाधि में ब्रह्म का वर्णन निम्नलिखित रूप में है -

यहाँ जगत में सभी जीव में, व्याप्त ब्रह्म है एक बराबर ।
निराकार वह नर नहि नारी, लीला करता ईश चराचर ।
आत्मा सबकी एक अमर है, सत्य वही सब क्षण भंगुर है ।[2]

सीता-समाधि में भी ब्रह्म की व्यापकता उपलब्ध है ।

विधि या नियति का विधान विचित्र है । विधि सबको भोगन पडता है । इसका स्पष्ट प्रमाण हमें अशोकवन काव्य में उपलब्ध है । स्वप्न दर्शन से सीता अपने पिता से पूछती है कि क्यों मैं इसप्रकार का कष्ट भोग रही हूँ । वनवास और अशोकवन में बंदी के रूप में कितनी यातनायें झेल रही हूँ । तब उसके पिता उसे दिलासा देते हुए इसप्रकार कहते हैं -

पर विधि के विधान की लीला रही अदृष्ट सदा है,
सभी भोगना पडता है, जो जिसके भाग बदा है ।[3]

---

1. रामानंद शास्त्री - चित्रकूट - पृ. 33

विधि के विधान बडे विचित्र है । सबको विधि विधान भागना पडता है । इसलिए दुखी होने की आवश्यकता नहीं है । आगे पुत्री को सांत्वना देते हुए शुभ की प्रतीक्षा करने के लिए भी उपदेश देते है -

मंद भाग का नहीं, भाग्य का ऊँचा तेरा तारा
लाया है दिखलाने को यह कष्ट-क्लेश की कारा ।
अति होती है तभी आर्त की प्राणदायिनी बेला
शुभ प्रभात-पटी पर अपनी करने लगती खेला ।[1]

दुख में निराश होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि दुख के बाद सुख की वेला अवश्य होगी । इसलिए प्रतीक्षा करो ।

नंदीग्राम काव्य में भी विधि के संबंध में चित्रण है । इसके खेल से बचना असंभव है ।

है करण-कारण प्रबल वह शक्ति ही,
तू उसकी एक इंगित मात्र है ।
इस नटी की रंगशाला का महा,
कर्म तेरा एक सकरूण पात्र है ।[2]

विधि या दैवगति हमें मानना ही पडेगा ।

रामराज्य में भी विधि विधान का वर्णन है । इसमें कवि ने विधि की लीला का वर्णन निम्नलिखित रूप में किया है -

होना था सम्राट जिन्हें, वे सहसा हुए विपिनवासी
विश्व-चक्र में सदा सर्वदा किसकी नियति दासी ।[3]

विधि के कारण आज के राजा कल विपिनवासी हो जाता है । विधि के सामने कोई भेद भाव नहीं है ।

---

1. गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 42
2. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 77
3. बलदेवप्रसाद मिश्र - रामराज्य - पृ. 19

कर्म की प्रधानता प्राचीन काव्यों के समान आधुनिक रामकाव्य में भी उपलब्ध है । 'विदेह', 'चित्रकूट', 'सीता-समाधि' जैसे काव्यों में कर्म की प्रधानत देख सकते हैं । मनुष्य को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पडता है । मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसा उसका फल भी मिलता है विदेह काव्य में इसका स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध है -

सौन्दर्य वक्ष पर क्या कठोर साधना हस्त भी है सम्भव
मानव का पतन पतित कर्मों से होगा ही ![1]

मनुष्य के कर्मों के अनुसार फल भोगना पडता है । 'चित्रकूट' काव्य में भी अपनी करन से तडपनेवाली कैकेयी को वसिष्ट आश्वास देते हैं और दशरथ की मृत्यु कैकेयी के कारण नहीं मानते हैं । इसप्रकार कैकेयी को सांत्वना देते हुए वसिष्ट कहते हैं कि

है कैकेयी जगती-तल में
कर्मों की गति न्यारी है,
× × × × ×
इस मानव-तन से हो जाता
यदि अनजाने में भी पाप,
उसका भी फल समुचित होता,
जो निश्चय देता संताप ।[2]

यदि अनजाने में भी कोई पाप करते है तो उसका भी बुरा फल मनुष्य को अवश्य भोगना पडता है ।

इसीप्रकार 'सीता समाधि' में भी कर्मों की महिमा का वर्णन है । मनुष्य की भलाई और बुराई उसके कर्म के कारण है, और सुख दुख भी ।

नहीं हाथ में नर के कुछ भी, भला बुरा जग यश अपयश है ।
हानि लाभ और जीना मरना, सुख दुख सब कुछ विधि के वश है
कोई नहि सुख दुख का दाता, भोग कर्म का नर है पाता ।[3]

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - विदेह - पृ. 77
2. रामानन्दशास्त्री - चित्रकूट - पृ. 61
3. राजेश्वरी अग्रवाल - सीता-समाधि - पृ. 96

मनुष्य के बुरा, भला, दुख, यश, अपयश आदि उसके वश में नहीं है । ये सब विधि के वश में है जो उसके कर्म के अनुसार भोगना पडता है । शंबूक में भी इसप्रकार का वर्णन है । और अरूणरामायण में भी ।

इसके अलावा आधुनिक काल में मनुष्य को ही दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान मिला है जो ईश्वर से श्रेष्ठ मानते हैं । शंबूक में भी मनुष्य को प्रधानता दिया है ।

नारी भावना -

भारतीय संस्कृति की महिमा विश्व में सबसे श्रेष्ठ संस्कृति के रूप में मानी जाती है । क्योंकि इसमें निहित आदर्श और गांभीर्य अन्य देश की संस्कृति में ढूँढना व्यर्थ सिद्ध होता है । भारतीय संस्कृति की महिमा का एक कारण है उसमें स्त्रियों के चरित्र, आदत और व्यवहार कुशलता, आदि । इसलिए प्राचीन काल से ही भारत में स्त्रियों का स्थान महत्वपूर्ण था । लेकिन धीरे धीरे इस स्थिति में परिवर्तन हो गया । भारतीय नारी केवल पुरुष के स्वार्थ-पूर्ति का साधन मात्र बन गयी । शिक्षा ने स्त्री को एक नया मोड प्रदान किया । नारी ने पुरुष के समान कारखाने, दफ्तरों, ऊँचे ऊँचे पदों में काम करने की अपनी क्षमता स्पष्ट दिखाया । नारी जागरण में विश्व साहित्य का स्थान महत्वपूर्ण है । हिन्दी साहित्य भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं है । आधुनिक रामकाव्य में भी कवियों ने यथासंभव नारी की महिमा का वर्णन किया है । मैथिलीशरण गुप्त, नवीन, हरिऔध, बलदेवप्रसाद मिश्र, गोकुलचन्द्र शर्मा, पोद्दार रामावतार अरूण, नरेश मेहता, चाँदमल अग्रवाल भरत भूषण अग्रवाल, राजेश्वरी अग्रवाल आदि प्रमुख हैं ।

"पंचवटी" में मैथिलीशरण गुप्त जी ने नारी के कोमल रूप को स्पष्ट करने के बाद उसका विकराल रूप भी दिखाया है । कोई भी नारी अपनी निंदा सहने के लिए तैयार नहीं है । राम और लक्ष्मण से अपनी इच्छा खुलकर बता देने के बाद सीता द्वारा भी उसके पक्ष में मिलकर हँसी उडाने के कारण

सुन्दरी शूर्पणखा पल में असुर नारी का रूप धारण कर लेती है । यहाँ यह भी स्पष्ट है कि नारी कोई भी हो चाहे राक्षसी या मानवी उसकी निंदा या उपेक्षा से उसका रूप बदल जाता है ।

"साकेत" में भी गुप्तजी ने नारी के सुन्दर रूप का चित्रण किया है । नारी अपने सहयोग से नर की कमियों को पूरा करती हैं और कर्तव्य से परिवार और समाज को सुख शांति प्रदान करती है । नारी रूप का चित्रण "साकेत" में गुप्तजी ने इसप्रकार किया है -

प्रेयसी, किसके सहज-संसर्ग से,
दीखते हैं प्राणियों को स्वर्ग से ।[1]

नारी अपने सान्निध्य से पृथ्वी को स्वर्ग बना देती है । इससे स्पष्ट है कि दुनिया की भलाई में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है ।

'ऊर्मिला' में बालकृष्णशर्मा नवीन जी ने अपने काव्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान देकर अपनी पुनीत नारी भावना को स्पष्ट किया है । नारी देश की सेवा के लिए तैयार होने की प्रेरणा भी देती है । नारी को घर के चारों दीवारों में बंदी रहने की आवश्यकता नहीं है । युद्ध के समय नवीन जी ने नारी की स्थिति का उदात्त रूप इसप्रकार किया है -

कस लो वेणी, काटो-पट बाँधो, ले लो धन्वा, भाले,
चलो, करो ऐसे प्रहार जो अरि के हिय में शाले ।[2]

नारी देश की रक्षा के लिए ऐसे प्रहार करने के लिए चलती है जो रिपु के हृदय में शाले के समान प्रतीत होती है ।

"वैदेहीवनवास" में हरिऔध जी ने नर-नारी की समानता स्पष्ट दिखाया है । एक कौडी के दोनों हिस्से के, समान नर और नारी एक के पूरक के रूप में हरिऔध जी ने माना है । दुनिया को स्थायी रूप में बना रखने के लिए नर-नारी के सहयोग का स्थान महत्वपूर्ण है ।

---

1. मैथिलीशरण गुप्त - साकेत - पृ. 32
2. बालकृष्णशर्मा 'नवीन' - ऊर्मिला - प. 40

किन्तु "साकेत-संत" में बलदेवप्रसाद मिश्र जी नर-नारी में भेद
ट दिखाया है -

पुरुष मन में छवि का विस्तार
नारी-मन में संकोच अपार ।
पुरुष का हो अनन्त पर चाव
नारि का हो एक कान्त पर भाव ।[1]

ष की इच्छाओं को अपार मानते है लेकिन स्त्री की इच्छा सीमित है ।

"विदेह" काव्य में भी नर-नारी को एक दूसरे से अभिन्न माना
ा है । कवि राय में नर-नारी संबंध निम्नलिखित है -

नर को पवित्र जो करे वही नारी विशुद्ध
जीवन-यात्रा के दो पंथी है नर-नारी
दोनों समानता के बन्धन में मुक्तोन्मुक्त है ज्योति लिये ।[2]

से स्पष्ट है कि नर को पवित्र बनानेवाली ही स्त्री है और जीवन रूपी यात्रा
दो साथी है नर-नारी । दोनों में समानता है ।

नर को यदि गर्व है कर्माभिमान पर
नारी गर्वित है अपने नारीत्व पर ।[3]

"लीला" काव्य में गुप्तजी नर-नारी में भेद इसप्रकार स्पष्ट
खाया है कि नारी का संसार सिर्फ गेह या परिवार मात्र है । लेकिन पुरुष
कर्म स्थल विश्व है या संपूर्ण संसार है । इससे स्पष्ट हो जाता है कि गुप्तजी
नारी को गृहलक्ष्मी माना है । और पुरुष को संसार की भलाई के लिए
ंरत माना है ।

'रामराज्य' में बलदेवप्रसाद मिश्र जी ने भी नर-नारी की महिमा
स्पष्ट दिखाया है -

बलदेवप्रसाद मिश्र - साकेत संत - पृ. 26
पोद्दार रामावतार 'अरुण' - विदेह - पृ. 54

तत्व यदि नर है नारी शक्ति कहा ऋषि पत्नी ने यह आप
उभय का होता है जब सहयोग जगत का चलता कार्य कलाप
बुद्धि है नर तो नारी भाव, इष्ट हो नर को जग कल्याण
किन्तु है नारी का यह धर्म, करे वह उत्तम नर निर्माण ।[1]

र की शक्ति रूपी नारी के सहयोग से जगत का कार्यकलाप होता है । और नारी उत्तम धर्म पालन से उत्तम नर का निर्माण संभव होती है ।

"नंदीग्राम" काव्य में भी नर-नारी की भिन्नता स्पष्ट है । याप्रसाद द्विवेदी नर और नारी की महिमा समान मानते हैं और दोनों को ष्ठता भी स्पष्ट बताते हैं -

आर्य नारी के लिए जीवन जगत में,
प्रेम की प्रत्यक्ष प्रतिमा प्रमाणित है ।
नर वही जो एक नारीव्रत विमल मन
है वही नारी जिसे पति प्राण-धन है ।[2]

र-नारी के समान भावना यहाँ स्पष्ट होती है । अच्छी ज़िन्दगी जीनेवाले पतियों की धन्य धरती में देवगण भी जन्म लेना चाहते है । इसलिए नारी ही हीं नर भी धरती की पवित्रा के लिए जिम्मेदार है ।

अरूणरामायण' में नर-नारी की अभिन्नता कवि ने स्पष्ट किया ।

नर से नारी का, नारी से नर का महत्व
है भिन्न नहीं दोनों का मिश्रित प्रेम तत्व ।[3]

ारी के कारण नर का महत्व बढ जाता है और नारी से नर का महत्व भी ।

नर-नारी की महिमा का संपूर्ण वर्णन "सीता-समाधि" काव्य में पलब्ध है । कवि की राय में नर-नारी ब्रह्म का रूप ही है । वे ही ईश्वर और

बलदेवप्रसाद मिश्र - रामराज्य - पृ. 62

गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीगाम - प. 146

या हैं । नर नारायण तो स्त्री और लक्ष्मी है दोनों एक ही प्राण है और शरीर है । पृथ्वी की भलाई के लिए दो रूप लेते है इसमें उच्च नीच ढूँढना भव है । पति पत्नी के पारस्परिक प्रेम से विश्व का कल्याण संभव है । पति-नी का संबंध केवल इन्द्रिय की तृप्ति नहीं जीवन में व्याप्त प्रेम में निहित है । त्नि-पति की सहधर्मी, सहचारी और पथ की अनुहारी है । नारी पुरुष की रंग, सखी है, सुख दुख की साथी है, धर्म-अर्थ, काम, रोग, शोक की परिचर्या । नारी नर की परम शक्ति है । नर-नारी में समानता के बाद आधुनिक वियों ने नारी की महिमा का वर्णन किया है ।

गुप्तजी ने भी अपने काव्य "साकेत" में नारी की महिमा को ष्ट बताया है और ऊर्मिला की विरह पीडा के सामने लक्ष्मण का भ्रातृभाव तृण समान प्रतीत होते है । ऊर्मिला में भी नवीन जी नारी का बखान करते हैं । र्मिला" काव्य में रामादि की दयनीय स्थिति देखकर उसकी रक्षा के लिए चलने ऊर्मिला जैसी नारियाँ तैयार हो जाती हैं । "वैदेहीवनवास" और "प्रवाद पर्व" सीता अपने पति की प्रतिष्ठा के लिए वन जाने के लिए तैयार हो जाती है । शोकवन" काव्य में नारी की महिमा का वर्णन मंदोदरी द्वारा कवि ने स्पष्ट या है ।

कंत ! सत्य ही तेज एक है भरा विश्व नारी का
अद्भुत है आदर्श साथ ही तापस की क्यारी की ।
उसमें ममता किसे न वांछित, किंतु मूर्ति माता की ।
नारी ही है शक्ति स्वयं इस संसृति के त्राता की ।[1]

ों नारी की महिमा मंदोदरी रावण को स्पष्ट दिखाती है और नारी रूपी क्ति के अपमान को सर्वनाश का कारण बताया है ।

"विदेह" में भी नारी को महत्वपूर्ण स्थान मिली है । "विदेह" चित्रित नारी महिमा दृष्टव्य है -

---

[1] गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 32

अबला भी नारी है, सबला भी नारी है
नारी है शक्ति, भक्ति, नारी अनुरक्ति है
नारी है शान्ति और नारी है क्रांति भी
नारी अंगार और प्यार-ज्वार दोनों है
कन्या है, वधू है, माता है एक साथ
चपला है, शीला है और वह गंभीरा भी ।[1]

कन्या, वधू और माता रूप में नारी यह पृथ्वी की शक्ति और भक्ति है ।

नारी की महिमा "आँजनेय" काव्य में भी उपलब्ध है ।

नंदीग्राम में लवणासुर वध के लिए भरत सेना की विजय देखकर असुर नारियाँ युद्ध करने के लिए तैयार हो जाती है । उनकी युद्ध-कुशलता कवि के शब्दों में प्रकट है -

चण्डिका-सी चण्ड निज विक्रम दिखातीं
स्वर्ग के सोपान पर चढती-चढातीं
कर दिखाती लोक का संबंध-सपना
सत्य है बस मृत्यु ही, जीवन न अपना ।[2]

नर को भी पीछे कराके युद्ध में कुशलता दिखानेवाली देशभक्त नारियों का चित्रण यहाँ स्पष्ट होती है ।

इसीप्रकार ही "कैकेयी" काव्य में कैकेयी की युद्ध कुशलता देवासुर संग्राम में वर्णित है । अपने चरित्र में स्वयं कालिमा देकर औरों की उन्नति केलिए तडपनेवाली नारी का चित्रण कैकेयी के रूप में इस काव्य में उपलब्ध है ।

"जानकी जीवन" में नारी की महिमा का वर्णन उपलब्ध है । जो नारी अपने कर्तव्यों को उचित ढंग से करती है वही उचित नारी कहने योग्य नारी को अपनी जिम्मेदारियों को भली भाँति निभाना चाहिए । इससे देश की

---

1. पोद्दार रामावतार 'अरूण' - विदेह - पृ. 237
2. गयाप्रसाद द्विवेदी - नंदीग्राम - पृ. 145

ाई हो जाती है । नारी के उचित रूप का चित्रण राजाराम शुक्ल जी ने म्नलिखित रूप में किया है -

प्रासाद में सुगृहिणी जननी प्रिया है,
सन्मित्र- सी समर में सह धर्मिणी सी ।
सत्सेविका सुमति श्रेष्ठ सहायिका-सी
हृद्देश देश युग की अधिकारिणी भी ।।[1]

के अलावा "अरूण रामायण" में कवि ने नारी की पवित्रता को अत्यंत प्रभावोद्पादक ा से चित्रित किया हैं । अग्निलीक में नारी की अवहेलना से ऊबकर सीता त्महत्या करती है । "सीता समाधि" में भी नारी की महिमा का वर्णन लब्ध है ।

आधुनिक रामकाव्य में केवल नारियों की महिमा ही नहीं, ल्क उनकी बुराईयों को भी स्पष्ट दिखाया है । "पंचवटी" में कवि ने स्पष्ट ाया है कि जब नारी अपने जन्मजात स्त्रैण भाव को छोडकर दिन-रात का परवाह करके घुमते-फिरते हैं तो उसका परिणाम बुरा होगा । ठीक उसी प्रकार ाशोकवन" काव्य में मंदोदरी के द्वारा कवि ने यह स्पष्ट बताया है कि नारी ा सहजता को छोडना उचित नहीं है । नारी की बुराई का परिणाम बुरा ा होता है । "अशोकवन" काव्य में इसका प्रमाण निम्नलिखित रूप में उपलब्ध है -

नारी का आभूषण लज्जा छुट जाय जब कर से
प्रमदा बने प्रगल्भ, करे संभाषण जा पर नर से
भरे रोष में, करे आक्रमण बल के मद में भूले ।
तो नर भी कर ही बैठेगा, जो उसको अनुकूल ।[2]

रह पीडा में तडप तडप कर रहनेवाली ऊर्मिला, माण्डवी जैसी नारी अत्यंत ्ठ है ।

राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीय आत्मा" - जानकी-जीवन - पृ. 110
गोकुलचन्द्र शर्मा - अशोकवन - पृ. 28

बिंब विधान

आधुनिक रामकाव्य के शिल्प पक्ष में बिंबों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है । बिंब से तात्पर्य अंग्रेज़ी शब्द इमेज से है । डॉ. नगेन्द्र की राय काव्य-बिंब शब्दार्थ के, माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी छवि है जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है ।[1] बिंब के द्वारा कवि अपनी कल्पना की सहायता से वस्तु का शब्द चित्र बनाते है । बिंब केलिए प्रस्तुत कविता छोटी होती है लेकिन उसमें निहित कवि का भाव अत्यंत प्रभावशाली लगता है । कवि अपने भावों को शब्द के माध्यम से जो चित्र बनाते है उसे बिंब कहते हैं । कवि भावों को चित्रात्मक, संवेदनीय और तीव्र बनाने में बिंब अत्यंत सक्षम माध्यम है ।

काव्य बिंब के अनेक रूप होते है । डा. नगेन्द्र के अनुसार बिंबों का वर्गीकरण इसप्रकार किया जा सकता है वर्ग (1) - दृश्य (चाक्षुष) श्रव्य (श्रौत), स्पृश्य, घ्रातव्य, और रस्य (आस्वाद्य) वर्ग (2) - (लक्षित और अलक्षित) वर्ग (3) - सरल और संश्लिष्ट, वर्ग -4 - खण्डित और समकालीन वर्ग 5 - वस्तुपरक और स्वच्छन्द ।

बिंबों का वैज्ञानिक वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में हो सकता है -

दृश्य बिंब, (क) स्थिर (ख) गतिशील (ग) व्यापार विषयक

मानस बिंब - (क) भावानुभोदित (ख) विचारानुभोदित (ग) वैज्ञानिक एवं यांत्रिक

संवेद्य बिंब - (क) स्पर्श संबंध (ख) श्रवण संबंध (ग) घ्राण संबंध (घ) आस्वाद्य संवेद्य (ङ) वर्ण संवेद्य ।

आधुनिक युगीन रामकाव्यों में इन सारे बिंबों का प्रयोग उपलब्ध है । आधुनिक रामकाव्यों में बिंबों की प्रधानता देखा जा सकता है । जैसे ऊर्मिला, राम की शक्तिपूजा, अंतर मंथन, संशय की एक रात, शंबूक, प्रवाद पर्व, अग्निलीक आदि काव्यों में बिंबों का सुन्दर रूप उपलब्ध है ।

---

1. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - ऊर्मिला - पृ. 25

ऊर्मिला में बिंबों का प्रयोग उपलब्ध है -

भोली-सी ये चार अबड़ियाँ डोल रही आँगन में,
फूली-फूली आनन्दित है फिरती इस प्रागंण में
मानो वेदों की श्रुतियाँ है, श्रवण छोडकर आई -
अथवा चतुष्कामनाओं में अपनी छटा दिखाई ।[1]

इसमें नवीन जी जनक की पुत्रियों का बिंब वेद की श्रुतियों से ग्रहण किया है ।

राम की शक्तिपूजामें बिंब उपलब्ध है । शब्द प्रधान बिंब निम्नलिखित है -

रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का, तीक्ष्ण-शर-विद्युत-धिप्र-कर वेग प्रखर
शत-शेल-सम्वरण-शील नील नभ गर्जित-स्वर
प्रतिफल परिवर्तित व्यूह-भेद-कौशल- समूह
राक्षस - विरुद्ध - प्रत्यूह -क्रुद्ध-कपि-विषम हुह ।[2]

इसमें शब्दों के द्वारा कवि ने ओजपूर्ण वातावरण की सृष्टि किया है ।

अंतर मंथन

इसमें मूर्त के लिए अमूर्त का आश्रय लेकर भाव को अधिक तीव्र बना दिया है ।

यह हृदय तिमिर सा अंधकार-फैला अनन्त दश दिग्दिगंत
दुख में दो प्रतिशत आभा से फैले नभ में तारक दुरंत ।

भाव बिंबों द्वारा कवि की व्यापक दृष्टि का परिचय मिलता है ।

"संशय की एक रात" में राम के मानसिक तनावों को प्रकृति के माध्यम से स्पष्ट किया है । यथा -

---

1. बालकृष्णशर्मा "नवीन" - ऊर्मिला - पृ. 65
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला - अपरा - पृ. 43

कहीं चारों ओर
हल्का-सा शोर
हाहाकार
शंख-सीपी उगलते
से क्रुद्ध फन बृहदाकार
बोलने में रोदते अंतर स्वयं का
आ रहे किस गर्त से

"शंबूक" में सामाजिक विसंगतियों की ओर व्यंग्य करके बिंब का स्पष्टीकरण किया गया है -

मैं था
मिट्टी का एक जिन्दा घडा
जिसे लोहे की चोट से
तोडा गया
फिर चुपके से
गली के अंधियारे
कोने में
टोट-के-सा छोडा गया

"प्रवाद पर्व" में भी प्रकृति के द्वारा बिंब का चित्रण स्पष्ट होता है ।

सारे के सारे
विनम्र तथा उग्र वर्चस्व
संकल्प जलों की भाँति
नदियों, प्रपातों के रूप में
इस महाकाली
कर्म शिव का अभिषेक कर रहे है ।[1]

---

1. नरेश मेहता - प्रवाद पर्व - पृ. 25, 26

ग्निलीक में राम की सेना के जयनाद से प्रजा को करुण पुकार अनसुना पडता है ।

इस तुमुल विजय-निनाद के नीचे कराहता
अपनी प्रजा का हाहाकार सुनायी नहीं देता ।[1]

ाम अपनी जयभेरी से तत्पर है और प्रजा की पीडा से अनभिज्ञ है ।

तीक योजना -

प्रतीक साहित्य के महत्वपूर्ण अंग हैं । प्रस्तुत के द्वारा अप्रस्तुत ा प्रकटीकरण और स्पष्टीकरण प्रतीक के कारण अत्यंत प्रभावोदपादक हो जाता । "प्रतीक" शब्द का शब्दिक अर्थ है "अंग्रेज़ी "सिंबल" । प्रतीक के प्रतिपादन ा स्वरूप भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल में बदलते रहते हैं । लेकिन बसे महत्वपूर्ण प्रतीकों की सृष्टि आधुनिककाल में उपलब्ध है । क्योंकि आधुनिककाल ं जीवन की जटिलताओं और तनावों को प्रतीकों के माध्यम से अत्यंत प्रखर रूप ा पाठकों तक पहुँचाने के लिए कविगण कुशल बन चुके हैं । इसके कारण आधुनिक ाल में प्रतीकों का महत्व निर्विवाद है । आधुनिक रामकाव्य भी इस दृष्टि से म महत्वपूर्ण नहीं है । प्रतीकों के माध्यम से रामकाव्य युगीन मानव की मस्याओं से और ज़िन्दगी से अत्यंत निकटवर्ती सिद्ध हो चुका है । प्रतीक विशिष्ट र्थ बोध के वे चिह्न है, जो अपने युग, देश, संस्कृति और मान्यताओं से प्रभावित ोने के कारण संदर्भानुसार परिवर्तनीय एवं भावगुणादि से संबद्ध सत्य का अन्वेषण रने के लिए प्रयुक्त होते हैं ।[2]

आधुनिक रामकाव्य में प्रतीकों का बाहुल्य देख सकते हैं । "ऊर्मिला" काव्य में राम आर्य संस्कृति का प्रतीक है और रावण अनार्य संस्कृति का प्रतीक है । ऊर्मिला जीवात्मा का प्रतीक है तो लक्ष्मण परमात्मा का प्रतीक ै । राम की शक्तिपूजा में राम जटिलता और दुर्बोधता से घिरे हुए एक साधारण मानव का प्रतीक है । राम की निराश, चिन्ता आदि आधुनिक मानव के समान ही चित्रित है -

---

1. भरत भूषण अग्रवाल - अग्निलीक - पृ.30
2. डा.उमाकान्त गुप्त - नयी कविता के प्रबंध शिल्प और जीवन दर्शन - पृ.229

यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण-युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नील कमल
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल
देखा, वह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गये नयन-द्वय
धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध ।

द्धि की चरमोत्कर्ष वेला में उस सिद्धि का नष्ट, उससे उत्पन्न पीडा से मानसिक र्ष का चित्र अत्यंत प्रभावशाली रूप में यहाँ उपलब्ध है ।

"आँजनेय" काव्य में प्रतीकात्मकता के संबंध में श्रीबलदेवप्रसाद श्रजी ने कहा है -"इसमें कथानक के पात्रों को एक दूसरी दृष्टि से देखा गया । इसके राम को अनादि कवि माना गया है सीता को उनकी भाषा और मण को उनका स्वर । राक्षसराज मानव समाज की वह स्वार्थान्धता है जो लवती, रूपवती और वात्सल्यवती धरती पर अत्याचार करती वानर हैं ती के सपूत, जिनकी रक्षा के लिए कवि की प्रतिज्ञा होती है कि वह महो को शाचर-हीन करेगा । उस कवि का काव्य है - यह संपूर्ण विश्व, किन्तु उस व्य का सम्यक् रूपदर्शन किया जा सकता है वन्य प्रकृति के ग्राम्य क्षेत्रों में, जिनका ोक है किष्किंधा का वातावरण । किष्किंधा-निवासी आंजनेय हैं विश्व काव्य प्रबुद्ध पाठक, जो काव्य का वास्तविक मर्म समझ सकते हैं । समाज का दानवकल्प ार्थ कवि की भाषा का अपहरण कर उसे चुनौती देता है । भाषा का अपहरण स्कृतिक चेतना की मृत्यु का लक्षण है । जो सच्चे कवि को कभी स्वीकृत हो ही ीं सकता । अतएव कवि का आविर्भाव वहाँ हो जाता है जहाँ प्रबुद्ध पाठक की ाहक चेतना विद्यमान रहती है । धरती के सपूत ऐसे पाठक की प्रेरणा से कवि पहचानते हैं उसके शरणापन्न होते और उसकी सहायता से दानवी आतंक का ध्वंस करने में सक्षम होते है । वाणी के इस चिरन्तन तथ्य को जो चिरपुरातन

निराला - अपरा - पृ. 54

ाकर भी चिर नवीन है, समस्या और समाधान के रूप में उपर्युक्त कथानक के ाथ संश्लिष्ट करके श्री त्रिपाठी जी ने उत्तम काव्य-चातुर्य दिखाया है ।

'रामराज्य' में बलदेवप्रसाद मिश्रजी ने रामराज्य को प्रजातंत्र का ीक माना है । संशय की एक रात में राम आदर्श और कर्तव्य के बीच द्वन्द्व टनेवाले द्विविधाग्रस्त आधुनिक मनुष्य है सीता जनसाधारण की अपहृत स्वतंत्रता ा प्रतीक है । हनुमानादि जनसाधारण का प्रतीक है । विभीषण जीजीविषा ा प्रतीक है प्रतात्मायें कवि के मनोविकारों का प्रतीक है ।

'शंबूक' में राम अपने पार्श्ववर्तियों के हाथ में एक कटपुतली है जो नकी उँगलियों के इशारे में नाचनेवाला है । राम में अच्छा-बुरा समझाने की क्ति भी नहीं है । शंबूक राजकीय सत्ता से कुचला गया साधारण जन का प्रतीक । विभीषण वंचना का प्रतीक है । नारद, वसिष्ठ आदि सत्ता के लिए कोई रा काम करने के लिए भी न हिचकनेवाला शासक का पोषक है । कैकेयी काव्य कैकेयी स्वयं कुरबान करनेवाली राष्ट्रहितैषी का प्रतीक है । प्रवाद पर्व में ाम साधारण जन की स्वाधीनता और अभिव्यक्ति स्वतंत्रता का प्रतीक है । सीता विवेक का प्रतीक है जो पति की किंकर्तव्य विमूढता को मिटाने के लिए स्वयं नवास के लिए तैयार हो जाती है । लक्ष्मणादि राजनैतिक शक्ति का प्रतीक है । ावण सत्ता से मदोन्मत्त राजा का प्रतीक है । अग्निलीक में सीता अपनी ारीत्व की बार-बार अवहेलना से ऊबकर आत्महत्या करनेवाली आदर्श भारतीय ारी का प्रतीक है । राम सत्ता के मोहजाल में पडनेवाले आधुनिक शासक है जिसके सामने पारिवारिक या राजनैतिक आदर्श या कर्म का कोई स्थान नहीं । ारण शासकों की स्वर्णिम वादा के प्रति मोह में रखकर उसकी खोखलापन मझकर उसके प्रति आवाज़ उठानेवाले जंगली जातियों का प्रतीक है ।

"भूमिजा" में सीता अपनी तिरस्कृत नारीत्व से पुरुष को भी ाभानेवाली अदम्य शक्ति रूपिणी आधुनिक नारी का प्रतीक है । राम एकशासन लिए अपने रास्ते में पडनेवाली कंडकों को खत्म करने के लिए तत्पर शासक का प्रतीक ।

क योजना

मिथक की स्वीकृत व्याख्या अनुपलब्ध है । लेकिन अंग्रेज़ी के थ्" शब्द से इसका संबंध जोडा गया है । डा. शंभुनाथ की राय में "साहित्यिक कों को उनके सामान्य अथवा बुनियादी सामाजिक स्वरूप से विछिन्न करके देखा तब मिथकों का सही अर्थ खुलने में और अधिक बाधाएँ आती हैं, क्योंकि कला-हेत्य के मिथक अपनी कल्पनाशील संस्कृति के ऐतिहासिक विकास के बाहर रहकर बनते । उनकी रचना प्रक्रिया गहरे सामाजिक विश्वासों से जुडी रहती है । मिथक में सिर्फ संरचना नहीं होती, एक सामाजिक अंतरवस्तु भी होती है । क की संरचना में परिवर्तन होता रहता है । उसके भीतर से कुछ-न-कुछ हमेशा लता और जुडता रहता है । मिथक द्वारा हर सामाजिक यथार्थ के नये-नये कात्मक या सांकेतिक रूप तब से व्यक्त हो रहे हैं, जब से मनुष्य ने कुछ कहना किया: काव्यात्मक शब्द अथवा कोई कथा । मिथक का अर्थ उस कथ्य में निहित जो मनुष्य व्यक्त करना चाहता है । जिस भाषा में व्यक्त करना चाहता है, भले अवैज्ञानिक अथवा सतह पर झूठी लगे, किन्तु उसका कथ्य सच्चाई से भरा होता मिथक को मनुष्य के ऐतिहासिक अस्तित्व का सामाजिक कथ्य मानना हेए ।

इस प्रकार एक आलोचक ने मिथक के संबंध में लिखा है - "मिथक विचारधारा है जिसमें समाज के सभी सदस्यों की भावना सिक्त होती है " वह हमारे विचार-वैषम्य को समाप्त करके एकता की सृष्टि करता है ।

आधुनिक रामकाव्य में मिथकों का प्रचुर प्रयोग उपलब्ध है । 'राम की शक्तिपूजा' में मिथक का सुन्दर प्रयोग उपलब्ध है । राम और रावण का रामायण की एक महत्वपूर्ण घटना है । इस प्रख्यात घटना के माध्यम से रालाजी" ने मनुष्य में निहित सत् और असत्, देव और असुर कर्मों के अपराजेय का ही रूप दिया है । इससे घटना में मार्मिकता, सजीवता और एक प्रकार नई दृष्टि मिलती है ।

डा. शंभुनाथ - मिथक और आधुनिक कविता - पृ. 3

"संशय की एक रात" में मेहता जी ने युद्ध और उससे उत्पन्न कठिनाईयों को स्पष्ट दिखाने के लिए राम को प्रतीक बनाकर मिथक की महिमा को स्पष्ट दिखाया है ।

वर्ण व्यवस्था और सत्ताधारी लोगों की अनीतियों का पर्दाफाश करने के लिए शंबूक-वध प्रसंग को लेकर डा. जगदीश गुप्त ने मिथकीय कल्पना को साक बना दिया । प्रवाद पर्व में आम जनता की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता और सच्चे शासन और शासक की महिमा को स्पष्ट दिखाने के लिए सीता निर्वासन प्रसंग रूपी मिथक को नरेश मेहता जी ने उपयुक्त माना है । शबरी काव्य में व्यक्ति अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता से, चाहे वह उच्च या निम्न कुलोद्भवा कुछ भी हो, कर्म की सहायता से परमगति प्राप्त कर सकती है । ठीक उसी प्रकार "अग्निलीक" काव्य में सीता को वापस लेने के लिए जाते वक्त से लेकर सीता के भूमि प्रवेश तक की मिथकीय कथा के द्वारा आधुनिक नारी की समस्याओं, शासक की बुराईयों और राजनैतिक कुचक्रों को स्पष्ट दिखाया है ।

इसप्रकार देखें तो आधुनिक रामकाव्य में मिथकों का कुशल प्रयोग उपलब्ध है । समसामयिक सामाजिक, राजनैतिक समस्याओं को स्पष्ट दिखाने के लिए कवियों ने रामायण के चुने गए प्रसंगों को अधिक प्रभावशाली माना है । इसलिए आधुनिक रामकाव्य में मिथकों की महिमा स्पष्ट और सहज लगती है ।

निष्कर्ष :-

इसप्रकार देखें तो आधुनिक रामकाव्य, पारिवारिक, सामाजिक और राजनैतिक आदर्शों से युक्त काव्य है । भारत की पुनीत संस्कृति का सबसे उत्तम उदाहरण भारतीय काव्य रामायण ही है । पारिवारिक आदर्श केलिए इसमें हरेक पात्र सत् और असत् के उदाहरण रूप में प्रकट होकर असत्य पर सत्य की विजय स्थापित करते है । परिवारों के मेल से समाज उत्पन्न होता है । इसलिए पारिवारिक उन्नति को सामाजिक उन्नति मान सकता है । शासन के लिए

अपनी सारी सुख सुविधाओं को छोडकर प्रजाहित के लिए जीनेवाला एकमात्र शासक राम के अलावा दूसरा नहीं है । जनता की भलाई केलिए वे अपनी धर्मपत्नी को ही नहीं अपने भ्राता का भी त्याग करने केलिए तैयार हो जाते हैं । इससे प्रेरणा पाकर यदि कोई पुत्र, भाई, पति, पत्नी या शासक अपनी जिन्दगी को सार्थक बनायें तो उसका महत्व रामायण को ही मिलता है । इसप्रकार ह्रासोन्मुख भारतीय संस्कृति की पुन:प्रतिष्ठा रामायण की महिमा के माध्यम से हो सके तो सार्थकता की बात है । भक्ति और दार्शनिक चिंतन को अभिव्यक्ति, नारी भावना आदि में भी मौलिक और स्वतंत्र दृष्टिकोण है । आधुनिक रामकाव्यों में अपनाया गया है । बिंब, प्रतीक और मिथक का सहज प्रयोग भी आधुनिक रामकाव्य की देन है

उपसंहार

साहित्य भण्डार जिन महान ग्रंथों से भरपूर है, उनमें रामायण का स्थान महत्वपूर्ण है । भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण स्वरूप का समग्र चित्रण रामायण के अलावा अन्य ग्रंथों में इतनी प्रभूत मात्रा में अनुपलब्ध है । यह कृति कालजयी है । आदिकाल से लेकर आधुनिककाल तक रामायण अपने प्रकाशपुंज से ज्योतित रहता है । भारतीय संस्कृति तथा भारतीय विचारधारा के सहज चित्रण द्वारा जनजीवन के शाश्वत मूल्यों का विकास किसी न किसी रूप में रामायण में ही उपलब्ध है ।

आदिकाव्य रामायण परवर्ती कवियों केलिए प्रेरणादायक है । यह विदित हो जाता है कि रामायण से प्रेरणा पाकर रचित कृतियों की संख्या में वृद्धि होती जाती है । आदिकाल में रामायण से प्रेरणा पाकर रचित ग्रंथ इने गिने हैं तो भक्तिकाल में इसकी संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है । रीतिकाल और आधुनिककाल में रामविषयक रचनाएँ लिखी जाती रही है ।

आदिकाल की रचनाएँ तो वीर रस प्रधान नायक के गुणों को महत्व देनेवाली हैं । लेकिन रीतिकाल की रचनाएँ शृंगार रस युक्त है । काल की गति के अनुसार मनःपरिवर्तन की स्थिति हम साहित्य में भी देख सकते हैं क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है और उसमें समाज के वास्तविक स्वरूप के दर्शन हम पाते हैं । इसलिए कविगण भी इसके अपवाद नहीं है । इसके साथ ही आश्रयदाताओं की तुष्टि जैसी प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है । इसलिए राजा लोगों की वाह-वाही के आग्रह से प्रेरित रचना रीतिकाल की एक विशेषता है ।

आधुनिककाल में स्थिति बदल गयी और परिस्थितियों में ो एक प्रकार की विशेषता दिखाई पडती है । विभिन्न काव्य रूपों और ाव्य प्रवृत्तियों का विकास आधुनिककाल की विशेषता है । अध्ययन की विधा के लिए प्रमुख साहित्यकारों और काव्यप्रवृत्तियों के आधार पर आधुनिक ग का विभाजन किया गया है जैसे भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावादी युग, ायावादोत्तर अधुनातन युग । इस प्रकार विभाजित करने से हिन्दी साहित्य काव्यरूपों का स्वरूप स्पष्ट हो गया है । हिन्दी के शीर्षस्थ साहित्यकारों नाम से प्रथम दो खंड विभूषित है तो आगे के खंड प्रमुख काव्य-प्रवृत्तियों अलंकृत है ।

आदिकाल में केवल राम या रामायण के कोई श्रेष्ठ पात्र ही मुख दिखाई देते हैं/लेकिन आधुनिककाल में हरेक पात्र परिस्थितियों और ारित्रिक विशेषताओं के कारण नायक या नायिका बन चुकी है । केवल यक्तिक ही नहीं पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक विशेषताओं ो स्पष्ट दिखाकर स्व के स्थान पर,पर का बोध जगानेवाली काव्यसृष्टि लिए प्रेरणा और शक्ति रामायण से ही आधुनिक कवि को मिलती है । ामायण की महिमा को स्पष्ट दिखाने के लिए यह एक अनुपम माध्यम है ।

आधुनिक युगीन रामकाव्य संख्या में अधिक है । अवधी,-ब्रज ौर खडीबोली में रामकाव्य का सृजन हुआ है । अध्ययन की सुविधा केलिए हाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य, लंबीकविता जैसे काव्यरूपों में विभाजित केया गया है ।

महाकाव्य तो किसी नायक या नायिका के नाम, किसी संग या घटना से विख्यात है जैसे "ऊर्मिला", "कैकेयी", "सीता-समाधि" ।

इसमें तो केवल चारित्रिक मौलिकता के साथ समकालीन समस्याओं की ओर भी इशारा है । महाकाव्य केवल रामायण के समान चित्रित नहीं है । रामायण के उपेक्षित प्रसंग या पात्रों को प्रमुख स्थान देकर चित्रित किया है जैसे "नंदीग्राम" महाकाव्य । रामायण में नंदीग्राम की महिमा का विशद वर्णन नहीं है । इसीप्रकार विदेह राजा की जिन्दगी का सांगोपांग वर्णन भी रामायण में उपलब्ध नहीं है । खलनायक या खलनायिका को भी आधुनिक रामकाव्य एक विशेष दृष्टि से देखने लगे जैसे खलनायिका कैकेयी सद्गुणों के खान, आदर्श माता, राष्ट्रप्रेमी के रूप में हमारे सामने "कैकेयी" महाकाव्य में प्रकट हुई है । उसी प्रकार रामायण के उपेक्षित पात्र ऊर्मिला को आधुनिक रामकाव्य की नायिका बनकर नारी धर्म पालन की महिमा को स्पष्ट दिखाई है । इसप्रकार "साकेत-संत" काव्य भ्रातृप्रेम की महिमा को व्यक्त करके आधुनिक जीवन की प्रथम समस्या पारिवारिक विघटन या अशांति को मिटाने के लिए प्रेरणा देती है । पारिवारिक जीवन की नींव तो आपसी विश्वास और अनुपम प्रेम ही है । इसलिए रामायण में राम ने अपनी राज्यलक्ष्मी को पिता के वचन के पालन के लिए भ्राता को अर्पित किया । लेकिन पितृघातक, भाई के बिछुडन के कारण राज्य सत्ता को भरत ने अपना अपमान माना । इसलिए भ्राता को वापस लाने का दृढ़निश्चय किया । ग्रामोद्धार, राज्य रक्षा जैसी भावनाएँ आधुनिक युग में देखने को नहीं मिलती । नर सेवा को नारायण की सेवा मानकर आधुनिक कवियों ने युग की माँग को पूरा किया ।

खंडकाव्य महाकाव्यों की अपेक्षा लोकप्रिय काव्यरूप लगता है, क्योंकि आज के व्यस्त जीवन में अधिकतर लोग घंटों तक बैठकर महाकाव्य पढने के बजाय कम समय में कुछ हासिल करना चाहते हैं । शायद इसलिए महाकाव्यों की अपेक्षा खंडकाव्यों की संख्या में वृद्धि हुई । उसी समय महाकाव्य में हरेक घटना में ध्यान देने के कारण कोई विशेष घटना पर विशेष

महत्व देने में कविगण असफल प्रतीत होते हैं । इस कमी को पूरा करने के लिए खंडकाव्य एक सफल माध्यम बन चुका है । उदाहरण केलिए "पंचवटी", "संशय की एक रात", "चित्रकूट", "शंबूक", "प्रवाद पर्व" "अग्निलीक" आदि । किसी एक प्रसंग पर अधिक ध्यान देने से इनमें एक प्रकार की विशेषता ज़रूर मिलती है । उदाहरण के रूप में "अग्निलीक" में सीता निर्वासन के बाद सीता की मानसिक ही नहीं शारीरिक स्थितियों का भी वर्णन है । सीता की चिंता का सूक्ष्म वर्णन इसप्रकार अन्य खंडकाव्यों में प्राय: नहीं है ।

आधुनिक गीतिकाव्यों में भी रामायण का प्रभाव देख सकते हैं । राम के अनन्य भक्त लक्ष्मण को सुमित्रानंदन पंतजी ने सर्वोत्कृष्ट चरित्र बनाया । "अशोकवन" नामक गीतिकाव्य में भी कवि ने एक लघुरामायण की सृष्टि की है ।

लंबी कविता "राम की शक्तिपूजा" आधुनिक रामकाव्य के क्षेत्र में एक मणि के समान प्रतीत होती है । राम के मानसिक तनाव को आधुनिक तनावग्रस्त मनुष्य से जोडकर सामान्य मानव के संघर्ष को स्पष्ट दिखाया है । प्राचीन और नवीन काल का मणि-कांचन संयोग इसकी विशेषता है ।

आधुनिक रामकाव्य के कथ्य पक्ष में रामायण के समान और भिन्न रूप से चित्रित प्रसंगों को रामायण के घटना क्रम के अनुसार चित्रित किया गया है । इससे रामायण की विशेषता के साथ-साथ आधुनिक रामकाव्यों की मौलिकता को भी स्पष्ट दिखाया है । इससे रामायण से आधुनिक रामकाव्य तक की विकास यात्रा स्पष्ट हो जाती है । समकालीन और आधुनिक युगीन काव्यों की विचारधारा का अंतर स्पष्ट दिखाना इस अध्याय का लक्ष्य है जैसे अहल्या प्रसंग । रामायणकाल में पतिव्रता नारी

र पुरुष द्वारा दृष्टि डालना ही गलत मानते थे तो आधुनिक काल में दांपत्य जीवन की सफलता पति-पत्नी के सहयोग और आपसी विश्वास में स्पष्ट दिखाते हैं । उसीप्रकार आदर्श राजा राम की बुराईयों को स्पष्ट करके पतिव्रता, आदर्श पत्नी सीता अपने नारीत्व की अवहेलना से उदासीन होकर आत्महत्या करती है । राम के निष्कासन से दु:खी आधुनिक सीता आँसू पी-पीकर पर्णकुटी के कोने में मूर्ति जैसी नहीं रहती बल्कि समाज के खुले वातावरण में जाकर समाज सेवा करती है । जनसमुदाय को आत्मनिर्भरता और साक्षरता के महत्व भी सिखाती है ।

चरित्र-चित्रण के द्वारा रामायण और आधुनिक रामकाव्यों के चरित्रों की महानता का विश्लेषण किया गया है । रामायण के पात्रों की चारित्रिक विशेषता आधुनिक रामकाव्य में कैसे चित्रित है ? इसप्रकार चित्रित करने का कारण क्या है ? चरित्र-चित्रण में पडनेवाले अंतर क्या हैं ? कैसे हैं ? इन बिन्दुओं पर प्रकाश डालना इस अध्याय का उद्देश्य है । रामायण के आदर्श पुत्र, राजा, भ्राता, पति जैसे रूप में चित्रित राम आधुनिक रामकाव्य में परिवर्तित हो गया है । आधुनिक रामकाव्यों में राम के आदर्शों से बढकर राम की कमियों का भी पर्दाफाश करने का प्रयास हम देख सकते है । "शंबूक", "अग्निलीक" जैसे काव्यों में राम के चारित्रिक गुणों के वर्णन के स्थान में चारित्रिक बुराईयों का विशद वर्णन है । लेकिन इससे तात्पर्य आधुनिक रामकाव्यों में राम की गलतियों का ही वर्णन नहीं है । राम के चरित्र के चिरकालीन कलंक को भी दूर करने का सफल प्रयास "प्रवाद पर्व" जैसे काव्यों में उपलब्ध है । लेकिन अधिकांश काव्यों में राम की अनीतियों का वर्णन ही उपलब्ध है । जैसे "भूमिजा", "अग्निलीक", "शंबूक" आदि । सीता-चरित्र की महिमा के वर्णन को आधुनिक कवियों ने प्रधान वर्ण्य विषय बनाया है जैसे "जानकी-जीवन", "सीता-समाधि", "अशोकवन", "प्रवाद पर्व", "भूमिजा", "अग्निलीक" आदि में सीता चरित्र की विशेषता स्पष्ट हो जाती है ।

में तो सीता रामायण के समान आदर्श भारतीय नारी होने के नाते आदर्श
धुनिक नारी भी है ; राम की बुराईयों को आँखें बन्द करके सहने के लिए
तैयार नहीं है । अशोकवन में बन्दी रहने के कारण सीता चरित्र पर शंका
नेवाले राम को देखकर आधुनिक सीता लक्ष्मण को अग्निपरीक्षा का आदेश
ी है । उसीप्रकार लोकापवाद के कारण वनवास करते समय निष्क्रिय नहीं
ती बल्कि जन समुदाय की भलाई के लिए कठिन परिश्रम करती है । "भूमिजा"
सीता की समाज सेविका रूप अत्यंत निखर उठती है ।

लक्ष्मण तो रामायण में क्रोधी रूप में चित्रित हैं तो आधुनिक
ामकाव्य में परिस्थितियों को समझनेवाले आधुनिक संवेदनशील मनुष्य है ।
व्ये पति, भ्राता और पुत्र का रूप भी लक्ष्मण की विशेषता है । भरत की
हिमा का वर्णन "साकेत-संत" और "नंदीग्राम" काव्य से स्पष्ट हो जाते है ।
सप्रकार कैकेयी चरित्र की महिमा का वर्णन करके मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उसकी
ारित्रिक विशेषता स्पष्ट दिखाती है । "कैकेयी" काव्य नामक आधुनिक
ामकाव्य के चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है । ऊर्मिला की
ारित्रिक विशेषता को अत्यंत महत्वपूर्ण ढंग से चित्रित करके उसकी गरिमा
ो भी रामायण से बढकर दिखाया है । चरित्र-चित्रण की दृष्टि से आधुनिक
ामकाव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है । आधुनिककाल में मनुष्य के केवल शारीरिक
ौंदर्य से बढकर उसके मानसिक सौंदर्य को भी अत्यधिक महत्व दिया गया है ।
सलिए हरेक काव्य चरित्र-चित्रण की दृष्टि से उत्तरोत्तर महान है । प्राचीन
ालीन चरित्र आधुनिककाल में उससे एकदम भिन्न दिखाई पडते हैं ।

आधुनिक रामकाव्य का मूल्यांकन अत्यंत महत्वपूर्ण है ।
धुनिक रामकाव्य में पारिवारिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक विशेषताओं का
र्णन उपलब्ध है । इसमें पारिवारिक उलझनों को समाप्त करके संयुक्त परिवार

की बुराईयों को व्यक्त करके उसकी महानता का भी आधुनिक कवियों ने चित्रण किया है । परिवार रूपी वृक्ष के जडों को उखाडनेवाली छिद्र-शक्तियों को समाप्त करके सुख शांतिपूर्ण जीवन बिताने का संदेश आधुनिक रामकाव्यों में मिलते हैं । आधुनिक छोटे परिवार की अपेक्षा संयुक्त परिवार में सब सदस्यों को समानता या महत्व मिलते हैं । लेकिन आधुनिक व्यस्त जीवन में एक घर के सभी लोगों को एकसाथ मिलने की वेला नहीं के बराबर है ।

भारतीय संस्कृति की महानता को स्पष्ट दिखानेवाले अनेक वर्णन रामायण और आधुनिक रामकाव्यों में समान रूप से हम देख सकते है । पति-पत्नी संबंध, बडों का आदर, जैसे पवित्र संस्कृति का प्रमाण आधुनिक रामकाव्य में चित्रित है ।

राजनैतिक उन्नति के लिए प्रजातंत्र को आधुनिक कवि महत्व देत हैं । इसलिए आधुनिक रामकाव्य में प्रजा की भलाई को राजा अपना लक्ष्य मानते हैं । इसलिए "संशय की एक रात" में राम प्रजा की अनर्थकारी युद्ध के बारे में सोचकर किंकर्तव्यमूढ़ रहते हैं । अंत में प्रजा के हित को मानकर ही युद्ध केलिए तैयार हो जाते हैं ।

आधुनिक युग में विज्ञान की बढती धारा को भी कविगण नगण्य मानते हैं क्योंकि सर्वचराचर की सृष्टि करनेवाली शक्ति के सामने विज्ञान एक अणु के समान प्रतीत होते हैं । दार्शनिक चिंतन में भी माया, जगत्, जीव, ब्रह्म आदि को भी मानकर राम शक्ति की महानता को स्पष्ट दिखाते हैं । "अरूणरामायण" में विज्ञान की सत्ता से मदोन्मत्त रावण ईश्वरी सत्ता के सामने नतमस्तक हो जाते हैं । सर्वचराचर में व्याप्त परमशक्ति के सामने विज्ञान की शक्ति से शक्तिशाली रावण तृण के समान प्रतीत होते हैं ।

आधुनिक राम काव्य में नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है । नारी-नर की अर्धांगिनी है गुलाम नहीं है । नर के समान हड्डी, माँस, त्वचा आदि से निर्मित उसके समान लाल रँग के खुन से युक्त जीव है । इसलिए नर के समान उसमें भी सभी वासनाएँ, भावनाएँ है । इसलिए नारी को नर से नीचा दिखाना उचित नहीं है । घर के चारों दीवारों के अंदर बंदी रहने के सिवा आधुनिक नारी खुले वातावरण में जाकर पुरुष के समान समाज को पूर्ण रूप से अपनी शक्ति की सफलता दिखाती है । आधुनिक रामकाव्य भी इससे अलग नहीं है । बिंब, प्रतीक, मिथक आदि की दृष्टि से भी आधुनिक रामकाव्य सफल प्रतीत होते हैं । प्राचीन काल की घटनाओं या पात्रों को आधार मानकर आधुनिककाल की घटनाओं को सफल रूप में चित्रित करने के लिए बिंब, प्रतीक और मिथक अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं ।

आधुनिक रामकाव्य मनुष्य की सभी कमियों और उसकी असलियत को पहचानने के लिए अत्यंत उपयुक्त है । रामकाव्य के माध्यम से आधुनिक कवि विश्व की गरिमामयी भारतीय संस्कृति को अपनाकर विश्व में भारत की अलग पहचान को बनाये रखने का संकेत करते है । " विविधता में एकता " स्थापित करके उसके जडों को दृढ़ रखना हरेक भारतीय नागरिक का प्रथम कर्तव्य है । मातृभूमि की गरिमा को सबसे प्रमुख मानकर, भारत की अखंडता के लिए हमेशा सतर्क रहना हरेक नागरिक का कर्तव्य है । जाति-धर्म-वर्ण आदि के आधार पर मनुष्य को भिन्न-भिन्न श्रेणियों में सीमित रखकर राज्य में अशांति स्थापित करने से कोई प्रयोजन नहीं बल्कि मनुष्य को पहचानना ही महत्वपूर्ण है । रामायण युग-युगों तक कवियों का उपजीव्य बना रहेगा, इसमें बिलकुल सन्देह नहीं । आधुनिक रामकाव्य में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, भाषा शैली, चरित्र-चित्रण जैसे अलग-अलग विषयों के गहन तथा व्यापक अध्ययन की काफी गुंजाइश अब भी है ।

परिशिष्ट - 1

उपलब्ध रामकाव्यों की सूची

निराला ग्रंथावली-पंचवटी प्रसंग	- सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, सन् 1923 ई. वी.
पंचवटी	- मैथिलीशरण गुप्त - 1925
साकेत	- मैथिलीशरण गुप्त - 1931
ऊर्मिला	- बालकृष्ण शर्मा "नवीन" - 1934
राग-विराग - राम की शक्तिपूजा	- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला - 1936
विदेही वनवास	- अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध - 1939
साकेत-संत	- बलदेवप्रसाद मिश्र - 1946
स्वर्ण किरण -अशोकवन	- सुमित्रानंदन पंत - 1947
दक्षिणा	- मैथिलीशरण गुप्त - 1950
अशोकवन	- गोकुलचन्द्र शर्मा (1951)
वैदेह	- पोद्दार रामावतार अरूण - 1954
आँजनेय	- जयशंकर त्रिपाठी - 1956
अंतर मंथन	- उदयशंकर भट्ट - 1958
लीला	- मैथिलीशरण गुप्त - 1960
रामराज्य	- बलदेवप्रसाद मिश्र - 1961
भूमिजा	- रघुवीर शरण मिश्र - 1961
संशय की एक रात	- नरेश मेहता - 1962
चित्रकूट	- रामानंद शास्त्री - 1962
नंदीग्राम	- गयाप्रसाद द्विवेदी - 1963
स्वर्ण धूली - लक्ष्मण	- सुमित्रानंदन पंत - 1963
सौमित्र	- रामेश्वरदयाल दुबे - 1964
आंबुक	- डा. जगदीश गुप्त - 1968
कैकेयी	- चाँदमल अग्रवाल चाँद - 1969
जानकी जीवन	- राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीयात्मा" - 1971

अरूणरामायण	- पोद्दार रामावतार अरूण - 1973
प्रवाद पर्व	- नरेश मेहता - 1977
शबरी	- नरेश मेहता
अग्निलीक	- भरत भूषण अग्रवाल - 1976
रामदूत	- कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह - 1977
सीता-समाधि	- राजेश्वरी अग्रवाल - 1979

परिशिष्ट - 11

अनुपलब्ध रामकाव्यों की सूची

रामचरित चिंतामणि	- रामचरित उपाध्याय - 1920
रामायण	- नाथाराम गौत - 1922
रामस्वयंवर	- महाराज रघुराज सिंह - 1923
वियोगिनी सीता	- काशीप्रसाद दुबे - 1924
चित्रकूट चित्रण	- विद्याभूषण विभु 1924
संक्षिप्त रामचरित	- धरणीधर शास्त्री - 1924
रघुराज विलास	- रघुराज सिंह - 1924
श्री सीता रामचरितायन	- शीतल सिंह गंहरवार - 1925
त्रेता के दो वीर	- श्याम नारायण पाण्डेय - 1928
श्रीमद्रामरसामृत	- अमृतलाल माथुर - 1928
बालकविता माला	- देवीदत्त शुक्ल - 1931
भक्त भारती	- तुलसीदास शर्मा दिनेश - 1931
बालकथा मंजरी	- देवीदत्त शुक्ल - 1931
महावीर मोहनमाला	- काशी प्रसाद - 1932
ईश्वर रहस्य	- हीरा सिंह चंद - 1932
कौशल किशोर	- बलदेवप्रसाद मिश्र - 1934
शबरी	- वचनेश मिश्र - 1936

प्रिया या प्रजा	- गोविन्ददास विनीत - 1937
रुषोत्तम	- तुलसीराम शर्मा - 1939
ानसी	- उदयशंकर भट्ट - 1939
केयी	- शेषमणि शर्मा - 1942
ीरामार्चन	- प्रतापनारायण पुरोहित - 1942
ाम-कृष्ण काव्य	- ऋषिकेश चतुर्वेदी - 1943
क्ष्मण शक्ति	- राजाराम श्रीवास्तव - 1944
पिघलते पत्थर	- डा. रांगेयराघव - 1946
मुल	- श्यामनारायण पाण्डेय - 1948
ामराज्य	- राजनारायण त्रिपाठी कमलेश - 1949
केयी	- केदारनाथ मिश्र प्रभात - 1949
ामकथा कल्पलता	- नित्यानंद शास्त्री - 1949
ामराज्य	- हरिशंकर शर्मा - 1950
विजय पथ	- उदयशंकर भट्ट - 1950
कल्याणी कैकेयी	- राधेश्याम द्विवेदी - 1951
सीता परित्याग	- श्रीरामस्वरूप - 1951
सीता	- चन्द्रप्रकाश वर्मा - 1952
रावण महाकाव्य	- हरदयालु सिंह - 1952
माण्डवी	- कैलाशनाथ वाजपेयी कुमुदेश - 1953
मनमोहिनी रामायण	- मोहन स्वामी - 1955
हनुमान चरित	- रणवीर सिंह - 1955
दशानन	- कैलाश तिवारी विद्रोही - 1958
अग्निपथ	- अनूप शर्मा - 1958
माण्डवी	- हरिशंकर सिन्हा - 1958
ऊर्मिला	- प्रियदर्शी - 1959
बाणांबरी	- रामावतार अरूण पोद्दार - 1961
शबरी	- श्रीमती महादेवी शर्मा - 1963
संजीवन	- रमाकांत शुक्ल - 1965

मानवेन्द्र	- रघुवीरशरण मिश्र - 1965
विरहिणी	- मुंशी राम शर्मा - 1966
शबरी	- रत्नचन्द्र शर्मा - 1966
दिग्विजय	- पद्मसिंह शर्मा कमलेश - 1968
विजयवरण	- रघुवीर शरण मिश्र - 1969
अग्निपरीक्षा	- आचार्य तुलसी - 1970
भगवान राम	- मनबोधन लाल - 1970
निष्कासिता	- परमानंद - 1971
तमसा के पार	- विमुक्तानंद अवधूत - 1971
रावण का विक्षोभ	- त्रिभुवननाथ शर्मा मधु - 1972
भरत	- वाल्मीकि विकट - 1973
कैकेयी का अंतर द्वन्द्व	- श्री उमेश - 1973
माण्डवी	- स्वर्ण किरण - 1973
आँजनेय	- दयाकृष्ण विजय - 1975
एक विश्वास और	- रमेशचन्द्र मिश्र - 1975

सहायक ग्रंथ-सूची

मूल ग्रंथ

अंतर मंथन	- उदयशंकर भट्ट, आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली
अग्निलीक	- भरत भूषण अग्रवाल राजकमल प्रकाशन, प्रा: लि:, पैज बाज़ार दिल्ली, प्र. सं. 1976
अरूणरामायण	- पोद्दार रामावतार अरूण किरणकुंज प्रकाशन, समस्तीपुर, प्र. सं. 1973
अशोकवन	- गोकुलचन्द्र शर्मा हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, प्र. सं. 1951

आँजनेय - जयशंकर त्रिपाठी
साहित्यकार संघ
प्रयाग, प्र. सं. 1956

ऊर्मिला - बालकृष्ण शर्मा नवीन
अंतरचन्द कपूर एण्ड संस,
काश्मीरी गेट, दिल्ली

कबीर ग्रंथावली - संपादक डा. पारसनाथ तिवारी
हिन्दी परिषद, प्रयोग विश्वविद्यालय
प्रयाग, प्र. सं. 1961

कैकेयी - चाँदमल अग्रवाल चाँद
राजकमल प्रकाशन प्र: लि:, फैज बाज़ार
दिल्ली, प्र. सं. 1969

चित्रकूट - रामानंद शास्त्री
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
द्वि. सं. 1966

जानकी जीवन - राजाराम शुक्ल "राष्ट्रीय आत्मा"
सरस्वती सदन, आनंद बाग
कानपुर, प्र. सं. 1971

नंदीग्राम - गयाप्रसाद द्विवेदी
गंगावली पोस्ट अमेटी जिला -
सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश) - प्र. सं. 1953

पंचवटी - मैथिलीशरण गुप्त
साहित्य सदन चिरगाँव (झाँसी)

पुरुषोत्तम राम - सुमित्रानंदन पंत
राजकमल प्रकाशन प्र. लि., फैज बाज़ार
दिल्ली, प्र. सं. 1967

प्रदक्षिणा - मैथिलीशरण गुप्त
साहित्य सदन चिरगाँव (झाँसी)

प्रवाद पर्व - नरेश मेहता
लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग
इलाहाबाद

पृथ्वीराज रासो - चन्दवरदाई - संपादक डा. माताप्रसाद गुप्त
साहित्य सदन चिरगाँव (झाँसी)

भूमिजा - रघुवीर शरण मिश्र
भारतीय साहित्य प्रकाशन
वेस्टेंट रोड, सदर मेरठ

ाग विराग	- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद
ामदूत	- कुंवर चन्द्रप्रकाश सिंह गौरव ग्रंथ प्रकाशन एण्ड प्रिन्टेर्स केन्टोन्मेंट रोड, लखनऊ, प्र.सं. 1977
ामराज्य	- बलदेवप्रसाद मिश्र हिन्दी साहित्य भण्डार, गंगाप्रसाद रोड लखनऊ, प्र.सं.
ीला	- मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सदन चिरगाँव (झाँसी)
देहीवनवास	- अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध हिन्दी साहित्य कुटीर, वारणासी
विदेह	- पोद्दार रामावतार अरूण किरणकुंज समस्तीपुर, बिहार
ाबरी	- नरेश मेहता लोकभारती प्रकाशन, महात्मागांधी मार्ग इलाहाबाद, छठा संस्करण 1989
ांबुक	- डा. जगदीश गुप्त लोकभारती प्रकाशन, महात्मागांधी मार्ग इलाहाबाद
ंशय की एक रात	- नरेश मेहता लोकभारती प्रकाशन, महात्मागांधी मार्ग इलाहाबाद
साकेत	- मैथिलीशरण गुप्त साहित्य सदन चिरगाँव (झाँसी)
साकेत संत	- बलदेवप्रसाद मिश्र विद्यामन्दिर लिमिटेड, कनॉट सरकस, नई दिल्ली
सीता-समाधि	- राजेश्वरी अग्रवाल नाशनल पब्लिशिग हाउस, नई दिल्ली, प्र.सं. 1978
सौमित्र	- रामेश्वर दयाल दुबे, शील प्रकाशन, प्रेम निवास मौनपुरी
स्वर्ण किरण	- सुमित्रानंदन पंत भारती भंडार लीडर प्रेस इलाहाबाद

स्वर्ण धूली - सुमित्रानंदन पंत
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
दिल्ली

आलोचनात्मक ग्रंथ

आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य - डा. हुकुमचन्द राजपाल
भारतीय संस्कृत भवन, भाई हीरा मेठ
जालंधर - प्र. सं. 1972

आधुनिक खंडकाव्य - डा. एस. तंकमणि अम्मा
सर्व प्रकाशन, नई सडक
दिल्ली-6, प्र. सं. 1987

आधुनिक प्रबंधकाव्य संवेदना के धरातल - डा. विनोद गोदरे
वाणी प्रकाशन, दरियागंज,
नई दिल्ली, प्र. सं. 1985

आधुनिक हिन्दी महाकाव्य: संस्कृत साहित्य के परिपार्श्व में - डा. वीणा शर्मा
अनुपम प्रकाशन, चौडा रास्ता
जयपुर -3, प्र. 1967

आधुनिक हिन्दी कविता में बिंब विधान - डा. केदारनाथ सिंह
भारतीय ज्ञानपीठ नेताजी सुभाष मार्ग,
दिल्ली, प्र. सं. 1971

आधुनिक कविता में अप्रस्तुत विधान - नरेन्द्र मोहन
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज
दिल्ली-6, प्र. सं. 1972

आधुनिक हिन्दी कविता की भूमिका - डा. शंभुनाथ पाण्डेय
विनोद पुस्तक मन्दिर होस्पिटल रोड,
आगरा, प्र. सं. 1964

आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - नामवर सिंह
लोकभारती प्रकाशन महात्मागांधी मार्ग
इलाहाबाद - 1, प्र. सं. 1990.

आधुनिक हिन्दी काव्य समस्याएं एवं समाधान - डा. लालता प्रसाद सक्सेना
उपमा प्रकाशन, बापु बाज़ार
उदयपुर, प्र. सं. 1971

आदिकाल की भूमिका - पुरुषोत्तम प्रसाद आसोपा
सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बिस्सों का चौंक
बीकानेर, प्र. सं. 1973

आधुनिक हिन्दी साहित्य का आदिकाल - श्रीनारायण चतुर्वेदी
प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाज़ार
दिल्ली, प्र.सं. 1987

आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना - डा. शुभलक्ष्मी
नचिकेता प्रकाशन, विजय नगर,
डबल स्टोरी, दिल्ली, प्र.सं. 1986

आधुनिक हिन्दी कविता और विचार - डा. नरेन्द्र मोहन भटनागर
भारतीय ग्रंथ निकेतन, कूचा चेलान,
दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं. 1987

आधुनिक हिन्दी काव्य शिल्प (1900-1940) - मोहन अवस्थी
हिन्दी परिषद् प्रकाशन, हिन्दी विभाग,
विश्वविद्यालय, प्रयाग, प्र.सं. 1962

आधुनिक हिन्दी काव्य रूप और संरचना - निर्मल जैन
नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
दरियागंज, नई दिल्ली

आधुनिक महाकाव्यों का शिल्प विधान - डा. श्यामनन्दन किशोर
बिहार विश्वविद्यालय
मुजफ्फरपुर, प्र.सं. 1967

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी - श्रीमती सरला दुआ
साहित्य निकेतन, श्रद्धानंदन पार्क
कानपुर

आधुनिक हिन्दी गीति काव्य विषय और शिल्प - डा. जीवन प्रकाश जोशी
सन्मार्ग प्रकाशन, बैंगलो रोड
दिल्ली, प्र.सं. 1974.

आधुनिक युग में नवीन रसों की परिकल्पना - डा. सुन्दरलाल कथूरिया
विद्यार्थी प्रकाशन, कृष्णनागर
दिल्ली, प्र.सं. 1976

आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रतीकवाद - डा. चन्द्रकला
मंगल प्रकाशन, गोविन्द राजियों का रास्ता
जयपुर, प्र.सं. 1966

आधुनिक हिन्दी महाकाव्यों में संवाद तत्व - डा. रामवीर सिंह शर्मा
राजस्थानी ग्रंथागार, प्रकाशक व पुस्तक
विक्रेता, सोजती गेट के बाहर
जोधपुर, प्र.सं. 1991

आधुनिक हिन्दी प्रबंधकाव्यों का रसशास्त्रीय विवेचन - डा. भगवानलाल सहनी
सर्वोदय वांग्मय पो. एम. आई. टी. ब्रह्मपुरा
मुजफ्फरपुर, बिहार

आधुनिक हिन्दी कविता में अलंकार विधान - डा. जगदीश नारायण त्रिपाठी
अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर
कानपुर, प्र. सं. 1962.

कबीर मूल्यांकन पुनर्मूल्यांकन - डा. कामेश्वर प्रसाद सिंह
विजय प्रकाशन मंदिर, कमच्छा
वाराणसी, प्र. सं. 1992

कवितांतर - डा. जगदीश गुप्त
राधाकृष्ण प्रकाशन, अनसारी रोड
दरियागंज, दिल्ली

कविता कालयात्रिक - डा. लक्ष्मी नारायण
प्रवीण प्रकाशन, महरौली,
नई दिल्ली, प्र. सं. 1988

काव्य के रूप - गुलाब राय
आत्माराम एण्ड संस,
कश्मीरी गेट, दिल्ली

काव्य प्रदीप - पं. रामबहोरी शुक्ल
हिन्दी भवन, टगौर नगर,
इलाहाबाद

काव्य परंपरा और नयी कविता की भूमिका - कमल कुमार
प्रेम प्रकाशन मंदिर, बल्ली मारन
दिल्ली, प्र. सं. 1991.

गोस्वामी तुलसीदास व्यक्ति दर्शन: साहित्य - रामदूत भरद्वाज
भारती साहित्य मंदिर, दिल्ली

चतुष्टयोत्तर छायावादी कवि और उनका काव्य - श्रीमती कृष्ण शर्मा
अन्नपूर्ण प्रकाशन, कानपुर,
प्र. सं. 1989.

छायावादोत्तर काव्य में बिंब विधान - डा. उमा अष्टावंश
सुखपाल गुप्त आर्य बुक डिपो नाईवाला
करोल बाग, नई दिल्ली

छायावाद - नामवर सिंह
सरस्वती प्रेस, बनारस, प्र. सं. 1995

छायावादी काव्यधारा का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन - डा. राज उपाध्याय
आशा प्रकाशन गृह, नाईवाला करोल बाग,
नई दिल्ली, प्र. सं. 1985.

छायावादी काव्य दर्शन - जे. रामचन्द्रन नायर
इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, कृष्णनगर
दिल्ली, प्र. सं. 1976.

छायावादी काव्यधारा के दार्शनिक स्रोत - डा. राजाराम तोमी
आशु प्रकाशन, करनपुर, प्रयाग स्टेशन इलाहाबाद, प्र. सं. 1989

छायावादोत्तर काव्य में बिंब विधान - डा. उमा अष्टावंश
आर्य बुक डिपो, नाईवाला करोलबाग नई दिल्ली, प्र. सं. 1974

छायावादोत्तर काव्य शिल्प - डा. छेदीलाल पाण्डेय
स्मृति प्रकाशन, शाहरारा बाग, इलाहाबाद, प्र. सं. 1976

छायावादोत्तर हिन्दी गीतिकाव्य - डा. सुरेश गौतम
प्रेम प्रकाशन बिल्ली मारन दिल्ली, प्र. सं. 1985.

जननायक राम - डा. भगवानदास वर्मा
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज नई दिल्ली, प्र. सं. 1988.

तुलसी के काव्य में रामराज्य की परिकल्पना - डा. शीलवती गुप्ता
साहित्य प्रकाशन, मालीवाडा दिल्ली, प्र. सं. 1977

तुलसीदासोत्तर राम साहित्य - डा. रामलखन पाण्डेय
अभिनवभारती सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद

तुलसी साहित्य साधन - डा. ललन राय
वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं. 1988

तुलसी साहित्य में नीति-भक्ति और दर्शन - डा. हरिश्चन्द्र वर्मा
संजीव प्रकाशन, कुरुक्षेत्र, प्र. सं. 1983.

तुलसी, सूर और केशव अधुनातन आकलन - डा. रामप्रसाद मिश्र
आधुनिक प्रकाशन, पुरी गली मौजपुर, दिल्ली, प्र. सं. 1989.

द्विवेदी युगीन खंडकाव्य - डा. सरोजनी अग्रवाल
सुलभ प्रकाशन, अशोकमार्ग लखनऊ

नया हिन्दी काव्य - डा. शिवकुमार मिश्र
अनुसंधान प्रकाशन, आचार्य नगर, कानपुर, प्र. सं. 1962.

नयी कविता की प्रबंध चेतना - महावीर सिंह चौहान एवं सरोज पाण्ड्या
गिरिनगर प्रकाशन, पिलाजीगंज
महेसाना (गुजरात), प्र.सं. 1981

नयी कविता कथ्य एवं विमर्श - डा. अरुणकुमार
चित्रलेखा प्रकाशन, आलोपी बाग
इलाहाबाद, प्र.सं. 1988

नयी कविता के प्रबंध, काव्यशिल्प और जीवन दर्शन - डा. उमाकांत गुप्त
वाणी प्रकाशन, दरियागंज,
नई दिल्ली

नयी कविता के नाट्य काव्य - डा. हरिश्चन्द्र शर्मा
शोधप्रकाशन, नई सडक
दिल्ली, प्र.सं. 1977

नयी कविता के मूल्यांकन परंपरा और प्रगति की भूमिका पर - डा. हरिचरण शर्मा,
आशा प्रकाशन गृह, नाईवाला,
करोल बाग, नई दिल्ली, प्र.सं. 1972

नयी कविता में मिथक - डा. राजकुमार
अंकुर प्रकाशन, रामनगर मडोली रोड
शाहदरा, दिल्ली, प्र.सं. 1989.

नयी कविता का वैचारिक आधार - सुधीश पचौरी
राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
अंसारी रोड, दरिया गंज
नई दिल्ली, प्र.सं. 1987.

नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर - डा. संतोष कुमार तिवारी
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाज़ार मथुरा
प्र.सं. 1980.

नयी कविता के आत्मसंघर्ष और अन्य निबंध - गजानन माधव मुक्तिबोध
विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर बांच
जबलपुर, वाराणसी, प्र.सं. 1964

नयी कविता पुरातन सूत्र - डा. मानसिंह वर्मा
राधा पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं. 1991

नयी कविता में सौंदर्य चेतना - डा. सत्य मलहोत्रा
आर्यबुक डिपो, नाईवाला करोल बाग
नई दिल्ली, प्र.सं. 1990.

नयी कविता रस सिद्धांत - डा. सुन्दरलाल कथूरिया
विद्यार्थी प्रकाशन, कृष्णनगर
दिल्ली, प्र.सं. 1977.

नयी कविता में वैयक्तिक चेतना - डा. अवधनारायण त्रिपाठी "साहित्यरत्न"
जवाहर पुस्तकालय मथुरा, प्र.सं. 1979

नयी कविता की पहचान - डा. राजेन्द्र मिश्र
वाणी प्रकाशन, कमलानगर
दिल्ली, प्र.सं. 1980.

नयी कविता में राष्ट्रीय चेतना - डा. देवराज पथिक
कादम्बरी प्रकाशन, सुदर्शन पार्क
नई दिल्ली, प्र.सं. 1985.

नरेश मेहता का काव्य संवेदन और शिल्प - उमीर चन्द्र पटेल
आराधना ब्रदर्स, कानपुर
प्र.सं. 1980

नरेश मेहता की वैष्णव काव्य यात्रा - डा. विष्णु प्रभा शर्मा
मानसिंह आशा प्रकाशन, नाईनाला,
करोल बाग, नई दिल्ली.

नवीन और उनका काव्य - जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव
विनोद पुस्तक मंदिर, होस्पिटल रोड,
आगरा, प्र.सं. 1963.

निराला साहित्य में युगीन समस्याएँ - सरोज मार्कण्डेय
विद्या प्रकाशन, गोविन्द नगर,
कानपुर, प्र.सं. 1989.

निराला की लंबी कविताएँ - एक अध्ययन - विनोदकुमार जायसवाल
भारतीय ग्रंथ निकेतन, कुवा चेलान
दरिया गंज, नई दिल्ली, प्र.सं. 1992

निराला की साहित्य साधना (द्वितीय खंड) विचार धारा और कला विवेचन) - राम विलास शर्मा
राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड,
पैज बाज़ार, दरियागंज,
नई दिल्ली, प्र.सं. 1972.

निराला साहित्य में जीवन दर्शन - डा. विनोदिनी श्रीवास्तव
सुलभ प्रकाशन, अशोक मार्ग,
लखनऊ, प्र.सं. 1988.

पुराख्यान का आधुनिक हिन्दी काव्यों पर प्रभाव - डा. नूरजहाँ बेगम
जवाहर पुस्तकालय, सदर बाज़ार
मथुरा

प्रगतिवादी काव्य साहित्य - डा. कृष्णलाल हंस
मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी,
भोपाल, प्र.सं. 1971.

प्रतीक और प्रतीक विज्ञान - वृषभ प्रसाद जैन
राजकमल प्रकाशन प्रा. लिमिटेड

प्रतीक दर्शन - डा. वीरेन्द्र सिंह
मंगल प्रकाशन, गोविन्द राजियों का मार्ग
जयपुर, प्र. सं. 1977.

प्रयोगवाद - नरेन्द्र वर्मा
अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर

प्रसाद के नारी चरित्र - डा. देवेश ठाकुर
नवयुग प्रकाशन, बैग्लो रोड, दिल्ली

प्रसाद काव्य में भाव-व्यंजना मनोवैज्ञानिक विवेचन - धर्मप्रकाश अग्रवाल
अनुराधा प्रकाशन, फूल बाग कोलनी
राजकुण्ड मेरठ, प्र. सं. 1978

भारतेन्दुकालीन हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि - डा. कमल कानोडिया
विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी चौक,
वाराणसी, प्र. सं. 1971

भारतेन्दु काव्यादर्श - कृष्ण किशोर मिश्र
प्रत्यूष प्रकाशन,
रामबाग कानपुर

भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका - नगेन्द्र
नाशनल पब्लिशिंग हाउस,
दरियागंज, नई दिल्ली

भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा - नगेन्द्र
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज
नई दिल्ली

मिथक उद्भव और विकास तथा हिन्दी साहित्य - डा. उषा पुरी विद्यावाचस्पती
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज
नई दिल्ली, प्र. सं. 1985.

मिथक और आधुनिक कविता - शंभु नाथ
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज
नई दिल्ली, प्र. सं. 1985.

मिथक और साहित्य - डा. नगेन्द्र
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज
नई दिल्ली, प्र. सं. 1979.

मिथक एक अनुशीलन - मालती सिंह
लोकभारती प्रकाशन, महात्मागांधी मार्ग
इलाहाबाद, प्र. 1985.

मैथिलीशरण गुप्त का काव्य संस्कृत स्रोत के संदर्भ में - डा. एल. सुनीता
हिन्दी विभाग, कोच्चिन विश्वविद्यालय
कोच्चिन-22.

थिलीशरण गुप्त के काव्य में नारी भावना - डा. मधुबाला रोहतगी
रोहतगी प्रकाशन, मैन्डेपिले बिल्डिंग
कलकत्ता, प्र. सं. 1986.

ग कवि निराला - गिरिराज शरण अग्रवाल
साहित्य निकेतन, श्रद्धानंदन पार्क,
कानपुर, प्र. सं. 1970.

ामकथा (उत्पत्ति और विकास) - रेवरेंड फादर कामिल बुल्के
हिन्दी परिषद प्रकाशन,
प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग, प्र. सं. 1950

ामकथा और उसके प्रमुख नारी - डा. श्रीमती आशा भारती
स्तुतीकरण एवं मनोविज्ञान इतिहास शोध संस्थान, भूलभुल्लया रोड,
महरौली, नई दिल्ली, प्र. सं. 1986.

ाम कथा- भक्ति और दर्शन - डा. विश्वंभर दयाल अवस्थी
सरस्वती प्रकाशन मंदिर नया बैरहना
इलाहाबाद

ामकथा विविध आयाम - सं. डा. भगीरथ मिश्र
ा. रामनाथ त्रिपाठी अभिनंदन ग्रंथ डा. रामनाथ त्रिपाठी अभिनंदन समिति और
राम-शोध संस्थान के लिए प्रकाशित,
पोतम पुरा, दिल्ली, प्र. सं. 1987.

ामकाव्यों में नारी - डा. विद्या
प्रकाशन संस्थान, दयानंद मार्ग,
दरियागंज, नई दिल्ली, प्र. सं. 1984.

ामकाव्य परंपरा और विकास - आशा भारती
शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली,
प्र. सं. 1984.

राम भक्ति में रसिक संप्रदाय - डा. भगवती प्रसाद सिंह
अवध साहित्य मंदिर बलरामपुर (गौडा)
उत्तर प्रदेश, प्र. सं. 1957

राम भक्ति शाखा - राम निरंजन पाण्डेय
नवहिन्द पब्लिकेशन्स,
इलाहाबाद, प्र. सं. 1959.

ंबी कविता वैचारिक सरोकार - डा. बलदेव वंशी
जयश्री प्रकाशन, विश्वासनगर, शाहदरा
दिल्ली, प्र. सं. 1983.

समकालीन कविता में छन्द - सच्चिदानंद वात्स्यायन
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज,
नई दिल्ली, प्र.सं. 1987.

समकालीन साहित्य:तथा परिदृश्य - सतीश जमाली
नई महानी प्रकाशन, आलोपी बाग
इलाहाबाद, प्र.सं. 1988.

साठोत्तर हिन्दी महाकाव्यों में पात्र कल्पना - डा. विश्वबंधु शर्मा
मंथन पब्लिकेशन्स, मॅडल टाउन
रोहतक, प्र.सं. 1985.

साहित्यिक निबंध - डा. कृष्णदेव झारी
शारदा प्रकाशन, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली

तुर का रामकाव्य - श्रीमती वाजपेयी
विद्याविहार, गांधीनगर,
कानपुर, प्र.सं. 1990.

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता - डा. गोविन्द रजनीश
मंगलप्रकाशन, जयपुर, प्र.सं. 1976.

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य युगीन संदर्भ - डा. सुभद्र पैठणकर
विद्याविहार, गाँधीनागर,
कानपुर, प्र.सं. 1988

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य सौंदर्यशास्त्रीय विवेचन - डा. सुधा गुप्ता
संधी प्रकाशन, लालाजी साँड का रास्ता,
जयपुर

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी प्रबंधकाव्य परंपराओं और प्रयोगों के परिपार्श्व में - डा. बनवारीलाल शर्मा
रामा पब्लिशिंग हाउस,
जयपुर, प्र.सं. 1972.

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महाकाव्य - डा. देवी प्रसाद गुप्त
किशनलाल गोडोदिया पुस्तक भण्डार
फुड बाज़ार, बेकानेर
राजस्थान, प्र.सं. 1973.

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी में रामकथा का पुनराख्यान - डा. पुष्पारानी
शांति प्रकाशन, आसम,
रोहतक (हरियाणा)

हिन्दी काव्य में राम का स्वरूप और तत्व दर्शन - डा. ब्रह्मशंकर पुरुषोत्तम व्यास
पराग प्रकाशन, कर्णगली विश्वास नगर
शाहदरा, दिल्ली, प्र.सं. 1984.

हिन्दी के आधुनिक रामकाव्य का अनुशीलन	- डा. परमाल गुप्त रचना प्रकाशन, कुल्दाबाद, इलाहाबाद, प्र.सं. 1976.
हिन्दी के प्रबंधकाव्यों में चरित्र-चित्रण	- डा. प्रेमकली शर्मा बांके बिहारी प्रकाशन प्र.सं. 1986.
हिन्दी महाकाव्यों में नारी चित्रण	- डा. श्याम सुन्दर व्यास साहित्य संगम मथुरा, प्र.सं. 1963.
हिन्दी नयी कविता का सौंदर्य शास्त्रीय अध्ययन	- मंजु गुप्ता लोकभारती प्रकाशन, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद
हिन्दी नव गीत उद्भव और विकास	- राजेन्द्र गौतम पराग प्रकाशन, कर्णगली विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली, प्र.सं. 1984.
हिन्दी के प्रबंध काव्यों में रावण चरित्र-चित्रण को दृष्टि से	- डा. सुरेशचन्द्र निर्मल भावना प्रकाशन, माता सुन्दरी पैलेस नई दिल्ली, प्र.सं. 1976.
हिन्दी की प्रगतिशील कविता	- डा. रणजीत हिन्दी साहित्य भण्डार दिल्ली और पाटना एवं प्रगतिशील प्रकाशन
हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप विकास	- डा. शंभुनाथ हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वारणासी
हिन्दी साहित्य का इतिहास	- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नागरी प्रचारिणी सभा काशी चौदहवाँ संस्करण - 1962.
हिन्दी साहित्य का इतिहास	- डा. नगेन्द्र नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली
हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास	- रामकुमार वर्मा रामनारायण लाल, बेनी माधव, प्रयाग
हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास	- गणपतिचन्द्र गुप्त लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास अष्टम भाग	- सं.डा. विनयमोहन शर्मा नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास नवम भाग - सं. सुधाकर पांडेय
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास दशम भाग - सं. आचार्य रामेश्वर शुक्ल अंचल
नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - डा. शिवकुमार शर्मा
अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली

हिन्दी साहित्य की भूमिका - हजारी प्रसाद द्विवेदी
हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई

संस्कृत ग्रंथ

रघुवंश -
वाचस्पत्य -
वाल्मीकिरामायण -
शब्दकल्पद्रुम -
साहित्यदर्पण -

कोश ग्रंथ

पौराणिक संदर्भ कोश - डा. एन. पी. कुट्टन पिल्ला
किरण प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 1984.

संस्कृत-हिन्दी कोश - वामन शिवराम आप्टे
मोतीलाला बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली

हिन्दी साहित्य कोश - भाग I
भाग II

शोध-पत्रिकाएँ :-

अनुशीलन - रामकाव्य विशेषांक - सं. डा. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
हिन्दी विभाग, कोच्चिन विश्वविद्यालय, कोच्चिन - 22

भाषा - अंक चार - जून - 1980.
वही - अंक एक - सितंबर - 198
वही - अंक तीन - मार्च - 1982
वही - अंक तीन - मार्च - 1984
सरस्वती - मार्च फरवरी, मार्च, अक्टूबर - 1968
वही - मार्च - 1969
वही - मार्च - 1971